॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

क़िस्सा तोता मैना प्रारंभ ।

प्रथम भाग.

वन्दना.

प्रथम मैं उस पूर्ण ब्रह्म परमेश्वरकी वंदना करताहूं कि, जिसने इस अद्भुत सृष्टिको अपनी शक्तिमात्रसेही रचना कियाहै और मनुष्यसे लेकर चेंटी तकको बनाया और उनका पालन पोषण करतेहैं इसीलिये उस सर्वव्यापी सच्चिदानन्दका स्मरण कर रसिकजनोंके चित्त बहलानेके लिये एक नवीन मनहरण 'किस्सा तोता व मैना का अपनी लघु मतिके अनुसार पाठकगणोंकी सेवामें अर्पण करताहूं ॥

रमणक द्वीपके निकट एक अतिउत्तम और शोभायमान उपवन फल फूलोंसे लदाहुआ और अनेक प्रकारके मनहरण रंग बिरंगे पक्षी कोयल मोर चकोर हंस सारस आदिसे सुशोभित अनेक तालाव और सरोवरोंसे परिपूर्ण इन्द्रके नन्दनवनके समान देदीप्यमान था, उसी उपवनके अनेक सघन वृक्षोंपर प्रत्येक पक्षियोंने अपना अपना निवासस्थान बना रक्खाथा-दैवयोगसे एक दिवस एक तोता आँधी मेहका मारा अति व्याकुलचित्त एक वृक्षपर अपना विपत्ति समय काटनेके लिये आ बैठा उसी वृक्षपर एक मैनाका निवास स्थान था मैनाने जब निज वृक्षपर तोतेको बैठा, देखा तो आंखें बदल बडे क्रोधके साथ बोली कि, ऐ तोते ! तू मेरे वृक्ष पर क्यों आ बैठाहै यहांसे उठ और किसी वृक्ष पर चलाजा । मैनाकी ये बातें सुनकर तोता बोला कि, हे मैना ! हम तेरा क्या बिगाडतेहैं एकडाली पर आजकी

रात बिताकर प्रातःकाल अपने स्थानको चले जायँगे. यह बात तोते की सुनकर मैना बोली कि, यदि तू सहस्रबार कहैगा तोभी मैं न मानूंगी, क्योंकि, मुझे पुरुषजातिसे बडी अनिच्छा है, संसारमें पुरुषकी बराबर बेदर्द जाति कोई नहीं. ऐसी जली जली मैनाकी बातें सुनकर तोता क्रोधित होकर बोला कि, तू क्या आश्चर्यकीसी बात कह पुरुषोंको बेपीर बतलातीहै हां इसबातको तो सब कोई कहताहै कि औरतकी जात बडी बेपीर और बे मुरव्वत होतीहै, क्योंकि किसी कविने कहाहै ।

त्रियाचरित्र जानें नहिं कोय ।
खसम मारके सत्ती होय ॥

सो हे मैना ! बेपीर जात तो औरतकी होतीहै मर्दकी बराबर तो बातका पक्का और सखुनका सच्चा दूसरा कोई नहीं है ऐसा कौनसा ऐब तैने मर्दोंमें देखा जिससे तुझे मर्दोंसे नफरतहै. तब तो मैना बोली कि, हे तोता ! जिन बातोंसे मुझे मर्दोंसे नफरत आती है वह दास्तान मैं तेरे आगे कहतीहूं तू ध्यान देकर सुन ॥

पहिला दास्तान मैनाका तोतेसे.

मुल्क हिन्दुस्तानमें एक बडा नामी दिल्ली शहर था उसमें एक शाही घरानेका मुसल्मान रहता था उसके एक लडका नौजवान और बडा स्वरूपवान था जिसका नाम अहमदअली था. एक समयका जिक्रहै कि अहमदअली अपने शहरसे दो चार मंजिल निकलगया तब रास्तेमें उसे बडे जोरसे प्यास लगी तो उस वक्त प्यासका मारा किसी एक गांवमें पहुँचा तो देखता क्या है कि, एक मेहतरकी लडकी दरवाजेपर खडीहै जो स्वरूपमें बडी चढ बढकरथी उसकी स्त्री इसकी एडीके माफिक भी न थी देखकर जमीनपर गिरपडा और आहकी श्वास भरने लगा. उस समय अहमदअलीको गश

खाकर गिरता देख बहुतसे मनुष्य उसके पास इकट्ठे होगये और उसके मुँहमें पानी डालने लगे जब अहमदअलीको कुछ होश हुआ तो यह शैर पढने लगा ॥

शैर

झमक बताके मुझे दिलरुबाने लूट लिया ।
बचा निगाहसे शरम हया ने लूट लिया ॥
हजारों मिजगाने तीर के घायल बने ।
मुझे तो अबरू कमां की अदा ने लूट लिया ॥
खुदा के वास्ते कर रहम अबतो संग दिल ।
तेरे तो रोजके जौरो जफा नें लूट लिया ॥
निगाहे शोखने कई खानमा किये बरबाद ।
मुझे तो काफिरे जुलफे बुताने लूट लिया ॥

जब थोडी देरके बाद खूब होश आया तो सब लोगबाग पूछने लगे कि, मियां साहब ! आपको क्या होगया ये बातें लोगोंकी सुनकर बडे जोरसे आह भरनेलगा और यह दूसरी शैर पढनेलगा ॥

शैर

न छेडो हमें दिल दुखाये हुए हैं ।
जुदाई के सदमें उठाये हुए हैं ॥
बुतों नें जलाया हमें शमअ सूरत ।
खुदासे अब हम लौ लगाये हुएहैं ॥
भला कत्लके वक्त तडफूं में क्योंकर ।
वह जानूसे सीना दबाये हुए हैं ॥
शहीदों कि लाशों पै बोला वो कातिल ।
ये सब खून में क्यों नहाये हुएहैं ॥
जो आजाय मुशकिल न घबरा तू रंगी ।

अभी तक त्यौरी चढाये हुए हैं ॥

बाद इसके फिर यह शैर पढने लगाः—

शैर

डरता हूं जुदा मुझसे मेरा यार न होजाय ।
यह जिंदगी मेरी कहीं दुश्वार न होजाय ॥
दफनाइयो न हरगिज मेरी लाश को यारो ।
जब तक कि जनाजे पै मेरा यार न होजाय ॥
जल्दी से पिला साकी मुझे तू वस्ल की दारू ।
रुखसत कहीं दुनियांसे यह बीमार न होजाय ॥

ये शैर अहमदअलीकी सुनकर लोगोंने जाना कि, यह पुरुष मेहतरकी लडकी पर आशिक हुआहै यह बात जानकर सब लोग समझाने लगे कि मियांसाहब जरा होशमें आओ, क्योंकि आप जातिके मुसलमानहैं और वह जातकी मेहतर है ॥

आपको इश्कमें ऐसा गिरफ्तार न होना चाहिये और अपने दीन ईमान पर भी ख्याल रखना चाहिये, क्योंकि यह हुस्न और जवानी चार दिनका महमानहै जैसा किसी कविने कहाभी है—

दोहा

सदा न फूलै तोरई, सदा न सावन होय ।
सदा न जोबन थिर रहै, सदा न जीवै कोय ॥

दोहा

ये योवन थिर ना रहै, दिन दिन छीजत जात ।
चार दिनाकी चांदनी, फेर अँधेरी रात ॥

इससे ऐ मियां साहब ! जरा होश सँभालो और इस बातके ख्यालमें मत पडो ये बात लोगोंकी सुनकर वह तो फिर आह भरके यह शैर पढने लगा ॥

शेर

मुझे दीन ईमानसे क्या है काम ।
बिना दीन इसके यहां कामहै तमाम ॥
यातो मिलै मुझको ये रशकये नूर ।
नहीं जान दूंगा मैं इस पर जरूर ॥
मेरा दीन ईमान है ये परी ॥
बिना इसके मुझको न कलहै घरी ॥

ऐ लोगो ! मुझे दीन और ईमानसे कुछ काम नहीं है मेरे साथ जबतक ये चांदसे मुखडे वाली व्याही न जायगी तबतक मैं अपना जीना मुश्किल समझता हूं सो आप लोग मेहरबानी करके इस हूर-के मा बापसे कहदो कि, एक बिचारा मुसीबतसे हारा तेरी बेटीके नयनोंका मारा पडा तडफता है यातो उसके साथ अपनी लडकीकी शादी करदे नहीं तो वह तेरे दरवाजेपर सिर मार मारकर मरजा-वैगा यह कहकर लंबी श्वास लेने लगा और यह दोहा पढने लगा ॥

दोहा

हाय दई कैसी भई, अन चाहत को संग ।
दीपक के भावै नहीं, जल जल मरत पतंग ॥

यह बात अहमदअलीकी सुनकर दो चार मनुष्योंने जाकर सब हाल उस मेहतरसे कहा वह बिचारा यह बात सुनकर अहमद-अलीके पास आया और मिन्नतके साथ कहने लगा कि, ऐ मियांजी साहब जरा सोच समझकर बातें करनी चाहिये, क्योंकि आप जातके सैय्यद और मैं जातका मेहतर आपके साथ मेरी बेटीकी शादी किस तरह हो सक्ती है और जो मैं अपनी बेटीकी शादी करभी दूंगा तो आ-पको क्या मजा हासिल होगा क्योंकि हमारा पेशा नरक उठाना वा झाडू देनाहै अगर आप इस लडकीको व्याहोगे तो आपको भी ये सब

काम करने पडेंगे और जाति बिरादरीके किसी कामके न रहोगे. इस तरह मेहतरने ऊंच नीचकी बातें कर बहुत समझाया मगर मियांसाहबके दिलमें कब आतीथी सचहै जिसके लगे वही जाने. आखिरको लाचार हो मेहतरने अपनी लडकीकी शादी अहमदअलीके साथ करदी फिर तो मियां अहमदअली और मेहतरकीलडकी में ऐसी मुहब्बत बढी कि अहमअलीको सिवाय उस औरतके दुनियांमें और कोई नजर नहीं आताथा. इसीतरह ऐश और आराम करते करते कुछ दिन गुजर गये तब एक दिन अहमदअलीको अपने वतनकी याद आई तो अपनी औरतसे कहने लगा कि, अब तो हमारा दिल अपने वतनको चलना चाहताहै अगर आपके मा बापकी राजी होतो उनसे कहो तुह्मारी बिदा करदे इस बातको. सुनकर मेहतरकी लडकी बोली कि मुझे तो किसी बातका उजर नहीं है क्योंकि मैं तो आपकी दिलोजानसे ताबेदार हूं। यह कहकर उस औरतनें सब हाल अपने माता पितासे कहा तब उस मेहतरने बहुत खुशीके साथ अपनी बेटी और जमाईको बहुतसा धन वा आभूषण देकर बिदा किया और अहमदअली औरतको लेकर अपने वतनको रवाना हुआ बाद कितनेही दिनके जब उसका वतन एक मंजिल रह गया, तब अहमदअलीनें दिलमें विचारा कि, मैंने बडे जुल्मकी बात करी कि जरासी खूबसूरती देखकर अपने दीन ईमानको खोया अब मेरे माता पिताको जो यह बात मालूम होजायगी तो मुझसे वे क्या कहैंगे इससे तो बेहतर यह है कि यहां पर इसको कत्ल करके किसी कुएमें डाल चलूं तो अच्छा है यह बात मनमें विचार कर रातको जब वह औरत सोगई तब उसको अहमद अलीने छुरियोंसे गोद कर एक कुएमें डाल दिया और आप सब जवर और असबाब लेकर अपने वतनको रवाने हुआ. जब वह अपने मकान पर पहुँचा तो उसके माता पिताने पूछा कि बेटा

हमतो तेरी बडी फिकरमें थे कि तू इतने दिनोंसे कहां था तब अहमद-अलीने कहा कि मुझे रास्तेमें एक अमीरने नौकर रख लिया था सो अब मैं उससे रुखसत होकर आयाहूं यह बातें बेटेकी सुनकर मा बाप बहुत खुश हुए मैना बोली कि ऐ तोते ! यहांका दास्तान बंद करके उस औरतका हाल कहतीहूं जब अहमदअली उस औरतको कतल करके कुए में डाल गया तो परमेश्वरकी कुदरतसे पानीकी सर्दी पाकर उस औरतको होश आया तब उसने उस कुएँकी जंजीरको पकडली दैवयोगसे एक मुसाफिर उस कुएँपर पानी पीनेको आया और जो लोटा फांसा तो उस औरतने उसके लोटेको पकड लिया उस वक्त वह मुसाफिर कहने लगा कि, तू कौनहै तब वह औरत बोली कि ऐ खुदाके बन्दे ! मैं इन्सान और बहुतही आफतकी मारी हूं तू खुदाके वास्ते मेरी जानको बचा और इस कुएसे मुझे निकाल यह बातें उस औरतकी सुनकर मुसाफिरने उसे कुएसे निकाला और पूछने लगा कि ऐ नेकबख्त ! तू कौनहै और तेरा यह क्या हालहै तब उस औरतने कहा कि मैं और मेरा स्वामी दोनों वतनको चले जाते थे कि अचानक ठगोंके गोलने हमें आ घेरा और हमारा जेवर असबाब लूटकर मुझे छूरियोंसे गोदकर इस कुएमें पटक गये और आगेकाहाल मुझे मालूम नहीं कि मेरा पति कहां है यह बात सुनकर मुसाफिरको बहुत तरसआया रास्तेमें बहुतसी मुसीबत सहकर उसके मां बापके यहां पहुँचा दिया. उसके मा बापने बेटीको छूरियोंसे घायल देख अति व्याकुल हो छातीसे लगालिया और रोरोकर पूछने लगे कि, ऐ बेटी ! तेरा ये क्या हाल हुआ हमसे कह मगर उस नेक बख्तने अपने खाविंदकी बदजाती को छिपाकर ये हाल कहा कि एक दिन रास्तेमें चोरोंने आन-कर मेरा जेवर और असबाब सब लूट लिया और मुझे कतल करके

कुएमें डाल गये फिर मुझको नहीं मालूम कि मेरे स्वामीका क्या हाल हुआ.यह बातें बेटीकी सुनकर बेटीको बहुत समझाया कि ऐ बेटी ! खुदाको याद कर कि जिसने तेरी जान बख्शीहै वही खुदा तुझ पर मददगार होकर तेरे खाविंदको मिलादेगा ऐसे समझा बुझाकर उसकी मल्हम पट्टी करने लगा खुदाकी मेहरबानीसे बहुत जल्द चंगी होगई ॥

मैना बोली कि ऐ तोते ! यहांकी बातें यहीं छोडकर अब थोडी सी बातें फिर उसी बेईमानकी कहती हूं ध्यान देकर सुन जब अहमद-अलीको उडाते खाते दो चार महीने बीते और वह सब असबाब बेच-कर खाडाला तब अपने मनमें कहने लगा कि अब खर्चकी निहायत तंगदस्तीहै इससे अब यहांसे उस मेहतरके यहां चलना चाहिये और उससे कहना चाहिये कि तुम्हारी लडकीके लडका पैदा हुआहै तो यह सुनकर वह मेहतर जब कुछ जर व जेवर देगा उसे ले फिर कुछ दिन आरामसे कटेंगे.ये बात मनमें विचारकर अपनी ससुराल यानी मेहतरके यहां रवाना हुआ दो तीन दिनके बाद उस गांवमें पहुँचा तो देखता क्या है कि वही मेहतरकी लडकी पौलीमें खडीहै जो उस औरत और अहमदअलीकी चार नजरें हुईं तो अहमदअली का पीला चेहरा पडगया और सब बदन मारे डरके कांपने लगा अपने मन-में सोचने लगा कि, हाय मैंने क्या किया, यह तो बहुत बुरा हुआ जो मैं यहां आया अब यह मेहतर मुझे जीता न छोडेगा इस कदर अहमदअली अपने मनमें सोच करनेलगा तब इसको घबडाया हुआ देखकर वह औरत कहने लगी कि ऐ बेईमान ! बेपीर सैयद असल से कमअसल, मैं तुझ सरीखी कमअसल नहीं हूं और मैंने आज-तक तेरी बदीको अपने मा बापसे जाहिर नहीं किया अब तू किसी बातकी फिकर मतकर मेरे जानमें तो तू मेरा वही खाविंद है अपने

दिलमें चाहे जो समझ ये बातें मेहतरकी लडकीकी सुनकर अहमद-अली बडा शरमिन्दा होकर उस औरतसे कहने लगा कि जो कुछ बद काम मुझसे हुवा है उसे माफकर तब वह औरत बोली आप डरो मत आप भीतर जाइये जब अहमदअली भीतर गया तो सास व ससुरने आते देखा उन्होंने दौडकर छातीसे लगालिया और कहनेलगे धन्य उस ईश्वरको है कि जिसने कितनेही दिनोंके बाद तेरी सूरत हमको दिखलाई इस तरह बहुतसी बातें करके उसकी महमानी की और बडी खातिर तवाजेके साथ रक्खा.जब इसतरह ऐश व आराम करते कुछ दिन गुजरगये तो एकदिन औरतसे अहमदअलीने कहा कि अबतो अपने वतनको चलना चाहिये. तब फिर उस औरतनें कहा कि मुझे तो आपकेसाथ चलनेमें कुछ उजर नहीं है मगर आप मुझसे पहलीसी दगा तो न करोगे । यह सुन अहमदअलीने कहा कि मेरे और तेरे बीचमें खुदा आमिनहै जब उस औरतनें अपने मा बापसे रुखसत मांगी तो उन्होंने बहुत खुशीके साथ बहु-तसा जर व जेवर देकर उनको बिदाकिया, जब अहमदअली बिदा होकर चला और एक बीयाबान जंगलमें पहुँचा तो वहां उसने उस विचारी मेहतरकी लडकीका वही हाल किया जो पहिले कर चुका था अर्थात् उसे छूरियोंसे गोदा सब माल असबाब लेकर अपने वत-नको चम्पत हुआ और वह बिचारी छूरियोंकी मारी घायल होकर उस जंगलमें तडफने लगी. दैवयोगसे उसी गांवका एक मेहतर उस रास्ते होकर चला आताथा उसकी नजर जो उस बिचारीपर पडी तो उस औरत को पहिचानकर पूछा कि ऐ बेटी! तेरा ये क्या हाल हुआ तब तो उस औरतने कुल हाल रोरो कर कह सुनाया यह सुनकर मेहतरने पहिले तो बहुत अफसोस किया और फिर उस मेह तरकी लडकीको बहुतसा धीरज बँधाकर उसे उसके घर पँहुचा

दिया इसके बाद उस औरतने जीतेजी उस बेईमानका नाम भी न लिया. इतनी कथा कहकर मैना बोली कि, ऐ तोते ! जबसे ये दास्तान मैंने सुना है तबसे मुझे मरदोंका बिल्कुल विश्वास जाता रहा उस समयसे मैं अबतक इसी तरह मर्दोंसे अपना आप बचाये रहती हूं. ये बातें मैनाकी सुनकर तोता कहनेलगा कि ऐ मैना ! तु ये बात सत्य कहती है मगर दुनियामें सबही मर्द एकसे नहीं होते और न सभी औरतें एकसी होतीहैं; जैसे किसी कविने कहाहै—

शैर

न हर जन जनस्तो न हर मर्द मर्द ।
खुदा पंज अंगुश्त यकसां न कर्द ॥

हे मैना ! अगर तू यह कहै कि औरत नहीं मर्दही बेपीर होते हैं तो यह सुनकर एक दास्तान मुझेभी याद आया है सो तेरे सामने कहताहूं तू कान लगाकर सुन—

दास्तान दूसरा तोतेका ।

तोता बोला कि हे मैना ! एक रत्नपुर नाम शहर था. उसमें चन्द्रगुप्त नाम राजा राज्य करता था. उसके चार बेटे बडे प्रतापी और तेजवान थे. उन सब बेटोंमें बेटा मदनसेन अति स्वरूपवान और बडा पराक्रमी और नवीन अवस्थावाला था और उस मदनसेनकी स्त्री जिसका नाम चन्द्रप्रभा था महासुंदरी थी वह अपनी सुन्दरताके सामने और किसी स्त्रीको अपने बराबर नहीं समझतीथी; गानविद्यामें बडी निपुण और प्रत्येक कार्यमें बहुतही चतुर थी, एक दिनकी बातहै कि, मदनसेनके बापनें किसी कुसूर पर मदनसेनको देशनिकाला देदिया यह वचन पिताका सुनकर मदनसेन अति उदास होकर अपने महल को आया और अपनी चित्रसारीमें जाकर सुस्तहो बैठ गया । मदनसेनका यह हाल

देख चन्द्रप्रभा हाथ जोडकर कहनेलगी कि, हे प्राणप्यारे ! आपका यह क्या हालहै आपका चन्द्रसा मुख किसकारणसे कुम्हला गयाहै ? सत्य कहिये आप इतने मनमलीन क्यों हैं ? आपका हाल देखकर मेरा कलेजा फटा जाताहै आप सरीखे राजकुमारको ऐसी क्या चिन्ता व्यापीहै यह सुनकर मदनसेन बोला कि हे प्राणप्यारी ! आपसे मैं क्या कहूं कुछ कहनेकी बात नहीं है आज हमारे पितानें हमें बारह वर्षके वास्ते देशनिकाला दियाहै इसवास्ते मैं तुझसे बिदा मांगने आयाहूं मदनसेनकी यह बातें सुनकर चन्द्रप्रभा गश खाकर गिरपडी उसका यह हाल देख मदनसेनके और भी रहे सहे होश हवास जाते रहे और मनमें कहनेलगा कि हाय मैंने बहुत बुरा काम किया जो अपनी प्राणप्यारीके आगे ये सब हाल कहा इतनेमें दासियोंने गुलाब व चन्दन छिडककर चन्द्रप्रभाको होश कराया तब चन्द्रप्रभा कहनेलगी कि हेप्राणप्यारे! आप दासीको छोडकर परदेश जानेका सामान करतेहो तो ये मेरे पापी प्राण आपके दर्शन बिन कैसे बचेंगे ? इसलिये मैंभी आपके साथ चलूंगी. यह सुनकर मदनसेननें कहा कि, हे प्राणप्यारी ! आपका चलना मेरे साथ क्योंकर होसक्ताहै ? क्योंकि परदेशमें अनेकों तरहके दुःख उठाने पडेंगे और आप गलीचोंकी बैठनेवाली तथा महलोंकी रहनेवाली होकर उन दुःखोंको कैसे सह सकोगी यह बात सुनकर रानी चन्द्रप्रभा बोली कि हे प्राणप्यारे ! जितने दुःख परदेशके चलनेमें हैं वे आपके साथमें मुझे सब सुखोंसे ज्यादा मालूम होंगे आपके बिना मुझको ये महल मंदिर उस जंगलसे भी ज्यादा भयानक दिखाई देंगे इससे मैं तो आपके साथही चलूंगी ये बातें रानीकी सुन मदनसेननें अपने मनमें जाना कि येतो बिना मेरे साथ चले न जीवैगी सो मुझको भी यह बात न चाहिये जो मैं अपनी

प्राणप्यारी रानी को इकली छोडकर जाऊं. इससे तो इसे साथ ले चलनाही बेहतर है। यह विचारकर मदनसेनने रानीसे कहा कि, अच्छा आप उदास न हूजिये आपभी हमारे साथ चलिये; ये बातें मदनसेनकी सुनकर चन्द्रप्रभा बडे हर्षके साथ मदनसेनके साथ होली फिर प्रातःकालही मदनसेन और चन्द्रप्रभा दोनों अपने शहरसे निकलकर किसी जंगलकी तरफ चले और जब चलते चलते थकगये तब एक उत्तम स्थान देखकर एक बडके पेडकी सघन छाँहमें बैठगये राहके हारेथके तो थेही ठंडी ठंडी पवन लगनेसे निद्रामें अचेत हो सोगये इतनेहीमें अचानक एक सर्पनें आनकर रानी चन्द्रप्रभाके पांवमें काटखाया उसके काटतेही चन्द्रप्रभा व्याकुलहो तडफडाने लगी इतनेहीमें मदनसेनकी भी आंख खुलगई तो वह रानीको व्याकुल और सर्पको भागता देख अत्यन्त व्याकुल हुआ इतनेहीमें चन्द्रप्रभाने जहरसे व्याकुलहो प्राण त्याग दिये ये हाल रानी चन्द्रप्रभाका देखकर मदनसेन अति घबराया और ऊंचा स्वर कर रोने लगा कि उसके रोनेकी आवाज सुन उस जंगलके जीव जन्तु थर्राने लगे। उस समय मदनसेनको अपनी प्राणप्यारीके बिना बडी बेकली हुई निदान उसने अपने मनमें सोचा कि अब में अपनी प्राणप्यारीके बिना जीकर क्या करूंगा मुझे उचित है कि मैंभी इसीके साथ इसी जंगलमें अपने प्राणदूं ये मनमें विचारकर रानीकी ल्हाशके पाससे उठकर जंगलमेंसे लकडी बीनने लगा और यह कहता जाता था कि रानीकी चितामें मैंभी जलूंगा दैवयोगसे उस जंगलमें महादेव और पार्वती फिरते हुए आ निकले तब पार्वतीजीने जो मदनसेनके रोनेकी आवाज सुनी तो उनके मनमें बडी दया आई और हाथ जोडकर महादेवजीसे कहने लगीं कि, हे नाथ! देखो इस वनके बीचमें कोई कैसा दुखिया रोरहा है कि जिसके रुदन

को सुनकर मेरे रोंमटा थर्राने लगे हैं, सो आप मेरे ऊपर कृपा करके इसके दुःखको दूर करो. ये वचन पार्वतीकेसुनकर श्रीमहादेव जी बोले कि, हे प्रिया ! मैं याहीं मारे आपको अपने साथ नहीं लाऊं हूं क्योंकि या संसारमें अनेक प्रकारके दुखिया मनुष्य हैं हम कौन कोनको दुःख दूर करैंगे!तब पार्वतीजीनेंकहाहेस्वामी! याकोदुःखतो आपकोही दूर करना पडैगा यह वचन पार्वतीजीका सुनकर श्रीमहादेवजी पार्वतीको साथ लेकर वहां आये जहां मदनसेन रोरहाथा तब श्रीमहादेवजी मदनसेनसे कहने लगे कि,तू क्यों रोताहै और तो कूं क्या दुःखहै तब मदनसेन कहनेलगा कि महाराज!आप मेरेदुःख को क्या पूछते हो मुझे कहनेकी सामर्थ्य नहीं है और न मेरेवास्ते धरती फटतीहै कि जिसमें मैं समाजाऊं. ये बात मदनसेनकी सुनकर महादेवजीको दया आई और उससे कहनेलगे कि तू अपना सब हाल हमसे कह तब मदनसेन कहने लगा कि हे महाराज!मैं रत्नपुरके राजा चन्द्रगुप्तका पुत्र हूं मुझकूं मेरे पिताने देशनिकाला देदिया सो मैं और मेरी रानी दोनों वहांसे निकलकर यहां इस जंगलमें आये यहां आनकर मेरी ये रानी सर्पके काटनेसे मृत्युशय्यापर सो रहीहै सो हे प्रभो ! इसका वियोग मुझसे सहा नहीं जाता इसवास्ते मैं लकडी इकट्टी कररहाहूं कि मैं अपनी प्यारीके साथ अपनाभी देह त्याग करूंगा ये वचन मदनसेनके सुनकर महादेवजी बोले अरे राजकुमार ! तू बडा मूर्ख है तू अपने मनमें समझ तो सही कि इस संसारमें यही आवागमन लगरहा है एक दिन सबको यह देह छोडनी पडैगी और तू यह भी जानताहै कि न तो कोई किसीके संग आया और न संग गया तू बुद्धिमान् होकर ऐसी कच्ची बातें क्यों कहताहै? जो तू जीता रहैगा तो ऐसी बहुत रानी तुझकूं मिलजायँगी इससे मेरा कहना मानकर सोच छोडदे ये वचन महादेवजीका सुनकर मद-

नसेन कहने लगा कि हे महाराज ! आपने जो वचन कहे सब सत्यहैं परन्तु ऐसी रानी तो मुझको किसी जन्ममें नहीं मिलैगी और न इसका वियोग मुझसे सहा जायगा इस वास्ते मैं तो जरूर इसके साथ मरूंगा ये वचन मदनसेनके सुनकर महादेवजीने जाना कि ये राजकुमार बिना राजकुमारीके नहीं जीवैगा यह जानकर मदनसेनसे कहनेलगे कि हे राजकुमार ! तेरी रानीके जीनेकी एक तदवीज है इस रानी की उमर २० वर्षकी थी सो इसने भुगतली और तेरी उमर ७० वर्षकी है जिसमें से ३० वर्ष भुगत गये और ४० वर्ष बाकी हैं सो जो तू अपनी उमरमेंसे २० वर्ष अपनी रानीको संकल्प करदे तो तुम्हारी दोनोंकी उमर बराबर की होजायगी यदि तुझको यह बात मंजूर हो तो तेरी स्त्री अभी जी उठे यह वचन महादेवजीका सुनकर मदनसेन कहने लगा कि महाराज यह बात मुझको मंजूरहै तब महादेवजीने मदनसेनके हाथमें जल देकर बीस वर्ष की उमरका संकल्प करा दिया और चन्द्रप्रभाके हाथपर संकल्प का जल छोडनेसे पहिले महादेवजीने मदनसेनसे यह कहा कि, जिस वक्त तू दीहुई उमरका रानीसे संकल्प कराके अपने हाथपर पानी लेलेगा उसी समय रानी फिर मरजायगी परंतु यह सबबातें रानीसे मत कहना क्योंकि यह बात किसी समय तेरे काम आवेगी यह कहकर महादेव और पार्वती दोनों चले गये तब रानी चन्द्रप्रभा राम राम कर उठ बैठी और मदनसेनसे कहनेलगी कि,महाराज! आज तो मुझे बडी निद्रा आई आपने मुझे जगाया नहीं तब मदनसेनने कहा आप कितनेही दिनकी हारी थकी थीं इससबबसे मैंनेभी आपको नहीं जगाया यह कहकर फिर वहाँसे चले तो कितनेही दिनोंके पीछे एक बडा रमणीक स्थान नजर आया वहां एक साईंका तकिया था जब ये दोनों तकियेके बराबर पहुँचे तो क्या देखते हैं

कि एक फकीर नौ जवान बहुत खूबसूरत फूलोंकी माला और फूलोंके गजरे हाथ पावोंमें पहिने तकिया लगाये बैठा हुक्का पीरहा है ये दोनों मंजिलके मारे थकेमांदे उसफकीरके पास आनकर बैठगये उस समय मदनसेन बोला कि रानी हमको प्यास लगीहै कहो तो हम कुआँ पर पानी पीआवें और जो तुम पीयो तो तुम्हारे वास्ते लेतेआवें. तब रानीने कहा मैं तो प्यासी नहीं हूं यह बात सुनकर मदनसेन तो लोटा डोर लेकर कुएँ पर पानी पीनेको गया इधर रानी चन्द्रप्रभाकी और फकीरसाहबकी जो चार नजरेंहुईं तो चन्द्रप्रभा उसफकीरपर आशक होगई और उस फकीरसे कहने लगी कि,फकीरसाहब आप तो यहां पर बडे ऐश आराम करते हैं तब फकीर बोला कि, आप भी यहा रहो तो ऐसेही मौज कराकरो तब चन्द्रप्रभा कहने लगी कि ऐ फकीरसाहब आपके पास रहनेको दिल तो मेरा भी चाहताहै मगर यह मेरा खाविन्द मेरे साथहै इससे मेरा आपके पास रहना किस तरह से होगा ? तब उस फकीरने कहा कि इसको किसी राहसे कुएँमें डाल आओ तो यह मर जावैगा फिर हम तुम बेफिकर होकर ऐश आराम करेंगे. ये बातें फकीरकी सुनकर रानीने कहा बहुत अच्छ ऐसाही करूंगी.इतनेमें मदनसेनभी पानी पीकर रानीकेपास आया तो रानीने कहा कि मैंभी प्यासी हूं मुझे जल पिलाओ तब मदनसेनने कहा कि हे रानी ! मैंने तो तुझसे पहलेही कहाथा मगर तैंनेही नाहीं करदी यदि आपको प्यास लगीहै तो अभी जल लेकर आताहूं सो जब मदनसेन पानी लेनेको चला तब रानी चन्द्रप्रभाभी उसके साथ होली और कहने लगी कि मैं भी आपके साथ चलतीहूं राजा ने कहा बहुत अच्छा आओ. मदनसेन तो उसकी मुहब्बतमें फँसा हुआ था उस बिचारेको यह मालूम नहींथा कि यह मेरे प्राणोंकी भूँखी मेरे प्राण लेनेके वास्ते चलतीहै सचहै वह विचारा क्या स्त्रि-

योंके चरित्र जान सक्ता था इनके चरित्रमें अच्छे अच्छे चतुर मनुष्य देवदानव आदि सब गोता खाजाते हैं इसी सबबसे किसी कविने कहा है–

श्लोकः—

"स्त्रियश्चरित्रं पुरुषस्य भाग्यं ।
देवो न जानाति कुतो मनुष्यः ॥"

सत्यहै जब स्त्रियोंके चरित्रोंको देवता नहीं जानसक्तेतो मनुष्य क्या जान सक्तेहैं. सो तोता बोला कि हे मैना ! जब मदनसेन कुएँपर जाकर लोटा फांसने लगा तो पीछेसे रानीने धक्का देकर मदनसेनको कुएमें गेर दिया और आप उस फकीरके पास आगई तब वह फकीर उस रानीको लेकर वहांसे रवाना हुआ और एक किसी बडे शहरमें जाकर रहने लगा उस फकीरने चन्दरोजमें उस रानी चन्द्रप्रभाको गाना और नाचना ऐसा सिखाया कि उसकी बराबर और कोई नाचने गानेवाली वेश्या उस शहरमें नथी. वह इस रानीके नाचने गानेके सबबसे थोडेही दिनोंमें लाखों रुपयेका मालदार होगया. तोता बोला कि, ऐ मैना ! चन्द्रप्रभा तो उस फकीरके साथ यहांपर बडी मौजमें ऐश आराम करतीथी अब तू मदनसेनका हाल सुन–जिसवक्त रानी चन्द्रप्रभाने उसे कुएमें ढकेलदिया तो वह उस कुएमें गोता खाने लगा दैवयोगसे एक जंजीर जो उस कुएमें लटकतीथी उसके हाथमें आगई मदनसेन उसको पकड कर लटका रहा और परमेश्वरका ध्यान करने लगा इत्तिफाकन उसी रोज एक बंजारेका लश्कर उसी तकियेमें आनकर पडा और उनमेंसे एक बंजारा डोल रस्सी लेकर उसी कुएँपर पानी भरनेको आया और डोलको कुएँमें फांसा जो डोल कुएमें पहुँचा सोई मदनसेनने उस डोल को पकड लिया तब वह बंजारा कहने

लगा अरे तू इस कुएमें कौन है तब मदनसेनने कहा भाई मैं आफ-तका मारा मनुष्यहूं तू परमेश्वरके वास्ते मुझको बाहर निकालकर मेरे प्राणोंको बचा.तब उस बंजारेके मनमें दया आई और मदनसेनको कुएँसे बाहरनिकाला और अपने मालिककेपास लाया तब वह बंजा-रा पूछनेलगा कि भाई! तुम कौन हो और इस कुएँमें किसतरह गिरे सो अपना कुल हाल हमसे कहो तब मदनसेन कहनेलगा कि हे स्वामी ! मैं अपना हाल आपसे क्या कहूं जो कुछ मेरे ऊपर मुसीबत बीतीहै उस मुसीबतके कहनेमें मेरा कलेजा फटताहै परन्तु-आपने मेरे प्राण बचाये हैं इस सबबसे मैं अपना सब हाल आपसे कहता हूं यह कहकर मदनसेनने अपना आदिसे अंत तक सब हाल बंजारेके सामने कहा तब बंजारा मदनसेनकी नेकी और चन्द्रप्रभाकी बदीको सुनकर आँखोंमें आंसू भरलाया और कहनेलगा यह किसीनें सत्य कहा है ॥

चौपाई ।

त्रिया चरित्र जानें नहिं कोय ॥
खसम मारके सत्ती होय ॥

यों कहकर मदनसेनको छातीसे लगालिया और कहने लगा कि भाई! तुम किसी बातकी फिकर मत करो सब ईश्वर भला करेगा आप किसी बातका संदेह न कर हमारे लश्करमें रहा करो यह कह कर मदनसेनको अपने साथ रक्खा फिर बहुत दिनके बाद वह बंजारा उसी शहरमें आया जिसमें रानी चन्द्रप्रभा और वह फकीर रहताथा. तब शहरको देखकर मदनसेननें बंजारेसे कहा कि, मेरी मरजी इस शहरमें रहनेकी है अगर आपकी मरजी होय तो कुछ दिन इस शहरमें बास करूं. ये बातें मदनसेनकी सुनकर बंजारेने

कहा आपकी मरजी, मुझे कुछ उज्र नहीं है. तब मदनसेन उस बंजारेसे बिदा होकर शहरमें आया और रोजगारकी तदबीजमें डोलने लगा, कई दिनके पीछे एक बडे भारी साहूकारको अपनी ऐसी कार गुजारी दिखलाई कि उस साहूकारने मदनसेनको सबके ऊपर मुनीम करादिया तब तो मदनसेनके दिन बडे चैनसे कटने लगे एक दिन का जिक्र है कि उस शहरके राजाके यहां रानी चन्द्रप्रभाका नाच ठहरा तो राजाने सब साहूकारोंकोभी बुलवाया सब साहूकार लोग नाच देखनेको राजाकी महफिलमें गये मदनसेननेभी इसके नाचने गानेकी बडी तारीफ सुन रक्खीथी सो अपने मनमें विचार करने लगा कि ऐसी स्त्रीका नाच तो जरूर देखना चाहिये यह विचार करके मदनसेनभी नाच देखने गया और जाकर अपने मालिकके पास बैठगया. रानी चन्द्रप्रभा अपना पिशवाज पहन कर नाचनेको खडी हुई उस वक्त मानिन्द अप्सराके मालूम हुई और उस मजलिसमें उसने यह ठुमरी गाई ॥

ठुमरी राग झंझोटी.

निर्दई श्यामने फोड दई पनिघट पर मोरी गागरिया । कैसी करूं कित जाऊं सखी मोय भरन देत नहिं गागरिया ॥ निर्दई श्यामने तोर० ॥ १ ॥

जब नीर भरन घरसे निकसी एक काग बोलगयो मागरिया ॥ दहिनेसे निकर बिलाव गयो एक बायें से छींकत छागरिया । निर्दई श्यामने तोड दई पनिघट पर मोरी गागरिया ॥ २ ॥

वो संगकी सखी सब निकर गईं जो सब गुण पूरी आगरिया ॥ मोहिं जान अकेली छेक लई सिर बांधे टेढी पागरिया ॥ निर्दई श्यामने० ॥ ३ ॥

चन्द्रप्रभाने ऐसे ऐसे कितनेही राग रागनी बडे स्वर तालके साथ ऐसे गाये कि, उन्हें सुनकर सभाके लोग वाह वाह करने लगे और राजा और रैय्यत सबने चन्द्रप्रभाको इनाम दिया उस वक्त मदनसेनने भी अपने हाथकी अंगूठी जिसमें अमोलक हीरा जडा था सो उतारकर चन्द्रप्रभाको देदी उस वक्त चन्द्रप्रभा उस अँगूठीको पहिचानकर अपने मनमें कहने लगी कि बडा गजब हुआ जो यह कमबख्त जीता यहां आया और मुझको पहिचानगया तो अब ये मुझे जीता न छोडेगा इससे ऐसा उपाय करना चाहिये जिससे यह माराजाय. ये बात मनमें विचार कहने लगी कि, और तो कोई इसके मारनेका उपाय नहीं है परंतु एक उपाय इस वक्त है कि कोई उम्दासी रागनी गाकर इस राजाको रिझाऊं और राजाको खुश करके इसके मरवानेका हुक्म लूं ये बात मनमें सोचकर फिर एक रागनी वसंतकी चन्द्रप्रभाने गाई ॥

राग बसंत बहार.

मदमाती कोयलिया डार डार ॥ मोरे अंगना बोलत बार बार॥ विरहिनके मदपै जोर जोर ॥ तापर दइ मारी करत शोर ॥ मैं तडफ तडफ निश करत भोर ॥ मेरे हगन बहत है जलकी धार ॥ मदमाती कोयलिया डार डार ॥

इस वसंतकी ब[illegible]र सुनकर राजा बहुत खुश हुआ और चन्द्रप्रभासे कहने लग[illegible],तैंने इस वक्त मुझको ऐसा खुशकिया कि इस वक्त तेरा मुंह वैरी है [illegible] मांगेगी सोई मैं दूंगा. तब चन्द्रप्रभा बोली कि जो महाराज मेरे ऊपर प्रसन्न हो तो मुझे वचन दोगे तो मैं आपसे मांगूंगी. ये बात सुनकर राजाने चन्द्रप्रभाको वचन देदिया तब राजाको वचनबद्ध करके चन्द्रप्रभा राजासे कहने लगी कि मैं आपसे यही मांगती हूं कि आपकी सभामें मेरा चोर है सो वह इसीवक्त

जानसे मरवाया जाय ये बात चन्द्रप्रभाकी सुनकर राजाने कहा कि तू अपने चोरको मेरे सामने ला तब चन्द्रप्रभा मदनसेनका हाथ पकड राजाके सामने लेगई तब राजाने कहा इसे जल्लादोंके सुपुर्द करो ये वचन राजाका सुनकर जल्लाद मदनसेनका हाथ पकडकर मारनेको लेचले उस वक्त मदनसेनका मालिक घबडाकर सभामें से उठा और मदनसेनके पास आनकर कहने लगा कि, ऐ मदनसेन ! तैंने इस वैश्याका क्या कसूर किया है ? जिससे तुझे ये मरवाती है और तेरी जानकी दुश्मन होती है. तब मदनसेनने अपने मालिकसे कहा कि मैंने इस वेश्याका कुछ कुसूर नहीं किया है मैं बेकुसूर माराजाता हूं अगर मेरी और राजाकी चार चार बातें करादो तो मेरी जान बचजावै तब सब साहूकारोंने मिलकर सलाह करी या तो आज राजा इन्साफ करै नहीं तो सब लोग इस शहरको छोडकर चले जांयगे. आपसमें मसलहत करके सब साहूकार राजाके पास गये और जाकर कहने लगे कि हे राजा ! हमारा मुनीम इस वेश्याके कहनेसे बेकुसूर मारा जाताहै और वह यह कहता है कि राजानें मुझे मरवानेका हुक्म दिया सो मुझको राजाके हुक्मसे मरना तो मंजूर है परन्तु मेरी दो बातें राजा सुन लेयँ. सो या तो आप उसकी दो बातें सुनलीजिये नहीं तो हम सब साहूकार लोग आपके शहरको छोड जायँगे ये बात साहूकारोंकी सुनकर राजाने कहा अच्छा उसको बुलाओ तब सब साहूकार मदनसेनको साथले राजाके सामने लेगये तब राजाने पूछा तुझे क्या कहना है मेरे सामने कह ? मदनसेनने कहा कि, मैंने आपका क्या कुसूर किया है जिससे आपने मुझे मरवानेका हुक्म दिया है ? तब राजाने कहा तू इस वेश्याका चोर है, यह सुनकर मदनसेनने कहा कि;हे राजा ! मैं इस वेश्याका

चोर नहीं हूं ये मेरी स्त्री है यह मुझको कुएँमें डालकर इस फकीरके साथ चली आई है. तब चन्द्रप्रभानें कहा महाराज! मैं इस भडुवेको क्या जानूं जाने ये कौनहै मेरा तो चोर है फिर मदनसेन बोला कि, हे राजा! जो यह मेरी स्त्री नहीं है तो कुछ वस्तु रास्तेमें संकल्प करके मैंने इसको दी है सो मेरी अमानत मुझको संकल्प करदे. तब रानी चन्द्रप्रभाने कहा मुझे मंजूर है जो कुछ मुझे संकल्प किया है सो मैं इसे देदूँगी तब मदनसेनने कहा कि अच्छा अपने हाथमें पानीले मेरा तेरा इन्साफ इस राजाकी सभामें सही सही निवट जावेगा. तब रानी चन्द्रप्रभाने हाथमें जल लेकर यों कहा कि जो कुछ वस्तु इसने मुझे रास्तेमें संकल्प करी है वोही आज इस सभाके बीचमें इसको देतीहूं यों कहकर रानी चन्द्रप्रभाने पानी अपने हाथका छोडा तो पानीके छोडतेही चन्द्रप्रभाके प्राण निकलगये तब तो सब लोग आश्चर्यमें हुए और मदनसेनसे राजाने कहा ये क्या बात हुई? इसका सब सच्चा हाल मेरे सामने कह? तब मदनसेनने अपने पिताका देश निकाला देनेसे लेकर अबतक का हाल कुल सबके सामने बयान किया तब तो राजाने मदनसेनको अपनी छातीसे लगालिया और अपनी बेटीकी शादी मदनसेनके साथ करदी और उस फकीरकोभी फांसी देदी सो तोता बोला ऐ मैना! जबसे यह दास्तान मैंने अपने बडोंसे सुनाहै तबसे मैंभी औरतोंसे नफरत रखताहूं और इसी सबबसे आजतक मैंने अपना व्याह नहीं कियाहै तब मैना बोलीकी ऐ तोता! तैंने भी बात तो सच कही है मगर मर्दकी जात ज्यादा बेमुरव्वत निकलेगी और औरतोंमें सौमें एकही बेपीर निकलैगी. जो मेरी बात झूंठ मानता है तो एक दास्तान मैं और तेरे रूबरू कहती हूं

दास्तान तीसरा मैनाका तोतेसे ।

एक चन्द्रपुर नाम नगर था जहां चक्रदत्त नाम राजा राज्य करता था उसका बेटा मदनपाल नाम करके बडा रूपवान् चतुरथा सो एक दिन किसी कुसूर पर राजा चक्रदत्तने उसे देश निकाला देदिया. तब मदनपालने अपने महलमें आकर अपने रास्ता खर्चको चार लालोंको रखकर और कुछ थोडासा द्रव्य लेकर शहरसे जंगलके तरफकी राहली. जब अपने शहरसे कुछ दूर पहुँचा तो एक साधूका आश्रम देखा तब मदनपाल उसे दंडवत करके बैठगया तब वह साधू बोला बच्चा ! तू कौनहै और यहां कैसे आयाहै ? तब मदनपालने कहा कि, महाराज ! मैं राजा चक्रदत्तका बेटाहूं और मदनपाल मेरा नामहै मुझे मेरे पिताने देश निकाला दे दियाहै सो मैं परदेशको जाताहूं इस लिये मेरे मनमें आई कि महाराजके दर्शनभी करता चलूं. तव साधू बोला कि अच्छा बच्चा ? तुम परदेशको जाते हो तो तुमको चार बातें हम सिखलाते हैं तुम हमेशा इन बातोंपर अमल रखना ये बातें परदेशमें बडे काम आवेंगी, तब मदनपालने कहा आप कृपा कर उन चारों बातोंको कहिये, तब साधूने मदनपालसे कहा एक बात तो यहहै कि परदेशमें एक जनेसे दो भले होतेहैं, और दूसरी बात यहहै कि परदेशमें किसी दूसरेके हाथका किया हुआ भोजन न करे यदि खाय भी तो पहिले उसमेंसे थोडासा किसी जानवरको खिलाकर खाय, और तीसरी बात यह है कि, परदेशोंमें किसी दूसरेकी बिछाई हुई खाटपर न सोवे, और चौथी बात यह है जब कहीं बैरियोंके फंदेमें फँसजाय तो जहांतक बनें नम्र होकर और उन्हें ज्ञानकी बातें सुनाकर अपना मतलब निकालना चाहिये, ये चारों बातें मेरी याद रखियो; भूलियो मत. ये

चारों बातें साधूकी सुन मदनपाल आगेको चला कि चलते चलते कितनेही दिनोंके बाद एक वीयाबान जंगलमें पहुँचा वहां पर क्या देखताहै एक चील्ह किसी कछुएके बच्चेको लेकर उडी चली आतीहै सो दैवसंयोगसे वह बच्चा चील्हके पंजेमेंसे निकलकर गिरपडा और तडफने लगा तब मदनपाल उस तडफते हुए बच्चे-को देखकर अपने मनमें कहने लगा कि इस बच्चेको पालना चाहिये इसके पालनेसे दो बातें हासिल होंगी. एक तो यह कि इसकी जान बंचजायगी और दूसरी बात यह है कि एकसे दो होजायँगे. ये बात मनमें विचार कर उस बच्चेको लेकर आगे चला तब चलते चलते बहुत मुद्दत गुजरी तो १ दिनका जिक्र है कि, एक जंगलमें पहुँचा उस वक्त दोपहरका समय होगया तो एक पीपलके पेडके नीचे मीठा कूआ और उत्तम स्थान देखकर मद-नपालने मनमें विचारा कि, अब इसी स्थान पर दुपहरी बिताना चाहिये. यह बात सोचकर मदनपालने स्नान ध्यान करके जो कुछ पास खानेको था खाया और कछुएके बच्चेको भी खिलाया फिर मदनपाल उस बच्चेसे बोला कि ऐ बच्चे! तुम यहां बैठे रहना मैं जरा देर सोलूं तब बच्चेने कहा बहुत अच्छा आप सोइये मैं बैठाहूं, तब मदनपाल सोरहा और उस पेडके ऊपर एक सर्प और एक कौआ रहताथा सो उनका हमेशा यह दस्तूर था कि जब कोई मुसाफिर उस पेडके नीचे आनकर ठहरता तो सर्प उसे काटता और कौआ उस-की आंख निकाल लेजाता सो जब मद[illegible] उस पेडके नीचे सोया तब वह सांप उस पेडसे नीचे उतरकर मदनपालको काटकर पेडपर चढगया तब कछुएका बच्चा मदनपालको मरा हुवा देखकर बहुत घबडाया और मनमें सोचने लगा कि अब मैं क्या करूं और अब मैं कैसे अपने वतनको पहुँचूंगा इस सोचमें बच्चा मदनपालके माथे

पर बैठा बैठा रोरहा था कि इतनेमें कौआभी पेडसे उतर कर मदन-
पालके माथेपर आनकर बैठा और चाहा कि मदनपालकी आंखें
निकाललूं सोई कछुएके बच्चेनें झपटकर उस कौएको मुखसे पकड
लिया तब तो कौआ पुकारा कि अरे यार साप जल्दीसे आइयो नहीं
आज मेरी भी जान चली. ये आवाज कौआकी सुनकर साँप दौडा
और आनकर देखा तो कौआको कछुएने पकड रक्खाहै तब सर्पने
आतेही कई फन बडे जोरसे उस कछुएके मारे परंतु कछुएने अपना
मुख भीतर को कर लिया लाचार जब सांपका कुछबस नहीं चला
तब कछुएसे कहने लगा कि तू मेरे यारको छोडदे तब कछुएने
कहा मैं इसे नहीं छोडूंगा क्योंकि तैंने मेरा यार खाया है सो मैं
अब तेरे यारको खाऊंगा ये बात कछुएकी सुनकर सर्प बोला ऐ
कछुए! इसे किसी भांति छोड तब कछुआ बोला जो तू मेरे यारको
छोडदे तो मैं तेरे यारको छोडदूं यह सुनकर सर्पने काटी जगहपर
मुँह लगा कर मदनपालके शरीरसे सब जहर चूसलिया. तब कछु-
एनें भी कौएको छोड दिया और मदनपाल उठ बैठा और कछु-
एसे कहनेलगा कि, आज तो हम बहुत सोये तब कछुएके बच्चेनें
सांपके काटनेका कुल हाल कहा जिसको सुनकर मदनपाल कहने
लगा कि, आज उस साधुकी बात काम आई यदि मैं अकेला होता
तो काहेको जीता बचता. यह कहकर फिर आगेको चले तो कित-
नेही दिनोंके बाद मदनपाल समुद्रके किनारे पर पहुँचा तब कछुएने
कहा हे मित्र! हमारा तो रहनेका स्थानआगयाहै अगर आपकी
मरजी हो तो मैं अपने माता पिताके पास हो आऊं मैं जबसे उनसे
जुदा हुआहूं तबसे मेरे बिना वे बडे दुःखी होंगे यह बात सुनकर
मदनपालने उस कछुएको बिदा किया और आप आगेको चला
तो रात्रिमें एक जंगलमें जाकर रहा उस जंगलमें ठग रहता था

उस ठगके चार बेटे और दो बेटी थीं उसकी बडी बेटी कोकशास्त्र पढीथी सो उस समय वह अपने बाप और भाइयोंसे कहने लगी कि भाइयो ! मुझको ऐसा सगुण मालूम होताहै कि, इस जंगलमें कोई ऐसा मुसाफिर आया है कि उसके पास चार लाल हैं अगर तुमसे वह लाल लाये जावें तो जन्म भरके लिये निहाल हो जाओ मगर उसको मारना मत जीता ही पकड लाओ इस बातको सुन कर वे पांचों बाप बेटे जंगलकी तरफ चले और ढूँढने लगे तो देखते क्याहैं कि, एक मनुष्य एक पेडके नीचे सो रहा है और यह वही मनुष्य है जिसके पास लाल हैं यह पहिचान कर ठग उस सोते हुएको पकड लाकर अपनी बेटीके हवाले किया और उससे कहने लगे कि, पकड लानेका काम तो हमारा था और इसपर से लालोंका निकालना तेरा काम है. यह बात सुनकर ठगकी बडी बेटीने कहा तुम्हें कुछ काम नहीं उन लालोंको मैं निकलवा लूंगी उस वक्त जो उस ठगकी छोटी बेटीने मदनपालको देखा तो उसे देखतेही आशक होगई परन्तु बाप और भाइयोंके डरके मारे कुछ न बोली मगर उसके बचानेकी फिकर हरदम करती रही इसी फिक्रमें दिन बीतगया और रात्रिका समय आगया तब ठगकी बडी बेटीनें रसोई करी और उसमें जहर मिलाया और थाली परोसके मदनपालसे बोली कि आप भोजन कर लीजिये तब मदनपाल भोजन करनेको बैठा और उस साधूकी दूसरी बात याद आई तब उस थालीमेंसे थोडासा सामान लेकर कुत्तेको डाला तो कुत्ता खातेही मरगया तब मदनपालने वह भोजन न खाया और मनमें कहने लगा कि,साधू की दूसरी बात भी काम आई फिर ठगकी बेटीनें एक कच्चे सूतका पलंग एक ऐसे कुएँ पर बिछवाया कि जिसमें आग भरीथी और उसपर उम्दा गद्दा तकिया लगाकर मदन

पालसे कहा कि आप पलंग पर जा सोओ तब मदनपाल उस पलंग के पास गया और उस पर बैठना चाहा तो उसी वक्त साधूकी तीसरी बात याद आई तब मदनपालने उस गद्देको फटकारा तो पलंगका सब सूत टूट गया और उसके नीचे आगका कूआ नजर आया तब मदनपाल मनमें कहने लगा कि साधूकी तीसरी बात भी काम आई यह सोच कर एक टूटी सी खाट पडीथी उसपर पडारहा और मनमें सोचने लगा कि आज रातको प्राण बचने कठिन हैं इतनेमें ठगकी छोटीबेटी मौका पाकर मदनपालके पास गई और बोली कि हे प्यारे! में दिलोजानसे तुझपर मरती हूं परंतु आजकी रात मेरा कुछ बस नहीं आज मेरी बडी बहनकी ओसरी है सो जिस तरह बने उस तरह आजकी रात इससे प्राण बचा फिर कलके दिन मेरी बारी आवेगी सो मैं तो तेरी ताबेदार हूं तुझको साफ बचादूंगी यह कहकर वह तो चली गई और उसकी बडी बहन हाथमें कटारी लेकर मदनपालके पास आई तब मदनपालने मनमें सोचा कि आज इस कमबख्तसे प्राण बचना कठिनहै परंतु देखो उस बाबाजीकी चौथी बातका समय आज है या तो यह बातभी अपना काम करती है नहीं यह तो काम तमाम करतीहै इसमें कुछ संदेह नहीं है इतनेमें ठगकी बडी बेटी आई और लाल आंखें कर मदनपालकी छातीपर चढबैठी और बडे जोरसे बोली कि अरे मुसाफिर या तो अपने चारों लाल तू मुझे दे दे नहीं तो तुझको छूरियोंसे गोदूंगी तब मदनपाल बोला कि हे ठगकी बेटी! मेरे पास लाल नहीं हैं और जो तू मुझको मारैगी तो मारकर ऐसे पछतावेगी जैसे बंजाराने काल्‌ कुत्तेको मारकर पछतायाथा ये बात मदनपालकी सुनकर ठगकी बेटीने कहा कि बंजारा काले कुत्तेको मारकर क्यों पछताया उसका दास्तान आदिसे अंततक तू मुझसे कह ? तब मदनपालने अपने

मनमें सोचा कि खैर कुछ देरको तो जान बची आगेका ईश्वर मालिक है यह सोचकर मदनपाल बंजारेका दास्तान कहने लगा—

दास्तान बंजारेका।

हे ठगकी बेटी! एक बनजारा था उसके किसी मालमें ऐसा टोटा आया कि उसके बैलतक बिकगये फकत एक कालू कुत्ता उसके पास बाकी रहगया तब बनजारेने मनमें विचारा कि इस कुत्तेको किसी साहूकारके यहां गिरवी रखकर कुछ रुपया लेना चाहिये यह विचारकर वह बंजारा उस कुत्तेको लेकर किसी शहरमें गया और किसी साहूकारके यहां पांचहजार रुपयोंमें उस कुत्तेको गिरवी रखकर बंजारेने उस साहूकारसे कहा कि, जबतक हम आपका व्याज रुपया न देंगे तबतक यह कुत्ता आपके पास रहेगा. यह कहकर बनजारा तो चला गया और वह कुत्ता साहूकारकी दूकानपर रहने लगा दैवयोगसे रातके समयमें चोर आये और साहूकारकी दूकानमें घुसे और सब अशर्फियोंकी थैलियोंको लेचले परंतु उस कुत्तेने कानभी न फटफटाये कुत्तेनें मनमें सोचा कि जो मैं अब भूंकताहूं तो ये चोर मेरे अभी टूक उडाते हैं इससे इन्हें लेचलनेदो देखें ये इस मालको कहां लेजा-यँगे इसीसे वह कुत्ता न भूंका जब ये चोर इन थैलियों को लेकर चले तो कुत्ता उनके पीछे पीछे होलिया जब वे चोर शहरके बाहर पहुँचे और वहां एक तालाब देखा तब उसमें सब थैलियोंको डाल चोर वहाँसे चले गये यह देखकर कुत्ताभी आनकर अपनी दूकानपर बैठगया इतनेमें सबेरा होगया और साहूकारने दूकानपर आकर देखा तो माल असबाब कुछ नजर न आया तब साहूकार रोने लगा और कहने लगा कि हाय! हमारे चोरी होगई इस बातको सुनकर बहुतसे लोग इकट्ठे होगये और साहूकारको समझाने लगे तब साहू-

कार बोला मुझे इस मालके जानेको इतना सोच नहीं है जितना इस कुत्तेको सोचहै,लोग कहतेहैं कि बंजारेका कुत्ता सौ आदमीकी बराबर काम देताहै सो यह नमकहराम भूंकातक नहीं. अगर यह उस समय भूंकता तो आस पास के सब आदमी जग आते तो मेरा माल काहेको जाता जब यह बात साहूकारने कही तब तो कुत्ता उस साहूकारका दामन पकडकर बार बार दूकानके नीचे खीचनेलगा तब दो चार आदमियोंने साहूकारसे कहा कि यह कुत्ता कुछ न कुछ कहताहै इसके साथ चलो तो सही देखो यह कहां लिये चलताहै क्योंकि यह बात सहीहै कि बंजारेका कुत्ता बडा अकलमंद होताहै यह सुनकर वह साहूकार कुत्तेके पीछे चला तब आगे कुत्ता और पीछे पीछे सब लोग चले तब वह कुत्ता सबको उस तालाबपर लेगया और आप उस तालाबमें कूदपडा और गोता मारकर १ थैली दांतोंसे पकड लाया तब तो उस थैलीको देखकर सब लोग कहने लगे कि सब माल इसीमें है ये बात लोगोंकी सुनकर साहू-कारके नौकर चाकर उस तालाबमें कूदे और सब माल निकाल कर साहूकारके हवाले किया तब तो साहूकार बहुत खुश हुआ और कहने लगा कि यह सब माल आज मैंने इस कुत्तेकी बदौलत पाया है यह कहकर एक कागज पर सब हाल लिखकर उस कुत्तेके गलेमें बांधकर साहूकारने कुत्तेसे कहा कि ऐ मेरे भाई कुत्ते ! मैं तेरे ऊपर बडा खुश हुआ क्योंकि ये माल मुझको तेरी बदौलत मिला है इससे मैं तुझसे खुश होकर कहताहूं कि जहां तेरा मालिकहै वहां तू जा और तेरे मालिकपर जो मेरा रुपया चाहिये था सो आज मैंने भरपाया यह कहकर साहूकारनें कुत्तेको रुखसत किया तब कुत्ताभी यह बात सुनकर अपने मालिकके पास रवाना हुआ जब कई दिनके बाद वह कुत्ता एक जंगलमें

चला जाता था कि इत्तिफाकसे उसका मालिक बंजाराभी उसी रास्तेसे आताथा जब कि बंजारेकी नजर वह आता हुआ कुत्ता पडा तो बंजारा उस कुत्तेको देखकर मनमें गुस्सा खाकर कहनेलगा कि हाय! इस कुत्तेने बडा जुल्म किया जो यह भाग कर चला आया वह साहूकार क्या कहता होगा आज हमारी सब साख कुत्तेनें खोदी और हमको बेईमान बनाया ये बंजारा मनमें कहता था कि इतनेमें कुत्ताभी पास आन पहुँचा उसी वक्त बनजारेने कुत्तेके एक ऐसी तलवार मारी कि उस कुत्तेका शिर धडसे अलग होगया वह चिट्ठी जो कुत्तेके गलेमें बँधीथी सो अलग जा पडी तब उस चिट्ठीको बनजारेने उठाली और उसको पढने लगा तो उसमें कुत्तेकी कारगुजारीका हाल देखकर बहुत रोया और कहने लगा कि हाय! मैंने बहुत बुरा किया जो ऐसे अपने प्यारे कुत्ता को मारा सो मैंना कहने लगी कि हे तोता! तू देख ऐसी बेमुरव्वती मरदोंकी सुनकर मेरा कलेजा धडकताहै कि ऐसे प्यारे कुत्तेका जरा तरस न आया इसीसे मर्दकी जात बेमुरव्वत और बेपीर होतीहै तब तोता बोला यह बात बेमुरव्वती की नहीं है क्योंकि बंजारेने कुत्ता मारा तो अपनी बात पर मारा क्योंकि मैं पहले कह चुका हूं कि मर्द बातके पक्के और सखुनके सच्चे होतेहैं इसी सबबसे बंजारेने कुत्तेको मारा कि इसने मेरी बातमें फर्क डाला इस बातमें मर्द खोटा नहीं तब मैंना बोली अब मदनपाल और ठगकी बेटीका हाल याद कर, मदनपाल उस ठगकी बेटीसे कहने लगा कि, तूभी मुझे मारकर इसी तरह पछतावेगी। ये बात सुनकर ठगकी वह बेटी बोली कि मैं तेरी ऐसी बातोंमें नहीं आऊंगी तू मुझे सच बतादे वे चारों लाल कहां हैं नहीं तो मैं तुझको अभी जानसे मारतीहूं तब मदनपालने

कहा हे ठगकी बेटी ! मेरे पास लाल नहीं हैं और जो तू मुझको मारेगी तो ऐसे पछतावेगी जैसे राजा कृष्णदत्त अपने हीरामन तोतेको मारकर पछताया था तब ठगकी बेटी बोली कृष्णदत्त अपने हीरामन तोतेको मारकर क्यों पछताया ? वह दास्तान तू मुझसे कह तब मदनपाल बोला कि, हे ठगकी बेटी ! वह दास्तान मैं तेरे रूबरू कहता हूं ध्यान देकर सुन ॥

दास्तान हीरामन तोतेका ।

मुल्क हिन्दुस्थानके पटना शहरका एक कृष्णदत्त नाम राजा था उसके पास एक तोता बहुत पढा हुआ और बडा चतुर था एक दिनका जिक्र है कि राजा कृष्णदत्त श्रीगंगा स्नानको गया और तोता उसके साथ था उस तोतेको किनारे पर बिठलाकर आप स्नान करने लगा कि, इतनेमें एक अमरफल उस नदीमें बहता हुआ आया और उस तोतेकी नजर पडा तब तोतेने मनमें बिचारा कि यह अमरफल लाकर राजाको देना चाहिये इसके खानेसे मेरा प्यारा राजा अमर होजायगा. यह मनमें सोचकर उस फलको नदीमेंसे ले आया और कृष्णदत्तसे कहने लगा कि, हे राजा ! ये अमृतफल है अगर इसको आप खाओगे तो अमर होजाओगे यह बातें तोतेकी सुनकर राजा कृष्णदत्त बहुत खुश हुआ कि, हे मेरे हितके करनेवाले हीरामन तोते ! तैंने जो कहा कि, आप इस फलको खाओगे तो अमर होजाओगे सो तेरा कहना ठीकहै परंतु हम अकेले अमर होके क्या करेंगे इससे तू कहै तो इसे बागमें बुवादें जब इसका बडा पेड होजायगा और इसमें फल आजायगा तब अपने कुटुंब भरको खिलाकर अमर कर लेंगे. यह बात राजाकी सुनकर तोतेने कहा बहुत अच्छा तब राजाने अपने बागके मालीको बुलाकर वह फल देदिया और उससे कहा कि इसका पेड बागमें

लगाओ और जब इसमें फल लगें तब उन फलोंको हमारे पास लाना ये वचन राजाका सुनकर मालीने उस फलको बागमें जाकर बो दिया। थोडेही दिनोंमें उसका पेड तैयार होगया और उसमें फलभी आने लगे सो हे ठगकी बेटी ! एक दिन एक फल पककर जमीनपर गिरा और उसको जमीनपर सांपने सूंघलिया सो वह अमृतफलका विषफल होगया तब मालीने जो उस पेडके फलको पडा देखा तो उस फलको उठाकर राजाके पास लाया और दरबारमें जाकर वह फल राजाकी नजर किया. तब राजा उस फलको देखकर बहुत खुशहुआ और उस फलको हाथमें लेकर राजा मनमें सोचने लगा कि प्रथम इस फलको कुत्तेको खिलाना चाहिये इससे राजाने वह फल अपने कुत्तेको खिलाया और कुत्ता इस फलको खातेही मरगया. इस बातको देखकर राजा बडा गुस्सा होकर कहने लगा कि, देखो इस बेईमान तोतेकी बात हमें जहरफल खिलाकर मारना चाहा इस बातको विचारकर राजाने गुस्सेमें आनकर तोतेको मार डाला और मालियोंको बुलाकर कहा कि उस पेडके चारों तरफ कांटेकी बाड लगादो इससे इस जहरफलको कोई खा न सके. ये सुनकर मालियोंने वैसाही किया.फिर एक दिनकी बातहै कि उस शहरमें एक सास बहू रहतीथीं सो एक दिन उन दोनों सास बहुओंमें लडाई हुई तो डोकरी घरसे निकलकर राजाके बागको चली और कहनेलगी कि आज मैं राजाके बागमें जाकर जहरफल खाऊंगी यह कहकर बागमें गई और एक फल उठाकर खालिया जब उस डोकरीने वह फल खाया तो वह डोकरी सोलह वर्षकी जवान औरत होगई तब तो सब शहरमें यह बात फैली कि, एक डोकरी राजाके बागमेंसे अमरफल खाकर अमरहोगई जब यह बात राजाने सुनी तब एक बुड्ढे आदमीको बुलाकर वह फल खिलाया तो वह बुड्ढाभी उस

फलको खाकर जवान होगया तब राजाने जाना कि यह अमरफलही है और मनमें कहने लगा कि मैंने बहुत बुरा काम किया जो अपने हितकारी तोतेको मारा इतनी कथा कहकर मदनपाल कहने लगा कि हे ठगकी बेटी ! मेरे पास लाल नहीं हैं तू मुझे मारकर ऐसेही पछतावेगी इतनेमें आधी रात व्यतीत होगई तब वह ठगकी बेटी बोली कि, खैर आज मुझसे तो तैनें बातें लगाकर प्राण बचाये मगर अब आधी रातसे मेरी छोटी बहनकी ओसरी है वह कभी तुझे जीता न छोडेगी यह कहके वो ठगकी बेटी अपनी छोटी बहनके पास आई और कहने लगी कि, देख बहन मुझको उस मुसाफिरने बातोंमें लगाकर प्राण बचालिये पर अब उससे लालोंका लेना तेरे अखत्यारहै-यह बात अपनी बडी बहनकी सुनकर ठगकी छोटी बेटी मनमें तो बहुत खुश हुई परंतु ऊपरले मनसे कहने लगी कि, तुम कुछ फिकर मत करो मुझे बिना लाल दिये यह मुसाफिर हरगिज जीता न बचेगा- यह कहकर वह ठगकी छोटीबेटी मदनपालके पास गई और जाकर कहने लगी कि, हे प्राणप्यारे ! धन्य उस परमेश्वर और तेरी चतुराईको कि तुमने अपनी जान इस हत्यारीके हाथसे बचाई अब आप किसी बातकी फिकर मत करो अब एक महीनेका ओसरा मुसाफिरोंके मारनेका मेरा है और हमारा सदासे यही दस्तूर है कि हमारे भाई और बाप तो मुसाफिरोंको पकड लाते हैं और हम दोनों बहन अपने अपने ओसरेसे उन्हें मारकर उनका धन लेलेती हैं सो अब ओसरा मेराहै और मैं आपकी दिलोजानसे ताबेदारहूं जैसा आप मुनासिब समझें वैसा करें. तब मदनपाल बोला कि, हे प्यारी ! जबसे मैंने तुझे देखाहै तबसे मेरा भी मन तेरेही पासहै तुझसे मेरा कुछ छिपाव नहीं है. यह सुन ठगकी बेटी बोली कि यदि, आप यह कहो कि मुझसे छिपाव नहीं है तो

बताओ वे चारों लाल कहां हैं उसने उत्तर दिया कि वह चारों लाल मेरी जांघमें रक्खेहैं अगर तुझे लेनेकी दरकार हो तो मेरी जांघ छुरीसे चीरकर निकाल ले तब वह ठगकी बेटी बोली कि, हे प्राणप्यारे ! आपके ये लाल आपको मुबारिक रहैं मुझे कुछ लालोंकी दरकार नहींहै मैं तो आपके चरणोंकी दासीहूं और हमेशा आपके दर्शनकी भूँखी हूं. यह बात सुनकर मदनपाल बोला कि, आपने जो कहा सो ठीक है परंतु यहाँ रहकर हमारी तुम्हारी मुहब्बतका निर्वाह कठिन है. क्योंकि यह बात तुम्हारे भाइयोंको मालूम होजायगी तो हमारी तेरी दोनोंकी जान चली जायगी इस लिये जो आपकी मरजी होय तो यहांसे चलना मुनासिबहै यह बात मदनपालकी सुनकर ठगकी छोटी बेटी बोली बहुत अच्छा मुझे चलनेमें कुछ उज्र नहीं परंतु यहांसे चलनेका एक उपाय मैं तुम्हें बतातीहूं कि मेरे बापके दो सांडनीहैं सो एक तो दिनभरमें सौ कोस चलती है और दूसरी दिनभरमें साठ कोस चलतीहै सो तुम उनमें से बडी सांडनी ले आओ उसपर बैठकर हम तुम दोनों चले चलें जिससे मेरे यह घरवाले न पकडसकें. यह बात ठगकी बेटीकी सुनकर मदनपाल सांडनी लेनेगया परंतु मारे डर और घबराहटके बजाय सौ कोस चलने वाली सांडनीके ६० कोस चलनेवाली सांडनी ले आया तब ठगकी बेटीभी बहुतसा माल मता लेकर मदनपालके साथ चलदी सो जब वह सांडनी चलते चलते साठ कोस पहुँची तब पैर अडाकर खडी होगई अब यहां तो बीच जंगलमें सांडनी मदनपाल और उसकी प्यारीके होश उडाये और उधर वह ठग सबेरा होतेही जागा तो देखा कि छोटी बेटी और मुसाफिर नहीं है तब उसने जाना कि वह बदमाश निकल गया और हमारी छोटी बेटीकोभी लेगया यह सोचकर वह

सांडनियोंको देखने गया तो देखा कि बडी सांडनी मौजूदहै और छोटी नहींहै तब वह ठग कहने लगा कि भला वह साला कहाँ जायगा जब मेरी बडी सांडनी मौजूदहै तो अभी पकडकर लाताहूं यों कहकर बडी सांडनीपर सवार होके चल दिया और दोही घंटेके बाद उस जंगलमें जा पहुँचा जहां मदनपालकी सांडनी अडी थी मदनपाल उस ठगको आता देखकर घबराया और ठगकी बेटीसे कहने लगा कि, देखो प्यारी तुम्हारा बापभी आन पहुंचा अब इससे मेरे प्राण बचाने आपके हाथहैं. तब ठगकी बेटी बोली कि आप घबडाओ मत इस पेडपर जा चढो जब मेरा बाप तुमको पकडनेको पेडपर चढैगा तब मैं उसकी सांडनी पर बैठकर तुम्हारे गुद्देके नीचे सांडनीको लगादूंगी सो आप उसपर कुद आना फिर इससे साफ निकल चलेंगे ये वचन सुनकर मदनपाल पेडपर चढगया इतनेमें वह ठगभी आन पहुँचा मदनपालको पेडपर बैठा देखकर ठग सांडनीपरसे उतरकर मदनपालको पकडनेको पेडपर चढा उधर ठगकी बेटी उस बडी सांडनीपर चढके मदनपालके गुद्देके नीचे आई तब मदनपाल उस गुद्देपरसे कूदके उस सांडनी पर बैठकर चलदिया और ठग देखताही रहगया. मदनपाल वहांसे चलकर कई दिन पीछे एक शहरमें आया और वहां बहुत दिन तक उस ठगकी बेटीके साथ ऐश आराम करता रहा. वह ठगकी बेटी मदनपालको प्राणोंसे प्यारा समझतीथी जब मदनपालको ऐश आराम करते करते बहुत दिन हुए और देश निकालेके दिन समाप्त होगये तब मनमें विचारने लगा कि, अब तो अपने वतनको चलना चाहिये, परंतु एक बात कठिन है कि इस ठगकी बेटीको साथ कैसे लेचलें जो पिता देखेंगे तो फिर मुझे देशनिकाला देदेंगे. ये बात मनमें विचारकर जब ठगकी बेटी सोई तब मदनपालने तलवारसे उसे

मारकर और कोठेमें बंद कर आप सबमाल असवाब लेकर अपने वतनको रवाना हुआ- सो मैना बोली कि ऐ तोते! उस ठगकी बेटीने कैसा सलूक किया कि मदनपालकी जान और माल दोनों बचाये उसके बदलेमें अपने प्राण गमाये इसीसे मैं मर्दोंसे बहुतही नफरत खातीहूं तब तोता बोला तेरा कहना सहीहै परंतु एक दास्तान मुझको याद है सो मैं तेरे आगे कहताहूं अब जो इस दास्तानका जवाब तोता देगा सो इसके दूसरे भागमें लिखेंगे ॥

इति श्रीतोतामैना प्रथम भाग समाप्त ॥ १ ॥ शुभम् ।

दास्तान चौथा तोतेका ।

तोता बोला कि, हे मैना ! एक पुराना दास्तान मैं तेरे सामने कहताहूं तू ध्यान लगाकर सुन-एक विचित्रपुर नाम करके बडा भारी शहर था उसमें एक बडा धनवान बनियां रहता था उसके एक बेटा था उस बेटेकी राजाके बेटे और दीवानके बेटेसे यारी थी उन तीनों यारोंमें ऐसी प्रीति थी कि, एकके बिना देखे दूसरेको चैन नहीं पडती थी, इसप्रकार प्यारमें बहुत मुद्दत गुजरी- एक समयका जिक्रहै कि बनियेके बेटेने यारोंसे कहा कि लो यार ! परसोंके रोज हम अपनी सुसरालको चलैंगे तुमकोभी हमारे साथ चलना होगा यह बात साहूकारके लडकेकी सुन दोनों यारोंने कहा हां यार ! जरूर चलेंगे परंतु हम तुम्हारी सुसरालमें नहीं चलेंगे अन्तमें जब वही दिन आन पहुंचा और साहूकारका लडका अपनी सुसरालको चला तब वह दोनों यार भी उसके साथ होलिये- जब दो चार दिनके बाद अपनी सुसरालमें आन पहुंचा तब उस शहरमें पहुंचतेही राजाके लडकेने कहा कि लो यार ! हम तो यहां सरायमें रहैंगे और तुम अपनी सुसरालमें

जाओ. यह कहकर राजा और दीवानका लडका सरायमें गये और साहूकारका लडका अपनी सुसरालको रवाना हुआ सौ हे मैना! जिस वक्त वह राजाका लडका और दीवानका लडका दोनों सरायमें चले तो उन दोनोंको देखकर सरायके दरवाजे पर एक बुढिया खडीथी वह रोने लगी उस रोतीहुई बुढियाको राजाके लडकेने तो न देखा परंतु दीवानके लडकेकी नजर उसपर पडी उस वख्त दीवानके लडकेने सोचा कि, इस बुढियासे रोनेका सबब पूछना चाहिये परंतु पहिले डेरेकी दुरुस्ती करलें फिर बुढिया के रोनेका हाल दर्याफ्त करेंगे. यह दिलमें सोचकर सरायके अंदर गये और निहायत उम्दा मकान देखकर उसमें डेरा किया उसी मकानके बराबर एक रंडी निहायत हसीन आफतावके मानिंद रहतीथी राजाके लडकेकी नजर उसपर पडी तो वह दिलोजानसे आशक होगया और दिलमें कहने लगा कि, आजकी रात इसी परीके साथ ऐश व आराम करें तो बेहतर है. ये बात दिलमें विचारकर उस वेश्याको अपने पास बुलाया और रातभर उसे अपने पास रक्खा जब राजाका लडका और रंडी दोनों ऐशमें सोये तो दीवान का लडका उठकर उस बुढियाके पास गया और उस बुढियासे पूछने लगा कि, ए मा! तुम जो हम दोनोंको आता देख रोईथी इसका क्या सबब है वह हमसे कहिये तब वह बुढिया कहने लगी कि ऐ बेटा! मेरे रोनेका यह सबबहै कि ए रंडी जो तेरे यारके पास सोती है सो इसके पेटमें एक सांपन रहतीहै जब कोई मुसाफिर इसके पास सोता है तब आधीरातके वक्त वह सांपन इसके पेटसे निकल जमीनपर लेट मुसाफिरको डस लेतीहै और फिर इसीके पेटमें घुस जातीहै इसीतरह वह मुसाफिरोंको काट काट कर मारा करतीहै और यहांके राजाके यहां ऐसा अंधेरहै कि इस सरायमें

एक मुसाफिर रोज मरताहै इस वास्ते तुम्हारे रूपको देखकर मेरी छाती फटी कि, आज ये विचारेभी इस रंडीकी सोहबतमें मारे जायँगे. ये बात बुढियाकी सुनकर दीवानका लडका वहां गया जहां राजाका लडका सोताथा सो मूढा बिछा हाथमें नंगी तलवार लेकर बैठ गया जब आधी रात गुजरी तब वह सांपन रंडीके मुँहसे निकल पलंगके नीचे आनकर जमीनपर लेटने लगी उसी वक्त दीवानके लडकेने उसके तलवारसे टुकडे टुकडे कर अपनी ढालके नीचे दबा दिये. जब दीवानके लडकेने उस सर्पको मार लिया तो उसके दिलमें यह ख्याल पैदा हुआ कि हमारे यारकी जान तो बची परंतु और भी कुछ हाल यहांका देखना चाहिये ये दिलमें विचार तलवार हाथमें ले सरायके बाहर निकला उस वक्त देखता क्या है कि, एक औरत नौ जवान सो- लह शृंगार किये चली आतीहै उसे देख दीवानके लडकेने दिलमें सोचा कि इस औरतका हालभी मालूम करना चाहिये ये मनमें विचार उस औरतके पीछे पीछे होलिया वह औरत बीयाबान जंगलके बीच एक फकीरके तकियेमें पहुँची उधर वह फकीरभी दूजके चन्द्रमाके समान उसकी बाट देख रहाथा और मनमें कह- ताथा कि आज क्या सबबहै जो प्राणप्यारी अबतक नहीं आई इत- नेमें वह और भी आन पहुंची तब वह फकीर उसे देखकर गुस्से हो बोला ऐ हरामजादी ! आज तूने इतनी देर क्यों लगाई ? तब वह औरत बोली कि ऐ फकीर साहब ! आज मेरा खाविंद मुझे लेनेको आया है इसलिये मेरे घरके सब उसकी खातिरमें लगे रहे अब जब सब लोग सोगये तब मैं आपके पास आई हूं यह बात सुन फकी- रको निहायत गुस्सा आया और गुस्सेके मारे दोनों हाथोंसे उस औरतका मुँह पकडकर दातोंसे नाक काटली तब वह औरत

रोती हुई अपने घरको चली उस वक्त दीवानके लडकेको बडा गुस्सा आया कि, इस बेईमान ने यह क्या किया कि ऐसी खूब सूरत औरतकी नाक काटली यह बात मनमें सोच निहायत सोच निहायत गुस्सेमें आ एक तलवार ऐसी मारी कि उस फकीरका सिर धडसे अलग हो जमीनपर गिरपडा जब फकीरका सिर कटगया तब दीवानका लडका वहांसे चलदिया तो आगे चलकर देखता क्या है कि एक छोटासा मंदिर दिखलाई दिया जहां चार चोर बैठे आपसमें बात कर रहेथे दीवानका लडका उनकी बात सुननेको चुप चाप खडा होगया उनमेंसे एक चोर बोला कि जो आज हमारे हाथ बहुतसा माल लगै तो इस देवी पर बकरा चढावें, दूसरा बोला जो हमारे हाथ माल लगै तो मदिरा चढावें, तीसरा बोला कि हे भगवती! यदि मेरे हाथ बहुतसा माल लगै तौ ब्राह्मणोंको इच्छाभोजन कराऊं, चौथा बोला कि यार ! सुनो जो देवीकी कृपासे आज अच्छा माल हाथ लगै तौ अभी इस राजाकी बेटीको पलंग समेत लाकर देवीको बलिदान दूं. इस प्रकार चारों चोर मनमें विचारकर शहरमें चोरी करनेके वास्ते गये तब उस दीवानके लडकेनें मनमें सोचा कि इन चोरोंकाभी तमाशा देखना चाहिये बात विचार देवीके मंदिरमें छिपकर बैठगया जब चारों चोर शहरमें गये तो उनके हाथ बहुतसा माल लगा उस धनको लेकर वे उसी देवीके मंदिरमें आये तब चौथा चोर उन तीनों चोरोंसे कहने लगा कि यार ! सुनो इस मालका बांट तो पीछे करेंगे पहिले चलकर राजाकी बेटीको लाना चाहिये नहीं तो झूठा बनना पडैगा यों कहकर वे राजाकी बेटीको लेनेके वास्ते गये और कमन्द डाल महलमें जा राजाकी बेटीको पलंग समेत उठा लाये और लाकर देवीके मंदिरके पास उस पलंगको रख दिया तब चौथे चोरनें

राजाकी बेटीको जगाय मंदिरमें लेजायकर उसका सिर काटना चाहा कि उसी समय उस दीवानके लडकेनें एक हाथ तलवारका ऐसा मारा कि उस चोरका सिर भुट्टासा अलग जापडा और राजा की बेटीसे कहा कि तू मेरी धर्मकी बहनहै किसी बातसे घबराना मत ये चारों चोर तुझे देवीपर बलिदान चढानेके वास्ते लायेहैं सो तू इस कोनेमें दुबकजा और किसी प्रकारकी चिन्ता मत करे मैं अभी इनकी खबर लेताहूं- यह कहकर उसे तो कोनेमें छिपा दिया और आप तलवार म्यानसे खींचकर मंदीरके दरवाजे पर खडा होगया जब पहिले चोरको गये बहुत देर होगई तब उन तीनों चोरोंने आप-समें सलाह कि वह राजाकी बेटीको खूबसूरत देख कहीं कामांध तो नहीं होगया ? इन पापियोंने ये पापकी बात समझ एक दूसरे चोरको देखनेके वास्ते भेजा और ज्यों उसने दरवाजेमें घुसकर आवाज लगाई उसी समय आवाजके सुनतेही दीवानके लडकेने उस चोरकी गर्दनपर ऐसी तलवार मारी कि उसका भी सिर भुट्टासा उडगया, जब इस चोरको भी गये ज्यादा देर होगई तब उन दोनोंमेंसे एक और चला जो उस चोरने दरवाजेके अन्दर गर्दन की सोहीं एक तलवारमें दीवानके लडकेने उस चोरका भी सिर काटडाला निदान इसी तरह दीवानके लडकेने चौथे चोरकोभी मार गिराया और फिर उस राजाकी लडकीसे कहा कि, ए नेक बख्त ! अब तू अपने मकानको चली जा दीवानके बेटेकी यह बातें सुनकर राजाकी बेटी कहनेलगी कि, हे भाई ! जो तैंनें मेरी जान बचाई है तो अब मुझे मेरे मकानपर भी पहुँचादे क्योंकि मैंने आज तक महलोंसे बाहर पांव नहीं दियाहै मुझे रास्ताभी नहीं मालूमहै कि जहां होकर मैं मकानको चली जाऊं इसलिये तुझको मुनासिबहै कि जिसतरह तैंने मेरे प्राण बचायेहैं इसीतरह

मुझे मेरे मकानपरभी पहुँचादे. यह बातें राजाके बेटीकी सुनकर दीवानका लडका उसके साथ होलिया जब उसके मकानके पास पहुंचा तो देखता क्याहै कि महलके ऊपर कमंद लटक रहाहै जिसके जरियेसे चोर राजाकी बेटीका पलंग उतार-कर लेगये थे दीवानके लडकेनें राजाकी बेटीसे कहा कि हे राजाकी बेटी ! अब तू इस कमंदके रास्ते महलोंपर चढजा तब राजाकी बेटी बोली तैनें यहां तक तो मुझे पहुंचा दिया अब थोडी देरके वास्ते क्यों मुख मोडताहै जिस तरह यहांतक मुझको लायाहै उसी तरह महलोंमेंभी पहुँचादे तब दीवानके बेटेनें उसे महलोंमें भी पहुंचा दिया जब वह राजाकी लडकी चित्रसारी में पहुँची तब दीवानके लडकेनें कहा हे राजकुमारी ! अब हमको मकानको जाने दे ? तब तो वह राजकन्या उसके रूपको देखकर मोहित होगई और उसके गलेसे लिपटकर कहनेलगी कि, हे प्यारे ये मेरी जान तैनें बचाई इसलिये इसके बदले तू मेरे साथ पलंग पर चलके इस जोबनकी बहार लूट और गलेसे लगाकर इस हुस्नकी क्यारीके फूलोंका रस चख, मैं तुझपर जान मालसे आशिकहूं ये बातें राजाकी लडकीकी सुनकर दीवानका लडका कहने लगा कि ए नेक वख्त ! तू यह क्या गजब करतीहै भला मैं तुझको अपने मुँहसे बहन कहचुकाहूं अब तू मुझसे ऐसी बातें करतीहै क्यों नाहक अपना और मेरा जन्म बिगाडतीहै वस अब तू दया करके मुझे छोडदे ये हरकत मुझसे कभी न होगी तब तो राजाकी बेटी बोली कि या तो मेरी राजी कर नहीं तो तुझे गर्दन मरवा डालूंगी तब तो दीवान जादेनें कहा "क्या खूब नेकी बर्बाद गुन्हा लाजिम" यह कह अपना दामन छुडा उसी कमंदके रास्ते महलोंसे उतरकर भागा उस वक्त वह राजाकी बेटी दीवान

के लडकेको भागाहुआ देखकर एकदमसे चोर चोर कहकर चिल्लाई कि इतनेमें शहरका कोतवाल गश्त देता हुआ महलोंके नीचे आया और दीवानके लडकेको कमंदसे उतरता देख गिरफतार कर कोतवालीको लेगया उस समय दीवानका लडका अपने मनमें कहनेलगा कि, देखो वक्तकी क्या खूबीहै अच्छा करते बुरा होताहै पुण्यके बदले पाप होता है इसी सोच फिक्रमें वह रात तमाम हुई. तब कोतवाल दीवानके लडकेकी मुश्क बांधकर कचहरी को रवाना हुआ. इतनी कथा कहकर तोताकहने लगा कि दास्तान बंद करके राजाके लडकेका हाल कहता हूं कानलगाकर सुन, निगाह क्यों फेरती है यहां तो सिर्फ बातों की हारजीत है ॥

दास्तान राजाके बेटेका ।

तोता बोला कि ऐ मैना ! जब राजाके लडकेको सोतेसे सबेरा हुआ और उसनें उठकर देखा तो बगलमें रंडी मरी पडी है और दीवानका लडका वहां नहीं है तब तो राजाका लडका बहुत घबराया इतनेमें उस रंडीकी नायका भी आई और राजकुमारको जीता देखकर बहुत आश्चर्य करनेलगी और अपने मनमें कहने लगी कि आज क्या सबब है जो मुसाफिर जीता बचा. अब इसका माल असवाब हमारे हाथ काहेको लगैगा ये बात मनमें विचार नायका अपनी बेटीके पास आकर उसका चादरा खींचकर जगाने लगी उसवक्त नायकाने देखा तो रंडी मरी पडी है यह बात देख नायका चीख मारकर रोने लगी और कहने लगी कि भैया! कोई चलना दौडना आज इस मुसाफिरनें मेरी रंडीको मार डालाहै इस बातका शोर सुनकर सरायमें बहुतसे लोग जमा होगये और पुलिसभी उसी दम उस सरायमें हाजिर होगये उस वक्त दारोगा साहबने सब भठियारियोंको बुलाया और पूछा तो

वह बयान करने लगी कि सरकार रातको तो बहुत अच्छी तरह भली चंगी इस मुसाफिरके पास सोईथी न मालूम इसनें इसे किस तरहसे मार डाला यह बात भठियारियोंकी सुनकर दारोगा राजकुमारसे कहने लगा कि ए मिया मुसाफिर! सारा हाल साफ बयान करो कि यह रंडी किस तरह मारी गई? तब राजकुमार बोला कि दारोगाजी साहब ! मुझे कुछ हाल मालुम नहीं है अलबत्ता ये रातको अच्छी भली चंगी मेरे पास आनकर सोई है और आधी रात तक हम और ये दोनों ऐश करते रहे फिर सोगये फिर हमको नहीं मालूम कि यह किसतरह मरी और किसने मारी यह बात सुनकर दारोगा रंडीकी ल्हाशको खाटपर रखकर और राजकुमा की मुश्कें बांधकर कचहरी ले चला। तोता कहने लगा कि हे मैना ! अब इस राजकुमारके किस्सेको बन्द करके उस साहूकारके लडकेका हाल कहता हूं ॥

दास्तान साहूकारके लडकेका ।

तोता बोला कि हे मैना ! जब साहूकारका लडका शामके वक्त सुसरालमें पहुँचा तो उसके सास ससुरोंनें बडा आदर सत्कार किया और उसके सब घरवालोंकी राजी खुशीके समाचार पूछे बादमें उसकी अच्छे अच्छे पकवान मिठाइयोंसे खातिरदारी की जब और सब बातोंसे निश्चित होकर सोनेका समय हुआ तो उसकी सासने साहूकार जादेको अपनी लडकीके चौबारेमें सोनेकी आज्ञा दी तब वह साहूकारजादा अपनी बहूके चौबारेमें बहूके पास जा सोया जब आधी रातका समय हुआ तो साहूकारजादा तो सोगया और उसकी औरतने मनमें विचार किया कि, सबेरे तो मुझे ये लेही जावैगा इससे आजकी रात तो अपने यारके साथ मौज मारही

आऊं यह विचार हौले २ पलंगसे उठकर अपने यारके यहां पहुँची तो यार बोला कि, आज तूने इतनी देर कहां लगाई? तब उसने अपने खाविंदके आनेका हाल कहा यह सुन उसके यारने क्रोधित हो उसकी नांक काटली तब तो वह औरत रोती हुई अपने मकानको आई और अपने मनमें सोचने लगी कि, मेरे खाविंदके आनेके समय मेरी यह गति हुई इससे इसीका नाम लेना चाहिये ये बात मनमें विचारकर वह औरत एकदमसे चिल्ला उठी कि चलियो मेरा खाविंद मेरी नांक काटताहै उसका चिल्लाना सुन सब घरके आदमी जाग उठे और उसके पास जाकर देखा तो हकीकतमें नांक कटीथी यह बात देख उस लडकीके बापनें उसी वक्त चपरासीको बुलाकर अपने दामादको पकडवा दिया वह सिपाही साहूकारजादेकी मुश्क बांधकर कचहरीमें लेगया सो तोता बोला कि हे मैना! इधर तो साहूकार जादेकी मुश्के बांधकर चपरासी लाया और उधर कोतवाल और दारोगा राजकुमार और दीवानजादेकी मुश्कें चढाकर लाये जब यह तीनों यार कचहरीमें गिरफ्तार होकर आये तो तीनों आपसमें एक दूसरेको देखने लगे तब हाकिमने साहूकारजादेसे पूछा कि क्यौंरे तैंने इस औतरकी नांक काटीहै? तब साहूकार जादा तो न बोला पर दीवानजादेनें कहा कि, ऐ साहब! इन दोनों का हाल मुझसे दर्याफ्तकीजिये. इनसे कुछ न पूछिये. ये जो दोनों- आपके सामने खडेहैं इनमें एक तो राजकुमारहै और दूसरा साहूकारका लडका है और मैं दीवान्का पुत्रहूं. हमारी तीनोंकी आपसमें बडी गहरी दोस्तीहै यहां पर इस साहूकारजादेकी सुसरा- लहै सो यह अपनी बहूको लिवानेको आयाहै और हम दोनों इसके साथ आयेहैं सो ये तो अपनी सुसरालको गया और हम दोनों सरायमें ठहरे सो सरायमें जो रंडी रहतीथी उसके पेटमें एक

साँपनथी जो कोई मुसाफिर उससे सुहबत करताथा उसको वह सांपन काट खातीथी और वह मरजाता था आज रातको यह रंडी हमारे राजकुमारने रक्खीथी सो जब राजकुमार सोया तो मैं पहरा-देता रहा और जब वह साँपन राजकुमारको काटनेको निकली तो तभी मैंनें तलवारसे काट उसका काम तमाम किया इसी सबब यह रंडी मरीहै अगर आपको मेरे कहनेका एतवाद न हो तो सरायकी उस कोठरीमें जाकर देख लीजिये एक ताकमें ढालके नीचे सांपनके टुकडे २ कटे धरेहैं । यह बात दीवान्‌जादेकी सुनकर हाकिमनें सांपन मँगाकर देखी और राजकुमारकोरिहा किया और उस नायकाको फाँसीका हुक्म दिया तब दीवानका लडका बोला कि, फिर मैं सरायसे निकलकर बाहर खडा हुआ तो इस साहूकारजादेकी औरतको जंगलकी तरफ जाती देख मैं भी इसके पीछे २ होलिया जब यह औरत एक तकियेमें अपने आशना फकीरके पास पहुंची तब उस फकीरने कहा ऐ हरामजादी आज इतनी देर कहां लगाई? तब यह बोली आज मेरा खाविंद मुझे लिवाने आया है इस सबब देर लगी जब वह सोगया तब मैं आपके पास आई हूं इस बातपर उसनें गुस्सा होकर अपने दांतोंसे इसकी नाक काटली यह हाल देख मुझे गुस्सा जो आया सो मैंने तलवारसे उसका सिर काट डाला अगर हुजूरको यकीन न हो तो उसका सिर मँगाकर देख लीजिये कि उसके मुँहमें नथ समेत नांक है या नहीं. तब हकीमने उसका सिर मँगाकर देखा तो दर हकीकत नाक उसके मुँहमें थी. तब साहूकारजादे को भी रिहा किया और उस औरतको फांसी देदी फिर दीवान जादा बोला कि जब मैं वहांसे लौटा तो देखता क्या हूं कि देवीके मंदिर पर आकर चार चोरोंने यह कहा कि आज हमारे हाथ माल लगे

तो हे देवी ! राजाकी बेटीका सिर तुझपर चढावेंगे यों कहकर वे चोर चोरीको चलदिये और मैं उसी मंदिर में डुबकरहा. फिर वह चोर बहुतसा माल और आपकी बेटीको पलंग समेत लेकर वहां आये और आपकी बेटीका सिर काटकर देवी पर चढाना चाहा तो मैने उन चोरोंका एक एक तलवारमें सिर उडा दिया आपकी बेटीको महलतक पहुंचाया वहां आपकी बेटीकी नियत बिगडी और मेरे साथ हराम को जी चाहा और मुझसे कहा कि या तो तू मेरी राजी कर नहीं मैं तुझे गर्दन मरवा डालूंगी लेकिन मैं इससे बहन कह चुकाथा इसलिये मैं अपना दामन छुडाकर भागा उसने चोर चोर कहकर मुझे पकडवा दिया अगर आपको यकीन न हो तो देवीके मंदिरमें जाकर देखलो कि, आपकी बेटीका पलंग रक्खाहै और चारों चोरभी कत्ल पडेहैं और सब माल भी पडाहै यह बात दीवान जादेकी सुनकर राजा बडा आश्चर्यमें आया और देवीके मंदिरपर गया तो सारा हाल देख कर दीवानजादेको भी रिहा किया और अपनी बेटीको भी फांसी देदी सो तोता कहने लगा कि हे मैना ! मैं औरतोंकी ऐसी हरकत देखकर भरोसा नहीं करता ये बातें तोतेकी सुनकर मैना बोली कि ऐ तोते ! इसका जवाब अब मैं कहतीहूं तू सुनः-

दास्तान पांचवाँ मैनाका ।

मैना बोली कि, ऐ तोता ! मानपुर नाम एक शहर था और वहां वीरसेन राजा राज्य करताथा उसका एक पुत्र मदनसेन नाम करके बडा स्वरूपवान् बुद्धिवान् और नौजवान् था. एक समय उस राजाके यहां एक सौदागर आया और अनेक प्रकारके माल बेचनेको लाया और एक तस्वीर एक राजकुमारीकी मदनसेनको दिखलाई, उसको देखकर मदनसेन निहायत खुश

हुआ और सौदागरसे कहने लगा यह तस्वीर किसकी है कि जिसको देखनेसे मुहब्बतका जोश मेरे दिलमें पैदा होताहै यह सुन सौदागर मदनसेनसे कहनेलगाः—

दोहा ।

कंचनपुर एक शहर है, बसै समंदर पार ।
इन्द्रसेन वहांका नृपति, उसकी राजकुमार ॥
चन्द्रवदनसी कामिनी, मृगकेसे दोउ नैन ।
लख लाजत हैं अपसरा, सरमावत उर मैन ॥
दंतपंक्ति गौहर सदृश, छली नासिका कीर ।
कमर देखके हरि भगे, छोडी मनकी धीर ॥

हे राजकुमार ! इस औरतके समान सात द्वीपमें कोई औरत नजर नहीं आती कि, जिसे देखकर हूरभी दिलमें शरमातीहै. ये बात सौदागरकी सुनकर मदनसेनने उसे बिदा किया और आप दिलमें सोचनेलगा कि जबतकये औरत हाथ न लगे तबतक दुनियामें जीना मरनेसे बेहतरहै इसलिये जिसतरह बने उसे लाना चाहिये. ये बात अपने दिलमें ठान कपडे व जेवर बदनसे उतारकर फेंक दिया और भगवा कपडा बदनमें खाक रमा कानोंमें मुद्रा डालफकीरी भेष बनाकर चलनेका इरादा किया यह बात सुनकरके उसका पिता बहुत घबडाकर उससे कहनेलगा.

ग़ज़ल ।

इन्दरसभाकी राहपर ।
मदनसेन बेटा चतुर, क्या दुख व्यापा तोय ।
राजपाट तज फकीर बनके, छोड चले अब मोय ॥
किसने बहँकाया तुझे, तू कहदे सारा हाल ।

छोड जईफीमें मुझे, तू चला कहांको लाल ॥
ये बातें अपने पिताकी सुनकर मदनसेन बोलाः-

दोहा

हाथ जोड विनती करूं, सुनो पिता चितलाय ॥
चन्द्रकिर्ण मेरे मन बसी, उस बिन कछु न सुहाय ॥

तब पिताने कहाः-

हे बेटा चातुर चतुर, क्यों होते नादान ॥
चन्द्रकिरनके वास्ते, कितने खोगये जान ॥

तब मदनसेन कहने लगाः-

दोहा

मुझे न अब तुम रोकिये, मैं रुकनेका नांय ॥
जाये बिन रहता नहीं, प्राण रहैं या जायँ ॥

ये बातें कह मदनसेन पिताके पाससे चलदिया इतनेहीमें उसकी माता रोतीहुई आई और कहनेलगीः-

दोहा

हे बेटा किसकारने, किया फकीरी भेष ॥
किस कारन जोगी बने, तजा राज अरु देश ॥
हाथ जोड अर्जी करूं, सुन माता चित लाय ॥
चन्द्रकिरन देखे बिना, मुझे न कछू सुहाय ॥

तब माता बोलीः-

दोहा

चला पुत्र मेरे संग सों, कैसे जी समझाऊं ॥
तुम बिन मेरे लाडले, तडफ तडफ मरजाऊं ॥

ये बातें मदनसेनने माताकी सुनकर कुछ खयाल नहीं किया और चलदिया सच है जो शख्श इश्कके फन्देमें फँसे उसे कब

चैन पडताहै इतनेमें मदनसेनकी रानी भी आन पहुँची और कहने लगीः-

दोहा

पटका महि कामिन खडी, कर सोलह शृंगार ॥
छोड चले मझधार में, कहां मुझे भरतार ॥

यह सुन मदनसेन कहने लगाः-

दोहा

रानी मन धीरज धरो, मति दिल करो उदास ॥
चन्द रोजके बीचमें, आऊं तेरे पास ॥

ये बातें मदनसेनकी सुन रानी गश खाकर जमीनपर गिरपडी और मदनसेन अपना हाथ छुडाकर सबसे मुहब्बत तोड जंगलकी तरफ रवाना हुआ- बहुत देरके बाद जब मदनसेनकी विवाहिता रानीको होश भया तो वह रो रो कर यह रागनी गाने लगीः

रागनी

सखी छोड गया निरदई दया नहिं आई ॥
मुझे पिया बिना सब जगत हुआ दुखदाई ॥
सखी सूनी दीखे सेज फटै मेरी छाती ॥
जो देती बिधना पंख तुरत उड जाती ॥
सखि हाय हाय कर सब दिन रात गुजारूं ॥
सोत से चौंक मैं पियाको पुकारूं ॥
रोरोकर कटती रात नींद नहिं आती ॥
पीतम बिन सारी रात तडफते जाती ॥

दोहा

आह करूं तो जग जले, जंगल हू जर जाय ।
पापी जियरा ना जरे, जिसमें आह समाय ॥

मैना बोली देख तोते ! मदनसेनकी बराबर कोई मर्द बेपीर न होगा देख उसकी प्राणप्यारी स्त्रीने कैसा कैसा विलाप किया लेकिन मदनसेनको कुछभी रहम न आया. मदनसेन कितनेही दिनोंबाद कंचनपुर यानी चन्द्रकिरनके शहरमें जा पहुंचा और राजकुमारी चन्द्रकिरनकी चित्रसारीकी खिडकीके सामने आसन-जमाकर बैठगया. इत्तिफाकन एक रोज रानी चन्द्रकिरनने अपनी खिडकी खोली तो उस रानीकी नजर मदनसेनके ऊपर पडी और दोनोंकी आपसमें चार नजरें हुईं तो चन्द्रकिरनभी मदनसेनके ऊपर आशक होगई और कहने लगीः–

जोगीजी तुम कौनहो, कौनतुम्हारादेश ॥
किसकारण जोगी बने, तजा राज अरु देश ॥
सूरत तेरी देखकर, जी मेरा ललचाय ॥
किसकारन यहँ आना हुआ, दीजै मोय बताय ॥

ये बातें चन्द्रकिरनकी सुनकर मदनसेन निहायत खुश हुआ और कहने लगाः–

नजर कर तूं मेरी तरफ ए परी ॥ मुहब्बत तेरी मेरे दिलमें भरी ॥
तेरा हुश्न मशहूर है सब जहां ॥ तुझे जान आलम सभी चा रहा ॥
तेरा हुश्न यहां खैंचलाया मुझे ॥ खुदाने मुझे अब दिखाया तुझे ॥
अगर हो मेहरबानी तेरी सनम ॥ तो छूटे गमोरंज महनतसे हम ॥
ये आयाहै पुरवसे वस खाक सार॥ मेरा नाम आशिकहै गुलेजार ॥
तेरा नाम जबसे सुना मैंनेथा॥न दिलमें मेरे चैन उस दिनसे था॥

दोहा

जोगी तेरे रूपको, देख जियां ललचाय॥
इक डर मुझको है बडा, तेरी जान अजाये जाय ॥

यह दोहा चन्द्रकिरनका सुनकर फिर मदनसन ये दोहा कहने लगाः–

होनाहै सो होयगा, इसका नहीं अँदेश ॥
प्यारी तेरे कारने, तजा राज औ देश ॥

यह दोहा कहकर मदनसेनने कहा कि हे राजकुमारी ! तुम इस बातका सोच मतकरो जो कुछ होना है सो होगा देखो किसी कविने कहा हैः—

दोहा

होनहार होकर रहे, मिटैं न विधिके अंक ॥
राई घटे न तिल बढे, रहरे जीव निशंक ॥

ये बातें मदनसेनकी सुनकर चन्द्रकिरन बोली कि ए जोगी ! मेरी मुहव्वतमें तेरी जानका खतराहै क्योंकि जो शख्स मेरे ऊपर मुश्ताक होकर आयाहै उसको मेरे पिताने कैद कर दिया है और वे अबतक जेलखानेमें पडे मुसीबत उठातेहैं इससे यही बेहतरहै कि तुम अपने वतनको लौट जाओ इश्कके फन्देमें नाहक जान न फँसाओ ये बातें रानी चन्द्रकिरनकी सुन मनदसेन बोला ॥

शेर

मुझे इश्क तेरा अब लाया यहां ॥
भला तुम कहो अब मैं जाऊं कहां ॥
ये हरपाना दिलमें मैं लाता नहीं ॥
बिना लिये मैं तुमको जाता नहीं ॥
हुई एक मुद्दत कि शैदा हुआ ॥
तेरे इश्कका दर्द पैदा हुआ ॥
मुसीबत पर मेरी जरा कर निगाह ॥
कि पहुचाहुँ तुझ तक बहाले तबाह ॥

ये शेर मदनसेनकी सुनकर चन्द्रकिरनने खिडकीसे कमंद फांसकर ये दोहा कहाः—

दोहा

ऐ प्यारे दिलदार जी, मैं तुमको समझाउं ॥
कमंदको मैं डालती, इसपरहो चढ आउ ॥

मैंना बोली कि ऐ तोते ! जब चन्द्रकिरनने कमंद डाला तब मदनसेन उस कमंद पर होकर चन्द्रकिरनके महलोंमें दाखिल हुआ और बहुतही अपनी तकदीरको सराहा तब चन्द्रकिरन मदनसेनके गलेमें हाथ डालकर यह शेर कहने लगी ॥

शेर

दिलो जान से है तू प्यारा मुझे ॥
मैं छातीसे प्यारे लगालूं तुझे ॥
मेरे पास आओ सुनों हो विसाल ॥
मिला लबसे लब और गालोंसे गाल ॥
मेरे सीनेसे तू लिपटजा शिताब ॥
मेरे वास्ते तू हुआ है खराब ॥
अगर्चे पिताका है यह मुझको डर ॥
तेरी खातिर मंजूर है सर वसर ॥

मैंना बोली कि ऐ तोते ! इसी तरह ऐश आराम करते करते बहुत दिन बीते तब एक दिनका जिक्र है कि, रातके तीन बजे केलि आनंद करके मदनसेन कमंदसे उतरा उसी वक्त कोतवाल आगया और मदनसेनको देखकर कहने लगाः-

दोहा

अरे शख्स तू कौन है, लगा रहा है घात ॥
चोरी करने महलमें, आया आधीरात ॥

यह बात कोतवालकी सुनकर मदनसेन घबरायकर कहने लगा-

दोहा

हाथ जोड अर्जी करूं, सुनिये चित्त लगाय ।
माफ करो तकसीरको, कहता सीस नवाय ॥

यह बात मदनसेनकी सुनकर कोतवालने सिपाहीको हुक्म दिया कि इसकी मुश्कें बांधलो, क्योंकि इस बेईमानने सारी रय्यत सता रक्खी है यह कहकर मदनसेनकी मुश्कें बांधकर कोतवालीको ले चला और सुबह होतेही कचहरीमें ले जाकर सारा हाल राजाके सामने कहा. राजाने सुनकर मदनसेनको बडी कडी कैदका हुक्म दिया जब यह बात चन्द्रकिरनने अपनी बांदीके मुखसे सुनी कि आज मदनसेनको कैद होगई. तब तो वह बेहोश होकर जमीनपर गिरपडी और थोडी देरके बाद होश आनेपर बडा विलाप कर रोरोकर कहने लगीः-

दोहा

कैद पियाको कर दिया, बुरा पिताका होय ।
जाय पिताके द्वारपे, प्राण दऊंगी खोय ॥

इसप्रकार जब चन्द्रकिरन बहुत विलाप करने लगी तो बांदी समझाने लगीः—

दोहा

प्यारी मन धीरज धरो, मत मन करो उदास ।
चन्द्ररोजके बाद पिय, आवें तेरे पास ॥

ये बातें बांदीकी सुनकर चन्द्रकिरन कहने लगी ए बांदी ! अब मैं किसप्रकार धीरज धरूं यह कहकर एक बडी लंबी सांस ले ये रेखता पढाः—

रेखता

सजन जद याद आताहै चश्म दरिया बहाता है ॥
बिना पीतम पियारेके मुझे ये गम सताताहै ॥

लगा सावन झुके बादल शोर मुरवा मचाताहै ॥
पपीहा की कूक सुनि करके मदन मुझको सताताहै ॥
पिया बिन हे सखी सावन मेरे जीको जलाताहै ॥
पिया बिन सेज सूनीपै कहर जोबन दिखाता है ॥
पियाकी याद गारीमें न कुछ मुझको सुहाताहै ॥
मिला देवे मुझे रंगी नहीं जी निकला जाताहै ॥
बिना पीतम पियारेके मुझे ये गम सताताहै ॥

मैंना बोली कि ए तोते ! इसतरह चन्द्रकिरण मारे गमके आठ पहर चौंसठ घडी रो रो कर बिकल होतीथी अब मैं यहांका किस्सा बंद करके उधर मदनसेनकी दूसरी रानीका हाल कहती हूं तू ध्यान देकर सुन ! एक दिनका जिक्र है कि मदनसेनकी रानी अपनी चित्रसारीमें सोतीथी कि अचानक एक सपना देखा कि कोई बालक रानीसे कहताहै कि हे रानी तेरा प्राणप्यारा प्रीतम मदनसेन कंचनपुरमें जाकर कैद होगया इस सपनेको देखकर रानी एकदमसे चौंक पडी और चिल्ला कर बेतहाशा रोने लगी तब रानीके रोनेकी आवाज सुनकर बांदी दौडकर आई और हाथ जोडकर अर्ज करने लगीः—

दोहा

रानीजी महाराज हो, कौन उठी तन पीर ॥
हाल जरा मोसे कहो, क्यों होती दिलगीर ॥

यह वचन बांदीका सुनकर रानी रो रो कर कहने लगी.

दोहा

सोतीथी मैं नींदमें, सपना देखा आय ॥
पीतम फँसे बलायमें, कंचनपुरमें जाय ॥

दोहा

फडके दांया अंगहै, नयन रहे मुरझाय ।
आज पियाके रंजमें, जीया निकसो जाय ॥

ये बातें रानीकी सुनकर बांदी कहनेलगीः—

दोहा

सपने सांचे ना भये, सुन हे चतुरसुजान ॥
पिया तुझे जल्दी मिलै, कहा हमारा मान ॥

यह दोहा बांदीका सुनकर यह शैर पढ्ने लगीः—

शैर

दिल ख्वाव मेरा देखके बेदार होगया ॥
जाहर हुआ पियारा गिरफ्तार होगया ॥
आया न महीने आठ का था कौल ओ करार ॥
आया न अब तलक कहीं लाचार होगया ॥
या वह फँसा कहीं किसी जालिमके पेचमें ॥
नैनोंकी मारसे कहीं बीमार होगया ॥
जो गनमें बनके जाऊंगी होगा सनम जहां ॥
चलनेको मेरा अब ये दिल तैयार होगया ॥
लाऊंगी नाच गाके उसे अब मैं रंगीलाल ॥
मुझसे पीयासे जो कहीं दो चार होगया ॥

मैना बोली कि ए तोते ! रानीकी यह शैर सुनकर बांदी कहने लगीः—

शैर

नाहक का रंज तुमको ये सरदार होगया ॥
अफसोस गम ये रोजका बेकार होगया ॥
घबडा न अपने दिलमें तू उसके लिये जरा ॥

आजायगा जुदा जो दिलदार होगया ॥
कहे रंगीलाल दिलमें धीरज जरा धरो ॥
दिन रातका रोना तुमें आजार होगया ॥

इस तरह बांदीने रानीको बहुत कुछ समझाया परन्तु उसके दिलमें कुछ न समाया और आह भरके फिर बांदीसे कहने लगी कि ए बांदी ! मैं तो अवश्य अपने प्राणप्यारेको ढूँढने जाऊंगी तू मेरे महलोंमें होशियार रहना. यह कहकर रानीने अपना सब शृंगार उतार डाला और अंगमें खाक रमा जोगन बन हाथमें वीना ले जंगलकी तरफ रवाना हुई सो मैना बोली कि ए तोते ! जब रानी मदनसेनके ढूँढनेको चली और सैकडों शहर और जंगलोंकी खाक छानते छानते कंचनपुरमें पहुँची वहां जासूर लोगोंसे मदनसेनका हाल दर्याफ्त करने लगी जब मदनसेनके कैद होनेका हाल मालूम होगया तब रानी अपने मनमें सोचने लगी क्या उपाय करना चाहिये जिससे हमारे प्राणनाथकी रिहाई हो. यह बात मनमें विचार कर उसने वहांके लोगोंसे दर्याफ्त किया कि यहांके राजाको किस बातका ज्यादा शौकहै तब वहांके लोगोंने कहा यहांके राजाको गाने बजानेका ज्यादा शौक है इस बातको सुनकर रानी अपने मनमें निहायत खुश हुई क्योंकि गानाविद्यामें रानीके समान और कोई दूसरा नहीं था तब तो रानी हरएक जगह जाकर गाने लगी थोडेही दिनमें उसकी गानाविद्याका शोर सारे शहरमें फैलगया एक दिनका जिक्रहै कि रानी एक बगीचेमें सन्ध्याके समय बीना हाथमें लिये शैर कर रहीथी कि, दिलमें जो उस हरियालीकी शोभाको देख उमंग उठी तो यह रागनी अलापने लगीः—

रागिनी गिरनारी ।

कोई दिलवरका दरस दिखायदे रे ॥
लोचनकंज कुटिल भृकुटी कच ॥

कानन कथा सुनाय देरे ॥
रंगीलाल अब मेरी वकी चितकी गांठ मिटाय देरे ॥
जाके रंग रंगा सब तन मन ताकी झलक दिखाय देरे ॥
कोई दिलवर की डगर बताय देरे ॥

मैना बोली ए तोते ! उस समय उस जोगनका गाना सुनकर उस बगीचेमें बहुतसे लोग जमा होगये और सब वाहवाहके दम भरने लगे तब तो जोगन इस रेखताको गाने लगीः-

रेखता ।

दिलदार यार प्यारे गलियोंमें मेरी आजा ।
आँखें तरस रहीहैं सूरत इन्हें दिखाजा ॥
चेरी हूं तेरी प्यारे इतना तू मत सतारे ।
लाखोंही दुख सहा रे दुख अबतो रहम खाजा॥
तेरेही हेत प्यारे छानीहै खाक बनबन ।
फिरतीहूं दुखकी मारी अबतो गले लगाजा ॥
मनको रहूं मैं मारे कब तक बतादे प्यारे ।
सूखे विरहसे लोचन पानी इन्हें पिलाजा ॥
सब लोक लाज खोके तनपै भसम रमाई ।
जोगिन भईहूं तुझ पर अब तो दरश दिखाजा ॥

जोगनका यह गाना सुनकर सब लोग चित्रके से लिखे रहगये और बहुतसे लोगोंने जाकर राजासे उसके गानेकी बडी तारीफ भी की चन्द्रकिरनके बापने उसी वक्त अपने चोबदारको बुलाकर हुक्म दिया कि, तू बागमें जहां वह जोगन ठहरी है जाकर उसे हमारी महफिलमें बुलाला. तब राजाके वचन सुनकर वह चोबदार तलाश करता हुआ उसी बागमें पहुँचा जहां जोगनका गाना हो रहाथा और बहुतसे लोग जमाथे तब चोबदार हाथ जोडकर बोलाः-

दोहा

हाथ जोड अर्जी करूं, सुनि जोगन महराज ।
याद करी महराजने, जुरी सभा सब आज ॥

दोहा

दरस भिखारी सब सभा, बैठीहै जुर आज ।
आप कृपा कर चालिये, जुरि रह्यो सकल समाज ॥

रागनी गिरनारी

हमको बुलाकर करिहैं क्या ॥
तज दीनी सब दुनियां दौलत फेर किसीके घर जाना क्या ॥
कंद मूल फल खाया रहैं अब खट्टा मीठा खाना क्या ॥
क्षणमें शाही बखशैं हमको मोती लाल खजाना क्या ॥
रंगीलाल जो रूप हमारा नहिं जानें वानें जाना क्या ॥

मैना बोली ए तोते! जोगनने कहा कि ए चोबदार ! हमें राजोंके दरबारसे क्या कामहै हम तो अपने मनके मौजी जीवहैं हमें किसीके घर जानेसे क्या कामहै हमतो जिस जगह आसन जमाकर बैठ जातेहैं उसी जगह दरबार शाहीसे ज्यादा नजर आताहै ये बातें जोगनकी सुनकर चोबदार हाथ जोडकर फिर बोला कि हे जोगनजी! आपको तो ऐसा इल्म यादहै कि आपके हुक्ममें लाखों राजे खडे रहैं. परंतु आपकाभी यह धर्महै कि जो मनुष्य आपसे कुछ हरिगुण गान सुना चाहै तो उसे अवश्य सुनाना चाहिये यह वचन चोबदारका सुनकर जोगनने कहाः-

रागनी गिरनारी

अरे क्यों नाहक सतावै ॥
हम मौजीहैं अपने मनके मन चाहै जहां जावैं ॥
बैठ इकांत ध्यान धर दिलवर कन्द मूल फल खावैं ॥

वसैं कंदरा वनमें डोलें मानुष नहीं सुहावे ॥
रंगीलाल हम इश्क रंगेहैं भीडसे मन घबरावे ॥

यों कहकर जोगन चोबदारके साथ गई उस समय जोगनका रूप देखकर दरबारके सब लोग खडे होगये और जोगनके वास्ते मृगछालाका आसन दिया और राजा हाथ जोडकर कहनेलगा कि जोगनजी ! आपका स्थान कहांहै ? तब जोगन बोलीः-

रागनी गिरनारी

हम रतनागिरिके वासीहैं ॥
दो अक्षरको मंत्र रैन दिन जपते बारह मासीहैं ॥
रंगीलाल एक ध्यान धारना मगन सदा सुखरासीहैं ॥
रवि शशि छबि छाया सब जाकी ज्योति स्वरूप उपासीहैं ॥
हम रतनागिरके वासी हैं ॥

यह पद जोगनका सुनकर राजा बोला कि हे जोगनजी महाराज। अब कृपाकर कुछ हरिगुण गान करिये क्योंकि हम सब लोगोंकी अभिलाषा आपके मुखारविन्दसे कुछ गाना सुननेकी है यह वचन राजाका सुनकर जोगननें यह राग गाया ॥

राग गिरनारी

ये जोग हमें अति भायाहे ॥
छोड दिया धन माल खजाना हीरा मोती लुटायाहे ॥
फेंक फांकके शाल दुशाले जगसे चित्त उठायाहे ॥
ये जोग हमें अति भायाहे ॥
इश्क फंदमें छोड कान कुल मन माशूक निभायाहे ॥
धीरज धर्म सबी छोडा जब मजा फकीरी पायाहे ॥
यह जोग हमें अति भायाहे ॥
जंगलमें अब रमताहै दिल बस्तीसे घबरायाहे ॥

मानुष गंध न भातीहै मन मर्कट मोर सुहायाहै ॥
ये जोग हमें अति भायाहै ॥
चाक गरेवां कर कैद मदनको आहें भरना चायाहै ॥
रंगीलाल अब इश्क रैन दिन यह सब खेल खिलायाहै ॥
ये जोग हमे अति भायाहै ॥

जोगनका यह राग सुनकर राजा बोला कि हे जोगन ! मैं तेरा गाना सुनकर निहायत खुश हुआहूं अब तुझको जिस बातकी दरकारहो सो मुझसे मांगले.तब जोगननें कहा हजूर ! हम लोग ऐसे नहीं मांगतेहैं जब आप हमको वचन देदोगे तब जो हमारे दिलको चाहियेगा सो मांग लेंगे. इतनी बात जोगनकी सुनकर राजानें वचन देदिया और कहने लगा कि, हे जोगनजी ! मैं अब आपको वचन देऊंगा आपका जी चाहै सो मांग लीजिये.यह वचन सुनकर जोगन बहुत प्रसन्न हुई और कहनेलगी हे राजा साहब ! मेरा पति मदनसेन आपकी बेटी चन्द्रकिरन पर आशक होकर आयाहै और आपने उसे कैद करादियाहै इसालिये मैं यही मांगती हूं कि, उसको छोड दिया जाय और आप अपनी बेटीकी शादी उसके साथ कर दीजिये.तब तो राजानें जोगनका यह वचन मान मदनसेनको रिहा करदिया और अपनी बेटीचन्द्रकिरनकी शादी उसके साथ करदी. मैना बोली कि ए तोते ! उस मदनसेनकी रानीकी मोहब्बतको देखना चाहिये कि मदनसेनके साथ उसने किसकदर बफादारी की परंतु अब मैं मदनसेनकी बेवफाईका हाल सुनातीहूं जब मदनसेनकी चन्द्रकिरनके साथ शादी होगई तो अपने मनमें विचारा कि अब तो अपने वतनको चलना चाहिये ऐसे अपने मनमें विचार सास ससुरसे बिदाहो बहुतसा माल असबाबले चन्द्रकिरन और अपनी पहली स्त्री सहित अपने वतनका रवाना हुआ. सो मैना बोली कि ऐ तोते ? जब मदनसेन दो चार

मंजिल निकल आया तब मनमें सोचने लगा कि अब जो हमारे माता पिता पूछेंगे कि बेटा! चन्द्रकिरनको किस तरह लाये ? तब हम उनको क्या उत्तर देंगे अगर यह हमारी पहली स्त्री कुल्ह हाल कैद होने आदिका कह देगी तो हमको माता पिताके सामने बडा शरमिंदा होना पडेगा इससे बेहतर तो यह है कि इसको यहीं मार चलो ये बात मनमें विचार सोती हुई अपनी पहली रानीको तल-वारसे मारकर उसी डेरेके अन्दर गाडदी और आप चन्द्राकिरनको साथ लेकर चलदिया सो हे तोते ! इस मदनसेनकी बेवफाईको देख मेरा कलेजा फटताहै और मर्दोंके नामसे मेरा बदन कांपताहै. हे तोते ! तूही अपने मनमें सोच देख कि, यह मदनसेनकी कैसी बेवफाईहै ? तब तोता बोला ऐ मैना ! इसका जबाब भी मैं तुमको दूंगा तू सुन ! तब मैना बोली कि, ऐ तोते! मुझको और तुमको जबाब सवालोंमें सारी रात गुजरगई और सुबह हो आया और इस दास्तानके दो हिस्से यानी पांच दास्तान खतम हुए और अभी हमारे तुम्हारे सवाल जवाबोंका क्या ठीकहै इससे बेहतरहै कि, तुम भी दाना पानी खाओ और मैं भी खा पी लूं फिर शामके वक्त इसी दरख्तपर आजाना और इसका जवाब मुझको देना अब जो छठा दास्तान तोता कहैगा वह इस किताबके तीसरे भागमें लिखी जायगीः—

इति श्रीपण्डित रंगीलाल वैकुठवासीकृत
तोता मैना दूसरा भाग समाप्त ।

अथ किस्सा तोता मैना तीसरा भाग
छठा दास्तान तोतेका.

शामका वक्तहै तोता और मैना आनकर उसी पेडपर बैठेहैं तोता मैनासे कहनेलगा कि, हे मैना ! अब तू अपनी रातकी बात

का जवाब सुन तब मैंना बोली कि, ए तोते! तू बेशक मेरी वात-का जवाब दे, क्योंकि मैं भी पूरे गुरुकी चेलीहूं तुझसे जवाब में नहीं हारनेकी हूं तब तोता बोला कि, हे मैना! रत्नदीप नाम नगर अति रमणीक और शोभायमान था उसमें अंगध्वज नाम राजा राज्य करता था और उस राजाके एक पुत्र सूर्यके समान तेजवाला और बृहस्पतिके समान बुद्धिमान शुक्रके समान राजनीति जानने-वाला विश्वकर्माके सदृश चतुर तरुण अवस्थावाला सब अस्त्र शस्त्र विद्यामें निपुण चन्द्रमाके समान कांतिमान अपने तेज और बल-से वैरियोंको जीतनेवाला साक्षात् कामदेवके समान स्वरूपवाला नाम उसका रणवीरसिंह था। सो एक दिन दैवयोगसे रणवीर-सिंह वसंत ऋतुका आगमन जान अपने जानवरोंको साथले और थोडीसी सेना संग ले वनमें शिकार खेलनेको गया सो हे मैना! जब वह रणवीरसिंह एक बडे जंगलमें पहुँचा तो वहां दैवगतिसे एक बडा मोटा ताजा हिरन रणवीरसिंहके नजर पडा तो उसी स-मय रणवीरसिंहने अपना धनुषबाण सँभालकर अपना घोडा उसी हिरनके पीछे छोडा, उसवक्त हिरनने जो अपने पीछे राजकुमार-को आते देखा तो वह हिरन अपने प्राण बचानेके लिये ऐसा भा-गा कि, राजकुमारने बहुतेरा घोडा फेंका परंतु हिरन हाथ न आया और एक बडी भारी सघन झाडीमें जाकर वह हिरन राजकुमार-के सामनेसे गायब होगया। तब राजकुमार लाचार होकर और अपने घोडेको थका जानकर एक तालाबपर गया और एक पेडसे घोडेको बांध दिया और आप उस तालाबमें हाथ मुँह धो थोडा पानी पी घोडेकी जीन बिछाकर उस तालाबके एक बुर्जपर बैठगया और चारों तरफ देखनेलगा और कहने लगा कि, देखो यह वन कैसा शो[illegible]मान होरहाहै जिसमें गेंदा गुलाब गुलतुर्रा चमेली आदिके अनेक फूल

फूल रहेहैं और बडे बडे वृक्षन करके सघन होरहाहै और तिनपर मोर चकोर कोयल पपीहा आदि अनेकों प्रकारके पक्षी अनेकों प्रकारके मीठे मीठे शब्दोंसे चहचहाट कर रहेहैं. हे मैना राजकुमार इस वनकी अनुपम शोभाको बैठा बैठा देख रहाथा कि दैवयोगसे इतनेहीमें बिजलीके समान् चमकता हुआ एक गोल स्त्रियोंका सामनेसे आताहुआ दिखाई दिया और उनके बीचमें एक स्त्री तरुण अवस्थावाली चन्द्रमाके समान प्रकाश करती साक्षात् कामदेवकी स्त्री रतिके समान अपनी सहेलियों के साथमें मस्तहाथीकी भांति झूमती चली आतीहै। उसवक्त राजकुमार उनको देखकर अपने मनमें कहने लगा कि, हे ईश्वर ! यह क्या जादूसा दिखाई देताहै ! क्योंकि ऐसे इस निर्जन वनमें ऐसी कोमलांगी स्त्री कहांसे आवें ? और फिर राजकुमार मनमें सोचने लगा कि, यह जादू तो नहींहै या तो यह किसी राजाकी कन्याहै या देवलोककी अप्सराओंमें शिरोमणि साक्षात् रंभा या उर्वशी या तिलोत्तमाहै जो अपने चन्द्रसमान मुखकी किरणोंसे दशों दिशानको प्रकाशमान करती चली आतीहै। अब जबतक इनका पूरा पूरा हाल न मालूम होजायगा तब तक यहांसे चलना ठीक नहींहै। यह विचारकर राजकुमार वहीं बैठारहा इतनेहीमें सब स्त्री उस तालाबके घाट पर आईं और अपने अपने वस्त्र उतारकर भांति भांतिकी साडियां पहरने लगीं उस समय जब उस राजकुमारीने अपने वस्त्र उतारकर साडी पहनी तो पवनसे राजकुमारीका कुछ बदन उघड गया तो एकदमसे ऐसा उजाला होगया मानों आस्मानसे बिजली गिरीहै-इस कदर उस राजकुमारीके अंगकी शोभा देखकर राजकुमार रणवीरसिंह मूर्च्छितसा होगया परंतु बहुत होश्यारीसे सँभलकर और अपने मनको रोककर कहनेलगा कि यह राजकुमारी ये सब स्त्री और यह तालाब तथा यह अनुपम

उपवन जादूका स्थान तो नहींहै अथवा कहीं मैंही तो सोताहुआ स्वप्न नहीं देख रहाहूं ? ऐसी स्त्री तो आजतक मैंने कोई नहीं देखी यह कह वह संभलकर धीरज बांध बैठगया और वह राजकुमारी स्नान करनेलगी तब उसके भोलापन और बदनकी कोमलता और मन्द मुसक्यान सहित हाव भावको देखकर राजकुमार मोहित होगया ।

कवित्त

देखके कामिनको हियेमें भयोहै घाव बांके कटाक्ष लखि धीर न धरायोहै ॥ कंचनके कलश मानों हियेपै सम्हार धरे देखके नवीन वैस हीय उमँगायोहै ॥ केराके खंभ सम जंघा सुढार बने कटि केहरीकीसीने मनको लुभायोहै ॥ भौंहैं कमान तान नयन शर चढाय लियो हंसनकी चोटते कुमारको गिरायोहै ॥

दोहा

नव यौवन गजगामिनी, अति स्वरूपकी रेख ।
विज्जुलतासी वामकूं, रहे कुमारजी देख ॥

सो हे मैना ! इधर तो राजकुमारके दिलमें मोहब्बत बढी और उधर वह राजकुमारीभी रणवीरसिंहको देखतेही दिलोजानसे आशिक होगई परंतु संगकी सहेलियोंकी लज्जासे कुछ कह न सकी और अपने मनही मनमें रणवीरसिंहके रूपकी सराहना करनेलगी. उस राजकुमारीकी चितवनको देख वह सब संगकी सहेलीभी जानगई कि,इस राजकुमारीका दिल इस विदेशीपर मोहित हुआहै यह मनमें सोचकर एक सखी कहने लगी ।

दोहा

नैना लागे नहिं छिपत, करो अनेकन ओट ॥
चतुर नारि अरु सूरमा, करत लाखमें चोट ॥

तब दूसरी सखी कहने लगी कि हे राजकुमारी ! आप अपने मनको सम्हालिये ऐसी एकली बेकली बातें न करिये देखो किसी कविका वचनहै ।

दोहा

नयननको यह धर्महै, जो कहुँ यह लगजाय ॥
लोक लाज कुल कानको, छिनमें देत बहाय ॥

तब यह बात सखीकी सुनकर वह राजकुमारी बहुत झँझलाकर कहने लगी आज क्या तुमने मुझे दीवानी कर जानीहै क्या जानें वह कौनहै और कहांसे आयाहै उसे तो क्या कहूँ वह बिचारा तो मुसाफिरहै बस मेरे जीमें यही आतीहै कि, आप लोगोंको सजादूं क्योंकि तुमने मुझसे आज बडी छेड छाँड करीहै यह कहकर फिर हँसने लगी और स्नानकर जलसे निकल वस्त्र पहरने लगी. उस समय राजकुमारीका मारे विरहके यह हाल था कि,कहींके कहीं वस्त्र आभूषण पहरने लगी यह पहराये परंतु उस राजकुमारीको सिवाय रणवीरसिंहके कुछ नहीं सुहाता था और चित्तपर बडी भारी बेकली बढ रहीथी सत्यहै ।

दोहा

कठिन प्रीतिकी रीतिहै, जो कहुँ यह लगजाय ।
खान पान आराम सब, ताहि न कछू सुहाय ॥

यह हाल राजकुमारीका देखकर सब सखियोंने राजकुमारीको सुखपालमें बिठाकर चलनेका इरादा किया तब राजकुमार रणवीरसिंह उस राजकुमारीको जाते देख व्याकुल हो उसको सुनाकर यह कहने लगा ॥

दोहा

विरहा सम नहिं जगतमें, और दरद कछु आय ॥
क्षणभर कल देवे नहीं, नहीं प्राण निकसाय ॥

तोता बोला कि हे मैना ! वह राजकुमार इस दोहेको कहकर बावलोंकी तरह घूमने लगा और टिकटिकी बांधकर राजकुमारी की तरफ देखने लगा और कहने लगा ॥

कवित्त

अरे विश्वासी गले डाल मेरे फांसी मेरे जीमें कर उदासी अब चली जात कहां है॥बिना तेरे देखे प्राण रहैं कौन लेखे मैं तो पर्‍यो अति अंदेशे न जानूं तोहिं कहां है ॥ मैं तो हूँ विचारो तैनें कहा प्राण धारो तान नैन बान मार्‍यो उर कसकत जहां है॥कहै रंगीलाल आ-खियां लग दिवानी भई लगके गईं अखियां फिर लाज वह कहां है ?

रणवीरसिंहके यह वचन सुन राजकुमारीने एक फूल ले प्रथम कानसे लगाया फिर छातीसे लगाया और फिर पावोंसे दबाकर फेंक-दिया और आप अपने वतनको चलीगई. परंतु राजकुमार रणवीर-सिंहके विरहमें उसकी यह गति हुई कि उसे उसी दिनसे खान पान सोना आदि कुछभी नहीं सुहाताथा और अपनी चित्रसारीमें रात दिन पडी पडी आहके नाले भरतीथी उसकी यह दशा देख सखियां समझाने लगीं कि,हे राजकुमारी ! आप ऐसी बुद्धिमान् होकर बिना जाने पहिचाने एक परदेशीपर मोहित होती हो यह बात आपको भला कब शोभा देती है ? यह सुन राजकुमारी कहने लगी ।

दोहा

जानन लागी हे सखी, सोई जानत पीर।
दूजेको दरशै नहीं, जिगर घाव गंभीर ॥

हे सखियो ! मुझे उस विदेशीके देखे बिना कल नहींहै जिस दि-नसे मैंने उसके रूपकी छटा देखीहै उसी दिनसे मेरे कलेजेपर उस की मोहब्बतकी घटा छाईहै वह उसकी मृगकीसी चितवन मन्दमन्द हँसन मोतीसे दशन घुँघरवाले केश और उत्तम राजकुमारोंकासा भेष मेरे कलेजेको चीरकर ऐसा समायाहै कि मैं उसको लाखों भाँ-

तिसे भुलाया चाहतीहूं परंतु मेरा दिल उसको पलभर नहीं भूलता हे सखियो! जो तुम मेरे प्राण बचाया चाहो तो उस विदेशीसे मिलानेका उपाय करो नहीं तो मेरा जीना कठिनहै यह कहके आह भर कर यह दोहा पढा:-

दोहा

हे प्यारे कितको गये, नेह नवीन लगाय ।
अँखियां प्यासी रूपकी, देउ दरश किन आय ॥

हे मैना ! इधर तो राजकुमारीका रणवीरसिंहके वियोगमें यह हाल था और उधर रणवीरसिंहका यह हाल था कि राजकुमारीके वियोगमें कभी तो बावलोंकी तरह दौडता कभी गिरपडता और कभी खडा होकर आह भरके यह दोहा कहने लगता:-

दोहा

हाय दई कैसी भई, कहा विचारी आज ।
नयनन तेग चलायके, गई कहांको भाज ॥

और कभी कभी ये कहकर गश खाकर गिर पडताथा और थोडी देरके बाद जब होश आता था तब हर तरहके विलाप करने लगताथा इस भाँति विरहमें व्याकुल रणवीरसिंह उस वनमें फिरने लगा इतनेहीमें उसके साथी और उसका मित्र चन्द्रदत्तभी आन पहुँचा अपने मित्र रणवीरसिंहकी ऐसी बुरी दशा देखकर वह बहुत व्याकुल हुआ और पूछने लगा कि, हे मित्र ! आपका यह क्या हालहै जो बेहोश पडेहो ? तब रणवीरसिंह अपने मित्र चन्द्रदत्तको देखकर हाय मारकर यह दोहा बोला:-

दोहा

हे प्यारी कितको छिपी, मार विरहके बान ।
वचन अमी सम प्याइये, निज कर अपने आन ॥

यह बातें रणवीरसिंहकी सुनकर चन्द्रदत्त कहने लगा कि, हे मित्र ! आज तुमको क्या होगयाहै जिससे आप ऐसी एकली बेकली बातें करतेहो तब फिर रणवीरसिंहने ये कवित्त कहा ॥

कवित्त

फूलेहैं पलास मोहिं जीवेकी न आस मैंतो भयो हूं निरास चिन्ता लगी जीव जानकी ॥ जोर करै मोर औ मरोर करै कोकिल औ शोर करैं भौंरा मरोर उठैं मानकी ॥ चला है बयार शीत अंगमें भई है पार जीमें न करार घटा उठीहै विरहानकी ॥ मारेडारै मदन मरोरे डारै कामदेव चौरै डारै लाज ऋतु आई लेन प्रानकी ॥

यह हाल राजकुमारका देखकर चन्द्रदत्तने मनमें सोचा कि, ये राजकुमार किसी स्त्रीपर आशिक हुआहै यह बात मनमें विचार उससे कहनेलगा कि, हे मित्र ! तुम ऐसे निराश क्यों होतेहो अपने दिलका हाल साफ मुझसे कहो मैं उसका उपाय करूंगा अब आप अपने दिलकी घबराहटको दूर कीजिये. चन्द्रदत्तके यह वचन सुनकर रणवीरसिंह धीरज धरकर सब हाल कहने लगा कि; हे मित्र ! यहां एक स्त्री अपनी सहेलियोंको संग लिये स्नान करने आई थी सो उसके रूप यौवनका वर्णन मुझसे नहीं होता परंतु हां मैं कुछ आपसे कहताहूं सो सुनिये ॥

छप्पय

अमल कमल दल वरन नयन चंचल अनियारे ।
अमृत रूपी वचन केश कंचन कुच कारे ॥
चन्द्र छटा सम रूप सकल तन सुभग सुहावत ॥
मायावतसी नारि हार उर पुष्प बिराजत ॥
ग्रीवा कपोत शुक नासिका गति गयंदनी चालजहँ ।
शीलवंत सुन्दर अधिक जंघ केलिके खंभ तहँ ॥

हे मित्र ! जबसे मेरी और उसकी चार चार नजरें हुई हैं तबसे मुझे बेकली छाई है और खाना पीना कुछ अच्छा नहीं लगता सो हे मित्र! अब कोई ऐसा उपाय करना चाहिये जिसमें वह मेरे प्राणोंको हरने-वाली मुझको मिलै नहीं तो बिना उसके देखे मेरे इन प्राणोंका रहना कठिनहै. ये बात राजकुमारकी सुनकर चन्द्रदत्त कहनेलगा कि, हे मित्र ! पुरुषको इतना असमर्थ नहीं होना चाहिये क्योंकि जबतक किसी कामको अच्छी तरह सोच समझ न ले तबतक उसमें फँसना आकिलोंका काम नहीं देखो हमारे बुजुर्गोंने नीतिशास्त्रमें लिखाहै:—

दोहा

बिना विचारे जो करै, सो पाछे पछिताय ।
काम बिगारे आपनों, जगमें होत हँसाय ॥

सो हे मित्र ! आप बुद्धिमान् होकर स्त्रियोंपर ऐसे मोहित होतेहैं आपने नहीं सुना कि, राजा भर्तरीने जोग क्यों लिया था देखो भर्त-रीजीने क्या लिखाहै ।

दोहा

रसमें त्योंही रोसमें, दरसत सहज अनूप ।
बोलत वचन चितौनमें, वनिता बंधन रूप ॥

हे मित्र ! इन स्त्रियोंके बंधनमें पांडित व गुणवान चतुर मनुष्य नहीं आतेहैं क्योंकि यह मनुष्यके लिये सदा बंधनरूपहै यह बात चन्द्रदत्तकी सुनकर रणवीरसिंह कहने लगा हे मित्र ! स्त्री मनुष्यों का बंधनरूपही है तो बडे बडे कवियोंने ऐसा क्यों लिखाहै ।

दोहा

नूपुर कंकन किंकनी, बोलत अमृत बैन ।
काके मन नहिं वशकरें, मृगनयनीके नैन ॥

राजकुमारके इस दोहेको सुनकर चन्द्रदत्तने कहा कि, हे मित्र !

आपका कहना ठीक है परंतु जो बुद्धिमान् मनुष्य हैं वे इनके कटाक्ष-रूपी बाणोंसे मार नहीं खाते क्योंकि किसी कविने कहा है ॥

छप्पय

करत जोग अभ्यास आप मन कसकर राख्यो ॥
पार ब्रह्ममें प्रीत प्रगट जिन यह सुख चाख्यो ॥
तिनको तियके संग कहा सुख बातन ह्वै है ॥
कहा अधर मधुपान कहा लोचन छबि छै है ॥
मुखकमल श्वास सौगंधि कहाँ कठिन कुचको परस ॥
परिरंभन चुंबन कहा जोगी जन मन एकरस ॥

दोहा

तीन लोक तिहुँ कालमें, महा मनोहर नारि ।
सब दुखकी दाता यही, देखो सोच विचारि ॥

ये बातें चन्द्रदत्तकी सुनकर राजकुमार कहने लगा कि, हे मित्र ! इस संसारमें स्त्रीके सिवाय आनन्दरूपी वस्तु और कोई नहीं है जिस मनुष्यने इस संसारमें आकर स्त्रीरूपी रत्नका सेवन नहीं किया उस मनुष्यका जीवन इस संसारमें वृथा है, क्योंकि आप देखिये किसी कविने क्या लिखा है ॥

दोहा

नीच वचन सुनि अनख ताजि, धरहु हिये यह भेव ।
कै तो सेवो गिर वनन, कै कामिन कुच सेव ॥

कुंडलिया

पंडित जन जब करतहैं तिय तजिवेकी बात ॥
करत वृथा बकवाद वह तजी नेक नहिं जात ॥
तजी नेक नहीं जात गात छबि करन कनक वर ॥
कमलपत्रसम नयन बैन बोलत अमृत तर ॥

सोहत मृदु मुख हाथ अंग आभूषण मंडित ॥
ऐसी तियको तजै कौनसो है वह पंडित ॥

दोहा

सुनी बात एक और हू, मुख्य बात ये दोय ।
कै तिय जोबनमें रमें, कै वनवासी होय ॥

यह वचन राजकुमारके सुनकर चन्द्रदत्त कहने लगा कि हे मित्र ! ये स्त्रीरूपी रत्न मूर्खोंके सेवन योग्य है- क्योंकि पंडित लोगोंने तो इसके चरित्रोंको और दोषोंको भली भांतिसे विचार निंदाही करी है देखो ॥

छप्पय

क्षीण लंक कुछ पीत नयन पंकजसे राजत ॥
भौंहैं काम कमान चन्द्रसो मुख छबि छाजत ॥
मत्त गयंदसी चाल चलत चितवन चित चोरत ॥
ऐसी नारि निहार हाथ पंडितजन जोरत ॥
अतिही मलीन सब ठौर वह चितवन भरी बहु कपट छल ॥
ताकों सो प्राणप्यारी कहत अही मोहमाया प्रबल ॥

यह सुन चन्द्रदत्त कहने लगा कि, हे मित्र ! मैं आपसे बार २ नाहीं करताहूं कि, आप भूलकर भी ऐसे फंदेमें न पडिये और जो आपकी यही मर्जी है और अपनी पहली स्त्रीको तकलीफही देनी है तो मैं आपका दूसरा व्याह करवा दूंगा तब राजकुमारने यह दोहा कहा ।

दोहा

मेरे मनमें बसगई, सुन मेरे प्रिय यार ।
बिन देखे उसके मुझे, आवै नहीं करार ॥

तब चन्द्रदत्त कहने लगा ।

दोहा

इस गमको दो छोड तुम, सुनो मित्र चित लाय ।
उससे अच्छी कामिनी, दूंगा तुमको लाय ॥

यह सुन रणवीरसिंह कहने लगा ।

दोहा

चातक प्यासो मरतहै, रहै नदीके पास ।
उस जलको पीवे नहीं, करे स्वातिकी आस ॥

तब चन्द्रदत्तने कहा ।

दोहा

इस हठको तू छोडदे, कहूं तुझे समझाय ॥
सकल द्वीपकी पद्मिनी, दूंगा तुझको लाय ॥

हे मित्र ! इस इश्कके जालमें मत फँसो यह इश्क कठिन खांडेकी धार है जैसी ईश्वरने तुम्हारे घरमें स्त्री दीहै उसीसे इस दुनियांके आनन्दको मानो, पराई स्त्रीके संग करनेसे आनन्द नहीं मिलता तब रणवीरसिंह बोला ।

दोहा

कहँ कंचन कहाँ काचहै, कहां नीच कहँ भूप ।
पदमावति सरमातहै, देखत उसका रूप ॥

तब चन्द्रदत्त बोला ।

दोहा

नाहक तुम मूरख बनो, होके चतुर सुजान ।
सोच समझ घरको चलो, तजो इश्ककी बान ॥

दोहा

इश्क फंदमें आनके, मती फँसावे नारि ।
मान कही रणवीरसिंह, क्यों होताहै ख्वार ॥

यह सुन रणवीरसिंह कहने लगा ।

दोहा

इश्क रंग हमने रँगा, अब चाहै सो होय ।
बिना दीद महबूबके, जीना किसविध होय ॥

दोहा

होनहार सो होयगी, सुनो मित्र सुज्ञान ।
कै लावें महबूबको, कै खोवैंगे जान ॥

तब तो चन्द्रदत्तने जाना कि, ये मूर्ख बिलकुल उसपर दिलोजानसे आशिकहै मैंने इसको बहुतेरा समझाया परंतु इसके दिलमें एक नहीं आई इससे अब कौनसा उपाय करना चाहिये जो ऐसे समयमें इसके साथ न रहूंगा तो जाने यह कहां कहां टक्कर खाता फिरैगा ? इस बातको सोचकर चन्द्रदत्त कहने लगा कि हे मित्र ! जिस स्त्रीपर तुम मोहित हुए हो उसने तुमसे क्या कहा और वह कहांकी रहने वाली थी यदि उसका पता बताओ तो मैं तुम्हारी प्यारीके लानेका उपाय करूं ।

दोहा

ना कुछ मुखसेती कही, ना कुछ किया बयान ।
नयन मिलाके दूरसे, गई आपने स्थान ॥

दोहा

चितवनमें मन हर लियो, कहे नहीं कछु बैन ।
मुझको घायल कर गई, मार विरहके नैन ॥

तब चन्द्रदत्तने कहा–

दोहा

मिलना उसका कठिन है, सुनि ले सारा हाल ।
सोच समझ घर बैठजा, मति पड़ उसके ख्याल ॥

तब राजकुमार बोला—

दोहा

जो वो हमको मिलगई, रही हमारी जान ।
उस प्यारी बिन यार सुनि, खो देवेंगे प्रान ॥

तब चन्द्रदत्त कहने लगा कि हे मित्र! जिस आदमीका निशान कुछ भी मालूम नहीं उसका क्योंकर पत्ता लग सक्ताहै जिस समय वह आपके सामने गईथी उस वक्त उसने कुछभी इशारा तुम्हारी तरफ किया था ? ये बात सुनकर राजकुमार बोला ॥

दोहा

सिरसे फूल उतारके, कानों लिया लगाय ।
फिर छातीपर धर उसे, पांवन लीय दबाय ॥

हे मित्र! वह मेरे प्राणोंके हरने वाली इतना इशारा करके मुझे अपने नयनरूपी बाणोंसे घायल कर न जाने कहांको चली गई यह कहकर बडी कडी आह भरके दोहा कहने लगा ॥

दोहा

चन्द्रवदन मृग लोचनी, सिरके लम्बे केश ।
दरशन नेक दिखायके, छिपी कोनसे देश ॥

दोहा

कहा करूं कैसी करूं, लगा विरहका तीर ।
नयन लगेकी होतहै, बाननकीसी पीर ॥

तब चन्द्रदत्त कहने लगा कि हे मित्र! अब आप ऐसे निराश क्यों होतेहैं अब उसके इशारोंका मतलब मैंने समझ लिया उसने फूल जो कानसे लगाया था उसका मतलब यह है कि वह कर्नाटक देशके राजाकी बेटी है फिर उसने जो फूलको छातीसे लगाया उसका मतलब यह है कि, उसने तुमसे कहा था कि मैं तुमको दिलोजानसे

चाहतीहूं और उसने जो फूल पांवके तले दबाया था उसका मतलब यह है कि उसका नाम पद्मावती है सो हे मित्र ! अब उस स्त्रीका सब हाल हमने जानलिया अब उसके मिलनेमें संदेह मत समझो यह कहकर दोनों यारोंने चलनेपर कमर बांधी और अपनी सब फौज अपने वतनको लौटादी तब वे दोनों यार अपने अपने घोडेपर सवार होकर चले परंतु रणवीरसिंहको कल नहीं पडतीथी बार बार उसी राजकुमारीकी याद करता चला जाताथा और यह दोहा पढने लगता था ॥

दोहा

मृगनयनी जबसों लखी, बिसऱ्यो भोजन पान ॥
निशिदिन जिय चिंतत रहै, रुचै काम नहिं आन ॥

दोहा

मलय पवन तापत तनहिं, फूल न माल सुहात ।
चन्दन लेप उशीर रस, उलटौ जारत गात ॥

दोहा

हार धार तरवारसी, सूरज सो बढ चन्द ॥
सबही सुख दुख सम भये, परे प्राण हूं मन्द ॥

इस प्रकार अनेक तहरकी विरह भरी बातें करते चले जातेथे निदान कई दिनके बाद शामके वक्त एक सघन वनमें पहुँचे तब राजकुमार उस वनकी अपूर्व शोभाको देख विरहके वश हो बावलोंकी तरह यह रागनी गाने लगा ॥

राग गौरी

सुनि प्यारी भई सांझ सुहाई ॥
दीप कमल सकुचाने प्रफुल्लित कुमुदिन निशि ढिग आई ॥
शशि प्रकाश विकसित तारागण उगने लगे नभमें सुखदाई ॥

साजत सेज सबै युवती गण प्रीतम हित हेतु बढाई ॥
फूले रैन फूल बागनमें शीतल पवन अधिक सरसाई ॥
रंगीलाल मिल आन पियारी तनकी तपत नसाई ॥

इसप्रकारकी राजकुमारकी विरह भारी रागनीको सुनकर चन्द्रदत्त कहने लगा कि, हे मित्र ! आप इतना सोच क्यों करतेहैं देखो ईश्वरको याद रक्खो मैं तुम्हारी प्यारीसे तुम्हें शीघ्रही मिलाये देताहूं परंतु आप धीरज बांधिये घबराइये नहीं. यह बात चन्द्रदत्तकी सुनकर राजकुमार बोला कि हे मित्र ! मेरा चित्त मेरे पास नहीं है।

दोहा

धीरजहू धीरज तजी, लखिप्यारी मुखचन्द ॥
तामें मेरी कौन गति, पऱ्यो प्रेमके फन्द ॥

दोहा

प्यारीको मुख देखके, ऐसो है को वीर ॥
ताहि काम छेदत नहीं, कर कर निपट अधीर ॥

दोहा

जबतक कामिन नैनके, लगत न शर उर आन ॥
तब तक ही या देहमें, दीखत सबके प्रान ॥

दोहा

जा नरके उरमें लगे, नारि नयनके तीर ॥
ऐसो को जग शूरमा, फिर धारै उर धीर ॥

सवैय्या

ऐसहि अंग उमंग भऱ्यो चित अंग अनंगको मंत्र जगायो ॥
काजर रेख चुभी दृगमें दोऊ मोहन काम कमान चढायो ॥
आवन बोलन डोलन ताहि चितमाहिं चढी अति चोप बढायो ॥
सुन्दर रूप वो नैननमें वसी भूलत नाहिं सो क्योंहू भुलायो ॥

सो हे मैना ! इसप्रकारकी बातें करते करते वह रात बीती और प्रात होतेही दोनों मित्र घोडोंपर सवार होके आगे चले सो कईदिनके बाद कर्णाटक देशमें जा पहुँचे । तब राजकुमारने चन्द्रदत्तसे कहा कि हेमित्र ! अब कहां ठहरोगे ? तब चन्द्रदत्तने कहा कि हेराजकुमार! अभी आगेकोचलो कोई उम्दा मुकाम देखकर निवास करेंगे. यह कहकर आगेको बढे तो एक बाग नजर आया उस बागके चारों तर्फ पक्का परकोटा खिंचाहुआ था और जगह जगह रौश पट्टियों पर तरह तरहकी फुलवारियां लगीहुई और छोटे छोटे पक्के तालाब उसमें बनेहुए थे और उनमें अतिनिर्मल नीर तथा तरहतरहके पक्षी किलोल कररहेथे और कमलभी खिल रहेथे. ऐसी शोभाको देखकर दोनों यार उस बागमें घुसगये उस वक्त संध्याका समय हो आया था सो अपना समय जानकर चमेली चम्पा केतकी गेंदा गुलाब गुलतुर्रा अनेकों प्रकारके पुष्प खिलरहेहैं और अनेकों प्रकारकी लता मारे बोझके झूम झूम पृथ्वीको चूम चूमकर शोभा दे रहीहैं और ठौर ठौर वृक्षनपर मोर चकोर सारस हंस कपोत अनेक प्रकारके जानवर मीठी २ बोली बोल रहेहैं और उस बागके बीचमें एक बारहदरी बनी हुई है जिसके चारोंतर्फ फुहारे अजबही बहार दिखारहेहैं तब वे दोनों यार एकही रौशपर मोरछलीके पेडके नीचे आसन मारकर बैठगये इतनेहीमें उस बागकी मालिन आई और इन दोनोंको बैठा देखकर बडे क्रोधसे बोली कि तुम कौन हो जो पद्मावती राजकुमारीके इस जनाने बागमें चले आये हो जो तुम अपने जीकी खैर मनावो तो यहांसे जल्दी चले जावो नहीं तो मैं अभी सिपाहियोंको बुलाकर तुम्हारी खाल उडवा दूंगी तब चन्द्रदत्तने पांच अशरफी अपनी जेबसे निकालकर उस मालिनको दी और कहा कि हे मालिन! किसीतरहसे हमको इस बागमें रहनेदे तब तो मालिनने अपने मनमें जाना कि ये कोई राजकुमारहैं किसी आफतके मारे यह विचारे इस जगहपर आ-

येहैं इससे इन्हें अपने रहनेके स्थानमें लेचलूं ये बात मनमें बिचारकर उन दोनोंको अपने मकानमें लेगई और एक अच्छासा मकान उनके ठरहनेको बतादिया और उनके घोडोंको अपने बैलके खिरकमें बांधदिया सो तोता बोला कि हे मैना! इधर तो राजकुमार पद्मावतीके विरहमें दिन रात व्याकुल था और जबसे उस राजकुमार और राजकुमारीकी चार आँखें हुईथीं उसी दिनसे राजकुमारकी मोहब्बतमें राजकुमारी ऐसी गिरफ्तार हुई कि, उसने खाना पीना सोना बैठना सब तजदिया और दिनरात रोते गुजरती थी. तब उसकी संगकी सखियोंने कहा कि, हे प्यारी! आपको क्या होगयाहै जिससे दिनरात आप रोरोकर बितातीहो और कभी एक घडीभरभी हँसी खुशीकी बातें नहीं करतीहो. देखो आजकल कैसी सुन्दर सुहावनी मनभावनी वसंत ऋतु आईहै इस ऋतुमें स्त्रियां अनेकों तरहकी राग रागिनियोंको गाय गाय तथा डफ ढोल सितार और तरह तरहके बाजोंको बजाय बजाय अबीर गुलाल और कुमकुमादि रंगोंको उडाय उडाय वसंत महाराज ऋतुराजकी अवाईकी बधाई गातीहैं सो हे प्राणप्यारी! आप ऐसी आनन्दरूपी ऋतुमें भी दिनरात रोतीहो आपको ऐसा क्या कठिन दुःख व्यापाहै अब आप मेरे कहनेसे सब दुःखको छोड वस्त्र आभूषण धारण कर सब सखियोंके साथ गाओ बजाओ और अपने सब दुःखको बिसराओ मनको बहलाओ उठो अब आप विलम्ब मत करो देखो आपको दुःखित मलीन देखकर सबही संगकी सहेलियोंका चित्त उदास रहताहै हे प्राणप्यारी! यह समय ऐसा वियोग करनेका नहीं है जब इस कदर राजकुमारीको उसकी एक सहेलीने समझाई और यह कवित्त कहा ॥

सवैया

मिल पूजिये री सवरी संगले पट पीरो सखी तनपै पहिरो ॥
हँस खेलके खेलिये फाग अली जग आयो वसंत उमाह भरो ॥

रंगिलाल गुलाल विशाल भरो गत ताल धमाल को ध्यान धरो ॥
उठो गाओ गवाओ नचाओ नचो मन भायो करो चित चायो करो॥

सवैया

आयो वसंत चहूं दिश होतहै साजो जू रंगको मोद बढाओ ॥
छोडो वियोग चलो सखी साथले प्रीतकरो हँस दुःख गमाओ ॥
गाओ बजाओ हिंडोला धमार अबीर उडाय सखीन नचाओ ॥
गाओ बजाओ अनंद करो दुख दूर करो सु वसंत मनाओ ॥

यह वचन सखीके मुखसे सुनकर राजकुमारी आह भरकर कहनेलगी ॥

सवैया

ऋतु आगम जान वसंत सखी जग कोयल बैन उचारन लागी ॥
खिले फूल उठावत शूल हृदय गति मारुत मन्द अँगारसी लागी॥
नव पल्लव वृक्षनते निकसे चहुँ ओर मनों विरहानल जागी ॥
सखी पास नहीं जिनके पियहैं यह जानें मनोज मनों हत भागी॥

सवैया

जादिनते दृग लागे सखी कल नाहिं परै दिन रैन घरी ॥
विरहानल जालिम जोर करै जिय जारत प्रीति उमाह भरी ॥
वह प्यारो पिया दिल लेके मेरो कित जाय छिपो नहिं जान परी ॥
सखि मोय वसंत सतावतिहै तरसावति वीर मनोज अरी ॥

राजकुमारी कहनेलगी कि, हे सखी जिस दिनसे वह राजकुमार उस तालावपर मैंने देखाहै बस उसी दिनसे मेरा मन उसके रूपजालमें ऐसा फँसाहै कि मुझको उसके देखे बिना कुछभी नहीं सुहाताहै यह कह ठंढी साँस लेकर पलंगपर गिरपडी और आह भरकर यह दोहा कहने लगी ॥

दोहा

हाय पिया कितको गये, चितवन नयन दिखाय ॥
दरशन परसन आपके, बिन यह जी अकुलाय ॥

दोहा

मैं चकोर तुम चन्द्रमा, देहु दरश मोहिं आय ॥
नातर तुम बिन प्राण ये, तडफ तडफ कर जाँय ॥

ऐसे वचन विरहभरे राजकुमारीके सुन सब सखी समझाने लगीं कि हे राजकुमारी ! आप ऐसी बुद्धिमान् होकर बिना जाने पहिंचाने विदेशीपर ऐसी मोहित होकर अपने प्राणोंको बेकल करतीहो क्या जानें वह कौन था और कहांसे आया था और जानें कहांको चलागया आपभी भला वह मसल करतीहो ॥

(मान न मान मैं तेरा महमान)

भला अपने मनसे सोचकर तो देखो कि इसतरह किसीकी भी प्रीत हुईहै अब आप महरबानी कर हमारा कहना मानिये और इस झूठे गमको छोडिये यह बातें सखियोंकी सुनकर राजकुमारीनें कहा॥

दोहा

विरह अगन तनमें जगी, हुई कलेजे पीर ।
मेटनकी तदवीर नहीं, बेकल रहत शरीर ॥

यह दोहा कह बेहोश होकर विरहरूपी अथाह समुद्रमें डूबगई तब सखियोंने अतर गुलाब छिडक कर होश कराया जब कुछ होश आया तो उसवक्त राजकुमारी विरहसे भरी यह गजल धीरे २ पढने लगी ॥

गजल

ये क्या इश्क आफत उठाने लगा ॥
मेरे दिलको मुझसे छुटाने लगा ॥

मिला मेरे दिलवरको मुझसे शिताव ॥
नहीं तो जी मेरा ठिकाने लगा ॥
गुनह चश्म खूंख्वारका कुछ नहीं ॥
मेरा दिलही मुझको डुबाने लगा ॥
फलकनें जब इतना सताया न था ॥
कि जिसकी एवज रुलाने लगा ॥
नहीं मुझको दुश्मनसे शिकवाह कुछ ॥
मेरा दोस्त मुझको सताने लगा ॥

यह सुनकर सब सखियोंने जाना कि ये राजकुमारी किसी तरहसे नहीं समझेगी इससे तो बेहतर यहहै कि इसकी मातासे यह सब हाल कहदेना चाहिये क्योंकि कहीं ऐसा न हो कि हम तो न कहें और इस बातको वह खुद सुनलें तो फिर हम सबपर आफत आवेगी ये बात विचार कर सब सखियोंनें जाकर राजकुमारीकी मातासे कहा कि हे रानीसाहबा! पांच चार दिनसे राजकुमारीका बुरा हाल है न तो वह खातीहै न पीतीहै न सोतीहै न बैठतीहै आठों पहर रोया करतीहै और कभी एकली बेकली बातें करने लगती है. ये बात सखियोंकी सुनकर पद्मावतीकी माता पद्मावतीके महलोंमें आई और आनकर पद्मावतीसे कहनेलगी कि, हे बेटी ! तुझे क्या होगयाहै ? और तू कैसे बेचैन पडीहै ? ये बात माताकी सुनकर पद्मावतीने कहाः—

दोहा

मदन अगन दहकत हिये, हाथ धऱ्यो नहिं जात ।
विना शीत दहकत अधिक, जारत निशि दिन गात ॥

दोहा

जिम कुमकुमके हंससों, हंसी धोखा खाय ।
तिम हम उनसों नेहकर, रही हाय पछिताय ॥

ये वचन राजकुमारीके सुनकर पद्मावतीकी माता बोली कि हे बेटी ! आपको यह क्या हुआ जो ऐसी चतुर होकर बावलोंकी तरह बातें करती हो तू दिन पर दिन सूखती जाती है और तेरा रंग पीला पडगयाहै, सो हे बेटी ! तू अपने मनका सब हाल सत्य सत्य मुझसे कह माताका यह वचन सुनकर पद्मावतीने यह कवित्त पढा॥

कवित्त

तोसों मैं दुराई नहिं कबहूं हियेकी बात अबहूं दुराऊं कैसे सांची कर मानिये ॥ नेकही चितयके मेरे चित्तको चुराय गयो रूपकी निकाई वाकी कहांलों बखानिये ॥ देखे बिन प्राणप्यारे मेरी जो दशाहै सो मैं कहा कहूं सब लई नें पहचानिये ॥ लगन नईकी भई होय अकुलात भात गई कुलकान वाके मनकी न जानिये ॥

दोहा

वा मनकी मालूम ना, किम काटत होय रैन ।
यहां मो मनको करतहै, मैन महा बेचैन ॥
बिन देखे पिय प्राणके, मोको कछु न सुहाय ।
घोर हलाहल दीजिये, सब संकट मिटजाय ॥

इस प्रकार पद्मावतीकी विरहभरी बातें सुनकर उसकी माताने कहा कि ये सखियो इसके मगजको गरमी बढगई है इससे वह ऐसी निर्लज्जपनेकी बातें करतीहै सो तुम डौढीवानसे जाकर कहो कि बहुत जलदी किसी वैद्यको जाकर लावे यह सुन बांदियोंने जाके डौढीवानसे कहा कि, रानी साहबाका हुक्म है कि, शीघ्रही राजवैद्यको लाओ इतना सुन डौढीवान गया और वैद्यराजको लाय महलोंमें हाजिर किया. तब वैद्य राजकुमारीकी नाडी देखने लगा तब राजकुमारी आह भरकर ये बोली.

दोहा

नाडी छुवतै वैदके, पडे फफोला हात ।
जा वैदा घर आपने, मोयन कछू सुहात ॥

दोहा

नैनबान मेरे लग्यो, रहो जहर तन छाय ।
ऐसो को जग वैद है, मोहिं अच्छी करजाय ॥

यह बात राजकुमारीकी सुनकर वैद्यनेभी मनमें जानलिया कि, ह राजकुमारी किसी पुरुषपर मोहित हुई है यह बात मनमें विचार कर वैद्यने राजकुमारीकी मातासे कहा-

दोहा

विरह व्यथा याके तनहिं, नैन लगेको रोग ।
बिन प्यारे दिलदारके, मिटै न याको सोग ॥

ये कहकर वैद्यने कहा कि, इस राजकुमारीको किसी मर्दका वियोग हुवा है सो जबतक वह मरद इसको न मिलैगा तबतक आराम होना मुशकिल है यह कहकर वैद्य तो चला गया और राजकुमारीकी माता अपने महलको चलीगई.

और इधर सब सखियोंने विचार किया कि, इस समय हम तुम सब मिलके गावें बजावें क्योंकि उसमें कुछ देरलों राजकुमारीका भी दिल बहल जावेगा. यह विचार कर सबने मिलकर गानेका सामान इकट्ठा किया और राजकुमारीसे कहने लगीं कि आपकी आज्ञा होय तो कुछ इस ऋतुराज महाराजके राग रागनी गायकर सुनावें, क्योंकि यह वसंत उत्सव योंही बीता चला जाताहै कहिये आपकी क्या मरजी है? यह वचन सखियोंका सुनकर राजकुमारी बहुत झुंझलाकर कहने लगी ।

कवित्त

फूलेंगे पलास वन आगसी लगाई देख कोकिलकी कुहुक कलशब्द सुनावेगो॥ त्योंही सखि लोग सब गावेगो धमार धीर हरन अबीर रंग सबही उडावेगो ॥ सावधान होहुरी वियोगिनी संभार तन अतन तनक हीमें तापते तपावेगो ॥ धीरज नसावत बढावत विरह काम कहर सो मचावत वसन्त अब आवेगो॥१॥

ये कह लम्बी साँसभर फिर दोहा पढा ॥

दोहा

प्यारे तुम कितको छिपे, तनकतो मोहि निहार ॥
तुमबिन ऋतू वसंतकी, तन मन डारत जार ॥ १ ॥

इसप्रकार राजकुमारी रणवीरसिंहके वियोगमें रात दिन व्याकुल रहतीथी सो यह हाल देखकर पदमावतीकी माताने पदमावतीके बापसे कहा कि हे स्वामी ! अब आपकी बेटी पदमावती व्याह के योग्य भई और अब उसको विरह सताने लगाहै क्योंकि कुछ-दिन भये तब वह अपनी सहेलियोंके साथ सरोवरमें स्नान कर-नेको गईथी सो उसी दिन उसने वहां एक पुरुष राजकुमार देखा था उसी दिनसे उसपर ऐसी मोहित हुई है कि खाना पीना सोना बैठना सब तजादिया है और रात दिन उसीकी याद करकर रोया करती है अब उसका क्या उपाय करना चाहिये ?॥

तब राजा बोला कि अच्छा तुम पदमावतीको समझादो कि हम तुम्हारी सादी उसी राजकुमारके साथ कर देंगे. क्योंकि हमें इसकी शादी करनी है इससे पदमावतीके मन माफिक करनेमें अच्छाहै ये कह राजा तो कचहरी चले गये और रानी बेटीके पास आकर बोली कि हे बेटी ! तेरे बापने कहदिया है कि तेरा व्याह उसी राजकु-मारसे करदूंगा और तू उसका पता बता दे कि वह कौन देशका-

रहनेवाला है और किस राजाका कुमार है तो मैं उसके तलाश करनेको अपने दूतोंको भेजूं ये बात सुनकर राजकुमारीने कहा मैं उसका पता निशान कुछभी नहीं जानती हूं ऐसे कहकर यह दोहा पढने लगी ॥

दोहा

गोरोगोरो गाबरू, लीले को असवार ।
कर घायल मुझको गयो, नैन कटारी मार ॥

दोहा

चंदासम मुख जासु को, सिरपै लंबे केश ॥
मारमोय बनखंडमें, गयो कौनसे देश ॥

दोहा

कारी घुंघरारी जुलफ़, छोटी छोटी रेख ॥
चन्द्र छटा सम रूपको, सरमावति रति देख ॥

और माता ! तू यह मत जान कि, उसको देख मेरी ही यह गति हुई है बल्कि मुझसे सिवाय उसकीभी गति होगी क्योंकि जिस समय मैं स्नानकर सरोवरसे चलीथी उसी समयसे वह मेरे विरहमें बावलासा होकर चारों तरफ़ घूमता फिरता था सो यह प्रीति एक तरफ़से नहीं होती देखो किसी कविने : कहाहै-

दोहा

प्रीति रीति जग कठिनहै, जानतहैं सब कोय ।
नयना जबलग जातहे, विथा दोऊ लँग होय ॥

दोहा

लागी लागी सब कहत, लागी बुरी बलाय ॥
लागी जबही जानिये, वार पार ह्वै जाय ॥

इस प्रकार बेटीके वचन सुनकर रानी वहांसे चली और अपने राजासे सब हाल कहा तब राजा इस बातको सुनकर चुप होयगया और अपने मनमें कहने लगा कि जिस आदमीका पता निशान मालूम नहीं भला उसका पता क्योंकर लग सक्ताहै ? सो हे मैना ! इधर राजा और रानी तो बेटीके सोचमें रहा करें और पद्मावती रात दिन राजकुमारके विरहमें तडफती थी सो अब यहां का किस्सा बंदकर आगेका हाल कहताहूं एक दिनका जिक्रहै कि जिस बागमें राजकुमार और राजकुमारका मित्र ठहराथा उस बाग की मालिन एक हार गूंथकर राजकुमारीके वास्ते लेकर चली उस समय चन्द्रदत्तने कहा कि हे मालिन ! यह ऐसा सुन्दर हार तु किसके लिये लेजातीहै तब वह मालिन कहने लगी कि,हे विदेशी-यो ! इस शहरके राजाकी बेटी पद्मावती किसी राजकुमारपर मोहित हुई है सो उसी दिनसे रात दिन बेकल रहतीहै सो आज मैं उसके लिये ये हार बनाकर लिये जातीहूं यह सुन चन्द्रदत्तने पांच अशरफी अपनी जेबमेंसे निकालकर मालिनको दीं और कहा कि एक कागज हम तुमको देतेहैं सो तुम उस राजकुमारीको देदेना तब मालिन बोली कि बहुत अच्छा तब राजकुमारने कागज लिखा ॥

दोहा

जेठ सुदी तिथि पंचमी, और बृहस्पतिवार ।
उस दिन तुम मुझको मिली, वा सरवरके पार ॥

दोहा

न्हाय धोय सिंगार कर, देखी मम तन ओर ॥
कर कटाक्ष मोपर कठिन, लाई चितको चोर ॥

दोहा

जिस दिनसे देखी तुम्हें, तबसे नहिं चित चैन ॥
थोडे जलकी मांछली, ज्यों तडफै दिन रैन ॥

दोहा

दैवयोगसे बागमें, किया तेरे विश्राम ॥
मरजीहो सो कीजिये, हे पदमावति वाम ॥

दोहा

जादिन ते नयना लगे, तजा राज अरु देश ॥
अब आये इस देशमें, किया फकीरीभेष ॥

कागजमें यह लिखकर वह कागज मालिनको दे दिया तब वह मालिन उस कागजको लेकर और हारको लेकर महलमें पहुंची और वह कागज हारके साथ ही राजकुमारीको देदिया और राजकुमारी चौंककर उस कागजको खोलकर बांचनेलगी जब उस पत्रको बांचा तो मोहब्बतने जोर किया और गश खाकर जमीनपर गिरपडी फिर जब कुछ थोडा थोडा होश आया तब यह दोहा कहनेलगी.

दोहा

पातीते छाती मेरी, शीतल कीनी आज ॥
अरे विरह अब भागजा, आयो सुखको साज ॥

दोहा

हे मन अब धीरज धरो, क्यों इतनो अकुलाय ॥
पाती आई पीवकी, बांचनदे चितलाय ॥

दोहा

अहो मदन तन देवता, तनक धरो उर धीर ॥
पाती बांचन दीजिये, शीतल होय शरीर ॥

दोहा

आजहै घडी सुहागकी, आयो पिया सँदेश ॥
अहो विरह अब माफकर, जाओ अपने देश ॥

दोहा

पाती बाँचत मगनहै, प्रेम नयन बह नीर ॥
हिरदै चाहत मिलनको, धरत नेंक ना धीर ॥

कवित्त

आओरी सहेली मिल गाओ औ बजाओ सब करो तन शृंगार शोक बाहर बहाओरी ॥ आजहै बसंत तंत होरीकी बहार जान केशर अबीर रंग चोआ मंगाओरी ॥ ढोलकी सितार ढफ झांझ और सारंगी ले सुन्दर धमार गाय मनको रिझाओरी ॥ वारिये वसंतपै अनंत कोटि काम सब आजतो वसंत कंत मेरो बुलवाओरी ॥

ये आनंद भरे वचन राजकुमारिके सुनकर सब सखियोंने कहा कि हे प्यारी! आज इस कागजमें क्या लिखा आयाहै सो आप उसे बांचकर ऐसी खुशी हुईहो ? तब राजकुमारीनें कहा ॥

दोहा

पाती आई पविकी, छाती लई लगाय ॥
जो विरहा दुख देतहो, दीनों आज भगाय ॥

हे सखियो ! इस प्राणप्यारेके विरहमें मेरी यह गति भई वही प्राणप्यारा आज मेरे बागमें आयाहै फिर यह दोहा कहा ॥

दोहा

आयो आयो सुनतही, नयनन बांधी धीर ॥
अब नयना सनमुखपरें, शीतल होय शरीर ॥

यह बात कहकर राजकुमारीनें खुश होकर मालिनको इनाम देकर बिदाकिया तब मालिन कहनेलगी कि हे राजकुमारी! इस कागजका जबाब राजकुमारने मांगाहै सो मुझको लिखकर दीजिये यह सुन राजकुमारीनें कलम दवात कागज मंगायकर ये उस पत्रका उत्तर लिखा ॥

दोहा

जादिन सरवर पार पै, लगे हमारे नैन ॥
तादिन सों चौंसठ घडी, पडी रहूं बेचैन ॥

दोहा

पाती लिखि छाती मेरी, शीतल कीनी आज ॥
मोय दासी निज जानके, कृपा करी महराज ॥

यह लिखकर कागज मालिनको देदिया और कहनेलगी कि, तू उनकी खूब अच्छीतरहसे खातिर करियो यह सुन मालिन वहांसे चल दीनी और अपने बागमें आनकर वह कागज राजकुमारको देदिया तब राजकुमार उस कागजको पढकर बहुत खुश हुआ सो हे मैना ! इधर तो राजकुमार अपनी प्यारीके करकमलके लिखे हुए खतको पढ२ कर खुश होताथा और उधर राजकुमारीकी सहेलियोंने उसकी मातासे राजकुमारके आनेका हाल कहा तब रानी इस बातको सुनकर बहुत खुश हुई और अपने राजाको महलोंमें बुलाकर सब हाल कहा तब राजा इस बातको सुनकर बहुत खुशहुआ और अपना दीवान भेजकर राजकुमारको बुलाया और बडी खुशीके साथ अपनी बेटी पदमावतीकी शादी उसके साथ करदी सो हे मैना ! जब रणवीरसिंहकी शादी पदमावतीके साथ होगई तब तो उन दोनोंके दिलकी उलफत निकलने लगी और उन दोनोंमें ऐसी मोहब्बत बढी कि बिना एक के देखे दूसरेको कल नहीं पडतीथी परंतु रणवीरसिंहका हमेशा यह हाल रहताथा कि दिन भरमें एक दफे रोज अपने यार चन्द्रदत्तके पास बागमें जाया करता था सो एक दिन पदमावती बोली कि, हे प्राणनाथ ! आप अपने दिलका हाल मुझसे कहो कि आप रोज कहाँ जाया करते हो, क्योंकि आपकी जुदाई मुझसे क्षणभरभी नहीं सही जातीहै यह बात राजकुमारीकी सुनकर राज-

कुमार कहने लगा कि हे प्राणप्यारी! एक मेरा चन्द्रदत्त नाम मित्रहै सो वहभी मेरे साथ यहां आयाहै सो परमेश्वरकी कृपासे हमारा आपका मिलाप तो होगया सो मैं तो आपके पास रहताहूं और वह तेरे बागमें रहताहै और उसको मुझसे ऐसी मोहव्वतहै कि वह विचारा सब घरबार छोडकर मेरे संग आनकर हरेक तरहकी मुसीबत उठा रहाहै इससे मैं उसका दिल रखनेके लिए एक वक्त नित्य उसके पास जाया करताहूं तब इसको सुनकर पदमावती चुप होगई और अपने मनमें कहने लगी कि इस यारके यहां रहनेसे मेरे प्यारेकादिल मुझसे बिगडा रहताहै इससे कोई ऐसा उपाय करूं जिससे उसे मरवा डालूं तो राजकुमारका जाना बन्द होजाय यह बात सोचकर पदमावतीनें राजकुमारसे कहा हे प्यारे! आप सरीखे कठोर मनुष्यभी नहीं देखे क्योंकि देखो उस तुम्हारे यारनें तुम्हारे साथ कैसी नेकी करीहै कि जिसकी बदौलत तुमको और हमको यह आनंद मिलाहै और फिर आप तो यहां आराम में ऐश उडातेहैं और वह विचारा तुम्हारी मोहब्बतका मारा सब घरबार छोडकर यहां पडाहै इससे आप एक काम करो तो अच्छा होगा कि कल अपने यारको यहां बुलाकर उसकी दावत करो जिससे वह भी अपने मनमें जानेगा कि मेरे यारका दिल मुझपर साबितहै. यह बात राजकुमारनें सुनकर कहा बहुत अच्छा यह कहकर अपने यारके पास गया और कहनेलगा कि, हे मित्र! आपकी भावजनें आपकी जाफतके वास्ते कहाहै सो आप मेहरबानी करके कल भोजन वहीं करना तब मित्रके वचन सुनकर चन्द्रदत्तने कहा बहुत अच्छा. यह सुनकर राजकुमार आया और महलोंमें आनकर उसे न्योता देनेका सब हाल पदमावतीसे कहा सो सबेरा होतेही रानी पदमावतीने अनेक प्रकारके बहुत बहुत अच्छे व्यंजन बनाकर और उनमें जहर मिलाकर तैयार किया और जब चन्द्रदत्त भोजनको आया उसवक्त राजकुमारनें बडे हितचित्तसे चन्द्रदत्तको

भोजन कराया जब चन्द्रदत्त भोजन करके अपने स्थान पर आया और इधर जहरका जोर हुआ उसवक्त चन्द्रदत्त तो अपने पलंगपर सोगया सो सोतेका सोताही रहगया और उधर पद्मावतीनें क्याकाम किया कि अपनी बागकी मालिनको बुलाके कहा कि हे मालिन ! मैंने आज चन्द्रदत्तको जहर दियाहै सो जब वह मरजाय तब तू राजकुमारसे आकर कहना कि हे राजकुमार ! आपके मित्र चन्द्रदत्तको आज बागमें सर्पने काट खायाहै खबरदार यह हाल किसीको जाहिर न हो-यह सुनकर मालिन अपने बागमें आई और जब चन्द्रदत्त बेहोश होगया तब आनकर राजकुमारसे कहा कि हे महाराज!आपके मित्र चन्द्रदत्तको सर्पने काट खायाहै सो वह बडे बेकल होरहेहैं इस बातको सुनकर राजकुमार वहांसे जलदी घबडाकर चला और बागमें आनकर देखा तो चन्द्रदत्त मरा पडाहै और मुखसे नीले नीले झाग निकल रहेहैं यह हालत मित्रकी देखकर राजकुमार घबडाकर रोने लगा और कहनेलगा कि हे मित्र!मुझे अकेला छोड कहांको चले अब मैं अपना जी किसतरहसे समझाऊं इस तरहकेराजकुमारने अनेक विलाप किये तब मालिनियोंनें राजकुमारको बहुत समझाया फिर राजकुमारनें एक पीनस मँगवाय उसमें ल्हाशको रखवाकर गंगाजीको भिजवादी और दो चार नौकर उसके साथ दिये जब वह पीनसवाले उसे लेकर चले तो दैवयोगसे रस्तेकी जो ठंडी ठंडी वायु अमृतरूपी लगी तो चन्द्रदत्तका जहर शांत होगया और कुछ कुछ होश आया तब संगके लोगोंसे कहने लगा कि, हे लोगो ! तुम मुझे कहां लिये चलतेहो ? तब वह सिपाही मनमें बडा अचरज मानने लगे कि चन्द्रदत्त तो मरगयाथा फिर यह कैसे जी आया यह कह सब लोग आश्चर्यसे कहनेलगे कि हे महाराज ! आपको तो सर्पनें काटाथा सो उसके जहर चढनेसे आपके प्राण इस देहसे अलग होगयेथे सो राजकुमार तुम्हारी यह हालत देखकर पहिले तो बहुत रोया फिर लो

गोनें समझाया तब उन्होंने आपको इस पीनसमें रखवाकर गंगाजीमें बहानेको भेजाहै और आप वहां बैठा रोरहाहै फिर पीछेका हाल हमको मालूम नहीं कि उनकी तुम्हारे वियोगमें क्या दशाहै तब चन्द्रदत्त बोला कि हे भाइयो! मुझे सर्पनें नहीं काटाथा मेरे साथमें तो बडा धोखा हुवाहै मैं उस धोखेको कह नहीं सक्ता परंतु मेरा यार राजाकुमार तो भोला भालाहै वह बिचारा स्त्रियोंके चरित्रोंको क्या जाने इससे मैं आपको यह अपने कमरकी सोनेकी कोंधनी देताहूँ आप मेरे जीनेका हाल किसीसे न कहना और अब मैं अपने वतनको जाता हूं यह कहकर उन आदमियोंको बिदा किया और आप उस जगह अपने मनमें सोचने लगा कि देखो मैंने इस रानीके साथ कितना सलूक किया इनका रंज मिटाकर आनंद करादिया जिसके एवजमें मुझको जहर खिलाया इससे मुझे ये बातभी मालूम होतीहै कि किसी दिन वह हत्यारी मेरे यार राजकुमारके प्राणोंकी भी दावेदार बनेगी और वह मूर्ख उसपर ऐसा मोहित होरहाहै कि उसके हाल और फरेबोंसे वाकिफकार नहीं होता अब जो मैं अपने वतनको चला जाऊंगा तो उसके माता पिता कहेंगे कि हमारे बेटेको कहां छोड आया है तब मैं उनको क्या जबाब दूंगा अगर मैंने यह भी कहा कि वह अपनी सुसरालमें रहताहै तो उनको कब इतबार आवेगा और दूसरे मेराभी यह धर्म नहीं है कि मैं अपने यारको परदेशमें अकेला छोडकर अपने घर जाके आराम करूं क्योंकि शास्त्रमेंभी मित्र के यह लक्षण लिखेहैं ।

दोहा

अग्गुण छिपै गुण प्रगटहों, विपति परे सँगदेह ।
तन मन धनसे हित करै, कहौ मित्र मत एह ॥

यह बात मनमें विचारकर चन्द्रदत्त अपने माथेपर जटा लगाकर कानोंमें मुद्रे पहनकर तनपर भभूत रमा अपना भेष बदलकर वहांसे कर्णाटक देशकी तरफ चला सो हे मैंना ! इधर तो उन लोगोंने आनकरराजकुमारसेकहाकि महाराज! हम चन्द्रदत्तकी लहाशको गंगामें बहा आयेहैं और इधर चन्द्रदत्तने अपना साधूभेष बनाकर पद्मावतिके महलके दरवाजेके सामने धूंनी आ जमाई सो अब इस किस्सेको बंद कर राजकुमारका हाल कहताहूं कि जिसदिनसे चन्द्रदत्त मरा उसी दिनसे राजकुमारने खाना पीना ऐश आराम सब छोड दिया और एकान्तमें बैठकर हर वक्त रोया करताथा और उसकी यादमें रो रो कर यह दोहे पढा करताथाः——

दोहा

हे मिंतर क्या दिल बसी, गये अकेला छोड ॥
बालापन सेनी कभी, रहे नहीं मुख मोड ॥

दोहा

क्योंकर मैं धीरज धरूं, हे मिंतर सुज्ञान ॥
तुम विन मुझको कल नहीं, देउ दर्श मोहिं आन ॥

दोहा

मो कारण सब सुख तजे, तजे तात अरु मात ॥
यहां अकेला छोड मोहिं, गये कहांको तात ॥

दोहा

जननी क्यों धीरज धरै, सुनै तुमारा हाल ॥
पिता सुनत जीवै नहीं, मऱ्यो जान निज लाल ॥

दोहा

हे भैया अब क्या करूं, और कहां को जाउं ॥
परदेशोंमें आनकर, किया कलेजा घाउ ॥

सो हे मैना ! इसप्रकार राजकुमार अनेक प्रकारसे रुदन करनेलगा तब पदमावती राजकुमारको बहुत व्याकुल देख समझाने लगी कि, हे प्राणनाथ ! कालसे किसीका वस नहीं चलता तुम्हारा उनका इतनाही संयोग था अब रोनेसे क्या होता है वह कहावत कि साँप निकल गया लकीर पीटनेसे क्या होता है इस कदर ऊंच नीच सुनकर और रानीके समझानेसे राजकुमारको कुछ कुछ धीरज बँधी परंतु यह राजकुमारने कुछभी नहीं जाना कि यह सब कर्म उसी रानीके किये हुए हैं सत्यहै स्त्रियोंके चरित्रोंको देवता मुनि ऋषि गंधर्व दानव दैत्य आदि भी नहीं जान सक्के तो बिचारे पुरुषकी क्या सामर्थ्य है जो जानै ॥

दोहा

कहा न अबला करसके, कहा न सिंधु समाय ॥
कहा न पावकमें जरै, काहि काल नहिं खाय ॥

सो हे मैना ! इस रानीके साथमें ऐसा क्या बुरा काम चन्द्रदत्तने कियाथा जिससे रानी पदमावतीने इसके प्राण लेनेका उपाय किया हे मैना ! जरा मेरी तरफ देख इसमें शरमानेकी क्या बातहै तूही अपने दिलमें सोच कि इसमें कुसूर किसका तब मैना बोली कि हे तोते! इसमें शरमानेकी क्या बातहै तू इस दास्तानको खतमकर तब मैं भी तुझे इसका जबाब दूंगी तब तोता बोला कि हे मैना ! जब राजकुमार को चन्दरोज गुजर गये तो शामके वक्त रोज हवा खानेको जाया करै और जब महलसे निकलै तो साधूको दंडवत किया करै तब साधू राजकुमारको आशीर्वाद दे कि बच्चा तेरा भला हो हर बलासे बचता रहियो यह कहकर चुप होजाय सो हे मैना ! राजकुमार सैर करने तो जाया करै परंतु अपने मित्र चन्द्रदत्तकी याद करके उदास रहै एक दिनका जिक्र है कि जब राजकुमार हवा खानेको निकला तब कुछ

दिलमें आई तो मन बहलानेके वास्ते साधूके पास बैठगया तब वही उसका मित्र साधू बोला कि हे राजकुमार ! आज बच्चा उदास कैसे हो हम जब तुमको देखतेहैं तब तुमको उदासही देखतेहैं इसका क्या कारणहै ? तब राजकुमार बोला कि हे बाबा साहब ! मैं अपनी उदासीका हाल आपसे कह नहीं सक्ता क्योंकि जो कहताहूं तो मेरा कलेजा फटता है एक मेरा बालापनका यार मेरे प्राणोंका प्यारा हमारे दीवानका बेटा सर्पके काटनेसे मरगयाहै सो उसी दिनसे उसका गम मेरे कलेजेपर सवारहै किसी तरहसे उतरता नहीं. तब चन्द्रदत्त बोला कि हे बच्चे ! मेरा सुगन यह कहताहै कि वह तेरा मित्र अभी मरा नहींहै जीताहै और चन्दरोजमें तुझसे आन मिलैगा तू हमारा वचन सत्य मान. यह सुनकर राजकुमार बहुतही खुश भया और बाबाजीको दंडवत कर महलोंको चला गया सो हे मैना ! वह राजकुमार तो उसी दिनसे चन्द्रदत्तके मिलनेकी आशामें रहनेलगा एक दिनका जिक्रहै कि पदमावती अपनी सहेलियोंको साथ लेकर अपने बागमें सैर करनेको गई तो रास्तेमें एक छोटासा बगीचा नजर आया और उस बगीचेमें एक सौदागर बच्चा जिसकी उमर चौवीस बरसकी होगी बैठाहुआ देखा पदमावती और सौदागरके लडकेकी जो चार नजरें हुईं तो देखतेही पदमावती उसपर आशिक होगई और महलको लौटकर आई तो रात्रिके समय राजकुमारको पानीके बदलेमें शराब पिलाकर उसे गाफिल करादिया और आप अपनारूप बदलकर उस सौदागर बच्चेके पास पहुँची और कुछ देरतक भोग विलास कर अपने महलमें आनकर राजकुमारके पास सोगई इसीतरह आनंद करते कुछ दिन बीते कि एक दिन राजकुमारने अपने ससुर से कहा कि हे पिता ! अब आपकी आज्ञा होय तो हम अपने वतनको जाँय क्योंकि हमको हमारे माता पिताको छोडे बहुत दिन हुए न जाने

उनका क्या हाल होगा. यह सुनकर राजानें कहा बहुत अच्छा हम आपको कल बिदा करदेंगे सो हे मैना ! यह सुन राजकुमार अपने महलमें आया और सब हाल अपनी प्यारी पदमावतीसे कह सफर-की तैयारी करने लगा. इतनेमें रात हुई तो पदमावती अपने समयपर रूप बदलकर सौदागर बच्चेके पास चली तब चन्द्रदत्तनें मनमें सो-चा कि यह स्त्री नित्त कहां जातीहै इसका हाल देखना चाहिये. यह विचारकर बगलमें एक सिपाहीकी तलवार लेकर उसके पीछे हो-लिया और जब पदमावती उस सौदागर बच्चेके पास पहुँची तो भोगविलास कर कहनेलगी कि, हे प्राणप्यारे ! कल मैं अपनी सुस-रालको जाऊंगी यह सुन सौदागर बच्चेको बडा क्रोध आया कि हरा-मजादी हमनें तो तेरे पीछे अपने और सौदागरोंका संग छोडा मा-लके जहाजकी भी खबर न ली कि उसका क्या हुआ अब तू कहती है मैं सुसरालको जातीहूं? यह कह बहुत क्रोधितहो छुरा निकाल उसके तमाम सिरके बाल मूंड कुरूपा कर निकाल दिया. वह तो रोती हुई अपने महलको आई और चन्द्रदत्तनें जब यह देखा तो गुस्सेमें आ-कर उस सौदागरबच्चेका सिर भुट्टासा उडा दिया और वहांसे चल अपने आसनपर आन बैठा और पद्मावती अपनें महलोंमें आन कर बडे जोरसे चिल्लाने लगी कि अरे कोई चलियो मेरापति मुझे मारे डालताहै और मेरा सिर मुंड डालाहै. यह सुनकर पहरेवाले दौडे और जो राजकुमारीको देखा तो उसका हाल बेहालहै और सिर घो-टमघोटहै ये हाल देखकर सिपाहियोंने जाकर राजासे कहाकि आज राजकुमारने पदमावतीका सिर मूँडकर हाल बेहाल करदियाहै. तब राजानें हुक्म दिया कि, राजकुमारकी मुश्कें बांधलो और उसे कचह-रीमें हाजिर करो. तब सिपाहियोंने जाकर राजकुमारकी मुश्कें बां-धली और सबेरा होतेही उसे कचहरी ले चले यह देख चन्द्रदत्तभी उनके साथ होलिया. जब राजकुमार कचहरीमें पहुंचा तो राजा उ-

सको देखकर आग बबूला होगया और कहा कि इसे अभी सूली देदो तब राजकुमारका हाथ पकड जल्लाद लेजाने लगे तब चन्द्रदत्त बोला कि हे राजा ! बेकसूर सूली देना अच्छा नहीं होता क्योंकि तेरी बेटीका सिर इस राजकुमारनें नहीं मूँडाहै तेरी बेटी की दोस्ती एक सौदागरबच्चेसे होगई यह भेष बदलकर उसके पास गई तो मैं भी पीछे पीछे इसके साथ होलिया जब ये दोनों भोगविलास करचुके तो सौदागर बच्चेने तेरी बेटीको बहुतसा मारा और उसका सिर मूँडडाला यह देख मुझको जो गुस्सा आया तो मैंने उस सौदागरबच्चेका सिर काटडाला अगर आप इसे मिथ्या समझो तो चलकर देखिये इस राजकुमारीके बाल मूँडेपडेहैं और उसकी ल्हास मौजूदहै मेरा नाम चन्द्रदत्तहै मैं इस राजकुमारका मित्रहूं सो एकदिन मुझे भीआप की बेटीनें जहर दियाथा सो मैं तो दैवयोगसे बचगया यह सुन राजा उस तकियेपर गया देखा तो सब बातें सत्य हैं यह हाल देखकर राजाने राजकुमारको तो रिहा किया और पद्मावतीको फांसी दी तब राजकुमार चन्द्रदत्तको पहिचानकर छातीसे लगाकर कहने लगा कि हे मित्र ! आपकी ही कृपासे मेरी आज जान बचीहै आपने तो मुझे बहुत समझाया पर मैंने एक न मानी उसीका फल पाया है यह कहते हुए दोनों यारोंने अपने वतनकी राहली. तब तोता बोला कि हे मैना ! पद्मावती और राजकुमारमें किस कदर प्यार था और फिर पद्मावतीने कैसी वेरुखाई की अब तुमहीं इस बातको विचारो कि स्त्रियोंकी जातका क्या विश्वास है इसीसे मैं औरतोंका विश्वास नहीं करता तब मैना बोली कि ऐ तोते! तैनें कहा सो ठीकहै परंतु मैं इसका जवाब तुझे देतीहूं अब जैसा जवाब इस दास्तानका मैना देगी वह इस किताबके चौथे भागमें देखना ॥

इति श्रीपण्डित रंगीलाल वैकुंठवासीकृत तोता मैना

तीसरा भाग समाप्त ॥ शुभम् ।

सातवाँ दास्तान मैनाका.

मैना बोली कि, ऐ तोते ! अब मैं तेरे सामने मर्दों की बेवफाईका हाल कहतीहूं कहीं शरम खाकर उड मतजाना, तब तोता कहने लगा कि, हे मैना ! तू इतनी बढकर क्यों बोलती है तुझे तो मर्दोंकी बेवफाईके दस वीस ही दास्तान याद होंगे और मुझे तो स्त्रियोंके चरित्रोंके इतने दास्तान यादहैं कि सब दास्तानोंको कहूं तो एक बडा भारी ग्रन्थ होजावे और फिर भी मैं वेही दास्तान कहताहूं जिनमें फौश यानी बकवादकी बातें नहीं और जो मैं उन सबोंको भी कहूं तो एक सालभरमें किस्सा पूरा होगा यह सुनकर मैना बोली कि ऐ तोते ! तू इतनी नाक भौंहें क्यों मरोडताहै जो कुछ तुझको यादहै उनको क्यों नहीं कहता तुझको डर किसकाहै तब तोता कहनेलगा कि ऐ मैना ! आजकलके जमानेमें महाराजा राजराजेश्वर सप्तम एडवर्डका राज है इस राजमें कोई फौश बातें नहीं कहीजातीं इससे अब तुझको जो दास्तान यादहै वह कह, तब मैना बोली कि, ए तोते ! हिन्दुस्तानके बीच एक बडा नामी और अति शोभायमान रमणीक काशी नाम शहरहै और वह हिन्दुओंका बडाभारी तीर्थ है और उसमें सैकडों धर्म शाला और ब्राह्मणोंकी पाठशाला हैं वहां राम कृष्णानंद पण्डितकी पाठशालामें बहुतसे विद्यार्थी विद्या पढतेथे सो उनमें एक लडका कृष्णदत्त नाम ब्राह्मण अतिस्वरूपवान बारह वरसकी अवस्था मथुरापुरीका रहनेवाला पढता था सो एक दिनका जिक्र है कि, काशीसे पांच या सात कोशपर एक शहर था और उसमें एक बडा भारी सेठ रहता था उसने किसी पर्वमें एक लक्ष अशर्फी संकल्प कीनी सो उन अशर्फियोंका बाँटना उस सेठने शुरू किया कि एक ब्राह्मणको एक अशर्फी देता सो यह बात काशीमें विद्यार्थियोंने सुनी तब रामकृष्णानंद पण्डितकी पाठशालाके विद्यार्थी भी उस शहरको उस सेठके यहांसे अशर्फी लेनेको चले तब

कृष्णदत्तभी उनके संग चला उस समय सब विद्यार्थियोंसे पंडितने कहा कि हे शिष्यो ! तुम लोग जाते तो हो परंतु एक वचन हमारा याद रखना जो रस्तामें कहीं श्यामचिरैया बैठी हो तो उसे दाहिनी लेकर जाना इस बातको सुनकर सब विद्यार्थी चले सो ऐ तोते ! जब वे काशीसे एक कोस निकल आये तो सबोंने कहा कि देखो इस पेड पर श्यामचिरैया बैठी है और कुछ बोलरहीहै तब सब विद्यार्थी उस को दाहिनी लैने को भगे उनको देखकर श्यामचिरैयाभी पेडसे उडदीनी तब सब विद्यार्थीभी उसके पीछे भगे थोडी दूर भगकर फिर सब थककर बैठगये परंतु कृष्णदत्तने अपने मनमें कहा कि, मैं तो गुरुकी आज्ञा नहीं टालूंगा ये चिरैया चाहे जितनी दूर जाओ परंतु दावें अंगही लेके जाऊंगा-यह विचारकर जिधर श्यामचिरैया उडकर जातीथी उधर उधरही उसके पीछे कृष्णदत्तभी भगा चला जाताथा निदान इसी तरह कृष्णदत्तको भागते भागते शाम होगई तब चिरैया एक पेडपर बैठगई कृष्णदत्त उस शामाको दाहिने लेकर वहांसे चला तो गिरता पडता हैरान होता हुआ उसी शहरमें पहुँचा तब आधी रात उसको गुजरगई और उस सेठका दर्वाजाभी बन्द होगया तब वह बिचारा रास्तेका हारा थका दिनभरका भूँखा प्यासा एक खाली दूकानमें सो रहा सो ऐ तोता ! उसी दिन उस शहरके राजाकी बेटी चन्द्रावतीका विवाह था सो किसी दूसरे शहरसे बरात आई थी परंतु वह दूल्हा कानाथा इससे उसके बापको सोचथा कि, ऐसा न हो मेरे बेटेको काना देखकर ये राजा अपनी बेटीकी शादी न करे जो ऐसा हुआ तो हमको दुनियांमें मुख दिखानेको ठौर न रहेगा इससे बेहतर यह हैकि किसी रूपवान्लडकेको बुलाकर उसेदुलहाके कपडे पहनाकर बिठादें जब उससे फेरे पडजायँगे तब उसको कुछ देकर बिदा करदेंगे और मेरे बेटेके हाथ बहू पडजायगी यह बात मनमें बिचारकर अपने दीवानसे सब हाल कहा तब दीवानने भी कहा कि

आपनें ये बहुत अच्छी सलाह बिचारीहै तब राजा बोला कि यहहाल किसीसे जाहिर तो हो नहीं और शहरमें जाकर किसी खूबसूरत लडकेको ले आवो तब दीवान शहरमें गया और लडकेको चारों तरफ देखने लगा कि एक दूकानमें कृष्णदत्तको सोता हुआ देखा दीवाननें कृष्णदत्तको सोतेसे जगाया और उससे कहनेलगा कि हे ब्राह्मणके लडका एक हमारा कामहै उसे तू करदे तो हम तुझको एक हजार रुपया देंगे तब कृष्णदत्त बोला वह क्या कामहै उसको मुझसे कहिये. तब दीवान बोला कि तुमको हम आज दूल्हा बनाना चाहतेहैं और प्रातःकाल होतेही तुम को एक हजार रुपया देकर बिदाकर देंगे तब कृष्णदत्त बोला कि बहुत अच्छा मुझको यह बात आपकी कबूल है. तब दीवान उस कृष्णदत्तको अपने साथ लेगया राजा उसको देखकर बहुत खुश हुआ और उसको अपने कपडा व जेवर पहनाकर दूल्हा बनाकर बिठादिया और बडी खुशीके साथ नाचरंग होने लगा इतनेमें समय जान चन्द्रावतीके पितानें आनेके खेतसे आदि लेके सब अपने कुलकी रीति कीनी और वह दूल्हा को देखकर बहुत खुश हुआ और अपने महलमें जाकर फेरोंकी तैयारी करने लगा और इधर बडी धूमधामसे बरात चढी कि जिसकी शोभा देखनेहीसे बन आवे जब बरात बेटीवालेके द्वारपरसे पहुँची और राजाने मोहरोंकी बखेर की फिर दूल्हा तोरन मारकर भीतर गया तो रानियां देखकर मगन होने लगीं सो हे तोते ! जब वारोंठी होगई और फेरान का सामान आया तब ब्राह्मणोंने वेदकी विधिसे चन्द्रावती और कृष्णदत्तके साथ विवाह कर दिया जब भांवर पडगई और नेगचार होचुके तब चन्द्रावती और कृष्णदत्त दोनों चित्रसारीमें गये और आपसमें केलि करने लगे. सो हे तोते! उस ब्याहमें सब तरहका आनंद तो हुआ परंतु कृष्णदत्तके पेटकी बाबत किसीने न पूछी कि तुमने कुछ खाया या नहीं खाया सो जब कृष्णदत्त चन्द्रा-

वतीके संग केलि आनंद करके बैठा उसवक्त कृष्णदत्तको भूखने ऐसा सताया कि मारे भूखके दम निकलता जाताथा अन्तमें उसने लाचार होकर रानी चन्द्रावतीसे कहा कि प्राणप्यारी इसवक्त मुझको भूखने ऐसा सता रक्खा है कि मारे भूँखके मुझसे हंसा बोलाभी नहीं जाता क्योंकि कल प्रातःकालसे मैंने कुछ नहीं खायाहै तब चन्द्रावती हाथ जोडकर कहनेलगी किहे प्राणनाथ! आपने मुझसे पहिलेसे क्यों नहीं कही क्योंकि जो आप पहिलेसे कहते तो मैं अपनी बांदियोंको भेजकर आपके वास्ते खानेको मँगादेती परंतु अब तो भंडार बंद हो गया अब मैं क्या उपाय करूं तब कृष्णदत्त बोला कि हे प्राणप्यारी! कुछ उपाय कर जिसतरह बने उसतरह मेरे वास्ते खानेकी तजवीज कर नहीं तो इसवक्त मारे भूखके मेरे प्राण निकले जातेहैं तब चन्द्रावती बोली कि हे महाराज ! इस वक्त यहां और तो कुछ उपाय नहींहै परंतु कल मेरी माताने मेरी चामरीसे गोद भरीथी सो वे सूखे चाँवल तो रक्खेहैं तब कृष्णदत्तने कहा कि हे रानी ! तू इन्हींको ला तब रानी उनको लाई और अपनी पुरानी साडीको जलाकर गंगाजलकी झारीमें उन चावलोंको पकाकर कृष्णदत्तकोखिलायेजिनको खाकर उसने थोडासा पानी पिया जिससे उसको सहारा आया फिर कृष्णदत्त और चन्द्रावती दोनों आनंदमें आकर केलि करने लगे सो ऐ तोता ! जब इन दोनोंको केलि आनंद करते सब रात गुजरगई और प्रातःकाल होनेपर आया तब कृष्णदत्त तो जनमासेको गया और रानी चन्द्रावती सोती रही जब कृष्णदत्त जनमासेमें पहुँचा तो उस राजाने कृष्णदत्तसे दूल्हेके सब कपडा व जेवर लेलियाऔर एक हजार रुपया देकर बिदा किया सो ऐ तोता ! कृष्णदत्त तो एक हजार रुपया लेकर काशीको चलागया और इधर सबेरा होते ही कुँवरकी कलेवाकी तैयारी भई तब राजाने अपने मनमें कुछ सोचकर पुत्रकी कानी आंखमें पट्टी बांधकर भेज दिया जब वह सुसरालको गया

तो वहां सब स्त्री पुरुष देखकर कहने लगे कि रातको तो दूल्हेकी आंख भली चंगीथी अभी अबमें इसकी आँखोंको क्या होगया तब दूल्हेके साथियोंने बात बनाकर कहा कि रातको तो बहुत अच्छी तरह थी परंतु आज सुबहहीसे इसकी आंख दूखनी आगई है इस बातको सुनकर चन्द्रावतीभी चिकमें से उझक कर देखने लगी तो उसने जानलिया कि ये पुरुष रातवाला राजकुमार मेरा पति नहींहै इसमें कुछ छल मालूम होताहै तब चन्द्रावती अपने माता पिताको बुलाकर हाथ जोड कहने लगी कि,ऐ पिता!आपके सामने कहनेकी बात तो नहींहै परंतु मैं लाचारहूं, क्योंकि विना कहे काम नहीं चलता और दूसरे मेरा धर्म्म नष्ट होता है इससे लाचार होकर अनुचितबात आपके सामने कहनी पडी और धर्म्मशास्त्रमें भी लिखाहै.

दोहा

तन मन धन कुल लाज सब, तजिये मन चित लाय ।
इन सबको गयो सोच ना, जो निज धर्म्म बचाय ॥

दोहा

तनदे मनदे ध्यानदे, रखियो धर्म्म बचाय ॥
एक धर्म्मके कारने, सर्वस दियो गमाय ॥ १ ॥

दोहा

प्राण जाय तो जानदे, रखियो धर्म्म बचाय ॥
यही सोच निज हृदयमें, कहों अर्ज दुखपाय ॥

सो हे पिता!इन धर्म्मशास्त्रके वाक्योंको यादकरके अपने धर्म्म जानेके डरसे मैं आपसे कुछ अर्ज किया चाहती हूं तब चन्द्रावतीका पिता बोला कि हे बेटी! इस समय जो कुछ तू उचित अनुचित बात कहैगी सो सब माफ करूंगा तू अपने मनका हाल मुझसे कह- तब चन्द्रावती कहने लगीकि हे पिता!जिससे मेरी भांवर पडीथी और जो

पति मेरी चित्रसारीमें सोया वह मेरा पति ये नहीं है ये तो कोई और राजकुमार है. क्योंकि आपही समझकर देखो कि जैसा वह रूपवान् राजकुमार था वैसा यह नहीं है क्योंकि उसके तो नेत्र सुबह तक मृगकेसे थे और ये शक्स एक आंखसे काना है ये मेरा भरतार किसी सूरतसे नहीं है तब राजाने बेटीका वचन सुनकर राजकुमारकी आंख खुलवाकर देखी तो हकीकतमें वह काना था तब तो राजाको बडा गुस्सा आया और उस राजकुमारको उलटा लौटादिया और उस राजासे बडी गुस्सा खाकर कहने लगा तुम इसी वक्त मेरे शहरसे निकलजाओ नहीं तो उसी लडकेको लाओ कि जिसके साथ मेरी लडकीकी रातको भांवर पडीथी तब वह दूल्हेका बाप लाचार होकर अपने घरको लौट गया और चन्द्रावतीका पिता अतिदुःखितहो उदास होनेलगा तब चन्द्रावती अपने पिताको उदास देखकर बोली कि हे पिता ! तुम इतना सोच क्यों करतेहो माता पिता तो जन्मके साथी होतेहैं कर्मके साथी नहीं होतेहैं इसमें कुछ आपका दोष नहींहै आपने तो अपनी जानमें घर वर दोनोंही अच्छे देखे इसमें आप क्यों सोच करतेहो इसमें आपका क्या दोषहै ॥

दोहा

होनहार होके रहै, बिसर जाय सब सुद्ध ।
जैसीहो होतव्यता, तैसी उपजे बुद्ध ॥

हे पिता ! ये संसार कर्मके वश बँधाहै सो जिसवक्त ये मनुष्य जन्म लेताहै उसीवक्त जो ललाटमें बिधनाके अंक लिखे जातेहैं वे किसी तरह मेटे नहीं जाते देखो एक पुरानी कथाहै सो मैं तुम्हारे सामने कहतीहूं हे पिता ! आप चित लगाकर सुनिये तब राजा बोला कि अच्छा बेटी कहो तब चन्द्रावती कहनेलगी कि हे पिता ! एक भद्रपूर नाम नगरथा और उसमें एक प्रेमदत्त नाम सेठ रहताथा

उस सेठके सात पुत्रथे एकसमय दैवयोगसे उस सेठके घरमें एक प्रेत प्रगट भया और उसने सेठके सातों पुत्र बहू और सेठसेठानी सबको मारडाला केवल उस सेठके छोटे बेटा की बहू बची वह गर्भवतीथी उस हवेलीका ताला बंद कर किसी और गाँवमें अपने पीहर चलीगई और वह प्रेत उसमें रहनेलगा कि, इतनेमें कुछ दिन व्यतीत हुए तो उस सेठके छोटे बेटाकी बहूके पीहरमें लडका पैदाहुआ और वह लडका दिन दिन चन्द्रमाके समान बढने लगा जब वह लडका बारह वर्षका होगया तब वह बराबरके लडकोंमें खेलनेलगा सो एक दिन लडकोंमें आपसमें लडाई हो पडी तो एक लडकेने उस सेठके नातीको तायना दिया कि अब तू हमारे संग खेलने लायक नहींहै, क्योंकि अपना घरबार छोड कर मामा के टूकडोंपर पडाहै यह बात सुनतेही सेठका नाती बडी गुस्सा खाकर अपनी माताके पास आया और क्रोधकर बोला कि, हे माता ! तू सत्य बतादे कि हमारा मकान कहां है तब बेटेकी बात सुनकर माता और उसके नाना मामा सब समझानेलगे कि, बेटा यही तुम्हारा घरहै और कोई तुम्हारा घर नहीं है. यह सुन लडकेने कहा ये तो हमारी ननसारहै ये हमारे बापका घर नहींहै या तो मेरा घर मुझे बता और नहीं तो जहर खाकर अपने प्राणोंको गमाऊँगा यह हठ बेटाका देखकर उसकी माताने कहा कि, ऐ बेटा ! हमारा घर तो भद्रपुरमें है सो उस घरमें थोडे दिनोंसे एक प्रेत प्रगट हुआ सो उसने हमारे सब घरके स्त्री पुरुष मारडाले तब मैं अकेली रहगई और तू मेरे गर्भमें था सो मैं तेरे प्राण बचानेके लिये उस मकानका ताला बंद कर यहां आगई और मैंने उसी प्रेतके डरके मारे आजतक तुझसे वहांका हाल नहीं कहा यह बात माताकी सुनकर मकानकी ताली लेकर चल दिया उसको नाना मामाओंने बहुत रोंका परंतु उसने किसीकी

न मानी. निदान वह लडका भद्रपुरमें पहुँचा और ज्योंही अपने मकानका ताला खोलकर ताला रक्खा सोई उस प्रेतने आनकर उस लडकेसे कहा कि यहां न आ नहीं तो मैं तुझे खाऊंगा. और मैंने ही तेरे सब कुटुंबको खायाहै यह बात प्रेतकी सुनकरके वह लडका बोला कि जो तू मुझको न खाय तो मैं तुझको अनेकों तरहके भोजन तैयार करके खिलाया करूंगा यह बात उस लडकेकी सुनकर प्रेतने मंजूर की तब इसप्रकार लडकेको कितनेही दिन रहते गुजरे तब एक दिन वह लडका उस प्रेतसे कहनेलगा कि आप नित कहां जातेहो तब वह प्रेत कहने लगा कि, मैं हमेशा विधाताके दरबारमें जाया करताहूं यह सुनकर लडका बोला कि हे प्रेत ! तुम विधातासे यह पूछना की इस लडकेकी उमर कितने दिनकी है तब प्रेतने कहा कि, बहुत अच्छा यह कहकर जबवह प्रेतविधाताके दरबारमें गया और पूछनेलगा कि जो ये लडका मेरे पास रहताहै उसकी उम्र कितने वर्षकी है तब विधाताने कहा कि उसकी उम्र ७० वर्षकी है इस बातको सुनकर प्रेतने आनकर लडकेसे कहा कि तेरी उमर ७० वर्षकी है तब तो लडका फिर बोला कि अब तुम विधातासे यह कहना कि उस लडकेने यह कहा है कि मेरी उम्रमेंसे १वर्ष घटादो या एक बरस बढादोतब वह प्रेत विधाताके पास गया और कहने लगा कि उस लडकेकी उम्रमेंसे एकवर्ष घटादो या एक वर्ष बढादो. विधाताने कहा कि जो मैं लिखचुकाहूं उसमेंसे एक क्षणमात्रभी कम नहीं होसक्ता तब उस प्रेतने इसीतरह लडकेसे कहा प्रेतका ऐसा वचन सुनकर लडका चुप होगया जब दूसरे दिन वह प्रेत चलागया तब लडका खा पीकर एक जलता हुआ लकड हाथमें लेकर बैठगया इतनेहीमें वह प्रेत भी आगया और उस लडकेसे कहनेलगा कि भोजन ला तब वह लडका प्रेतसे कहनेलगा कि आज भोजन नहींहै इसपर प्रेत बोला मैं तुझे खा जाऊंगा तब वह

लडका उस जलते हुए लक्कडको हाथमें लेकर प्रेतके पछि दौडा और कहने लगा कि, "ऐ मूर्ख! जब विधाताकी सामर्थ नहींहै कि मेरी उमरको घटावे या बढावे तो तेरी अब क्या सामर्थ्य है जो तू मुझको खाजावेगा" यह बात लडकेकी सुनकर प्रेत भागगया और वह लडका अपनी माता आदि सबको बुलाकर उसमें रहनेलगा और चन्द रोजमें वही कारखाने उसके होगये सो चन्द्रावती कहनेलगी कि हे पिता! विधाताके अंकुर झूठे नहीं होते देखो किसी कवीश्वरका वचन है.

दोहा

जो विधिनाने लिख दिये, छठी रातके अंक।
राई घटे न तिल बढे, रहरे जीव निशंक ॥ १ ॥

हे पिता! इससे आप मेरी तरफका सोच न करें क्योंकि जिस परमेश्वरने आज आपको और मुझको सुख दिखाकर दुःख दियाहै वही परमेश्वर किसीदिन फिर इसी दुःखको मेटकर सुखदिखावेगा और वह मेरा पति आप लोगोंके ढूँढनेसे नहीं मिलेगा उसके पानेका एक उपायहै कि काशी आदि बडे बडे शहरमें आप एक पत्र टकवा दीजिये और उसमें यह लिखदीजिये कि हमारी बेटी चन्द्रावती एक प्रश्न किया चाहती है सो जो कोई उसका जबाब देगा उसको एक लाख रुपया मिलेगा.यह बात बेटीकी सुनकर उस राजाने बहुतसे पत्र लिखवाकर हर एक शहरमें टका दिये तब उस पत्रको बांच बांचकर बहुतसे लोग आये रानी चन्द्रावती अपने पिताको पास बिठाकर उन पण्डितोंके सन्मुख यह दोहा पढने लगी ॥

दोहा

ब्याह भयो भामर पडी, भयो अधिक आनंद ॥
फिर दोऊ नर नार मिल, गये केलिके मन्द ॥

सिज्यापै वरको जभी, लागी भूख अपार ॥
फिर आगेको हाल कुछ, पण्डित कहो विचार ॥

यह दोहा चन्द्रावतीके सुनकर बहुतसे पण्डित तो चुप होगये और बहुतसे लोगोंने अपनी बुद्धिके अनुसार बनाकर जवाब दिया परंतु रानी चन्द्रावतीके मतलबको कोई न हुँचा. तब चन्द्रावतीने सब ब्राह्मणोंको एक एक अशर्फी देकर बिदा किये सो हे तोता ! इसी तरह रानी चन्द्रावतीको हरएकसे प्रश्न करते करते मुद्दत गुजर गई तब एक दिनका जिक्र है कि कृष्णदत्तभी लोगोंसे सुनताथा कि चन्द्रावती रानी एक प्रश्न करती है और जो कोई आदमी उसके प्रश्नका जबाब देगा उसको रानी एक लाख रुपैया देगी और जिससे उसके प्रश्नका उत्तर नहीं आता है उसको एक अशर्फी देती है तब कृष्णदत्त विद्यामें तो निपुण थाही इस बातको ब्राह्मणोंसे सुनकर उसी शहरमें गया और रानी चन्द्रावतीके महलमें पहुँचा तब चन्द्रावतीभी अपने पिताको अपने पास बिठलाकर कृष्णदत्तके आगे उन्हीं दोनों दोहोंको पढने लगी तब रानी चन्द्रावतीके दोहोंको सुनकर कृष्णदत्तको उस दिनकी याद आई तब कृष्णदत्त चन्द्रावतीसे कहनेलगा कि, हे रानी ! आधाही हाल क्यों कहतीहो सब हाल कहो तब कृष्णदत्तकी यह बात सुन रानी चन्द्रावती मनमें सोचने लगी कि हो नहो मेरा पति यहीहै क्योंकि इसको यह बात किस तरह मालूम पडी कि मैंने आधा हाल कहाहै ये बात सोचकर चन्द्रावती कृष्णदत्तसे कहनेलगी कि हे महाराज ! मुझको तो इतनाही हाल मालूम है आपको सब हाल मालूम है तो कहो तब कृष्णदत्तने कहा ॥

दोहा

काशीमें हम पढतथे, अपने गुरुके पास ॥
द्रव्य लेन या नगरमें, आये परम हुलास ॥
तब गुरुने हमसों कही, सुनो शिष्य चितलाय ॥

श्यामाको कर दाहिनी, जैयो नगरी मांय ॥
जब सब हम वहँसो चले, बढ्यो अधिक उरचाय ॥
यापर ऊपर मार्गमें, श्यामा देखी आय ॥
जब हम वाको दाहिनी, लैवे कियो विचार ॥
तब श्यामा वह पेडसे, उठके उडी अपार ॥
सब सँगके थक रहगये, मैं पीछे गयो धाय ॥
सांझ समय वा श्यामको, लई दाहिनी जाय ॥
दिन बूडत वहाँसे चलो, भई रैन अँधियार ॥
रात जान वा सेठके, घरके लगे किंवार ॥
जब मैं मार्‍यो भूखको, रह्यो दुकानमें सोय ॥
उछक अनन्तर पुरुष एक, लैजु गयो सँग मोय ॥
बचनोंका दूल्हा बना, कीना सभी सिंगार ॥
मौर बांध हाथी चढा, लाये तेरे द्वार ॥
तब तोसों फेरा लिये, बहुत भयो आनंद ॥
फिर हम तुम दोनों जने, गये केलिके मंद ॥
तब तुमरे हम संगमें, कीन्हीं केलि विहार ॥
ता पीछे मों उदरमें, लागी भूँख अपार ॥
तब तोसों निज भूँखको, दीनों मर्म जताय ॥
तब तैंने ओदन कियो, अपने वस्त्र जलाय ॥
सो ओदन हम खायके, पीयो गंगानीर ॥
तब मेरे निज हृदयमें, आई कछु इक धीर ॥
इतनेमें भयो भोर जब, तोय निद्रा गइ आय ॥
तब मैं उठि तो भवन ते, जनमासे गयो धाय ॥
तब नृप मोय द्रव्यदे, बिदा कियो ततकाल ॥
फिर मैं काशीको गयो, गुरु समीप सुनु बाल ॥

यह हाल कृष्णदत्तका सुनकर चन्द्रावतीने अपने पितासे कहा कि हे पिता! मेरा पति यहीहै तब तो राजाने कृष्णदत्तकी बडी खातिर की और बहुत लाड चावसे रखनेलगा और चन्द्रावतीभी अपने पति कृष्णदत्तकी बडी हित चितसे सेवा करने लगी सो हे तोता ! इस तरह दोनों आपसमें केलि आनंद करने लगे और दोनोंमें इसकदर मुहब्बत बढी कि एकके बिना देखे दूसरेको एक घडीभर कल नहीं पडती- इसप्रकार कृष्णदत्तको रहते बहुत दिन बीते तब एक दिन कृष्णदत्तने अपने मनमें विचारा कि,जबसे हमने अपने माता पिताको छोडेहैं तबसे अबतक उनका दर्शन नहीं किया इससे अब उनके दर्शन करने चाहिये परंतु एक बडी गजबकी बातहै कि मैं इस रानीको वहां कैसे लेचलूं क्योंकि जो मेरे माता पिता भाई बंधु कुटुम्ब परिवारके लोग इस रानीको देखेंगे और उनको यह बात मालूम होजायगी कि, यह क्षत्रीकी बेटीको व्याह लायाहै तो मुझे जातसे खारिज करदेंगे और जो मैं इस रानीसे बिना कहे चला जाऊं तो यह रानी मेरा पता लगाकर मेरे घर आजायगी इससे अब क्या करना चाहिये यह बात विचारकर कृष्णदत्त रातको चन्द्रावतीको तलवारसे मारकर बहुतसा धन लेकर अपने वतनको चला गया सो मैना कहनेलगी कि ऐ तोता!जरा गर्दन नीची मतकर मेरी बातका जबाब दे कि उस कृष्णदत्तकी बराबर कौन बेपीर होगा कि, अपनी ऐसी प्राणप्यारी पतिव्रता स्त्रीको मारगया अब तूही अपने दिलसे सोच कि इसमें बेवफाई किसकीहै तब तोता बोला कि ऐ मैना ! इस बातका जबाब में तुझको देताहूं क्योंकि स्त्रियोंके दास्तान तो बहुतहैं अब मैं तेरे सामने एक दास्तान कहताहूं कान लगाकर सुन !

आठवाँ दास्तान तोतेका ।

तोता बोला कि,हे मैना ! एक कंचनपुर नाम नगरथा और उसमें अंगध्वज नाम राजा राज करता था और उसकी रानीका नाम च-

न्द्रप्रभा था सो वह रानी बडी सुशील और पतिव्रता थी एक दिनका जिक्र है कि राजा अंगध्वजके यहां एक ब्राह्मण आया और उसने आकर अंगध्वजको दो कागज दिये उनमें से पहिले कागजमें यह लिखा था कि।

दोहा

भूपति या जगके विषे, रात्रि जागरण सार॥
ताको फल उत्तम मिलै, ऋषि जन कहो विचार॥

और दूसरे कागजमें ये दोहा लिखा था—

दोहा

वैरीको सतकार भल, करै पुरुष जो कोय।
ताहि क्षमा दुर्जन करै, कैसेऊ शठ होय॥

राजा अंगध्वजने वे दोनों कागज लेकर अपनी जेबमें रख लिये और उस ब्राह्मणको द्रव्य देकर बिदा किया जब कुछ दिन बीतगये तब एक दिन राजाने अपने मनमें विचारा कि अब उस ब्राह्मणके वचनोंको भी अजमाना चाहिये सो एक रोज रात्रिके समय सब कामसे निचिन्तहो अपने महलमें जा बैठा और रात्रिभर सोया नहीं इसीतरह रात्रिभर जागतेहुए राजाको कितनेही दिन बीतगये सो एक दिनका जिक्र है कि, आधीरातके समय राजा अपने महल पर बैठाथा इतनेही में देखता क्या है कि, कोई महा दुखिया रोरहाहै उसके रोनेकी आवाज सुनकर राजाके हृदयमें बडी दया आई और वह अपने मनमें कहने लगा कि, ऐसे भी दुखिया मेरे शहरमें वसतेहैं इसीवक्त चलकर इससे दुःखका कारण पूँछना चाहिये क्योंकि राजोंका धर्म है और राजनीतिमें भी लिखाहै॥

दोहा

दुख सुख परजा को लखै, सुत सम पाले ताहि॥

धर्म न्याय सबको करै, राजा कहिये ताहि ॥
निशिदिन परजाको लखै, नीत अनीत विचार ॥
जो जो को अपराधहो, तैसो कर निरधार ॥
जा हितसों पुत्रहि लखै, जा हितसों परवार ॥
ताहीसों परजहि लखै, सो राजा सरदार ॥

यह बात मनमें विचारकर पांचों हथियार बांधकर अकेला रोनेकी अवाज सुनकर उस तरफ गया और जाकर देखा कि एक सौ वर्षकी डोकरी पीसती जातीहै और हाय मारकर रोती जाती है तब राजाने कहा कि, हे माता! तुझको ऐसा क्या दुःख हुआहै जिससे तू ऐसी जार बेजार इस आधी रात्रिके वक्त रोरही है ?तब डोकरी बोली कि, ऐ मुसाफिर तुझे इस बातसे क्या पडीहै तू अपनी रास्ता चला जा मुझपर जो दुःख पडाहै उसको दूर करनेकी आदमीकी सामर्थ्य तो क्या परंतु ब्रह्माकी भी सामर्थ नहींहै ये बात डोकरीकी सुनकर राजा कहनेलगा कि हे माता ! तू कृपाकर अपना दुःख मुझसे कह तो सही फिर वह डोकरी बोली मैं अपना दुःख तुझसे कहती हूं परंतु जो तू उस बातको किसीके सामने कहेगा तो तू पत्थर का हो जायगा- तब राजा बोला कि हे माता! मैं किसीके सामने नहीं कहूंगा- तब वह बुढिया बोली कि हे बेटा! कल रात्रिके दस बजे इस शहरके राजा अंगध्वजको सांप काटेगा और उसके काटनेसे राजा मरजायगा सो मैं इसवास्ते रोती हूँ कि ऐसा धर्मात्मा राजा हमको कहां मिलेगा ये बात बुढियाकी सुनकर राजा बोला कि, हे माता! जैसे तैंने कृपाकरके इतना हाल मुझसे कहाहै तैसे ये भी कहदे कि, वह साँप राजाके काटनेको कहांसे आवेगा बुढिया बोली कि हे बेटा! इस शहरके पश्चिम दरवाजेके बाहर एक शिवजीका मंदिरहै और उसके पास एक पीपलका वृक्षहै उस वृक्षकी जडमें एक बांबीहै उसमेंसे सांप निकलकर राजाको

काटनेको आवेगा और उस सांपका और राजाका पूर्वजन्मका वैर है सो वह अपना दाँव राजासे आज चुकावेग तब राजा बोला कि, हे माता! आप कृपा करके ये भी कहो कि उसका दाँव राजासे किस बातपरहै? तब वह बुढिया कहनेलगी कि, हेबेटा! ये जो राजाहै सो पाहिले जन्ममें साहूकार था और मणिसेन इसका नाम था और इसकी स्त्रीका नाम केशर था सो उसकी उम्र बीस बर्षकी थी और बडी स्वरूपवान थी सो एक दिनका जिक्रहै कि मणिसेन तो सौदा गरीको दूर किसी देशको गया और उसकी स्त्री केशर घरमें रहने लगी उसके पास एक ठाकुरका लडका १८ वर्षका रहता था सो एक दिन उसके शरीरको कामदेवने ऐसा सताया कि वह बडी बेचैन होने लगी तब उसकी तबीयत उस ठाकुरके ऊपर आई और उस लडकेको बुलाकर पलंगपर लेगई और उससे कहा कि, इस वक्त मुझको कामदेवने ऐसा सतायाहै कि मुझको बेकल कर डालताहै सो हे प्यारे! आज तू मुझसे भोग विलास कर मैं तेरे ऊपर दिलोजानसे कुर्बान हूं और हमेशा तेरी ताबेदार रहूंगी, यह बात केशरकी सुनकर वह लडका हाथजोडकर बोला कि हेसाहूकारजादी! मैं ऐसा काम आपके साथ कभी नहीं करूंगा, क्योंकि मैंने अपने बडोंकी जबानी सुना है कि जो मनुष्य अपनेको अन्न वस्त्र खाने पहरनेको देताहै वह माता पिताके समान होताहै और जो मनुष्य अपने स्वामीके संग बुरा काम करै तो वह पुरुष नर्कवास करताहै.तब लडकेकी यह बात सुनकर केशर कहने लगी कि,या तो तू मेरे साथ भोग विलास कर नहीं तो तेरा बुरा हाल कराऊंगी.इसतरह केशरनें उस लडकेको बहुत धमकाया परंतु उस लडकेने एक न मानी तब लाचार होकर अपने मनको मार सो रही फिर कुछ दिन बाद मणिसेन आया तब उसने अपने पतिको आया सुनकर मनमें बिचार किया कि शायद कहीं

इस लडकेनें यह बातें साहूकारसे कह दीं तौ न जाने साहूकार मेरी क्या दशा करावेगा इससे कोई ऐसा उपाय करना चाहिये जिससे मेरे ऊपर तौ आफत न आवे और इस लडकेको मेरा अपमान करनेका फल मिले ये बात मनमें विचारकर खटपाटी लेकर सोरही इतनेहीमें मणिसैन घरमें आया देखा तो साहूकारजादी उदास पडीहै तब मणिसेन कहने लगा कि हेप्यारी ! आज आप उदास क्यों पडीहो तब केशर बोली कि हे महाराज ! आप आगये अपना घर सँभाल लीजिये क्योंकि अब मैं अपने प्राणत्याग करूंगी तब मणिसेन बोला कि ऐसा आपने क्या दुःख पायाहै जिससे अपने प्राण खोतीहै तब केशर कहने लगी कि, हे प्राणनाथ ! मैंने दुःख कुछ नहीं पायाहै आपके प्रतापसे सभी सुख पायाहै परंतु आपका जो ये खिदमतगारहै इसने आपके पीछे मेरे साथ बडा जुल्म कियाहै सो या तो इसको सजा दीजिये नहीं तो मैं अपने प्राणत्याग करूंगी-तब मणिसेन बोला कि उसनें तुझपर क्या जुलम कियाहै सो सब साफ साफ कहो तब केशर बोली कि, हे प्राणनाथ ! एक दिन रात्रिके समय मैं अपने चौबारेकी छत्तपर सोती थी कि वह अचानक मेरी छातीपर आन चढा और मुझसे बुरा काम करना चाहा परन्तु उसी वक्त मेरी आंख खुलगई तो मैं उसको अपने ऊपर बैठा देखकर चिल्लानेलगी तब उसने मुझे छोडी मेरा चिल्लाना सुनकर और नीचेके लोग भगे आये परंतु मैंने शरमके मारे किसीके सामने कुछ नहीं कहा उस दिन मेरा धर्म्म परमेश्वरनेही रक्खा नहीं तो मेरे धर्म्मके लेनेमें इसने कुछ कसर नहीं की थी-इस बातको सुनकर मणिसेन आग बबूला होगया और कहने लगा कि हे प्राणप्यारी ! आप इतना रंज क्यों करतीहो आप स्नान करो खाओ पीओ मौज उडाओ तुमको जो उसने दुःख दियाहै उसका फल आजही रातको तुम्हारे सामने उसे दूँगा यों कहकर मणि सेन दूकान पर चलागया जब रात हुई तब घर आया और उस

लडकेको अपने पास बुलाया और छुरियोंसे गोदकर अपने आंगन में गाड दिया इससे हे बेटा ! वह लडका सांप हुआ है और अपना बदला लेनेको आयाहै, इस बातको सुनकर राजा अपने महलोंको गया. तोता बोला कि हे मैना!जरा इस बातपर गौर कर कि उस बिचारे लडकेका क्या कुसूर था जिससे उस स्त्रीने जरा भी दया न बिचारी और उस लडकेको जानसे मरवा दिया. तब मैना! बोली कि इस बातमें तो स्त्रीपुरुष दोनोंही वेपीर ठहरे क्योंकि मणिसेनने भी उसको बिना हाल पूछे स्त्रीकेकहनेसे मारडाला. तब तोता बोला कि हे मैना ! मैं तो इस बातको पहिलेही कह चुका हूँ कि यह स्त्री ऐसी मोहनीरूपहै जिसवक्त पुरुषके गलेसे लगकर मीठे मीठे वचनकह कर तिरछी चितवन करकर कामके बाणोंसे पुरुषको मोहित करतीहै, तब मैना बोलीकि मैं इसका जबाब देतीहूं तब तोता बोला कि हे मैना ! तू इस दास्तानको पूरी सुनले जब तू भी जबाब देना. तब मैना बोली कि अच्छा कह तब तोता कहने लगा कि जब वह राजा अपने महलोंको गया तो मारे सोचके उसे नींद नहीं आई इतनेमें राजाका हाथ जेबमें पडा तो उस ब्राह्मणका दिया हुआ दूसरा कागज निकल आया जब उसे खोलकर पढा तो उसमें लिखा था कि वैरीकाभी सतकार करना चाहिये इस बातको लिखा देखकर राजा मनमें कहनेलगा कि उस ब्राह्मणकी एक बात तो सत्य हुई अब दूसरी भी अजमानी चाहिये. अब सांपके सिवाय इस वक्त मेरा वैरी कोई नहीं है इससे इसका ही आदर करना चाहिये ऐसा अपने मनमें दृढ विचार कर राजाने प्रातःकाल होतेही सब दीवान मुसद्दियोंको बुलाकर कहा कि आज रातके दसबजे हमको सांप काटने आवेगा सो तुमलोग मेरे पलँगसे लगाकर उस सांपकी बांबी तक सब जगह साफ कराकर गुलाबके फूलोंकी पतियां बिछवादो और गुलाब केवडा आदिके अतरोंको खूब छिडकवादो और दूधमें मीठा और सुगंध मिलाकर

सकोरेमें भरकर दोनों तरफको बांबीसे लगाकर मेरेपलँगतक रखवादो. राजाका वचन सुनकर दीवानने वैसाही किया और फिर राजाके पास आनबैठा इतनेहीमें उस सर्पके आनेका समय हुआ तब वह बडा क्रोध करके बाँबीसे चला और अपनें मनमें कहने लगा कि, आज राजाको मैं जीता न छोडूंगा ये मनमें विचार करता हुआ बाँबीमें कंकरोंसे छिलता हुआ मारे क्रोधके बडे जोरसे चला सो हे मैना ! जब वह सांप उस बांबीके बाहर निकलकर आया तो मारे खुशबूओंके मग्न होगया और कोमल कोमल फूलोंपर लोटने लगा और जिधर मुँह करे उधरही सुगंधित दूध पीनेमें आया तब वह इस आरामको देखकर बहुत खुश हुआ और मनमें कहने लगा कि इस राजानें मुझे अपना वैरीजानकर मेरी ऐसी खातिर करी है ऐसे धर्मात्मा राजाको मैं नहीं काटूंगा और मैंने अपना दाँव इससे भर पाया परंतु उसके सामने तो जरूर चलना चाहिये क्योंकि राजाको कैसे मालूम होगा कि मुझसे सांपने प्रसन्न होकर दाँव छोड दिया इस बातको बिचारकर सुगंधोंसे मग्न होता हुआ राजाके पलंगके पास आपहुंचा तब सर्पको आता देखकर दीवानने सर्पके मारनेको तलवार खींची तब राजा कहने लगा कि, खबरदार इसस-र्पके ऊपर हाथ मत छोडो इसप्रकार कहकर राजाने अपना हाथ स-र्पके आगे बढाया और कहने लगा कि हे सर्पदेवता ! अब आप मुझको काटकर अपनाबदला लो. तब सर्प बोला कि,राजा धन्यतेरे माता पिताको जिन्होंने तुझसे साहसी धर्मात्मा वीरको पैदा किया है और धन्य तेरे साहस और धर्मको है कि तुझने मुझसरीखे अपने वैरीका सत्कार किया अब मैं तुझपर प्रसन्नहूं तुझको नहीं काटूंगा मैंने अपना दाँव भरपाया अब मेरा तेरा कुछ दाँव नहीं है येकहकर वह सर्प चला गया इस हालको देखकर सब लोग अचम्भेमें रहगये तब रानीनें कहा कि हे राजा! ये हाल तुमको किस तरह मालूम हुआ

सो तुम मुझसे कहो- ये बात रानीकी सुनकर राजा कहने लगा कि हे रानी ! यह किसीके सामने कहनेकी बात नहींहै तब रानी बोली कि हे प्राणनाथ ! आप मुझसे इस बातको कह दोगे तभी अन्नजल करूंगी राजा बोला कि हेरानी ! तू इस बातका हठ मत करै इसबातके कहनेमें मेरी जान जावेगी क्योंकि जिस शख्सने मुझसे ये बात कही है उसने मुझसे यह कह दियाहै कि जो तू इस बातको किसीके सामने कहैगा तो पत्थरका हो जायगा तब रानी बोली कि हे राजा चाहै तुम पत्थरके हो चाहे नहो परंतु इस हालको तौ मुझसे कह ही दो नहीं तो मैं अपने प्राणत्याग करूंगी इस बातको सुनकर राजा बेकल होने लगा क्योंकि राजाकी वह रानी ऐसी प्यारी थी कि बिनादेखे उसके क्षणभर भी नहीं रहाजाता था वह उसकी प्रीतिमें ऐसा अंधा होरहाथा कि उसके हठ करनेपर उसने कुछ नहीं कहा केवल कहा कि अच्छा जो तेरे मनमें मुझे पत्थरका ही करना है तौ अच्छा चल तुझे गंगाजी पर बताऊंगा क्योंकि मैं पत्थरकाभी हो जाऊंगा तो गंगाजीकी रेतीमें तौ भी पडा रहूंगा- यह बात सुनकर उस राजाके प्राणोंकी भूखीने उस बातको मानली तब राजाने गंगाजीके जानेकी तैयारी की जब यह बात राजाके नौकर चाकर वा शहरके लोगोंने सुनी तौ सब लोग राजाके साथ हुए और राजाभी अपनी रानीको साथ लेकर गंगाजीको चला तब मुत्सद्दियोंने राजाको समझाया और कहने लगे कि, हे राजा ! जो आपका देह रहेगा तो सैकडों रानी आजायँगी आप ऐसे बुद्धिमान होकर स्त्रीके कहनेमें आकर नाहक अपनी जान खोतेहो इस तरह लोगोंने राजाको बहुत समझाया परंतु वह उस रानीके वशीभूत ऐसा होरहाथा कि लोगोंका समझाना उसके जीमें जरा न आया तब दीवानने जाकर रानीको समझाया कि हे रानी ! आपही इस हठको छोड दो तो राजाकी जान बचे

कदाचित् राजाने आपसे वह बात कही और राजा पत्थरका हो गया तौ आप फिर इस राजाको कहां पाओगी और विना राजाके यह राज कैसे रहैगा राजाके मरतेही तुम्हारे वंशमेंसे जो गद्दी पर बैठेगा वह आपका इतना आदर काहेको करेगा क्योंकि कहावतहै कि (घोटूं नवेंगे तो पेटको ही नवेंगे)सो हे रानी ! वह अपने घरवालोंको ही चाहेगा सो आप हमारी बात मानकर और अपने मनमें सब ऊंच नीच सोचकर इस हठको छोडदो देखो जिस स्त्रीनें हठकियाहै उसीने दुःख पायाहै तब रानी बोली कि कौनसी स्त्रीने दुःख पायाहै सो मुझे एकका तो हाल सुनाओ तब दीवान कहने लगा कि हे रानी! माधवी नाम एक नगर था उसमें एक रूपसेन नाम वैश्य रहता था उसकी स्त्रीका नाम हेमाद्री था सो बडी स्वरूपवान थी और व्यभिचारिणीभी थी वह रूपसेन वैश्य उस स्त्रीको अत्यंत प्यारसे चाहताथा परंतु आप जानती हो कि जिनका जो स्वभाव पडजाताहै वह किसी ढबसे नहीं छूटताहै उस हेमाद्रीकी एक खत्रीके बेटेसे आंख लगगई जब रूपसेन अपनी दूकानको चला जाता तब वह उस खत्रीके लडकेके पास जाकरभोगविलास करती और जब रूपसेनके आनेका वक्त होता तब अपने घरमें आजाती थी इसी तरह भोगविलास करते करते कुछ दिन बीते तब एक दिन रूपसेनको यह हाल मालूम हुवा उसने हेमाद्रीको धमकाकर कहा कि तू इस खत्रीके यहां क्यों जाया करती है!तब उसने बेधडक होकर कहा कि मेरी और उस खत्रीकी दोस्ती है इससे मैं उसके पास जातीहूं तब रूपसेनने कहा कि खबरदार आजसे जो उसके पास गई आजसे मेराकहनामानकरउससेप्रीत छोडदे तब हेमाद्री बोली कि मैं आपको छोड दूंगी परंतु उस खत्रीको न छोडूंगी रूपसेनने उस ऊंच नीच कर बहुत समझाई परंतु हेमाद्रीने ऐसी हठ पकडी कि रूपसेनकी एक भी बात न मानी अन्तमें रूपसेनने लाचार होकर हेमाद्रीको अपने घरसे निकाल दी. तब अपने

यारके मकानपर पहुंची उसको देखकर खत्री बोला कि इस वक्त कैसे आईहो यह वक्त तौ आपके आनेका नहीं है तब हेमाद्रीनें सब हाल कहा जिसको सुनकर वह खत्री बोला कि हेमाद्री अब मेरे भी कामकी नहीं है हेमाद्री बोली कि हे प्यारे! ऐसा मैंने क्या कसूर किया? जिससे मैं तेरे कामकी नहीं रही. तब खत्रीने कहा कि जब तू अपने व्याहता पुरुषकी साथी न हुई तो मेरा साथ क्या देगी इससे में ऐसी निर्लज्ज स्त्रीसे प्रीति नहीं करता यह कहकर उस खत्रीने भी हेमाद्रीको निकाल दी. तब तो वह अपने मनमें अत्यन्त लज्जित हुई और इधर उधर मारी मारी फिरने लगी इसप्रकार कहकर दीवान बोला कि, हे रानी!जैसे हेमाद्रीने हठपर आनकर दुःख उठाया और पीछे पछताई इसी तरह आपभी इस हठके वश होकर दुःख पाओगी और पीछेपछताओगी इस बातको सुनकर रानी बोली कि मैं तो बिन पूछे नहीं जाऊंगी तब दीवान फिर बोला कि हेरानी! हम फिर आपसे वारंवार कहतेहैं कि आप इस हठको छोड दीजिये नहीं तो जैसे हठके वश होकर रानी चन्द्रकान्ताने दुःख उठाया था उसी तरह तुमभी दुःख उठाओगी तब रानी बोली कि चन्द्रकान्तानें क्यों दुःख उठाया सो मुझसे कहो तब दीवान कहने लगा॥

दास्तान चन्द्रकान्ताका।

दीवान बोला कि हे रानी! एक सुरसेन नाम नगर था और वहांका राजा रूपदत्त कि जो बडा रूपवान् था और उसकी चन्द्रकान्ता नाम रानी अतिस्वरूपवती जोबनमें भरपूर आफताबके मानिंद थी. परंतु वह अपने पीहरमें विवाहसे पहिलेही व्यभिचारिणी होगई थी सो जब व्याह होकर अपने सासरे आई तो अपने यारको भी खोजाका रूप बनाकर अपने साथ ले आई जब राजा कचहरीको जाता तब वह अपने यारके साथ भोगविलास किया करती इसीतरह रानीको भोगविलास यारके साथ करते करते बहुत दिन बीते

एक दिन यह हाल राजाको मालूम होगया तो राजाने रानीको बहुत समझाया कि, देखो आप ऐसा काम मत करो तब रानीने कहा कि मेरा दिल इसपर मुश्ताकहै सो आप चाहै सो करौ परंतु मैं तो इसको न छोडूंगी तब राजाने उसे बहुत समझाया परंतु वह अपनी हठपर ऐसी चढी कि राजाकी एक भी बात न मानी. तब राजाने उस रानीकी नाक और कान दोनों कटवाकर अपने महलसे निकाल दिया और उस खोजाको फांसी देदी तब विरूप होकर भूँख प्यासकी मारी दुःख पाने लगी और अपने मनमें बडी धिक्कार देने लगी कि हाय! मैंनें बडा बुरा काम किया जो अपने पतिका कहना नहीं माना और इसीसे मेरी यह गति भई। दीवान कहने लगा कि हे रानी! जो स्त्री किसीका कहा नहीं मानतीहै उसकी ऐसी ही गति होतीहै हम इसीसे आपको बारबार समझातेहैं कि आप इस हठको छोडदो क्योंकि ये राजाहैं इनके स्वभावका हाल मालूम नहीं होता इसीसे किसी कविने कहाहैः—

राजा जोगी अग्नि जल, इनकी उलटी रीत।
बचते रहियो परसराम, यह थोडी पालैं प्रीत॥

हे रानी! अभी तो ये राजा तुम्हारे बशमें हैं इससे अपनी हठ छोडकर राजाको लौटाले चलौ जो कदाचित किसीके सिखानेसे राजाकी मति फिरगई तो आपके हक़में न जाने क्या हो-इस तरह दीवानने रानीको बहुत समझाया परंतु रानीने अपने प्रारब्धबश हो एक न मानी तब लाचार हो दीवान वहांसे उठ गया और ज्यों त्यों कर रात काटी फिर प्रातःकाल होतेही राजानें कूच किया जब दोपहरका वक्त हुवा तब रास्तेमें एक नदी आई राजाने उसी नदीके किनारेपर डेरा कर दिया और आप स्नान करनेको उस नदीपर गया और स्नान करके नदीके किनारे पर बैठकर ईश्वरका स्मरण करने लगा कि इतनेमें एक बकरियोंका झुंड पानी पीनेको नदीपर आया सब

बकरियां पानी पी पीकर चली गईं केवल एक बकरी पानी पीती पीछे रहगई इतनेमें एक बहुत अच्छा फूल उस नदीमें बहताहुआ चलाआया उस फूलको देखकर बकरीकामन ललचाया और मनमें कहने लगी कि किसी तरह यह फूल मेरे खानेमें आवे तो अच्छाहै यह बात बिचारकर उसने बहुतेरा मुंह चलाया परंतु फूल हाथ न आया और वह वहीं खडी रहगई। जब बकरेने देखाकि सब बकरी तो आगई परंतु एक बकरी नहीं आई वह उस बकरीके पास आया और बकरीसे कहने लगा कि सब बकरी तो चली गईं तू यहां क्यों खडीहै तब वह बकरी बोली कि जो तू मुझको उस फूलको लादे तो तेरे साथ चलूं और जो तू इस फूलको न लावेगा तो मैं तेरे साथ नहीं चलूंगी इस बातको सुनकर बकरेने कहा कि जो मैं इस फूल को लेने को गया और इसमें डूब गया तो कैसी होगी तब बकरी बोली कि हे बकरे! चाहे सो हो परंतु मैं विना इसफूलके लिये नहीं चलूंगी यह बात बकरीकी सुनकर बकरेको बडी गुस्सा आई और लाल लाल आखें कर उस राजाके सामनें खडा होकर यह वचन बोला कि हे बकरी! तू मुझको नहीं जानतीहै कि मैं राजा अंगध्वज सरीखा बेवकूफ मर्द नहीं हूं जो कि बसमें आनकर अपनी जान खोनेको गंगाकिनारेपर जाताहै यह कहकर बकरेने अपने सींगोंकी मार उस बकरीमें दी तब वह बकरी मारके डरके मारे बकरेके आगे आगे होली बकरेकी यहबात राजाके कलेजेमें बाणके समान लगी और उसके अंतःकरण में ज्ञान हुआ कि देखो हम इस बकरेसेभी हीनहैं जो इस रानीकी मोहब्बतमें आनकर सब राजपाट छोडकर अपनी जान गमानेको चलेहैं. हाय हमको हमारे दीवानोंने भी समझाया परंतु हम इस स्त्रीके मोहरूपी जालमें ऐसे फँसे कि इसके सबबसे हमने किसीकी बात न मानी और रानीके कहनेमें आनकर

हम अपने प्राण गमानेको यहां आये हमको इस बातकाभी ज्ञान न हुआ कि जिस रानीपर इतना प्यार करतेहैं वह हत्यारी हमारे प्राणोंहीकी भूँखी है देखो किसी कवीने कहा है सो ठीकहैः—

दोहा

जन्म कारन भई जननी, भोग कारन बालिका ।
पूजा कारण भई देवी, अंत कारण कालिका ॥

राजा अपने मनमें कहने लगा मैं बडा मूर्ख हूं मेरी इस बुद्धिको धिक्कारहै और स्त्रियोंको भी धिक्कारहै जो अपनी मीठी मीठी बाणियोंसे पुरुषको अधीन कर लेतीहैं और उन पुरुषोंको भी धिक्कारहै जो इन कपटकी कोथरी स्त्रियोंकी मोहरूपी बातोंमें आनकर अपना सरबस खोकर इनके अधीन होजातेहैं ये बातें बिचार राजा उस नदीसे उठकर अपने डेरेमें आया और सब दीवान मुत्सद्दियोंको बुलाकर अपने पास बिठालिया फिर रानीको बुलाकर कहा कि हे रानी! अब हम तेरे सामने उस बातको कहेंगे और हम पत्थरके होंगे अब तेरी क्या मरजीहै तब रानी बोली कि हे राजा! चाहै सो हो परंतु मुझसे तो उस हालको कहदो तब राजा गुस्सेमें आनकर घोडेका चाबुक हाथमें लेकर रानीको मारने लगा पांच सात चाबुकोंके लगतेही रानीकी खाल उडने लगी तब रानी चिल्लाकर कहनेलगी कि हे राजा! अब मैं इस बातको आपसे कभी नहीं पूछूंगी तब राजाने कहा कि अच्छा इस रानीको जल्लादोंके सुपुर्द करदो और उनसे कहदो कि इस रानीकी दोनों आंखें निकालकर किसी जंगलमें छोड आवैं जल्लादोंने वैसाही किया और रानी अपने कियेकी सजाको पहुंची। तोता कहनेलगा कि हे मैना! भला औरतोंकी जातका क्या भरोसाहै भला मुझसे तू बिचारी औगुनोंकी पिटारी क्या जीत सकेगी ? तब मैना बोली कि ऐ तोता ! बहुत बढ़कर मत बोल देख मैं भी मरदोंकी बेवफाईका हाल तुझसे कहतीहूं तब तोता बोला

कि हे मैना ! अब हमको तुमको सवाल जवाब करते आज दूसरी रातभी बीतनेपर आचुकी और न जाने तू कितना बडा दास्तान क हैगी और मेरी आँखोंमें इस वख्त नींदकी खुमारी आतीहै इससे बेहतर यह है कि अब तो चार घडी आराम करलें फिर कल रातके समय इसका तू जबाब देना यह बात कहकर तोता और मैना! अपने२ स्थानोंपर सोरहे अब जो मैना जबाब देगी वह इस किताबके पांचवे भागमें लिखेंगे.

इति श्रीतोता मैना चौथाभाग सम्पूर्ण ।

अथ तोता मैना पांचवाँ भाग.

नवाँ दास्तान मैनाका ।

मैंना बोली कि, ऐ तोते ! इन्द्रप्रस्थ नाम करके हिंदुस्थानमें बडाभारी और शोभायमान एक शहर था उसमें चन्द्रगुप्त नाम राजा राज्य करता था उसके चार बेटे अति स्वरूपवान नौजवान विद्यामें निपुण धनुषबाणमें कुशल इन्द्रके समान तेजावाले थे. सो एक दिन वे चारों भाई अपने अपने घोडोंपर चढकर शिकार खेलनेको गये वहां जाकर एक हिरनके पीछे चारों भाईयोंने अपने अपने घोडे फेंके इन राजकुमारोंको आता देखकर हिरनभी जंगलकी तरफ भागा निदान इसी तरह भागते भागते बहुत दूर निकलगये आखिरको एक जंगलमें जाकर वह हिरन गायब होगया तब उन राजकुमारोंने बहुतेरा देखा परंतु कहीं भी उसका पता न लगा । लाचार होकर अपने अपने घोडोंको पेडोंसे बांध एक पेडके नीचे बैठगये एक तो रास्तेके थके हुए थे दूसरे जंगलकी ठंडी ठंडी हवा लगनेसे ऐसी नींद आई कि सब रात होश न हुआ. जब प्रातःकाल उठकर अपने अपने घोडोंपर सवार होकर चले तो परमेश्वरका करना ऐसा हुआ कि वे अपने वतनका रास्ता भूलकर किसी और रास्तेको

चले गये और चलते चलते एक शहरके दरवाजेपर पहुँचे वहां देखते क्या हैं कि एक पनघटका कुआ बनाहै और उस पर बहुतसी स्त्री पानी भररहीहैं इनको भी प्यास अधिक लगरही थी सो एक राजकुमारने कूएपर जाकर एक स्त्रीसे कहा—

दोहा

हम परदेशी लोगहैं, दीजे नीर पिलाय ॥
प्यास अधिक हमको लगी, जीव रहा अकुलाय ॥

इतनी बातें राजकुमारकी सुनकर उस स्त्रीने जबाब दिया:—

दोहा

कूआको मुख सांकरो, नीचो नीर दिखाय ॥
भरते कटि तिरछी भई, सबरी देह पिराय ॥

स्त्रीका ये जबाब सुनकर राजकुमार कहनेलगा:—

दोहा

हम परदेशी पाउने, दूर हमारे देश ॥
प्यासेको जल प्यायदे, निरख आपनो भेष ॥

तब उन स्त्रियोंने देखा कि ये प्यासेहैं इनको जल जरूर पिलाना-चाहिये यह बिचारकर अपना लोटा माँजकर चारों राजकुमारोंको पानी पिलाया तब वे राजकुमार वहांसे पानी पीकर आगे बढे तो एक शहर और नजर आया उस शहरके लोग जादूगार थे ये चारों राजकुमार उस शहरमें गये और चारों तरफ सैर करने लगे इसी तरह सैर करते करते जब शाम होगई तो एक सरायमें पहुंचे वहां भटियारीके चार बेटियां अति स्वरूपवती थीं और उन चारों बेटियोंके न्यारे न्यारे मकान बने हुए थे सो जब वे राजकुमार सरायमें उतरे तो उस वक्त उस भटियारेकी छोटी बेटीने देखा और इनको देखकर अपने मनमें कहने लगी कि

आजतक ऐसे स्वरूपवान् पुरुष हमारी सरायमें कभी नहीं आये हो न हो ये तो कोई राजकुमार हैं यह बात मनमें विचारकर वह अपनी तीनों बहनों के पास गई और जाकर कहने लगी कि ऐ बहनों ! आज हमारी सरायमें चार मुसाफिर ऐसे आयेहैं कि उनके रूपकी तारीफ मुझसे कुछ नहीं होसक्ती तरुण अवस्था विशाल जिनके नेत्र चम्पाकासा रंग साक्षात् कामदेवके समान हमारे मनके हरनेवालेहैं ये बात छोटी बहनकी सुन वे तीनों भटियारेकी लडकियाँ राजकुमारोंको देखनेको सरायमें आई और राजकुमारों को देखकर मोहित होगई फिर अपने मकानमें जाकर आपसमें कहनेलगीं कि ये राजकुमार तो ऐश करने लायकहैं इनको जादूमें गिरफतारकरके एक एक चारों बहन बाँटलें और इनके साथ ऐश आरामकरें. क्योंकि दुनियामें आरामकी बराबर कोई चीज नहींहै. और हमारी इनकी जोडी भी परमेश्वरनेही मिलाईहै ये बात मनमें विचारकर भटियारेकी चारों बेटियोंने ऐसा जादू फेंका कि जब वे राजकुमार सबेरे उठकर चले तो जादूके जोरसे एक एक राजकुमार उन चारों बेटियोंके मकानमें यानी बडा राजकुमार तो बडीके घरमें चला गया और दूसरा दूसरीके घरमें तीसरा तीसरीके घरमें तथा छोटा चौथीके मकानमें चला गया-इसी तरह चारों राजकुमार भटियारेकी बेटियोंके घरमें चले गये तब उन्होंने जाते जातेही जादूके जोरमें मेंढा बकरा बना लिये परंतु भटियारेकी छोटीबेटीने छोटे राजकुमारको कुछ न बनाया और बडी प्रीतिके साथ रखने लगी और हर एक तरहसे ऐश व आराम करने लगी और उन तीनों लडकियोंका हाल यह रहै कि दिनमें तो राजकुमारोंको मेंढा बकरा बनाकर रक्खें और रातको मनुष्य बनाकररक्खें और अच्छे अच्छे भोजन करावें और उनके साथ रात भर ऐश करें इसी तरह ऐश आराम करते बहुत दिन बीतगये उस भटियारेकी छोटी बेटी और

छोटे राजकुमारमें ऐसी मोहब्बत बढी कि उस भटियारीको बिना देखे राजकुमारके एक पलभर चैन नहीं पडता था. एक दिनका जिक्रहै कि राजकुमारको अपने माता पिताओंको याद आई सो उनकी फिक्रमें सुस्त बैठा था कि भटियारेकी छोटी बेटीने देखा तो बहुत प्यारके साथ राजकुमारके गलेसे लिपटकर कहने लगी कि हे प्यारे! आज आप उदास क्यों हो ? आपकी उदासी देखकर मेरा दिल घबडाताहै सो आप अपने उदास होनेका हाल कहिये जहांतक मुझसे होसकेगा वहांतक मैं आपके सोच दूर करनेका उपाय करूंगी मैं तो आपका दिलोजानसे ताबेदार होचुकीहूं फिर आपको मुझसे किसी बातका छिपाव नहीं करना चाहिये, तब छोटा राजकुमार कहनेलगा कि हे प्राणप्यारी! मैं भी तुझे दिलोजानसे चाहताहूं और तेरी मोहब्बतने मुझे ऐसा गिरफतार कियाहै कि बिना तेरे देखे एकपल (वर्ष) समान कटताहै परंतु आज कुछ इसवक्त मेरा दिल अपने माबापोंकी तरफ चलागया तो मैंने अपने मनमें ये सोचा कि देखो हमारे मातापिताके हम चारही बेटेथे और हम चारोंही आपके फन्देमें फँसगये अब उनका न जाने क्या हाल होगा क्योंकि दुनियामें पुत्रके बराबर चीज प्यारी और कोई नहींहै और जिसमें भी इन तीनों भाइयोंकी तो शादी होगईहै सो इनकी रानियां महा दुखी होंगी इस बातका सोच मुझको इसवक्त आगया था सो हे प्राणप्यारी ! जो तुम मुझे दिलोजानसे चाहती हो तो ऐसा कोई उपाय करो कि मेरे भाई इस जालमेंसे निकलकर अपने वतनको चले जावें और अगर आपकी राजी हो तो आप और हम भी चलें. क्योंकि वहां आपके लायक हर एक तरह के ऐश वा आरामके सामान मौजूदहैं हमारी राजधानी इन्द्रप्रस्थमें है और एक यह भी बात है कि यहां तो आप भटियारी कहलातीहो और वहां चलकर रानी कहलाओगी इस बातको सुनकर भटियारी एक दफे तो चुप्प होगई फिर मनमें सोचने-

लगी कि अब क्या उपाय करूं जो इस्के भाइयोंको निकालतीहूं तो मेरी बहनोंको दुःख होगा और जो नहीं निकलतीहूं तो मेरे प्यारे राजकुमारको सोच रहेगा. इस सबबसे न तोअच्छी तरह खाय पीवेगा और न अच्छीतरह बोलेगा और इसका रंज मुझसे हरगिज नहीं सहा जायगा इससे जो कुछ होनाहै सो होगा परंतु अपने प्यारेके भाइयोंको तो अपनी बहनोंके फन्देमें से निकालही दूंगी लेकिन सबसे पहिले मुझे इस राजकुमारके दिलकी बातभी जान लेनी चाहिये कि ये मुझे छोडकर चला तो न जायगा ये बात सोचकर राजकुमारसे कहनेलगी कि हे प्यारे! जो आपकी यही मरजीहैतो आपको चार गुटिका देतीहूं सो एक एक गुटका अपने अपने मुखमें रखकर चारों भाई यहांसे चले जाओ तुम पर कोई जादू नहीं चलेगा ये बात भटीयारीकी सुनकर राजकुमारने मनमें सोचा कि ये बात भटियारीने मेरी परीक्षा करनेके लिये कहीहै भला ऐसा कौनहै जो अपने आरामको अपने हाथसे जान बूझकर खोवेगा इसे अभी तो अपने भाइयोंके छुडानेका उपाय करना चाहिये अपने निकलनेकी फिर देखी जायगी क्योंकि मुझे किसी बातका दुःख नहीं है यानी खाना पीना ऐश अशरत का सब सामान मौजूदहै अभी तो मुझको इससे मोहब्बत बढानाही मुनासिबहै जल्दी करना अच्छा नहीं किसी कविने कहाहैः—

दोहा

धीरे धीरे मालिया, धीरे सब कुछ होय ॥
माली सींचे केवडा, ऋतु आये फल होय ॥
काज विषय धीरज धरे, सो कारज फलदाय ॥
जल्दी करनों काजमें, काजें देय नसाय ॥
सोच समझ लीजे हृदय, जब कुछ कीजे काज ॥
बिना बिचारे काजमें, आवत अति डर लाज ॥

इस प्रकार राजकुमार अपने मनमें सोचनेलगा फिर भटियारीसे बोला कि, हे प्राणप्यारी ! मुझको चार गुटका लेनेसे क्या कामहै मुझको तो तीनों भाइयोंके वास्ते तीनही गुटका दे और मुझको गुटका दे तो मेरे साथ अपना चलना मंजूर कर.क्योंकि बिना तेरे देखे मुझे एक पलभर भी चैन नहीं होगा.तब भटियारीने कहा कि मेरा चलना तो आपके साथ अभी नहीं होसक्ता, राजकुमार बोला कि आपके बिना मुझे जाना हरगिज मंजूर नहीं क्योंकि मैं तो दिलोजानसे तेरा तावेदार होचुका ये बात राजकुमारकी सुनकर भटियारीने अपने मनमें जान लिया कि ये राजकुमार तो मेरे ऊपर दिलोजानसे मुश्ताकहै और मुझे छोडकर कहीं नहीं जानेका है ये बात सोचकर अपनी संदूकसे तीनगुटका निकालकर राजकुमारको दिये और कहा कि ये तीनों गुटके लेजाकर एक एक तीनों भाइयोंको देदो वे अपने अपने मुखमें लेकर खांयगे तो किसीका जादू नहीं चलेगा और वे राजी खुशी अपने वतनको चले जायँगे तब राजकुमार बोला कि तैंने मेहरबानी करके गुटका तो मुझे दिये परंतु ये भी तो बतादे कि ये गुटिका उनको कैसे दूं क्योंकि वे तो दिनभर मेंढा बकरा हिरन बने रहतेहैं और घरमें तेरी बहन आठों प्रहर रहतीहैं उनके सामने गुटके कैसे दिये जाँय तब भटियारी कहने लगी कि आजसे आठ रोज पीछे दिवालीका दिनहै सो उस रोज तीसरे पहर हम सब देवीपर मंत्र सिद्धि करने जायँगी सो तुम उस वक्त उनके पास जाकर एक एक गुटका तीनोंके मुखमें रखदेना, गुटकाके रखतेही उनका सब जादू दूर होजायगा सो तुम उनको यहांसे रवाना करदेना ये बात भटियारीकी सुनकर राजकुमार बहुत खुशहुआ निदान कई रोजके बाद दिवालीका दिन आया और तीसरे पहरके वक्त वे भटियारी तो सब देवीपर गई और राजकुमार अपना मौका पाकर उनके घरमें गया और उन तीनोंके मुखमें एक एक गुटका रक्खा

गुटका रखतेही वे तीनों राजकुमार अपने असलीरूपमें आगये. तब छोटे राजकुमारने सब हाल उनसे कहा और कहनेलगा कि हेभाइयो! अब तुम यहांसे बहुत जल्दी चले जाओ ऐसा न हो कि कोई बला सिरपर आजावे. तब वे तीनों भाई कहनेलगे कि तुम भी तो हमारे साथ चलो तुम्हारे बिना हम माता पिताको कैसे मुँह दिखलावेंगे? छोटा राजकुमार बोला कि हे भाइयो! आप तो इस फन्दसे निकलकर जाओ ईश्वरने चाहा तो मैंभी जल्दी आऊंगा ये बात छोटे भाईकी सुनकर घरमें घुसकर अपने कपडे लत्ते और कुछ रास्तेके लिये खर्च ले वे तीनों राजकुमार वहांसे चलदिये थोडी देरके बाद जब भटियारी अपने अपने घरोंमें आईं और घरमें राजकुमारोंको न देखा तो अपने मनमें सोचनेलगीं कि ये क्या गजब हुआ जो यहांसे राजकुमार गायब होगये एक दूसरीसे और दूसरी तीसरीसे आपसमें पूँछनेलगीं जब कुछ न मालूम हुआ तो उन्होंने अपने अपने वीर उनको ढूंढकर पकड लानेको भेजे परंतु उन गुटकोंके जोरसे उनपर बीर जोर न करसके तब वे बीर भटियारियोंके पास आये और कहने लगे कि उन राजकुमारोंके मुखमें एक २ गुटका रक्खाहै इस सबबसे हमारा जोर न चलसका. यह बात वीरोंकी सुनकर भटियारी सोचने लगी कि चलकर देखों तो सही उस चौथीका राजकुमारभी गया या नहीं ये बात मनमें विचारकर वे तीनों भटियारी अपनी छोटी बहनके मकानमें गईं जाके देखा तो दोनों स्त्री पुरुष सार फांसे खेल रही हैं इस बातको देखकर उन तीनोंने अपने मनमें जान लिया कि यह इसी हरामजादीका कामहै और उसे हर एक तरहकी गालियां देने लगीं और कहने लगीं कि अच्छा छिनाल तैंने इस भडुएकी मोहब्बतमें आनकर हमारे सुखमें फर्क डाला भला हमभी तो देखैं कि तू इसके साथ कैसी मौज उडाती है जिस दिन हमारा दाँव लगगया उस दिन तुझे और इस भडुएको कच्चाही

सों जायँगी यह कहकर अपने अपने घरमें चली गईं और इधर भटियारेकी छोटीबेटीने राजकुमारसे कहा कि ऐ प्यारे ! मेरेकिये हुये करतब मेरी बहनोंने जानलिये हैं सो ये अब अपनी करनी में नहीं चूकेंगी जहांतक बनेगी वहांतक मेरे और तुम्हारे प्राण लेनेकी फिक्र करेंगी इसलिये आप एक गुटका मुखमें धर लीजिये जिससे आपके ऊपर जादूका जोर न चले मुझसे जो कुछ बीतेगी सो मैं देखलूंगी. मैना बोली कि ऐ तोते ! ये तो आपसमें बात करही रहेथे कि इतनेमें उन तीनोंने अपने बीर छोडे सो वे बीर बडे वेगसे उस छोटीके मकान पर आये उन वीरोंको आते देख इसनेभी अपने बीर छोडे दोनोंके बीर आपसमें लडनेलगे तब उन तीनोंने जादूके सांप बनाकर उसके ऊपर छोडे उसनेभी सांपोंको आते देखकर अपनेभी सांप छोडे तब वे सांपभी आपसमें लडने लगे. इसी तरह आपसमें दोनोंकी खूब जादूकी लडाई हुई जब इन तीनोंका जादूसे वश न चला तब वे तीनों भटियारी उस छोटीपर हमला करके लडनेको गईं और उसके सिरके बाल पकडकर मारने लगीं तब राजकुमारने उठकर मारे डंडोंके तीनोंकी हड्डी हड्डी तोड डाली और वे तीनों तोबा दैया मचाती हुई अपने घरको आईं उनको इसी तरह लडते झगडते कितनेक दिन गुजर गये आखिरको छोटी भटियारी मनमें दुःख पाकर एकरोज कहने लगी कि हे प्यारे ! मेरा और मेरी बहनोंका आपसमें बैर बँधगयाहै सो इसमें ऐसा न हो कि कोई धोखा खाकर मारे जाँय इससे बेहतर यहीहै कि इस शहरमें रहना नहीं चाहिये क्योंकि बडोंने कहाहै ॥

दोहा

जा नगरी बैरी वसे, ताहि त्याग कर देय ॥
जो वसिहै वा नगरमें, प्राण दान करदेय ॥

इससे हे प्यारे! अब आप अपने देशको चलो क्योंकि वहां न इ-मको देखेंगी और न जलेंगी यह सलाह दोनों करके रातको थोडा सा असबाब लेकर वहांसे चलदिये जब यह चलते चलते कई मंजिल निकल गये तो एक दिनका जिक्रहै कि एक शहरमें जाकर ठहरे रातको जब भटियारी सोगई तब राजकुमार अपने मनमें सोचने लगा कि अब परमेश्वरने मेरे भी निकलनेकी तजबीज करदीहै अब मुझको इसके फन्देमें न रहना चाहिये क्योंकि न समय न वारंवार, फिर वही कहावत होगी कि (औसर चूकी डोमनी गावे ताल बेताल) और जो मैं ये सोचूं कि इसे मैं साथही लेचलूं तो इसमें एक बडा भारी डरहै कि यह जादूगरनीहै इसको सैकडों जादू ही जादू यादहैं किसी समय दैवयोगसे इसके दिलमें फर्क आजाय तो मुझको उसी तरह मेढा या बकरा बनाकर अपने वतनको लेजायगी. क्योंकि अव्वल तो अच्छे मनुष्य स्त्रियोंका भरोसा नहीं करते जिसमें तो ये पूरी पूरी जादूसे भरी आठोंगाठ कुम्मैत है वही मसलहै कि "एकतो गिलोय दूसरे नीम चढी" इस समय तो मेरे पास इसका दियाहुआ गुटका मौजूदहै इससे इसका कोई जादू मुझपर कारगर न होगा! और जो किसी समय ये गुटका मेरे पाससे जाता रहा या इसीने लेलिया तो फिर मुझसे कुछ न होगा इस लिये बेहतर यही है कि इसको कतल करके यहीं गाड जाऊं परन्तु इसने मेरे साथमें कई सलूक कियेहैं इससे इसको मारना तो नहीं चाहिये परन्तु इसे यहीं छोडकर अपने वतनको रवाना होजाऊं. यह बात अपने मनमें बिचारकर अपने कपडे लत्ते लेकर और उसे सोती छोडकर चलदिया. इतनी कथा कहकर मैना बोली कि ऐ तोता! देख राजकुमारके साथ उस भटियारीने कैसा सलूक किया कि अपनी जान और माल सब उसके सुपुर्द करदिया और सब घरवालोंकी दुश्मन भई फिर भी राजकुमारने ये नेकी की कि उस बिचारीका सब घरबार छुडा जंग

खा जायँगी यह कहकर अपने अपने घरमें चली गईं और इधर भटियारेकी छोटीबेटीने राजकुमारसे कहा कि ऐ प्यारे ! मेरेकिये हुये करतब मेरी बहनोंने जानलिये हैं सो ये अब अपनी करनी में नहीं चूकेंगी जहांतक बनेगी वहांतक मेरे और तुम्हारे प्राण लेनेकी फिक्र करेंगी इसलिये आप एक गुटका मुखमें धर लीजिये जिससे आपके ऊपर जादूका जोर न चले मुझसे जो कुछ बीतेगी सो मैं देखलूंगी. मैना बोली कि ऐ तोते ! ये तो आपसमें बात कर रही रहेथे कि इतनेमें उन तीनोंने अपने बीर छोडे सो बे बीर बडे वेगसे उस छोटीके मकान पर आये उन वीरोंको आते देख इसनेभी अपने बीर छोडे दोनोंके बीर आपसमें लडनेलगे तब उन तीनों ने जादूके सांप बनाकर उसके ऊपर छोडे इसनेभी सांपोंको आते देखकर अपनेभी सांप छोडे तब वे सांपभी आपसमें लडने लगे. इसी तरह आपसमें दोनोंकी खूब जादूकी लडाई हुई जब इन तीनोंका जादूसे वश न चला तब वे तीनों भटियारी उस छोटीपर हमला करके लडनेको गईं और उसके सिरके बाल पकडकर मारने लगीं तब राजकुमारने उठकर मारे डंडोंके तीनोंकी हड्डी हड्डी तोड डाली और वे तीनों तोबा दैया मचाती हुई अपने घरको आईं उनको इसी तरह लडते झगडते कितनेक दिन गुजर गये आखिरको छोटी भटियारी मनमें दुःख पाकर एकरोज कहने लगी कि हे प्यारे ! मेरा और मेरी बहनोंका आपसमें बैर बँधगयाहै सो इसमें ऐसा न हो कि कोई धोखा खाकर मारे जाँय इससे बेहतर यहीहै कि इस शहरमें रहना नहीं चाहिये क्योंकि बडोंने कहाहै ॥

दोहा

जा नगरी बैरी वसे, ताहि त्याग कर देय ॥
जो वसिहै वा नगरमें, प्राण दान करदेय ॥

इससे हे प्यारे! अब आप अपने देशको चलो क्योंकि वहां न ह-
मको देखेंगी और न जलेंगी यह सलाह दोनों करके रातको थोडा
सा असबाब लेकर वहांसे चलदिये जब यह चलते चलते कई मं-
जिल निकल गये तो एक दिनका जिक्रहै कि एक शहरमें जाकर
ठहरे रातको जब भटियारी सोगई तब राजकुमार अपने मनमें सोचने
लगा कि अब परमेश्वरने मेरे भी निकलनेकी तजवीज करदीहै अब
मुझको इसके फन्देमें न रहना चाहिये क्योंकि न समय न वारंवार,
फिर वही कहावत होगी कि (औसर चूकी डोमनी गावे ताल बे-
ताल) और जो मैं ये सोचूं कि इसे मैं साथही लेचलूं तो इसमें एक
बडा भारी डरहै कि यह जादूगरनीहै इसको सैकडों जादू ही जादू
यादहैं किसी समय दैवयोगसे इसके दिलमें फर्क आजाय तो मुझको
उसी तरह मेढा या बकरा बनाकर अपने वतनको लेजायगी. क्योंकि
अव्वल तो अच्छे मनुष्य स्त्रियोंका भरोसा नहीं करते जिसमें तो ये
पूरी पूरी जादूसे भरी आठोंगाठ कुम्मैत है वही मसलहै कि "एकतो
गिलोय दूसरे नीम चढी" इस समय तो मेरे पास इसका दियाहुआ
गुटका मौजूदहै इससे इसका कोई जादू मुझपर कारगर न
होगा और जो किसी समय ये गुटका मेरे पाससे जाता रहा या
इसीने लेलिया तो फिर मुझसे कुछ न होगा इस लिये बेहतर यही है
कि इसको कतल करके यहीं गाड जाऊं परन्तु इसने मेरे साथमें कई
सलूक कियेहैं इससे इसको मारना तो नहीं चाहिये परन्तु इसे यहीं
छोडकर अपने वतनको रवाना होजाऊं. यह बात अपने मनमें बि-
चारकर अपने कपडे लत्ते लेकर और उसे सोती छोडकर चलदिया.
इतनी कथा कहकर मैना बोली कि ऐ तोता! देख राजकुमारके साथ
उस भटियारीने कैसा सलूक किया कि अपनी जान और माल सब
उसके सुपुर्द करदिया और सब घरवालोंकी दुश्मन भई फिर भी
राजकुमारने ये नेकी की कि उस बिचारीका सब घरबार छुडा जंग

लमें अकेली छोडकर चलदिया जब वह भटियारी सोकर जागी तो अपने पास राजकुमारको न देख घबडाकर चारों तरफ देखनेलगी जब उसको इसी तरह उसकी इन्तजारीमें दोपहर गुजरगये और वह न आया तब तो वह अपने मनमें बहुत घबडाई और जान गई कि वह निरमोही मुझे छोडकर चलागया अब मैं क्या करूं और किधर जाऊं यह कहकर कदी बाहर और कदी भीतर बावलोंकी तरह इधर उधर फिरनेलगी देखना चाहिये इस मोहब्बतके जादूको कि वह भटियारी बडी अकलमन्द थी और हर एक जादूमें उस्ताद थी मगर राजकुमारकी मोहब्बतमें जादूको भूलगई और अपने कपडे जेवर आदि सब फेंककर तनमें खाक रमाकर जोगनका भेष बनाकर जंगलकी तरफ चलदी और मतवालोंकी तरह घूमनेलगी और कभी कभी राजकुमारकी यादकर यों पुकारने लगती थीः-

दोहा

चन्द्रवदन चम्पा वरन, मेरे चितके चोर ॥
कौन दिशामें छिपरहे, प्यारे तुम सुखमोर ॥ १॥
तेरे मुख देखे बिना, पडे न मोको चैन ॥
आले बनकी लाकडी, ज्यों सिलगत दिन रैन ॥ २ ॥
प्यासी हूं तेरे दरशकी, प्यारे राजकुमार ॥
आय दरश अब दीजिये, मेरी चूक बिसार ॥ ३ ॥

एक दिन इसतरह विरह भरा हुआ शब्द करती हुई जंगलको चली जाती थी कि आगे उसके एक फकीरका तकिया नजर आया जिसमें बहुतसे फकीर जमा थे वह उस तकियेके पास गई और सलाम करके बैठगई और आपकी सांस भरने लगी तब एक बूढा फकीर उसे देखकर बोला कि हे बच्चा! तू कौनहै और तुमपर ऐसी क्या मुसीबत पडीहै जिससे तेरी आंखोंसे पानी मानिन्द मेहके वरसताहै और तेरे दिलसे आहका शब्द निकलताहै सो अपना सब

हाल मुझसे कह. ये बात फकीरकी सुनकर भटियारी कहनेलगी कि ऐ फकीरसाहब! अपनी मुसीबतका हाल मैं आपसे क्या कहूं जो जो मुसीबत मेरे दिलपर बीतीहैं उनके कहनेमें मेरा कलेजा फटताहै मगर आपने पूछाहै तो आपके सामने कहतीहूं:—

बैत

मैं कहतीहूं सब हाल मेरा सुनो ॥
जरा ध्यान धर हाल मेरा सुनो ॥
मेरा यार मुझसे बिछुड यहां गया ॥
कहूं ब्यान अव्वलसे मेरा सुनो ॥ १ ॥
जुदाईकी मारी तडफती फिरूं ॥
ये किस्सातो भारीहै मेरा सुनो ॥
नथी मुझको मालूम इस रंजकी ॥
जो बीता है दिलमें वो मेरा सुनो ॥ २ ॥

इसप्रकार अव्वलसे आखिरतक अपना सबहाल फकीरके सामने कहा तब फकीर बोला कि बच्चा तू सोच तो सही कि इस दुनियामें कौन किसीका दोस्त और कौन किसीका दुश्मनहै सब झूंठा झगडाहै दुनिया मोहमें फँसकर सब भूल रहीहै ऐ बच्चा! मेरा कहा मानकर इस झूंठे ख्यालको छोडकर खुदाकी यादकर और उसके सिवाय एक औरभी बातहै कि तू कहती है कि मेरा दोस्त राजकुमार मुझे छोडकर चला गया सो तू नहीं जानतीहै कि राजा लोग किसके मित्र होतेहैं इनपर विश्वास करना झूठा है किसी कवीने कहाहै:—

दोहा

राजा जोगी अग्नि जल, इनकी उलटी रीति ॥
बचते रहियो जगतमें, इनके थोडी प्रीति ॥

देख तेरे सामने एक राजाका हाल कहताहूं तू सुन एक धर्मपूरनाम नगर था उसमें खड्गसेन राजा राज करता था सो उसके यहां

तिन्दुक नाम नौकर था वह नौकर राजाको ऐसा मन चढा कि राजाने उसे कुल राजका मालिक करदिया और जब राजा भोजन करता तब उसको अपने पास बिठालेताथा इसी तरह बहुत दिन गुजर गये एक दिनका जिक्रहै कि राजाने कहा कि हे तिन्दुक ! इस वक्त हमारा जी चाहताहै कि तुम चलो तो हवाखानेको चलें उस वक्त तिन्दुक बोला कि महाराज ! आज मुझको राजकाज बहुत करनाहै इससे मेरा चलना नहींहै अगर आपका दिलहै तो आप जाइये इस बातको सुनकर राजा बहुत गुस्सा भया और मनमें कहनेलगा कि इस नौकरको बडा अभिमान होगयाहै जो इसने हमारा हुकम टाल दिया इस बातको सोचकर हुकम दिया कि इसका घरबार जप्त करलो और इसके हाथ पांव और मुंह काला करके गधेपर चढाकर शहरसे बाहर निकालदो राजाका हुकम सुनकर नौकरोंने वैसाही किया सो हे बच्चा ! उसमें उस बिचारे नौकरका क्या कुसूर था जिसपर राजाने उसकी ऐसी गति की इसीसे अच्छे मनुष्य राजासे प्रीति नहीं रखते इससे मेरा कहना मानकर राजकुमारकी मोहब्बतको छोडकर अपने घरको जाओ और इस झगडेमें पडकर अपनी जिन्दगी बरबाद मत करो, मैना बोली कि ऐ तोते ! उस फकीरने भटियारीको बहुत समझाया मगर उसके दिलमें एक भी न आई लाचार होकर फकीर चुप्प होगया सचहै कि जिसके बदनमें इश्ककी आग लगीहै उसे पानी डालनेसे कब आराम होताहै क्योंकि यह वह आगहै जिसका धूंआ बाहर नहीं निकलताहै और दिनरात कलेजापर सिलगतीहै इसीसे किसीने कहाहैः—

दोहा

जा तनमें लागी अधिक, कठिन इश्ककी मार ॥
वह दुख वोही जानता, जात न होगी पार ॥ १ ॥
लागी लागी सब कहें, लागी बुरी बलाय ॥

लागी जबही जानिये, आर पार होजाय ॥ २ ॥
इश्क आग तनमें लगी, धुँआ न परगट होय ॥
याको दुख वो जानिहै, जिस तन लागी होय ॥ ३ ॥

मैना बोली ऐ तोते ! वह भटियारी राजकुमारके इश्कमें सर सा-रहो उस फकीरके पाससे उठकर आगेको चली और आह भरकर शेर पढने लगीः—

शैर

न जानाथा मैंने, इश्के जंजाल ॥
लगा दुख देने ये, मुझको कमाल ॥
अरे इश्क जालिम, तू लाया कहां ॥
न देता दिखाई, अपना जहां ॥
छूटा ऐश आराम, और मुझसे घर ॥
दिखाये ये दुखडा, मुझे सरबसर ॥
कहां तनपै पहनेथी, सुन्दर लिबास ॥
कहां अब रमाई है, तनपे ये खाक ॥
न कीजो कोई इश्क, दुखदाई है ॥
फँसे इसमें आके, वो सो दाई है ॥
कहां सोना सेजों पर, गलेसे लिपट ॥
पडेहैं अब जंगलमें, एक लग सिमट ॥

ये शैर गाती हुई चली जातीथी सो जब शामका वक्त होगया तो एक पेडके नीचे बैठ गई और राजकुमारकी याद करते ये रेखता पढने लगी ॥

शैर

प्रिया तेरी यादगारीमें तडफ, जी निकला जाताहै ॥
फिरूं जंगलमें बन योगन, न घर मुझको सुहाताहै ॥
पिया बिन आह भर भरके, चश्म नाले बहाताहै ॥

कहां देखूं सितमगरको, नहीं कोई बताताहै ॥
बने नहिं कुछ जतन मुझसे, मदन हरदम लजाताहै ॥
महीना सीतका जालिम, जुल्म जाडा मचाताहै ॥
मगर मेरे विरहकी आगसे, वह भाग जाताहै ॥
न कोई ऐसा है रंगी, जो प्यारेसे मिलाताहै ॥

इस तरह रो रो कर रात गमाई सुबह होतेही फिर वहांसे चली निदान इसी तरह हरएक मुसीबत उठाती हुई राजकुमारके शहरमें पहुँची और लोगोंसे उस्का हाल दर्याफ्त किया कि छोटा राजकुमार कहां रहताहै तब किसी मनुष्यने कहा कि बहुत दिनसे गायब होगयेथे सो अभी पांच सात दिन हुये अभी आये हैं सो अपने महलमें रहतेहैं और शामके वक्त हवा खानेको केसरबागमें नित्य जातेहैं, तब भटियारीने उनसे कहा कि केशर बाग किधरहै ? लोगोंने पता बतला दिया, वह भटियारी केशर बागके दरवाजेपर जाबैठी और राजकुमारके आनेका इन्तजार देखने लगी और अपने मनमें खुश होतीथी कि आज मैं अपने प्यारेको देखूंगी और सारा हाल पूछूंगी कि क्यों मुझको अकेली छोडकर चले आये इसी तरहके मनोरथ कररहीथी कि इतनेमें राजकुमारकी सवारीभी आन पहुँची उसवक्त भटियारी राजकुमारसे कहने लगी कि हे प्राणप्यारे ! ऐसा कठोर दिल क्यों किया जो मुझे सोती छोडकर चले आये देखो आपकी जुदाईने मेरी यह सूरत बनाईहै और ये दासी बडी मुसीबतें उठाकर आपकी खिदमतमें आई है ये बात भटियारीकी सुनकर और उसकी सूरत देखकर राजकुमार मनमें डरगया और सोचनेलगा कि बडा गजब हुआ जो ये हरामजादी यहां आगई अब ये बिना बदला लिये कब मानेगी इससे इसको गिरफ्तार करादो सुबह जैसा होगा वैसा देखा जायगा ये बात मनमें सोच सिपाहियोंको हुक्म दिया कि इस जोगनको गिरफ्तार करलो और सुबह कचहरीमें हाजिर करना यह सुन

कर चपरासियोंने उसे पकड लिया तब भटियारी बहुत पुकारी परंतु राजकुमारने एक भी न सुनी चपरासी उसे लेगये सुबह होतेही राजकुमारने दरबार किया और उस भटियारीको बुलाया तब उस भटियारीका कुल हाल राजकुमारने दीवानोंके सामने कहा और ये कहा कि इसको क्या सजा देनी चाहिये ? तब दीवानोंने कहा कि आपके प्रश्नोंका उत्तर जैसा हमनें सुनाहै और राजनीतिमें देखाहै वैसा हम कहतेहैं "एक विराटदेशका राजा था उसके पास एक जोगी रहताथा सो वह जोगी सब शास्त्रोंमें बडा प्रवीन था और जादूभी खूब जानताथा सो एकदिन राजाको बडे दूरदराज शहरको जानाथा उस शहरका आठ दिनका रास्ताथा और राजाको वहाँ सुबह जरूर पहुँचनाथा इस बातके सोचमें राजा बैठाथा कि, इतनेमें वह जोगी आगया राजाको सुस्त देखकर कहनेलगा कि आज आप उदास क्यों बैठेहो जब राजाने सब हाल कहा तब वह योगी बोला कि आप इतना फिकर क्यों करतेहो आज मैं अपना करतब आपको दिखाऊंगा और रातहीमें आपको उस शहरमें पहुंचाऊंगा जब आधी रात हुई तब जोगीने अपने बीरोंको याद किया उसी वक्त वे बीर हाजिर हुए उनसे जोगीनें कहा कि "तुम राजाको फलाँ शहरमें लेजाओ और जब महाराज हुक्मदें तब ले आना" यह बात सुनकर बीरोंनें राजाका सिंहासन उठाकर एक पहरके बीचमें उस शहरमें पहुँचादिया और फिर दूसरे दिन उसको अपने शहरमें ला बैठाया इस बातको देख राजाने अपने मनमें बिचारा कि ये जोगी तो बडा जादूगरहै इसके पास रहना अच्छा नहीं क्योंकि जो कदापि मेरी इसकी बिगडगई तो यह ऐसेही मुझको उडा लेजायगा ये बात मनमें बिचारकर उसको फांसी देदी" सो हे राजकुमार ! हमारी रायमें तो इस्को भी यही सजा देनी चाहिये क्योंकि अभी तो तुम्हारा और इसका प्यारहै और जो कभी आपकी और

इसका बिगडगई तो ये आपकी जानकी दुश्मन होजायगी जैसा हमारे समझमें आया वैसा अर्ज किया आगे आप मालिकहैं यह बात दीवानोंकी सुनकर राजकुमारने भटियारीको फांसी दिलवादी मैना ! बोली कि ऐ तोते ! राजकुमारके साथ भटियारीने कैसी नेकी कीथी और राजकुमारने कैसा फल दिखाया भला जब मैं ऐसी ऐसी बातें मर्दोंकी जानतीहूं तो मर्दोंका कब विश्वास करने लगी ! तब तोता बोला कि इस बातमें मर्दकी वेमुरव्वती नहींहै क्योंकि जो स्त्री आदमीको जानवर बनाले उनका मनुष्यके मारनेमें क्या ताज्जुबहै ऐसी स्त्रीको मार डालनाही राजोंका धर्म्महै और ये दास्तान तो मेरे कहने लायकथा जो तैनें कहा, मैं जानताहूं कि तुझको अब स्त्रीका दास्तान याद नहींहै देख एक ब्राह्मणका दास्तान कहताहूं तू चित्त लगाकर सुन ॥

दशवा दास्तान तोतेका ।

एक उज्जैन नगरी नाम बडा शहर था और वहांके राजाका नाम विक्रमथा सो वह राजा बडा धर्मात्मा सत्यवादी और परोपकारीथा उसके राज्यमें कोई भूँखा दरिद्री न था और उस राजाके एक ब्राह्मण नौकर था वह राजा ब्राह्मणसे कभी नौकरी नहीं लेताथा हमेशा घर बैठेही तनख्वाह देताथा उस ब्राह्मणकी स्त्री बडी सुशील और पतिव्रताथी जब उस ब्राह्मणको राजाकी तनख्वाह खाते खाते बुढापा आ गया तब एक दिन वह ब्राह्मण अपनी स्त्रीसे बोला कि देखो हमको राजाका धन खाते खाते इतने दिन भये और राजाने हमसे कोई नौकरी न ली इस भारसे हम कैसे उऋण होंगे यह बात मनमें बिचार वह ब्राह्मण राजाके पास गया और कहनेलगा कि हे राजा ! तेरी नौकरी खाते खाते हमको बहुत वर्ष बीते और तुमने हमसे आजतक कोई नौकरीका काम नहीं लिया सो हम तेरे ऋणसे कब उऋण होंगे इससे मेरी यह इच्छा है कि आप एक दिन भी मुझसे नौकरी

लेले तो आपके ऋणसे निवृत्त होजाऊं. यह बात ब्राह्मणकी सुनकर राजा कहनेलगा कि हे महाराज ! मेरी यह प्रतिज्ञा है कि मैं ब्राह्मणसे नौकरी नहीं करवाता और जो आपकी यही इच्छा है तौ आप मेरे कहनेसे गंगा स्नानकर आओ और एक छोटीसी शीशी गंगाजलकी मेरे लिये लेते आना यही आपके लिये नौकरी है यह वचन सुनकर ब्राह्मण अत्यन्त खुश होकर अपने घरको आया और सब हाल अपनी स्त्रीसे कहा तब अपने पतिके वचन सुनके ब्राह्मणी बोली कि, हे स्वामी ! जो आप गंगाजीको जाओगे तो मैं आपके पीछे अन्नजल कैसे करूंगी क्योंकि मेरे तो यह नियमहै कि बिना आपके दर्शन किये मैं अन्नजल नहीं करती तब ब्राह्मण बोला कि मैं अपनी मूर्ति तेरे घरकी भीतमें लिखे जाताहूं सो तू उसके दर्शन करके सब काम कर लीजो. यह सुन ब्राह्मणीने कहा बहुत अच्छी बातहै तब ब्राह्मणने अपनी मूर्ति लिखदी और आप डोर लोटा लेकर राजाके पास गया और राजाके सामने कहने लगा कि हे राजा! मैं गंगास्नान करनेको जाताहूं आप मेरी ब्राह्मणीकी खबर लेते रहना वह आपकी सशरणहै राजा बोला कि आप किसी बातकी चिन्ता मत करें यह कहकर और कुछ खर्च देकर उस ब्राह्मणको बिदा किया सो वह ब्राह्मण तो गंगाजीको गया और राजा विक्रमका यह हालरहै कि दिनभरमें एक दफे नित्य उस ब्राह्मणके घर आना इसीतरह कई दिन बीतगये कि एक दिन उस ब्राह्मणीके पडोसमें आग लगी सो मनुष्योंने बहुत बुझाई परंतु न बुझी और यहांतक लगी कि उस ब्राह्मणीके घरमें भी आन लगी वह ब्राह्मणी अपने घरमें आग लगी देख हाथ जोड अपने पतिकी मूर्तिसे कहने लगी कि हे स्वामी ! आपके घरमें आग लगी है सो आप बाहर चलो इस तरह उस ब्राह्मणीने कई दफे कहा परंतु वह भीतमें लिखा चित्र कैसे बाहर आसक्ता था इतनेही में आग घरके भीतर आन लगी तब वह ब्राह्मणी चित्र पर

छाती देकर खडी होगई और उसी जगह जलगई थोडी देर पीछे राजा वहां आया और उस ब्राह्मणीको मरी देखकर अपने मनमें सोचने लगा कि बडा गजब हुआ जो ये ब्राह्मणी मरगई अब वह ब्राह्मण मुझसे पूछेगा तो मैं क्या जबाब दूंगा इसतरह सोच करताथा कि इतनेमें वह ब्राह्मणभी गंगाजी न्हायकर घरको आया और घरमें आग लगी देखकर और अपनी ब्राह्मणीको जली देख आग बबूला होगया और कहने लगा कि राजा लोग बडे अभिमानी होतेहैं देखो में चलती दफे कहगया था कि राजा मेरी ब्राह्मणीकी खबर लेते रहना सो इस राजाने राजके अभिमानमें आकर मेरी ब्राह्मणी की खबर नहीं ली इससे इस राजाको शाप दूंगा ये बात मनमें बिचार राजाके पास गया और बडी गुस्सासे कहनेलगा कि हे राजा! मेरी ब्राह्मणी कहां है! तब राजाने सब हाल कहा परंतु ब्राह्मणने एक न मानी राजा बोला कि हे ब्राह्मण! आपके वास्ते ब्राह्मणकी कन्या विवाह दूंगा इस बात पर भी ब्राह्मण राजी न हुआ तब राजाने कहा कि अच्छा आप एक काम कीजिये कि अपनी ब्राह्मणीकी लहाशको एक महिना तेलमें रखिये मैं आपकी स्त्रीके जिलानेकी तदबीरमें जाताहूं ब्राह्मणने वैसाही किया और राजा विक्रमाजीत भी अपना राजकाज मंत्रियोंको सौंपकर अमृतकी तलाशमें चला कई दिनके बाद राजा एक गांवमें पहुँचा वहां रस्तेके सहारे एक ठाकुरका मकानथा और उस मकानके दरवाजे पर एक चौतरा था उपसर एक छप्पर पडाथा सो राजा विक्रमाजीत गर्मीका मारा हुआ और रास्तेका हारा हुआ तो थाही उस चौतरे पर छाया देखकर बैठगया उस मकानमें एक डोकरी और उस्के बेटेकी बहू रहतीथी उस डोकरीका बेटा बहुत दिनोंसे निकल गया था इतनेहीमें उस डोकरीके बेटाकी बहू किसी कामके वास्ते घरसे बाहर आई और राजाको बैठा देखकर मनमें सोचने लगी कि हो न हो मेरा पति यही है क्योंकि इसकी

सुरत एकसी ही है यह बात मनमें बिचारकर भीतर गई और साससे कहने लगी कि मुझको तो ऐसा मालूम होताहै कि आज द्वारपर तुम्हारा बेटा बैठाहै यह बात बहूकी सुनकर डोकरी दौडकर दरवाजे पर आई और अपने बेटेकी सूरतके राजकुमारको देखकर गलेसे लिपट गई और कहने लगी कि अरे बेटा ! तू इतने दिनोंसे कहांथा देख तेरी याद कर कर मेरी यह गति होगई है और तैनें मेरी खबर आजतक नहीं ली ये बात डोकरीकी सुनकर राजा अपने मनमें घबडाने लगा और सोचने लगा कि हे ईश्वर ! यह क्या बला सिरपर आई फिर राजा मनमें हिम्मत बांधकर डोकरीसे कहने लगा कि हे डोकरी ! मैं तेरा बेटा नहीं हूं पर तू अपने बेटाका सब हाल कहदे मैं तेरे पुत्रको तुमसे मिलादूंगा ये बात राजाकी सुनकर डोकरी कहनेलगी कि हे बेटा ! मेरा पुत्र बारह वर्षकी उम्रमें अपना व्याह करके चलागयाहै सो आज वीस वर्ष होने आये और उसकी बहू बिचारी उसके फिकरमें सूख सूख कर पीली पडगईहै तब राजा बोला कि तुमको उस्का कुछ पताभी मालूमहै कि वह कहां है तब डोकरीने कहा कि मैंने कई आदमियोंके मुखसे सुनाहै कि दक्षिण दिशामें एक वीरसेन राजाहै वह सवा मन सोना नित्य पुण्य करताहै उसी राजाके पलंग पर मेरा बेटा नौकरहै और दुर्जन उसका नामहै ये बात डोकरीकी सुनकर राजाने कहा कि माता ! अब तू किसी बातकी चिन्ता मत कर ईश्वर चाहेगा तो तेरा बेटा तुझसे बहुत जल्द मिलेगा यह बात कह राजा वहांसे चला जब रात भई तब राजाने वीरोंको यादकिया तब वे दोनों बीर आनकर हाजिर भये राजाने वीरोंसे कहा कि मुझे राजा वीरसेनके देशमें पहुंचादो यह बात सुनकर वीरोंने राजाको अपने कंधे पर बिठाकर एक पहरमें उस शहरके दरवाजे पर जा पहुंचाया और आप राजासे बिदा होकर चले आये. फिर विक्रमाजीत पूछते पूछते राजा वीरसेनके दरवाजे पर पहुंचे

वहां जाकर ड्यौढीवानसे कहा कि आप दुर्जनसे कहदो कि तुम्हारे गांवसे एक विक्रमनाम आदमी आयाहै सो आपको याद करताहै ये बात ड्यौढीवानकी सुनकर दुर्जन बाहर आया और विक्रमाजीतको अपने गांवका जानकर मिला और अपने डेरेमें लिवागया तब राजाने कहा कि हे भाई ! तुमको ऐसी न चाहिये थी कि जबसे तुम आये हो तबसे घरकी सूरत तक नहीं देखी और तुम्हारे रंजमें तुम्हारी माता और बहू रो रोकर दिन गुजारतीहैं अब आपको मुनासिबहै कि जैसे बने तैसे उन्हें अपनी सूरत दिखा आओ इस बातको सुनकर दुर्जन कहनेलगा कि भाई मैं क्या करूं मैं परवशहूं न तो महाराज मुझे सीख देतेहैं न इस्तेफा लेतेहैं अब किस तरहसे मेरा जाना बने तब विक्रमने कहा कि आपके बदले राजाकी नोकरी हम करेंगे आप राजासे कहो कि मेरे बदले मेरा भाई नौकरी देगा और मुझे रुखसत दीजिये यह बात विक्रमाजीतकी सुनकर दुर्जन राजाके पास गया और मौका पाकर अर्जकरी कि महाराज ! मेरे घरसे मेराभाई आयाहै सो वह कहताहै कि तेरी एवजी महाराजकी नोकरी मैं बजाऊंगा और तू महाराजसे रुखसत लेकर घर होआ तब राजा वीरसेनने कहा कि अच्छा उसको अपनी नौकरी पर नियत करके तुम एक महिनेके वास्ते अपने घर हो आओ यह बात सुन राजा वीर विक्रमाजीतको अपनी नौकरी पर कर आप राजासे बिदाहो अपने घरको गया और राजा वीर विक्रमाजीत राजा वीरसेनके पलंगकी नौकरी देने लगा सो तोता बोला कि ऐ मैना! देख दुनियामें कैसे कैसे साहसी मर्द हैं और दयावान हैं कि आप महाराज होकर दूसरेके दुःखको दूर करनेके लिये वीरसेनकी ताबेदारी की और राजा वीरसेनका यह दस्तूर था कि आधीरातके वक्त शहरके बाहर एकदेवीका मंदिर था वहां आता था और वह देवी वीरसेनको पकडकर तेलके औटतेहुए कढावमें पटक देती वीरसेन उसमें भुनजाता जब उसे

निकालकर वह देवी खाजाती और उसकी हड्डियोंको इकट्ठा करके अमृत छिडक देती तब राजा जग उठता था और फिर देवी अपने अक्षय झझरको हिलाकर सवामन सोना राजाको देतीथी तब राजा प्रातःकाल दानचौतरापर बैठकर ब्राह्मणको दान देता था. एकदिन राजा विक्रमने मनमें सोच किया कि राजा सोना कहाँसे लाया करताहै इसका भेद जरूर जानना चाहिये ये बात मनमें बिचारकर जब रातको राजा वीरसेन देवीपर चला तो पीछे पीछे राजा विक्रमभी चले गये औ अलग छिपगये और राजाका कुछ हाल देखकर राजासे पहिले अपने स्थानपर आगये और मनमें सोचनेलगे कि राजा बडे कष्टसे सोना लाताहै किसी ढबसे इसका दुःख दूर करना चाहिये ये बात मनमें बिचारकर विक्रमाजीतनें एक आदमीसे तरह तरहकी मेवा आदि अतर सुगंधित बस्तु मँगाय और जिन मसालोंसे मांस स्वादिष्ट होजाय वे मसालेभी मँगाये फिर अपने शरीरको चाकूसे चीर चीरकर बदनमें वे मशाले भरे जब रातको वही आधी रातका समय भया तब विक्रमाजीतने अपने वीरोंको याद किया तब उसवक्त वे वीर हाजिर हुए विक्रमाजीतने वीरोंसे कहा कि जब तक मैं न आऊँ तबतक तुम इसे ऐसा दाबे रहना कि इसको चेत न हो ये वचन राजा विक्रमके सुनकर वीरोंने कहा बहुत अच्छा फिर विक्रमाजीत उसी देवीके मन्दिर पर पहुँचा देवीने पकडकर राजाको उसी कढावमें डाल दिया जब राजा भूनगया तब उस देवीने राजाको निकाल कर खाया तो उसे रोज मेवा और मसालोंके सबबसे राजाके मांसमें ऐसा स्वाद होगया कि जिस्की तारीफ नहीं होसक्ती देवी उस मांसको खाकर बहुत प्रसन्न भई और अपने मनमें कहने लगी कि आज इस राजाने मुझे बहुत प्रसन्नकिया सो आज जो माँगैगा सो दूंगी इस प्रकार देवी प्रसन्न होकर राजाके मांसको रुचिकर खाने लगी जब सब मांस खा चुकी तब उसकी हड्डियां इकट्ठा

कर उनपर घडेसे ले मृत छिडक दिया तब राजा जी उठा और देवी राजासे कहने लगी कि राजा! तैनें आज मुझको बडी प्रसन्नकी है अब मैं तुझपर बहुत राजीहूं जो तुझे चाहिये सो मांगले- तब राजा विक्रमने कहा जो आप मुझको वरदेतीहो तो मुझको वचन दो तब उस देवीने राजाको तीन वचन दिये और राजाने कहा कि एक बचनमें तो मुझको अमृतका पात्र दो और दूसरे बचनमें अपना अक्षय झझर दो दोनों देदिये और आप भी सब कढावोंका औंधाय कर चल दीनी तीसरे वचनमें राजाने यह समझा कि इसका अमृत और झझर तो मैंने लेलिया और कदापि राजा वीरसेन यहां आया और उस्को नित्यकी तरह भून खाया तो फिर कहांसे जिलावेगी तो राजाकी नाहक जान जायगी इससे उत्तम यह है कि इसको यहांसे भगानाही मुनासिबहै क्योंकि नतो यहां रहैगी और न राजाकी जानका डर रहेगा सो जब वह देवी वहांसे चली गई तब राजा उन दोनों चीजोंको लेकर वहीं राजाके पलंगके पास आ बैठा इतनेमें आधी रात पर तीन बज गये तब विक्रमादित्यने अपने वीरोंको हटाया सो वीरसेनकी आंख खुली तो फडफडाकर उठकर देवीके मंदिरको दौडा गया वहां जाकर देखा तो मंदिरमें कोई नहीं है और कढाव सब औंधे पडेहैं इस हालको देख राजा बहुत घबडाय और सोचने लगा कि आज हम सोना कहाँसे दान करेंगे हमारी आज बडी बदनामी होगी लोग कहेंगे कि राजाके खजानेमें धन नहीं रहा होगा और कोई कहेगा कि राजा सूम होगया इस तरहसे सोच करते करते अपने महलोंमें आया और पलंग पर सुस्त हो पड रहा मारे फिकरके इसी सोच फिकरमें नींद नहीं आई सो सोचते सोचते प्रातःकाल होगया और सूत मागध बन्दीजन बोलने लगे और द्वार पर आनकर भिक्षुक लोग पुकारने लगे कि हे महाराज! पुण्यकाल हो आयाहै आप दानचौतरापर विराजिये और दान

हमको दीजिये भिक्षुक लोगोंकी आवाज सुनकर राजाको अत्यंत सोच होता था तब राजाको सोचसमुद्रमें डूबा देख हाथ जोड राजा विक्रम बोला कि हे स्वामी ! आप आज सुस्त क्यों हो आज आप दान दान नहीं करते इसका क्या सबबहै तब बीरसेन बोला कि भाई अपने सोच विचारका हाल तुझसे क्या कहूं जो कुछ मेरे दिलपै बीती है वो मेरा दिल जानता है किसीके सामने कहनेसे क्या होगा तब विक्रमादित्यने कहा कि महाराज ! हम आपके नौकरहैं सो सुख दुःखके संगीहैं जहांतक हो सकेगा वहांतक आपका सोच दूर करनेका उपाय करूंगा तब बीरसेन बोला कि, हे विक्रम ! मेरे सोच करनेकी ये बातहै कि हमारे शहरके बाहर एक देवीका मंदिर था सो उस देवीके पास आधी रातके समय नित्य जाता था वह देवी मुझे औटते तेलके कढावमें डाल देतीथी और जब मैं उसमें भुन जाता था तब वह निकाल कर मुझको खा जाती थी और फिर मेरी हड्डियोंको इकट्ठी करके उसके पास अमृतपात्र था सो उसमेंसे अमृत लेकर मुझपर छिडक देतीथी जब मैं जी उठता था तब वह अक्षय झझरको हिलाकर सवामन सोना मुझे देती तब मैं उस सोनेको लाकर अतिथि और ब्राह्मणोंको दान करता था इसी कारणसे मेरे नगरमें कोई भूँखा नहीं रहताथा आज दैवगतिसे वह देवी न जाने कहाँ चली गई सो अब मैं उसी सोचमें बैठाहूं कि आज मैं सोना कहांसे लाकर पुण्य करूंगा और ये ब्राह्मण द्वारसे निरमुख जायँगे तो कैसा अपराध लगैगा. तब राजा विक्रम कहने लगा कि हे स्वामी ! इस छोटीसी बातका क्या सोच करतेहो आप स्नान करिये परमेश्वर सब भला करैगा ये बात सुनकर वीरसेन संतोषकर उठे और स्नान ध्यान करके निवृत्त हुए तब विक्रमने वह अक्षय झझर राजाको देकर कहा कि हे स्वामी ! पहिले तो आप ऐसा कष्ट भोगकर सोना लातेथे अब

आप सहजमें ही इसमेंसे सोना लेकर दान किया करो ये बात विक्रमादित्यकी सुनकर और उस झझरको देखकर वीरसेन बोला कि ये झझर आपके हाथ कहांसे लगा तब विक्रमादित्यने सब हाल कहा तब वीरसेन बोला कि हे विक्रम! तूं सच कह दे कि तू कौनहै? तब बोला कि हे राजा! मैं उज्जैन नगरीका राजा विक्रमादित्यहूं और मैं एक ब्राह्मणके वास्ते अमृत लेने आया हूं सो यहां दोनों काम होगये कि आपको तो सोना मिलगया और मुझको अमृत मिल गया अब आप मुझको आज्ञा दो जो मैं अपने शहरको जाऊं यह सुन वीरसेन विक्रमके चरणोंमें गिरपडा और हाथ जोड कहने लगा कि धन्य आपके साहसको है जैसा मैंने सुनाहै वैसेही आपहो आपने मेरे ऊपर बडी कृपा की जो दर्शन दिये और मेरे कष्ट निवारण किये इस तरह वीरसेनने विनती करके विक्रमादित्यको बिदा किया. जब राजा विक्रमादित्यने वीरोंको याद किया तब वे वीर आनकर हाजिर हुए और राजाको वीरोंने कंधेपर बिठाकर एक पहरमें उज्जैन नगरीमें जा उतारा सो तोता बोलाकि हे मैना! देख मर्दोंकी बरोबर कोई साहसवाला नहीं है और वचनोंका सच्चाहै क्योंकि राजा विक्रमने उस डोकरीको वचन दिया था कि तेरे बेटेको तुझसे मिला दूंगा सो पूरा किया अब तुझसे आगेका हाल कहताहूं जब राजा विक्रमादित्य आया और उस ब्राह्मणको बुलाकर कहा कि आपकी स्त्रीकी ल्हास (शव) कहां है तब ब्राह्मण बोला कि आपके यहां तेलके कुंडमें पडी है तब राजाने उसे निकलवाके उसके ऊपर अमृत छिडका तो वह ब्राह्मणी जी उठी और तरुण अवस्थावाली होगई तब वह ब्राह्मण अतिप्रसन्न होकर घर लेगया सो हे मैना! जब वह ब्राह्मणी तरुण होगई तो उसे काम सताने लगा क्योंकि उसका पति तो वृद्ध था और वह तो तरुण होगई तो पुरुषकी इच्छा करने लगी सो एक ब्राह्मण हरदत्त नाम करके उसके मकानके पास रहता था और वह

युवा अवस्थाका था और स्वरूपवान् था सो उस हरदत्तकी ओर उस स्त्रीकी आंख लगगई और उन दोनोंमें ऐसी प्रीति बढी कि, एकको दूसरेके देखे बिना कल नहीं पडतीथी. सो इसी तरह उनको केलि आनंद करते बहुत दिन बीत गये सो उस स्त्रीको गर्भ रहगया तब उसके पतिको यह हाल मालूम हुआ उसने उसको खूब मारी तब उस स्त्रीने उसको जहर देकर मार डाला और आप हरदत्तके साथ किसी और शहरको चली गई सो जब उसको नौ महीना पूरे हुए तब उसके पुत्र हुआ लडका कुछ दिनमें हुशियार हुआ तब एक समय हरदत्त रोजगारके वास्ते किसी दूसरे शहरको गया और वहां छः महीने रहा पीछेसे उस स्त्रीको कामदेवने सताया सो उस गलीमें एक सिपाही गश्त देनेको आया करता था सो उससे उस औरतकी आंख लग गई सो उस सिपाहीके साथ भोग विलास करने लगी कि एक दिन उस लडकेने आकर देख ली तो वह लडला बोला कि मैं तेरी यह बातें अपने पितासे कह दूंगा और सब पडोसियोंसे कह दूंगा ये बात लडकेकी सुनकर उस कामदेवकी माती स्त्रीको बडा क्रोध आया सो उस लडकेको पकड कर कोठेमें ले गई और उसके हाथ पांव बांधकर मुखमें कपडा भरके उस सिपाहीकी तलवार लेकर उस लडकेके टुकडे टुकडे कर डाले और उसी कोठेमें गाडदिया फिर वो उस सिपाहीके साथ ऐश आराम करने लगी थोडे दिनके पीछे हरदत्त भी अपने घरको आया और लडकेको मरा सुन बहुत दुःखी हुआ तब हरदत्त घरमें रहने लगा तब सिपाहीकी घात न लगने लगी सो एक दिनकी बातहै कि हरदत्त किसी कामके लिये एक गांवको गया था सो उस दिन वो सिपाही आया और दोनों ऐशमें सो रहे. तब तो स्त्री बोली कि हे प्यारे! तेरी जुदाई मुझसे सही नहीं जाती और वह घरमें आठों पहर रहताहै इसका क्या उपाय करना चाहिये? तब सिपाही बोला कि इस्को मार डाले तो हमारी तेरी प्रीत

आप सहजमें ही इसमेंसे सोना लेकर दान किया करो ये. बात विक्रमादित्यकी सुनकर और उस झझरको देखकर वरिसेन बोला कि ये झझर आपके हाथ कहांसे लगा तब विक्रमादित्यने सब हाल कहा तब वीरसेन बोला कि हे विक्रम! तूं सच कह दे कि तू कौनहै ? तब बोला कि हे राजा! मैं उज्जैन नगरीका राजा विक्रमादित्यहूं और मैं एक ब्राह्मणके वास्ते अमृत लेने आया हूं सो यहां दोनों काम होगये कि आपको तो सोना मिलगया और मुझको अमृत मिल गया अब आप मुझको आज्ञा दो जो मैं अपने शहरको जाऊं यह सुन वीरसेन विक्रमके चरणोंमें गिरपडा और हाथ जोड कहने लगा कि धन्य आपके साहसको है जैसा मैंने सुनाहै वैसेही आपहो आपने मेरे ऊपर बडी कृपा की जो दर्शन दिये और मेरे कष्ट निवारण किये इस तरह वीरसेनने विनती करके विक्रमादित्यको बिदा किया. जब राजा विक्रमादित्यने वीरोंको याद किया तब वे वीर आनकर हाजिर हुए और राजाको वीरोंने कंधेपर बिठाकर एक पहरमें उज्जैन नगरीमें जा उतारा सो तोता बोलाकि हे मैना! देख मर्दोंकी बरोबर कोई साहसवाला नहीं है और वचनोंका सच्चाहै क्योंकि राजा विक्रमने उस डोकरीको वचन दिया था कि तेरे बेटेको तुझसे मिला दूंगा सो पूरा किया अब तुझसे आगेका हाल कहताहूं जब राजा विक्रमादित्य आया और उस ब्राह्मणको बुलाकर कहा कि आपकी स्त्रीकी ल्हास (शव) कहां है तब ब्राह्मण बोला कि आपके यहां तेलके कुंडमें पडी है तब राजाने उसे निकलवाके उसके ऊपर अमृत छिडका तो वह ब्राह्मणी जी उठी और तरुण अवस्थावाली होगई तब वह ब्राह्मण अतिप्रसन्न होकर घर लेगया सो हे मैना! जब वह ब्राह्मणी तरुण होगई तो उसे काम सतानें लगा क्योंकि उसका पति तो वृद्ध था और वह तो तरुण होगई तो पुरुषकी इच्छा करने लगी सो एक ब्राह्मण हरदत्त नाम करके उसके मकानके पास रहता था और वह

युवा अवस्थाका था और स्वरूपवान् था सो उस हरदत्तकी ओर उस स्त्रीकी आंख लगगई और उन दोनोंमें ऐसी प्रीति बढी कि, एकको दूसरेके देखे बिना कल नहीं पडतीथी. सो इसी तरह उनको केलि आनंद करते बहुत दिन बीत गये सो उस स्त्रीको गर्भ रहगया तब उसके पतिको यह हाल मालूम हुआ उसने उसको खूब मारी तब उस स्त्रीने उसको जहर देकर मार डाला और आप हरदत्तके साथ किसी और शहरको चली गई सो जब उसको नौ महीना पूरे हुए तब उसके पुत्र हुआ लडका कुछ दिनमें हुशियार हुआ तब एक समय हरदत्त रोजगारके वास्ते किसी दूसरे शहरको गया और वहां छःमहीने रहा पीछेसे उस स्त्रीको कामदेवने सताया सो उस गलीमें एक सिपाही गश्त देनेको आया करता था सो उससे उस औरतकी आंख लग गई सो उस सिपाहीके साथ भोग विलास करने लगी कि एक दिन उस लडकेने आकर देख ली तो वह लडला बोला कि मैं तेरी यह बातें अपने पितासे कह दूंगा और सब पडोसियोंसे कह दूंगा ये बात लडकेकी सुनकर उस कामदेवकी माती स्त्रीको बडा क्रोध आया सो उस लडकेको पकड कर कोठेमें ले गई और उसके हाथ पांव बांधकर मुखमें कपडा भरके उस सिपाहीकी तलवार लेकर उस लडकेके टुकडे टुकडे कर डाले और उसी कोठेमें गाडदिया फिर वो उस सिपाहीके साथ ऐश आराम करने लगी थोडे दिनके पीछे हरदत्त भी अपने घरको आया और लडकेको मरा सुन बहुत दुःखी हुआ तब हरदत्त घरमें रहने लगा तब सिपाहीकी घात न लगने लगी सो एक दिनकी बातहै कि हरदत्त किसी कामके लिये एक गांवको गया था सो उस दिन वो सिपाही आया और दोनों ऐशमें सो रहे. तब तो स्त्री बोली कि हे प्यारे! तेरी जुदाई मुझसे सही नहीं जाती और वह घरमें आठों पहर रहताहै इसका क्या उपाय करना चाहिये? तब सिपाही बोला कि इस्को मार डाले तो हमारी तेरी प्रीत

निबहैगी. तब स्त्रीने कहा बहुत अच्छा ऐसाही करूंगी इतनेमें हर दत्त भी आन पहुँचा और घरमें सिपाहीको देख सिपाहीके मारनेको दौडा उस समय स्त्रीने तो हरदत्तके हाथ पकड लिये और सिपाहीने तलवारसे शीश काटा सो तोता बोला कि मैना देख स्त्रीकी बे मुरव्वती कि कामदेवके वस हो पतिको यारको पुत्रको भी मारा भला ऐसी दुष्टात्मा स्त्रियोंकी तू प्रशंसा करती है और मर्दोंको बे पीर बताती है अब तूही अपने मुखसे कह कि इसमें कौन बेपीर है तब मैना बोली कि ऐ तोते ! इतना क्यों फडकताहै ? देख मर्दोंकी बेमुरव्वतीका दास्तान तेरे आगे कहतीहूं सो अब मैनाका जबाब मैं इसके छठे भागमें लिखूंगा ॥

इति पांचवां भाग समाप्त.

अथ तोता मैना छठा भाग.

दास्तान ग्यारहवाँ मैनाका ।

मैना! बोली कि ऐ तोते ! हिन्दुस्तानमें मुलतान नाम बडा भारी शहर था वहांके राजाका नाम अंगध्वजथा और उसके चार रानीथीं वे चारों रानी बडी स्वरूपवती थीं परंतु सन्तान एकके भी न हुई और उस राजाका बुढापा आगया राजाको इस बात की बडी चिन्ता रहती और हमेशा साधु महात्माओंकी सेवामें रहा करता था एक दिन ऐसा हुआ कि एक साधू आये और राजासे कहने लगे कि हे राजा ! हम तीन दिनके भूँखे हैं सो तुम हमको भोजन कराओ राजाने कहा बहुत अच्छा यह कहकर साधुको महलमें लेगया और उसके चरण धोकर चरणामृत लिया तथा बडे आदर सत्कारसे भोजन कराया जब साधु भोजन करचुका तब प्रसन्न होकर राजासे कहनेलगा कि बच्चा तेरे पुत्र प्रसन्न रहैं अब हम जातेहैं ये वचन साधूके सुनकर राजा हाथ जोडकर कहनेलगा कि हे महाराज ! आपने आ-

शीर्वाद दिया कि तेरे पुत्र प्रसन्न रहैं सो मेरे पुत्र तो है ही नहीं प्रसन्न कौन रहैगा ? तब साधु बोला कि हे राजा ! तेरे पुत्र नहीं है और हम तुमको पुत्रका आशीर्वाद देचुके हैं सो तुम एक काम करो कि ये बूटी तुमको देताहूं सो इसके चार भाग करके चारों रानियोंको खिलादो तुम्हारी चारों रानियोंके एक एक पुत्र होगा. यों कहकर वह साधू तो चला गया और राजाने उस बूटीके चार भाग करके चारों रानियोंको खिलादिये जब नौ महीने व्यतीत हुये तब चारों रानियोंके एकही साथ चार पुत्र पैदा हुए तब राजा अंगध्वज बहुत प्रसन्न हुआ राजमहलपर नौबतखाना धरवाया और लाखों रुपयेका पुण्य दान किया जब वे लडके दश दिनके भये तब राजाने सब शहरके ज्योतिषियोंको बुलाया और उनसे कहा कि आप इन लडकोंका नाम धरिये और जन्मपत्री बनाके इनके ग्रह बताओ कि कैसे हैं तब ब्राह्मणोंने इष्ट घर घडी पल शोधकर राजासे कहा कि हे राजा ! आपके चारों पुत्र बडे बलवान होंगे और जगत्में आपकी कीर्त्ति बढावेंगे परंतु इनको दक्षिण दिशामें भय है सो ये जरूर होगा ये बात ब्राह्मणोंकी सुनकर राजा अपने मनमें कहनेलगा कि जब ये चारों होशियार होंगे तब इनको हम समझा देंगे कि ये दक्षिण दिशामें नहीं जांयगे ये बात मनमें सोचकर ब्राह्मणोंको बहुतसा द्रव्य आभूषण देकर बिदा किया और आप अपने मनमें अति आनंद मानने लगा. निदान जब वे चारों लडका पढकर हुशियार हुए और राजकाजमें निपुण भये तब एकदिन राजाने कहा कि हे पुत्रो ! जब तुम शिकार खेलनेको जाओ तो सब दिशाओंको जाना परंतु दक्षिण दिशाको मत जाना, एक दिनकी बात है कि वे चारों राजकुमार शिकार खेलनेको गये सो उनकी नजर एक हिरण पडा उन चारों भाइयोंने अपने चारों घोडे उस हिरणके पीछे छोडे वह हिरणभी इन राजकुमारोंको आते देखकर दौडा और एक जंगल में जाकर गायब होगया

उसवक्त वे चारों राजकुमार लाचार हो खडे होरहे: और प्यासके मारे चारों तरफ उस वनमें जलकी तलाशमें फिरने लगे जब थोडी दूर जाकर एक सरोवर नजर आया तो वहां चारों भाइयोंने अपने अपने घोडे पेडोंसे बांध दिये और सरोवर पर जाकरके हाथ मुँह धोय पानी पिया फिर उस सरोवरके रमणीक बुर्जपर बैठकर उसकी शोभा देखने लगे कि उस्के चारों तरफ संगमरमरके घाट बने हुएहैं और एक एक घाटपर एक एक तिद्वारी निहायत उम्दा बनी है और चारों तरफ रोसों पर गेंदा गुलाब केवडा चमेली आदि पुष्पोंकी क्यारी बनी हैं और उस्के चारों ओर बडा रमणीय वन था जिसमें मध्याह्नका समय जान पेडोंपर हंस सारस कोयल तोता मैना मोर पपीहा आदि पक्षी बैठे बैठे मीठी २ बोलियां बोल रहेथे इस शोभाको देख चारों भाई मनमें कहने लगे कि इस वीयावान जंगलमें सरोवर या तो किसी राजाकाहै या देवताओंकाहै ऐसा सरोवर तो आजतक हमने कोई नहीं देखाहै इस तरह यह चारोंभाई आपसमें बातें कररहेथे कि इतनेमें चार परियोंके विमान आये और उसी सरोवरपर आनकर उतर वे परियां अपने अपने वस्त्र उतारकर न्हाने लगीं तब न्हातेमें उनकी दृष्टि राजकुमारोंके ऊपर पडी सो देखते ही चारों आग बबूला होगई और आपसमें कहनेलगीं कि बडा गजब हुआ जो इन इन्सानोंने हमको नंगे न्हाते देख लिये अब येह हमारा हाल सबसे कहदेंगे इससे हमारे दिलमें ये आतीहै कि इन चारोंको हम चारों खाजांय क्योंकि न तो ये जीते जांयगे और न हमारा हाल किसीसे कहेंगे इस बातको सुनकर सबोंने कहा बहुत ठीकहै परंतु उनमेंसे छोटी परी बोली कि हमारी समझमें तो यह बात नहीं आती क्योंकि अभी इनका मारडालना ठीक नहीं हमारी रायमें ये बात आतीहै कि इन चारोंको उडाकर अपने बागको लेचलो और जब कोई त्यौहार आवेगा उस दिन इनको मारकर खावेंगी. ये बात छोटी परीकी सबके मनमें

आगई तब वे चारों परी जलमेंसे निकलकर अपने अपने कपडे पहन बिमानोंमें बैठ चारों राजकुमारोंको पकडकर अपने बागको लेगईं और वहां जाकर एक एक परीने एक एक राजकुमार बांट लिया और अपने अपने कब्जेमें रक्खा इतनी कथा कह मैना बोली कि ए तोते ! तीन परियां तो तीनों राजकुमारोंको अपना बैरी समझतीथीं और छोटी परी छोटे राजकुमारको अपने प्राणोंसे प्यारा रखने लगी और उसके साथ ऐश आराम करने लगी इसी तरह उन राजकुमारोंके परियोंकी गिरफ्तारीमें कितनेक दिन बीत गये एक दिन छोटा राजकुमार बैठाथा कि उस्के हुश्नको देखकर छोटी परी आंखोंमें जल भरलाई और मनमें सोचने लगी कि देखो राजकुमार कैसे स्वरूपवान् हैं इनके माता पिता कैसे जीते होंगे जिनके चारों लाल बिछुर गये हैं यहां इनकी जिन्दगी चन्द रोजकी है फिर इनकी सूरतभी ढूंढी नहीं पावेंगी हाय इन कम्बख्त परियोंने बुरा काम किया जो इनको यहां ले आंई और इनके खानेका इरादा कररहीं हैं इस बातको सोचकरअपनी आँखोंसे पानी गेरने लगी तब राजकुमारने उस परीसे पूछा कि आप सुस्तक्यों हो और आपकी आँखोंसे पानी क्यों जारीहै इसका सबब हमको बतलाओ तब वह परी बोली कि हे मेरे प्यारे राजकुमार! ये मेरा रंज तुझसे जाहिर करनेका नहीं है तब राजकुमार बोला कि जबतक तुम अपने रंजका हाल मुझसे न कहोगी तब तक मैं खाना पीना कुछ भी न करूंगा तब वह परी बोली कि हे प्यारे राजकुमार! मेरे रंजका यह कारणहै कि चन्दरोजमें कोई त्यौहार हमारा आवेगा उसी रोज हम चारों परी तुम चारोंराजकुमारोंको मारकर खाजायगी सो इसबातको विचारकर और तुम्हारी सूरतको देखकर मुझकोरहमआगयाहै इससे मेरे नेत्रोंसे पानी गिरने लगाहै ये बात परीकी सुनकर राजकुमार बोला कि हे प्यारी! अब तो चारों भाई तेरी शरणहैं तुझकोअख्तियार

है चाहे हमें मरवादे और चाहे बचादे जिस तरह तैंने हमारे ऊपर तरस कियाहै उसी तरह हमारे प्राण बचानेका उपाय कर. तब परी बोली कि मैं तुम्हारे प्राण बचानेका तो उपाय बताऊंगी परंतु उसमें मेरे प्राण जानेका खौफहै क्योंकि यह बात इन परियोंको जाहिर होगई तो मुझे जीती न छोडेंगी यह सुनकर राजकुमारने कहा कि हे प्यारी ! मेरे तेरे बीचमें ईश्वर जामिन है कि तेरा हाल किसीसे जाहिर न करूंगा तब परीने कहा कि, एक काम कर कि हमारे काठके चार घोडेहैं सो तुम अपने भाइयोंको समझादो कि वे अपनी परियोंसे कहैं कि हमारा दिल बैठे बैठे नहीं लगताहै सो हमको कोई ऐसी सवारी मिलनी चाहिये कि जिसपर बैठकर सैर कर आया करें. तब वे परी तुमको उन घोडोंको देंगी सो एक कल तो उनके पुट्ठे पर बनी है जिसके घुमानेसे वे घोडे बीस कोससे ज्यादा नहीं दौडते और दूसरी कल जो उनकी चोटीमें लगी है उसके दबानेसे वे हजार कोस तक दौडतेहैं सो तुम उन घोडोंपर सवार होकर चले जाना परंतु जिस वक्त तुम जाओ उस वक्त उत्तर दिशाके समुद्रमें होकर जाना क्योंकि और रास्तोंमें होकर जाओगे तो ये तुमको पकड लेंगी और जो उत्तरके समुद्रमें होकर जाओगे तो उनका जोर न होगा. क्योंकि वहां हजरत सुलेमानकी आनहै ये बात उस परीकी सुनकर राजकुमारने जाकर अपने भाइयों से सारा हाल कहा तब उन तीनों राजकुमारोंने अपनी परियोंसे कहा कि अब तो हमारा घरमें बैठे बैठे मन नहीं लगता सो हमको सवारी दो जिससे हम रोज दो चार घडी हवा खा आया करें तब उन परियोंने उन राजकुमारोंको एक एक घोडा दिया और पुट्ठेकी कल बतलादी और कहनेलगीं कि इन पर सवार होकर तुम रोज हवा खा आयाकरो मगर ज्यादा देर न लगाना ये बात परियोंकी सुनकर वे चारों राज-कुमार उन चारों घोडों पर सवार होकर चले और थोडी दूर जाकर

उन्होंने घोडोंकी चोटीकी कल दबाई तो वे घोडे हवाके मानिन्द उडे जब इन राजकुमारोंको ज्यादा देर लगी तब वे परी सोचनेलगीं कि आज वे राजकुमार कहीं छलकरके निकल तो न गये हो यह बात विचारकर वे वहांसे राजकुमारोंकी तलाशमें उडींसो आसमानमें चढकर देखा तो चारों राजकुमार घोडोंको फेंके चले जातेहैं सो वे परी देखतेही आग बबूला होगईं और उनके पीछे दौडीं दैवसंयोगसे जभी राजकुमारोंके घोडोंने समुद्रमें पांव रक्खा तभी वे परी पहुँच गईं उस समय तीन राजकुमारोंके घोडे तो समुद्रमें कूदगये और छोटे राजकुमारका घोडा आधा तो समुद्रमें गया और पिछले दो पांव जमीनमें थे कि एक परीने उस घोडेकी पूँछ पकडली इस बातको देखकर छोटी परी घबडाई कि हाय और तो सब निकल गये मेराही प्यारा राजकुमार पकडगया अब इसे ये जीता क्योंकर छोडेंगी ये बात मनमें सोचकर उसने राजकुमारको हाथका इशारा किया कि अपनी तलवारसे घोडेकी पूँछ काटदे तब राजकुमारने ऐसी तलवार मारी कि घोडेकी पूँछ कटगई और वह परी जमीनपर गिरपडी तब वे तीनों परी बोलीं कि हे राजकुमारो! जरा यह तो बता जाओ कि यह सब हाल तुमको किसने बताया तब छोटा राजकुमार बोला कि यह सब हाल हमको छोटी परीने बताया है ये बात राजकुमारकी सुनकर वे तीनों परी बडी गुस्सा हुई और उस छोटी परीके तमाम पर नोच नोच कर मारडालीं मैना बोली कि ऐ तोते! देख उस परीने राजकुमारके साथ कैसा सलूक किया कि उसकी मुहब्बतमें आनकर उस्की और उसके भाइयोंकी जान बचादी और उस नेकीके बदलेमें राजकुमारने उस बिचारीकी जान ली सो इन्हीं बातोंको मैं याद करके मर्दोंका विश्वास नहीं करती क्योंकि मर्द चालाक और फरेबी होतेहैं और स्त्रियां विचारीं सूधी होतीहैं क्योंकि इनके नेत्र रूपके लोभी होतेहैं इसीसे मर्दोंकी खूबसूरती देख अपना तन मन धन सब देदेतीहैं और मर्दोंके

प्रीत नहीं होती केवल मतलबके गर्जी होतेहैं ये बात मैनाकी सुनकर तोता बोला कि हे मैना ! जैसी स्त्रियां सूधी हैं और छल बल नहीं जानतीं सो सब मैं जानताहूं इनकी चालाकी और फ़रेबीका दास्तान मैं तेरे सामने कहताहूं सो तू ध्यान लगाकर सुनः-

बारहवाँ दास्तान तोतेका.

तोता बोला कि हे मैना! अकबरपुर एक शहर था और वहां सरफुद्दीन नाम नबाब राज्य करता था. सो एक दिनका जिक्र है कि एक विदेशी आदमी उस शहरकी सरायमें आनकर उतरा उसके पास एक चन्दो धोबन आई और उसी समय उससे कहनेलगी कि मिया साहब कपडा डालो तो धोलाऊं. मियां साहबने एक अंगरखा और एक डुपट्टा उस धोबनको दिया और कहने लगा, कि नेकवख्त हमारे कपडे सुबहही देजाना और यह भी बतादो कि इन कपडोंकी धुलाई क्या लेगगी तब धोबन हँसकर बोली कि मियां साहब ! अंगरखाकी धुलाईमें डुपट्टा औरडुपट्टाकी धुलाईमें अंगरखा लूंगी ये बात धोबनकी सुनकर मियां साहब हँसकर कहनेलगे कि अच्छाधो लाओ तुम कहोगी सो देदेंगे. यह बात सुनकर धोबन कपडे लेकर अपने घरको चली गई दूसरा और तीसरा रोज बीत गया लेकिन धोबन कपडा लेकर न आई तब मियां साहब भटियारीसे उस धोबनके घरका पता पूँछकर उसके घर गये और उससे कहा कि ऐ नेकवख्त हमारे कपडे अभी तक नहीं दे आई क्या सबबहै हम परदेशी लोगहैं तीन रोजसे तेरी इन्तजारीमें खर्च उठारहे हैं मियां साहबकी यह बात सुनकर धोबन बोली कि जनाब कहीं बावले तो नहीं होगयेहो? मैं तो आपसे पहिलेही कह आईहूं कि अंगरखाकी धुलाईमें डुपट्टा और डुपट्टाकी धुलाईमें अंगरखा फिर आप अशराफ़जादे होकर क्यों बेईमान होतेहो. चले जाओ अपना काम करो फिर कपडोंका नाम मत लेना. ये बात धोबनकी सुनकर मियांसाहब कोतवालीको गये

और वहां जाकर दारोगासे कहाकि चन्दो धोबन मेरे कपडे धोनेको लेगईथी सो वह नहीं देतीहै इसलिये उम्मेदवारहूं कि मेरे कपडे उस धोबनसे दिला दिये जांय. तब दारोगाने एक चपरासी को भेजाकितुम जाकर इसी वक्त चन्दो धोबनको पकड लाओ वह चपरासी गयाऔर चन्दो धोबनको पकड लाया और दारोगा बोला कि क्यों बे धोबन हमेशा हमसे अलग रहीहै आज कह तो तुझे बांधकर कचहरीमें भेजदूं तब धोबन बोली कि आप आज रातको नौ बजे मेरे मकानपर आना मैं आपकी राजी करूंगी तबदारोगाने धोबनसे सब हालकोपूँछ कर मियां साहबको बेईमान बनाकर निकाल दिया और कहनेलगा कि जाओ यहांसे बेशरम बदमाश नालायक जब तुम्हारी उस्की धुलाई ठहरगई फिर अब क्यों बेईमान होतेहो? दरोगा साहबका यह जवाब सुनकर मियां साहब कोतवालके पास गये और सारा हाल अपना कोतवाल साहबसे कहा तब कोतवाल बडे क्रोधमें आकर एक चपरासीसे बोले कि चपरासी! वह चन्दो धोबन कौनसी है और कहां रहती है? तब चपरासी कहनेलगा कि चन्दो धोबनको मैं जानताहूं वह ससुरी बडी हरामजादी है हमेशा इसीतरह परदेशियोंको लूटती है और अपने जोवनके जोरमें किसीको नहीं गिनती. ये बात चपरासीकी सुन कोतवाल बोला कि, तुम अभी जाओ और उस हरामजादीको पकडलाओ कोतवालका हुक्म पाकर चपरासी गया और धोबनके मकान पर जाकर आवज दी और कहनेलगा कि अरे चन्दो धोबन! तुझे कोतवाल साहब बुलातेहैं तेरे ऊपर एक मियांसाहबफिरादी खडेहैं, बात चपरासीकी सुनकर धोबन उसके साथ होली जब चपरासी कोतवालीमें पहुँचा तब कोतवालसे कहने लगा ये चन्दो धोबन चांदसे मुखडेवालीआपकेसामने हाजिर है जरा हुजूरभी इसकी चटकमटक की लटक को देखलें कोतवाल उसको देखकर बडा गुस्साहो कहने लगाकि क्यों बेहरामजादीससुरी

लुच्ची गुंडी ! इस बिचारे परदेशीके कपडे क्यों नहीं देतीहै तब धोबन बोली कि सरकार मेरी भी अर्ज सुन लीजिये पीछे आपकी राजी में आवे सो करना. कोतवाल बोला कि चुप हरामजादी! सरकार सरकार करतीहै हम तुझको खूब जानतेहैं कि तू हमेशा इसी तरह परदेशियों को लूटा करती है बस ज्यादा मत बक, ऐ चपरासी इस! हरामजादी को हवालातमें लेजाओ तब धोबन बोली कि ऐसाहब! आज रातको में आपकी इच्छा पूरी करूंगी आप मुझको हवालातको न भेजिये कोतवाल हंसकर बोला कि किसवक्त हमारी राजी करेगी ! धोबन बोली कि रातके दसबजे आप मेरे मकान पर आना तब तो कोतवाल साहब बडे खुश हुये और धोबनसे कहने लगे कि अच्छा तेरी क्या अर्ज है कह! तब धोबनने अव्वलसे आखिर तक सब हाल कह सुनाया सुनकर कोतवाल उस मियांसे कहने लगे कि ऐ मियां ! तू बडा बेईमानहै क्योंकि ठहरीहुई बातको बदलताहै चला जा बदमाश बेईमान यों कहकर चपरासीसे कहा कि इस मियांको कान पकडकर निकाल दो. चपरासीनें उस बिचारे मियांको कानपकडकर निकाल दिया. तब वह वजीरके पासगया और उस्से भी सारा हाल कहा तब वजीरनेभी धोबनको बुलाया और उस धोबनने उससे भी रातके ग्यारह बजेका करार करके मियांको निकलवा दिया. इसी तरह नवाब साहबने भी धोबनको रातके वायदे पर छोड दिया तब तो विचारा मियां संतोष करके चला गया. अब धोबनका वृत्तान्त सुनो जब रातका वक्त हुआ तो नौ बजतेही दारोगा आया और धोबनके घरमें घुसगया तब धोबनने दरवाजा बंद कर लिया और आप दारोगाकी चारपाई पर बैठकर हँस हँसकर बातें करने लगी इतनेमें दशबजे कि, कोतवाल साहबने आवाज दी कि चन्दो किवाड खोल तब धोबन बोली कि, सरकार आतीहूं दारोगाने पूछा कि, चन्दो! यह कौनहै ? चन्दो बोली कोतवाल सबहा

आयेहैं तब दारोगा बोला कि, अरे कम्बख्त पहिले मुझको कहीं छिपा देजब किवाड खोलना तब धोबनने खाटके पास डलेके नीचे बिठाकर ऊपर चिराग धरदिया फिर किवाड खोलकर कोतवालको भीतरकर फिर किवाड बंद करदिये कोतवाल बोला कि चन्दो हमारी राजकिर तब धोबन बोली कि जरा तो दम लीजिये अभी तो सारी रात पडीहै इसीतरह बातें करते२ग्यारह बजगये सो वजीरने आकर आवाजदी कि चन्दो किवाड खोल!तब धोबन बोलीकि सरकारआतीहूं कोतवालने पूछाकि चन्दो यहकौनहै उसनेउत्तरदिया "वजीरसाहबआयेहैं" तब कोतवाल बोला कि पहिले मुझे कहींछिपादेफिरकिवाड खोलना नहीं तोहमारीरोटी जातीरहेगीचन्दोंनें कहा आपलहँगाओढनी पहिनकर सामने धीरे चक्कीपर जा बैठो दाना पीसो जब कोतवाल जनाने कपडे पहनकर चन्दोका दाना पीसने लगे तब उसने किवाड खोल वजीरको भीतरले फिर किवाड बन्द कर दिये वजीर बोला कि चन्दो अब तू अपना कौल पूराकर ! चन्दो बोली अभी जल्दी क्यों करतेहो सब रात आपकीहै इतनेमें नव्वाब साहब भी आन पहुँचे और बोले कि, चन्दो ! किवाड खोल चन्दोंने कहा "सरकार आतीहूं" वजीर साहब बोले कि, चन्दो ! यह कौनहैं चन्दोंने कहा कि नव्वाब साहब तशरीफ लाये हैं तब तो वजीर साहब बोले कि, हरामजादी पहिले मुझे कहीं डुबकादे तब किवाड खोलियो. यह सुनकर धोबनने कहा कि आप जनाने कपडे पहनकर वह दाना दलनेका दलेता रक्खाहै सो वहां बैठकर धीरे धीरे दाना दलियो ये बात धोबनकी सुनकर नव्वाब साहबके डरके मारे वजीर साहब भी जनाने कपडे पहनकर गधोंके लिये दाना दलने लगे और धोबन किवाड खोल नव्वाब साहबको मकानके भीतर लेगई और अपनी चारपाई पर बिठाकर खातिर करने लगी तब नव्वाबसाहब कहनेलगे कि,चन्दो! अब तू अपना वायदा पूरा कर और बातें पीछे करना चन्दोने कहा

बहुत अच्छा परंतु जरा मैं पेशाब कर आऊं फिर आपकी तन मनसे राजी करूंगी. ये बात नव्वाब साहबसे कहकर वह पेशाबका बहाना करके कहीं जा छिपी और यहां नव्वाब साहब धोबनकी राह देखने लगे कि, धोबन कहां चली गई उसको इतनी देर होचुकी अबतक कैसे न आई हमको ऐसा मालूम होताहै कि, हरामजादी धोखा देकर कहीं चली गई, खैर हमको धोखा देकर कहां बचैगी सुबह होतेही ससुरीके टुकडे टुकडे उडादूंगा. ये बात मनमें विचार नव्वाब साहबने गुस्सेमें आनकर वह डला जिसपर चिराग रक्खा था उसमें एक लात मारी और कहने लगे कि हरामजादी इसे यहां क्यों धरगई है? ऐमैना! जिस वक्त गुस्सेमें आनकर नव्वाब साहबने डलेमें लात मारी तो लातके लगतेही डलेके नीचेसे दारोगा चिल्लाया किगरी बपरबर मुझ अकेली ही को आप क्यों मारतेहो मैं अकेलाही यहांनहीं हूं यहांपर कोतवाल साहब और वजीरसाहब भी मौजूद हैं तब नव्वाब साहब बोले कि, वे दोनों कहां हैं ? दारोगा कहने लगा कोतवाल साहब तो जनाने कपडा पहनकर आपके सामने छप्परमें पीसना पीसर हेहैं और वजीर साहब जनाने कपडे पहनकर गधोंके लिये दानादलर हेहैं ये बात सुनकर नव्वाबने वजीर और कोतवालको बुलाया और कहने लगे कि अरे मियां यह क्या हालहै तब वे दोनों कहने लगे कि आपका हालहै जो हमारा हालहै, यह बात सबोंकी सुनकर नव्वाब साहब कहनेलगे कि यह वह मसल हुईकि "तू कहे न मेरी और मैं कहूं न तेरी" इस बातको भाई किसीके सामने मत कहना चलो अपने अपने घरको चलें मगर कोतवाल साहब आप बहुत कोशिश करके सुबहही इस हरामजादीको पकडकर हमारे दरबारमें भेजदो देखो मैं इस बदमाशको कैसी सजा देताहूं क्योंकि ये हकीकतमें बदमाशहै भला जिसने सारे अमलेसे और खास मुझसे ऐसा धोखा किया तो रैय्यतोंसे क्यों नहीं करती होगी. यह कहकर नबाब साहब और

वजीर साहब तो अपने अपने मकानोंको गये और कोतवाल सुबह होतेही उस धोबनको गिरफ्तार करके कचहरीमें पहुँचा और कहने लगा कि हुजूरके सामने ये चन्दो धोबन हाजिरहै तब नबाब साहब उस धोबनको देखकर और रातकी बातको यादकर बडे गुस्सेमें आनकर बोले कि इस हरामजादी पर दो दरजन सख्त बेंत रोज लगा करें इसको यही सजाहै तोता बोला कि हे मैना! देखले दुनिया में ऐसी २ स्त्रियां मौजूदहैं और फिर भी तू कहतीहै कि स्त्रीकी जात बडी गरीब और भोली होतीहै!भला अब आंख फेरनेकी क्या बातहै इसका जबाब तू ही दे कि वह औरत गरीब और भोली थी या बदकार थी!तोतेकी इस बातको सुनकर मैना कहने लगी कि ऐ तोते मेरा तेरा झगडा इन बातोंका नहींहै क्योंकि जालसाजी औरफरेब तो अपने अपने मौकेपर सबही स्त्री पुरुष करतेहैं इस झगडे पर इस दास्तानका क्या जिक्र था यहां तो बे मुरव्बती और बेदर्दीका झगडाहै सो इसदास्तानमें औरतकी कोई बेमुरव्वती और बेदर्दीनहीं पाईगई अगर ऐसा मर्दोंका दास्तान मैं कहूं तो मेरा तेरा झगडावर्षों में तो निबटेही नहीं इसीसे तो मैं तेरे दास्तानको पसंद नहीं करती तब तोता बोला हे मैना!जो तू इस दास्तानको नहीं मानतीहै तो खैर इसे जानेदे मैं एक दास्तान तेरेसामने और कहताहूं तू ध्यानदेकरसुन

तेरहवाँ दास्तान तोतेका

तोता बोला कि हे मैना!बहादुर नाम एक शहरथा जिसके राजाका नाम चन्द्रकेतु था उस शहरमें एक सेठ रहता था जिसके एक बेटीथी वह बडी स्वरूपवती थी साहूकारने एक वीरभद्र देशके साहूकारके बेटेके साथ उसकी शादी करदी जब वह साहूकारजादीस्यानी भई तब उसे कामदेवने सताया सो उसके मकानके पास एक जौहरी की दूकानथी उस जौहरीका लडका बडा स्वरूपवानथा सो इससाहू-

कारजादीकी नजर साहूकारके लडके पर पडी तो यह उसपर आशक होगई और उधर वह जौहरीका बच्चा भी इसे देख कर आशिक हो-गया. इसी तरह इनको देखा भाली करते और आंख लडातेकई दिन बीतगये परंतु बातचीत करनेका मौका न मिला. तब एक दिन उस साहूकारजादीनें कागज पर एक दोहा लिखा कर बांदीके हाथ भेजा और बांदीसे कहा कि तू इस चिट्ठीको इस जौहरीबच्चेको देआ तब वह बांदी उस रुक्केको जौहरी बच्चेको दे आई वह रुक्का जौहरी बच्चेने पढा तो उसमें यह दोहा लिखाथा ॥

दोहा

आम पके नींबू पके, पात रहे सरसाय ॥
माली याको है नहीं, जल बिन बाग सुखाय ॥

इसको पढकर जौहरी बच्चेने यह दोहा लिख दिया ॥

मालीके मन चाह अति, सींचे बागन नीर ॥
पर रखवारी देखके, बँधे न दिलको धीर ॥

वार्ता

यह दोहा लिखकर साहूकार जादीके पास भेजा इसके जबाबमें साहूकारजादीने यह दोहा लिखकर भेजा ॥

दोहा

रखवारोंको देखकर, मत मन दहशत खाय ॥
बाग आपनों जानके, बुलबुल बनके आय ॥

इसके जबाबमें जौहरी बच्चाने यह दोहा लिखाः—

पहिरे बैठे बागपे, लगे न मेरी घात ॥
निशि दिन बुलबुल फिरतहै, दरश बिना घबरात ॥

यह दोहा पढकर साहूकारजादीने यह दोहा लिखाः—

दोहा

दरवाजेकी राहसे, मत आवो दिलदार ॥
खिरकी होकर आइयो, कमँद देउँगी डार ॥
उसपर होकर आइये, मनमें रखिये धीर ॥
मैना प्यासी दरशकी, आइ प्याइये नीर ॥

वार्ता

यह दोहा जौहरी बच्चाने बांचकर उसके जवाबमें यह दोहा लिखकर भेजा ॥

दोहा

अबहीं निशि चन्दा उगे, कैसे आवन होये ॥
चार दिनाकी चांदनी, फेर अँधेरा होय ॥
चार दिना गम खाइये, होय अँधेरी रात ॥
जबका मेरा कौलहै, मानों सांची बात ॥

वार्ता

तब इसके जवाबमें साहूकारजादीने यह दोहा लिखाः—

दोहा

छिन छिन जुग सम होतहै, तुम बिन मेरे मीत ॥
कहा चांदनी कर सके, जाकी सांची प्रीत ॥
सांची प्रीति पतंगकी, दीपक सँग जर जाय ॥
प्राण गमावे आपने, तोहू ना डर पाय ॥ २ ॥
प्यारे चन्द चकोर सम, बैठी निरखो तोय ॥
कोयल सम कूकत फिरूं, नेक दरद नहिं होय ॥

वार्ता

यह दोहा सुनकर जौहरी बच्चेके वदनमें मुहब्बतने जोश खाया तब उसने एक दोहा लिखकर भेजाः—

e,

जो सुनपावेंगे बच्ची वो लोग लुगाइयां ॥
धूर उडेगी घर घर शहरके माई ॥ १ ॥

जवाब बेटीका

उमर चढीहै अम्मा जोवन गदरा रहा ॥
काम निगोडेने अम्मा ये लाज छुडाई ॥
अब नहीं छूटे ऐरी अम्मा लगी दिलदारसे ॥
पडे झकमारो क्यों ना वो लोग लुगाई ॥

माताका जवाब

बडे घरोंकी रे बेटी तू बेटी कहलावती ॥
खोटी बातमें बेटी तोय लाज न आई ॥
प्रीत जगतमें हे री अम्मा वो सुखका मूलहै ॥
क्या दुख पायारी अम्मा तू करत बुराई ॥

तोता बोला कि हे मैना ! जब इसतरह के जवाब बेटीने दिये तब उसकी माताने ये कहा–

दोहा–मान कही तू लाडिली, छोड इश्कका ख्याल ॥
जो सुन पावेगा पिता, मार उडावे खाल ॥

ये वचन माताके सुनकर बेटीने कहाः–

इश्क हमारे मन बसा, सुन माता नादान ॥
तैनें क्या कीया नहीं, मन अपनेमें जान ॥

ये बात बेटीकी सुनकर उसकी माताने अपने मनमें सोचा कि यह कामकी तरंगकी उमंगमें मतवारी होरहीहै इससे यह किसी तरह नहीं मानेंगी इसके बापसे कहकर और इसके पतिको बुलाकरउसके साथ इसे करदें क्योंकि जहां चली जायगी तो हमारी बदनामी न होगी ये बात मनमें विचारकर उसने बेटीका हाल सब अपने पतिसे कहा तब उसने उसी वक्त चिट्ठी लिखकर अपने एक नौकरको भेजा कि तुम

इस चिट्ठीको साहूकारजादेको देना और उससे कहना कि आपको जल्द बुलायाहै सो आप जल्द चलकर रुखसत कराला‌ओ, क्योंकि हमारे सेठजी कहीं तीर्थयात्राको जाँयगे न जाने वहांसे कितने दिन में आनाहो इससे अपने सामने आपको बिदा करजांय तो अच्छाहै. उसी प्रकारसे नौकरने जाकर चिट्ठी दिया और कहा. यह बात सुनकर वह साहूकारजादा सफरका सामान इकट्ठा कर और बहुतसे आदमी साथ लेकर सुसरालको चला जब कई दिनके बाद अपनी सुसरालमें पहुँचा तब उसके सास श्वशुरोंनें बडी खातरकी और रातको जब साहूकारजादा ब्यारू करचुका तो अपनी स्त्रीकी चित्रसारीमें जाकर सोरहा ये रास्तेका हारा थका था इससे इसे नींद आगई तब अपना मौका पाकर साहूकारजादीअपने महलसे निकल जौहरी बच्चेके मकानपर पहुँची और तीन बजे तक उसके साथ ऐश आराम करती रही उधर साहूकारजादेकी आंख खुली तो अपने पास अपनी स्त्रीको न देखकर उसने जान लिया कि ये स्त्री किसी दूसरे पुरुषके पास गई खैर कल इसका हाल देखूंगा ये बात पडा पडा अपने मनमें विचारता था कि, इतनेमें वह आई और अपने पतिके पास सोयरही जब दूसरा दिन हुआ तब सब कामसे निश्चिन्त होकर वे दोनों अपनी चित्रसारीमें जाकर सोये साहूकार बच्चा झूठमूठके सोगया और वह स्त्री अपने पतिको सोता जानकर अचक अचक उठकर जौंहरी बच्चेके मकानपर पहुँची और उसीके पीछे वह भी चलागया जब वह जौंहरी बच्चेके मकानमें चली गई. तब अपना रूप बदल और भिखारीका रूप धर जौंहरीबच्चेके मकानपर आवाज लगाई और यह दोहा कहा—

भला जो तेरा होयगा, अतिथि खडाहै द्वार ॥
भूखेको कुछ डालदे, कहताहूं हरबार ॥
कहताहूं हरबार कि भूखा दूर देशते आयाहै ॥

केई दिनका भूखाहूं मैं अन्न जरा नहिं खायाहै ॥
फिरूं भटकता इस नगरीमें इतनावक्त होआयाहै ॥
भाग्यवानका द्वार देखकर आकर शब्द सुनायाहै ॥

वार्ता

ये बात भूंखेकी सुनकर जौंहरीबच्चा बोला कि, हे साहूकारजादी! कोई भूँखा हमारे दरवाजे पर पुकारताहै सो तुम रकेबीमें थोडेसे मोती लेकर उसको दे आओ तब साहूकारजादी थालीमें मोती भरकर द्वारपर आई और उस भिखारीसे कहनेलगी ॥

मोती लाई थालभर ले जोगीके लाल ॥
खैर मना मेरे यारकी कीया तुझे निहाल ॥

यह वचन साहूकारजादीका सुनकर साहूकारजादा यों कहनेलगा

कंकर पत्थर क्या करूं देओ गले का हार ॥
खैर मनाऊं यारकी ये मुझको दे डार ॥

ये बचन भिखारीका सुनकर साहूकारजादीने अपने गलेका हार उतारकर अतिथिको देकर जौहरी बच्चेकेपास चलीगई और साहूकार जादाभी हारको लेकर अपनी चित्रसारीमें पलंग पर आनकर सो- रहा और थोडी देरके बाद साहूकारजादीभी आकर अपने पतिके पास सोरही सुबह होतेही साहूकारजादेने अपनी माससे कहा कि हमको बिदा करदो- तब उसके सासू श्वशुरने बहुत खुशीके साथ बहुतसा माल देकर बिदा किया तोता बोला कि, हे मैंना !जब वह साहूकारजादा दोतीन मंजील निकल आया तब एक जंगलमें जाकर मुकाम हुआ जब अपने डेरेमें साहूकारजादा और साहूकारजादी दोनों बैठेथे तब साहूकारजादेने अपनी स्त्रीसे पूछा कि आपको आपके माबापोंने क्या दियाहै और आपके यार जोहरीबच्चाने क्या दिया है ये बात सुनकर उसस्त्रीके होश उडगये परंतु ऊपरले मनसे कहनेलगी कि जौहरी बच्चा कौनहै!तब साहूकार बच्चा बोला कि तुम्हारे पास सब

जेवर तो दीखताहै परंतु हार नहीं दिखाई देता सो वह हार कहाँ है? ये वचन साहूकारजादेका सुनकर वह कहनेलगी अपनी मैयाको बनवानेके वास्ते देआईहूं क्योंकि वो कईजगहसे ऐसा टूटगया था कि काबिल पहरनेके न रहा ये बचन साहूकारजादी का सुनकर साहूकारजादेने हार अपनी जेबसे निकालकर दिखाया और कहने लगा कि ये हार किसकाहै और इसको भिखारीके वास्ते जौंहरीबच्चेके मकानसे किसने दिया था? तब तो उस हारको देखकर अपने मनमें बहुत घबडाई और अपने पतिके वचनोंको सुनकर अपने मनमें जान गई कि ये फकीरका भेष करके वहां गया था और यही इस हारको मुझसे लाया है अब इसने मेरा सब हाल जान लियाहै अब ये मुझको जीती काहेको छोडेगा इससे कोई ऐसा उपाय करना चाहिये कि जिससे मेरे प्राण बचें ये बिचार वह साहूकारजादेसे हाथ जोड गिडगिडाकर कहने लगी कि हे प्यारे! अब जो कुछ मुझसे कसूर हुआ वह माफ कीजिये और पीछे मैं ऐसा काम करूं तो आपके जीमें आवे सो मेरा हाल करना यों कहकर साहूकारजादेके गलेसे लिपट गई और बिनती करने लगी तोता बोला कि, हे मैना! उस स्त्रीनें उस साहूकारजादेपर ऐसी मोहिनी डाली कि वह इसकी मुहव्बतमें आनकर कुछ नहीं कर सका और अपने मनमें सोचनेलगा कि खैर जो कुछ हुआ सो हुआ अब इसके मारनेमें क्या हाथ आवेगा और ये भी हम जानतेहैं कि ऐसा पेड कोई नहीं है जिसको हवा न लगीहो. ये बात मनमें विचारकर चुप होगया और उस स्त्रीसे कहनेलगा कि खैर अब तो तेरा कुसूर माफ किया परंतु फिर कभी ऐसा काम मत करना यह कहकर उसको गलेसे लगाकर अति प्यार करनेलगा तोता बोला कि ऐ मैना! देख मर्द कैसेरहमदिल होतेहैं कि उस स्त्रीने कैसा बुरा काम किया था परंतु उसके गिडगिडानेको देखकर तुरन्त रहम आगया हे मैना! जब वह साहूकारजादा

अपने मकानपर आगया और अच्छी तरहसे रहने लगा और स्त्रीपर हर एक तरह प्यार करनेलगा परंतु उस स्त्रीको आठ पहर चौंसठघडी उस जौहरीबच्चेका ख्याल रहता और अपने मनमें कहती कि जाने मुझ बिन मेरे पियारेकी क्या दशा होगी इस बातको सोचकर वह हमेशा उदास रहा करतीथी. तोता बोला कि हे मैना !अब यहां तो जौहरीबच्चेके सोचमें इसका यह हालथा और उधर जौहरीबच्चा पर जो जो मुसीबतें गुजरीथीं उनका अब ध्यान करताहूं ! जब सुबह होतेही जौहरीबच्चाने यह सुना कि साहूकारजादीको उसका मालिक अपने वतनको लेगया वह एकदमसे चुप होगया और आह भरकर यह दोहा पढनेलगाः—

दोहा

हाय दई कैसी करी, भयो बिछोयो हाय ॥
प्यारी मुख देखे बिना, जान अजाये जाय ॥
जो तुझको था बिछडना, नाहक कीनी प्रीत ॥
जोड प्रीत फिर तोडना, कौन गामकी रीत ॥

यह दोहा पढकर चुप होगया और जमीन पर तडफने लगा उसके मा बापोंने उसका यह हाल देखकर बडा सोच किया और कहने लगे कि, अबी अबमें इसको क्या होगया यह कहकर उसनें वैद्यको बुलाया और उससे कहा कि वैद्यराज ! इस हमारे लडकेका हाल देखो कि इसे क्याहोगयाहै न तो यह बोलताहै और न कुछ खाताहै न पीताहै यह सुनकर वैद्य जौहरी बच्चाका हाथ पकडकर नब्ज देखने लगा उस समय जौहरीबच्चेने यह दोहा पढा ॥

दोहा

नाडी छूवत आपके, पडे फफोले अंग ॥
जा वैदा घर आपने, तू क्या जानें रंग ॥

जो अजार मो तन लगा, दवा न उसकी होय ॥
मेरे अरजे की दवा, कर सकताहै कोय ॥
ये वो बीमारी नहीं, जिसका करो इलाज ॥
बिन दर्शन महबूबके, प्राण बचैं ना आज ॥

ये बातें जौहरीजादेकी सुनकर वैद्यने जान लिया कि इसको किसीकी जुदाईका शोक है और उसके माता पितासे कहा कि तेरे बेटेको कुछ रोग नहीं है ये किसी महबूबके इश्कमें गिरफ्तारहै इसकी दवा मेरे पास नहीं है आपकी समझमें आवे सो करो ये कहकर वैद्यतो अपने घरको चला गया और उसकी माता कहने लगी:—

दोहा

ऐ बेटा मेरे लाडले, क्या दुख व्यापा तोय ॥
जिसका तुमको रंजहै, कह समझावो मोय ॥
देख तेरे इस हालको, मुझको बँधै न धीर ॥
यह तू सांच बतायदे, कहा उठी तन पीर ॥

जवाब बेटेका दोहा

हीरा मेरे हाथसे, गया निकल अब हाय ॥
उस बिन दिल बे चैनहै, वा मोय न कछू सुहाय ॥

जवाब माताका

एक हीरेकी क्या कहै सुकते देंउ बिसाय ॥
जिसपर तेरा मन चले, वैसा देउँ मँगाय ॥

जवाब बेटेका

वो हीरा अनमोल था, जो मेरे मन आय ॥
उस सम दूजा शहरमें, मुझको दीखे नाय ॥
वह हीरा मो मन बसा, गया दूर परदेश ॥
उसके लानेको भला, करूं फकीरी भेष ॥

जवाब माताका

तुम चातुर परबीनहो, क्यों बनते नादान ॥
जाय पराई नारपै, तुम खो बैठोगे जान ॥
बडी कठिनसे पाला मैंने, तुझको मेरे लाल ॥
अब तू दुख देने लगा, पडके इश्कके जाल ॥
परनारीके फन्द पड कितनेही खोगये जान ॥
इससे तू मत फँस कुमर, कही हमारी मान ॥

तोता बोला कि हे मैना ! इस तरह उसकी माताने बहुतेरा समझाया मगर उसके दिलमें एक नहीं आई सचहै किसी कविने कहाहै.

दोहा

जब तनमें लगजातहै, नैन बाण सम आय ॥
फिर वो बचनेका नहीं, लाखों करो उपाय ॥
लगन लगेकी पीर अति, कसकत दिन अरु रात ॥
खानपान सुख सोवना, ताहि न कछू सुहात ॥
जा तनमें लागी कठिन, इश्क बातकी चोट ॥
फिर तो वह बचता नहीं, ज्ञान ढालकी ओट ॥
चिकने घट सम होतहै, निरमोहीकी देह ॥
ज्ञान बूँद ठहरे नहीं, घनसम बरसे मेह ॥
विरह आग तनमें लगी, भबकतहै दिन रात ॥
बिना दरश माशूकके, कबहूं नाहिं सिरात ॥
नैन नारकी धारसे, जो नर घायल होय ॥
प्राण तजे कै घर तजै, दो में एकहि होय ॥

हे मैना ! उस जौहरीबच्चाका यार एक वजीरजादा था सो उसने जब यह हाल सुना तो अपने दोस्तके पास आया और कहने लगा कि, हे दोस्त ! तुमको क्या होगयाहै तब जौहरी बच्चाने अपने दिलका सब हाल वजीरजादेसे कहा और कहने लगा कि यार उसकी

जुदाईसे मेरी यह शकल हुई है और उसके बिना मुझे कुछ अच्छा नहीं लगता है इतना कहकर ये शैर पढने लगा--

नहीं कोई ऐसा मिलावे मुझे ।
मेरा हाल सारा सुनावे उसे ॥
भला कब मैं देखूंगा प्यारीका मुंह
गलेसे लगा उसका चुमूंगा मुंह ॥
दिखावे कोई उसकी सूरत मुझे ॥
पिलावे मोहोब्बतकी दारू मुझे ॥
नहीं चैन मुझको बिना उसके अब ।
बिना दीद उसके तडफताहै दम ॥
मिले या तो मुझको वो इश्के कमर ॥
नहीं जान जातीहै निकसी फिल हाल ॥
मेरे दर्दकी कोई सुनता नहीं ॥
फिकर मेरे जीनेकी करता नहीं ॥
लगी चोट सीनेमें ए रंगीलाल ॥
बिना देखे प्यारीके उठता मलाल ॥

यह हाल जौहरीबच्चेका सुनकर वजीरजादेने कहाः—

दाना दुश्मन होयके क्यों बनते नादान ॥
पर तिरियाके नेहमें क्यों खोतेहो जान ॥
प्यारेजी क्यों खोतेहो जान कामके बशमें होके ॥
बहुतेरे मरगये सबी घर बाहर खोके ॥
प्यारेजी बडे बडे होगये फिरें जंगलमें रोके ॥
जिसने कीया इश्क रैन नहिं काटी सोके ॥

जवाब जौहरी बच्चेका

होनी है सो होयगी इस्का नहिं अरमान ।
बिन देखे दिलदारके तज दूं अपने प्रान ॥

प्यारेजी तज देऊं अपने प्रान निकल जंगलको जाऊं ॥
उसके देखे बिना नहीं मैं अन जल खाऊं ॥
प्यारेजी बन बन भ्रमता फिरूं नाम उसके लौ लाऊं ॥
जाके उसके द्वार बैठकर धुनी रमाऊं ॥

जवाब वजीरका

मानो मेरी बातको निश्चय मेरे यार ॥
परनारीके फन्द पड होगे बहुत खुआर ॥
प्यारेजी होगे बहुत खुआर होयगी तुमरी खुआरी ॥
कठिन सारकी धार बनी पैनी परनारी ॥
प्यारेजी त्यागो उस्का सोच मान लो बात हमारी ॥
इसमें पडकर यार होयगी हँसी तुम्हारी ॥

तोता बोला कि हे मैना ! वजीरजादेने बहुतेरा समझाया मगर उसके दिलमें एक न आई लाचार होकर वजीरजादा तो अपने घरको चलागया और इधर जौहरी बच्चा अपना मौका पाकर कुछ जवाहिरात लेकर जंगलको रवाना हुआ और एक शहरमें पहुँचकर अपना लिबास उतारकर जोगीका भेष बनाया और माशूकके नामकी माला जपने लगाः-

रंगे गेरुरा तनके कपडे अजब ।
जटा सीसपर बांध लीनी गजब ॥
कानोंमें मुद्रे चमकने लगे ।
गले माल मनिये दमकने लगे ॥
लगा खाक तनपे भसमकी भभूत ।
चले बनके जोगी यों जौहरीके पूत ॥
पहन गलमें सेली व कफनी संभाल ॥
गजब हुस्न उसका चमकता कमाल ॥

सो हे मैना ! वह जौहरीबच्चा उस साहूकारजादीकी मुहब्बतमें फँसकर जोगी बन जंगलमें भटकता हुआ अपने माशूकका नाम जपता हुआ उसीसे लौ लगाये खाना पीना सब बिसराये जंगलों में फिरने लगा और बडी आह भरकर ये शेर पढने लगाः–

शैर

जरा आन सूरत दिखादे मुझे ॥
पता अपना पूरा बतादे मुझे ॥
फिरताहूं भटकता तेरी चाहमें ॥
तजा मैंने घरको तेरी आहमें ॥
पिला आन मुझको गुलाबी शराब ॥
हुआ तेरी उलफतमें यहांतक खराब ॥
लगा आन छातीसे मुझको शिताब ॥
मिटा दिलसे रंजो अलमका खिताब ॥
न छोडेथी इकला मुझे एकदम ॥
छिपी अब कहां करके ऐसा सितम ॥
बिना तेरे देखे न दिल चैनहै ॥
कटे अब यहां रोरो दिन रैनहै ॥
जरा कर महरकी निगह ओ परी ॥
तेरे इश्कने मेरी क्या गत करी ॥
छुडा मुझसे घरबार मेरा दिया ॥
तिसपर भी तूने किनारा किया ॥

हे मैना ! इसी तरह विरहमें मगन होकर जंगलमें चला जाताथा कि एक दमसे गर्मी पडने लगी और धूपके मारे जमीन आसमान जलने लगा उस वक्त ये बिचारा मुसीबतका मारा एक पेडके नीचे बैठकर ये रेखता पढने लगाः–

पडेहै जोरसे गर्मी तपाकर तन जलाताहै ॥

न चन्दा चांदनी चन्दन न खस खाना सुहाताहै ॥
तेरे दीदार बिन जालिम जुल्म ये जेठ मचाताहै॥
मुझे ये जानके इकला जोर अपना जनाताहै ॥
करूं मैं क्या जतन प्यारी बिरह मुझको जलाताहै ॥
तेरे इस इश्क में फँसकर नहीं कुछ मुझको भाताहै ॥
शुरूहै जेठका तपना न अपना कुछ बसाताहै ॥
पडेहै धूप अति जालिम अकेला जी अकुलाताहै ॥
तलैया बावडी कूआ सभी जल सूख जाताहै ॥
तेरे दीदार बिन प्यारी चश्म दर्या बहाताहै ॥

दोहा

जेठ ज्वाल जालिम जले, सूखे ताल न नीर ॥
ताहूते दूनी जले, बिरह अगन की पीर ॥

तोता कहने लगा कि हे मैंना ! इसी तरह बहुतसी मुसीबतें उठाता हुआ कई दिना बाद वह जौहरीबच्चा उस साहूकारजादीके शहर में पहुँचा और उस शहरके तलाव पर जाके डेरा किया क्योंकि उसने अपने मनमें सोचा कि यहां सब शहरकी स्त्रियां न्हानेको आती हैं सो किसी न किसी दिन वहभी यहां स्नान करनेको जरूर आवेगी इससे मुकाबला जरूर होजायगा. यह बात मनमें विचारकर वहीं एक तिदवारीमें धूनी लगादी जब उसको वहां रहते कई दिन होगये तब एक दिन वह साहूकारजादी भी वहां न्हानेको आई और स्नानकरके अपने घरको चली जब जोगीकी निगाह उसपर पडी तो देखतेही पहँचान गया कि मेरे मनके चुराने वाली यहीहै यह बात मनमें जान कर यह दोहा कहनेलगा ॥

दोहा

जोगी आया दूरसे, सहता दुःख अपार ॥
अब तो दर्शन दीजिये, मुखसे घूँघट टार ॥

चौबोला

घूँघट मुखते टार कि प्यारी दूर देशते आयाजी ॥
हुआ बहुतसा ख्वार ये जोगी आज हुआ मन चायाजी ॥
तेरे इश्कमें आकर हमने सब धन माल गमायाजी ॥
अब तो हँसकर देख इधर को जोगी वचन सुनायाजी ॥

ये वचन जोगीका सुनकर साहूकारजादी पहचानगई कि ये तो वही मेरा यार जौहरीबच्चा है उसकी सूरत को पहँचान कर घूँघट-मुखसे हटा लिया और जोगीकी तरफ देखकर कहने लगीः-

दोहा

जा दिनसे बिछुरन भयो तलफत मेरे नैन ॥
जैसे जल बिन माछरी तलफतहै दिनरैन ॥

चौ०– तलफतहै दिन रैन पियारे नैन नींद नहिं आती जी ॥
कर कर तेरी याद यार में रो रो रैन गमातीजी ॥
आठ पहर दिन रैन पियारे तुझीसे ध्यान लगातीजी ॥
तेरे इश्कमें फँसकर प्यारे रातदिना दुखपातीजी ॥
दुख सुख लीने भोगके जो कुछ लिखा लिलार ॥
अब तुमको करनो कहा कहिदो सोच बिचार ॥

जवाब पुरुषका

कहदो सोच बिचार पियारी अब तुमको क्या करनाजी ॥
बिन देखे दीदार आपके होय हमारा मरनाजी ॥
सुलगेहै तन आग इश्ककी उसमें निशिदिन जलनाजी ॥
कौन तरहसे तेरा मेरा होय काजका सरनाजी ॥

जवाब स्त्रीका

प्यारे मन धीरज धरो मत मनमें घबराय ॥
तेरे मतलबका करूं कोई जल्द उपाय ॥
कोई जल्द उपाय हुक्मदो अब महलको जाऊंजी ॥

मत दिलमें घबराय यार मैं कसम आपकी खाऊंजी ॥
करके कछू बहाना तुमको अपने महल बुलाऊंजी ॥
राजी करूं आपकी हांपर हँसकर कण्ठलगाऊंगी ॥

तोता बोला हे मैना! इसतरह जौहरीबच्चेको समझाकर वह साहूकारजादी अपने महलको गई और अपनी चित्रसारीमें जाकर पडरही और हाय हाय कर चिल्लाने लगी इसकी बेकला देख सब लौंडी बांदी दौड आईं और उसका गैरहालदेखकर बहुत घबडाईं और एक दासी ने साहूकारजादेसे जाकर हाल कह सुनाया उसको सुनतेही साहूकारजादा दौडा आया और अपनी स्त्रीका गैर हाल देखकर घबडानेलगा और पूछनेलगा कि, हे प्यारी! आपको क्याहुआ अपने दुःखकासारा हाल मुझसे कहो क्योंकि तेरी बेकली मुझसे सही नहीं जाती और तेरा यह हाल देखकर मेरा जी घबडाताहै यह सुनकर साहूकारजादी कहने लगी कि हे प्राणप्यारे! आज दर्दके मारे मेरा दमनिकलाजाताहै और कोई दमकी महमानहूं आपसे जो कुछ बने सो करो. तब साहूकारजादेने उसी वक्त बहुतसे वैद्य और हकीमोंको बुलाकर अपनी स्त्रीकी औषधि कराई मगर उसको कुछ फायदा न हुआ और ज्यादा बेकली बढने लगी तोता बोला कि हे मैना! वैद्य हकीम बिचारे क्या करें जो कोई रोग उसको होय तो उसका इलाज करें वहां पर तो इश्क मुहब्बतका दर्द था उसको वैद्य बिचारे क्या करैं इसी बातपर किसीने कहाहैः—

रोग चिकित्सा करनको वैद्योंका औतार ॥
इश्क रोगको क्या करैं वे गरीब निरधार ॥
इश्क रोगकी औषधी प्यारेहीके नैन ॥
जासू जाकी लगनहै ताही देखे चैन ॥

हेमैना ! जिससे जिसकी लगन लगी होतीहै उसकी दवा उसीके पास होतीहै, क्योंकि इस दुनियांके बीचमें यह इश्क बहुत बुरा कठिन दुःखदाई रोग है इसीसे किसी कविने कहाहैः—

इश्क बानके घावकी कठिन चिकित्सा होय ॥
जाकी जाते लगनहै ताहि लखे सुख होय ॥
इश्क तीरके घावका यतन न जाने कोय ॥
याको दुख वोही लखे जा तन लागी होय ॥

हे मैना ! इश्ककी दवा किसी हकीम वैद्यके पास नहीं है सो इन वैद्य व हकीमोंकी दवाने उस इश्कके बीमार पर कुछ असर न किया तो लाचार होकर वे बिचारे चले गये तब तो वह साहूकारजादा अपने मनमें घबराया और रोनेलगा साहूकारजादी बोली कि हे प्यारे ! आप ऐसे उदास क्यों होतेहो जो मेरा आपका इतनाही संयोग है तो आप का और मेराक्या बसहै आपको तो मुझसी स्त्री और भी बहुतसी मिलजांयगी परंतु मुझको आप सरीखे पुरुष मिलने मुश्किलहैं क्योंकि जिस दिनसे मैं आपके घरमें आईहूं उसी दिनसे आप मुझको प्राणोंसे प्यारी रखतेहो ऐसी ऐसी मुहब्बतके बढानेवालीबात बनाकर साहूकारजादेको उल्लू बना लिया वह साहूकारजादा उसकी बातोंमें आनकर उसके मक्कर और फरेबको न समझा सचहै जिन स्त्रियोंके फन्द फरेबको देवताभी नहीं जानते और बडे बडे असुर और दैत्य इनके छल छिद्रमें आनकर अपनी जान खो बैठतेहैं तो बिचारे मनुष्यकी क्या ताकतहै जो इनके चरित्रको जान सके इसीसे किसी कविने कहाहैः--

नारी नीर गंभीर नद यहां न याकी होय ॥
जो जाके मनमें बसे जान सके नहिं कोय ॥
बडे बडे ऋषि देवता नारीके बश होय ॥
बन बनमें भटकत फिरे अंत प्राण गे खोय ॥

हे मैना! इन स्त्रियोंकी महिमा बडी प्रबलहै सो इसीसे वह साहू-
कारजादा उसके बसमें होगया तब वो स्त्री कहनेलगी कि हे प्यारे! मैं
एक बात आपसे कहतीहूं और परमेश्वर चाहेगा तो उस्के कियेसे मेरी
जान बच जायगी, मैंने सुनाहै कि तालाब पर एक साधू रहताहै और
उसने हजारों आदमियोंको अच्छा कियाहै अगर किसी राहमें वह
तुम्हारे पास आजावे और मुझे अच्छी कर जावे क्योंकि साधुओंको
सब सामर्थ्यहै सो आप मेरा कहना मानके उसके पास जाओ और
जैसे बने वैसे उसे लाओ-ये बात स्त्रीकी सुनकर साहूकारजादा उस
योगीके पास गया और हाथ जोडकर कहनेलगा कि, हे स्वामी!
मेरी स्त्री बीमारहै सो आप कृपा करके मेरे संग मेरे स्थान पर पधारें
तब वह जोगी बोला कि हे बच्चा! हम फकीर लोग तेरी औषधि
मूरी को क्या जानें हमें तोईश्वरका भजन करना और भिक्षा-
मांगकर अपना पेट भरलेना आताहै ये बात योगीकी सुनकर साहू-
कार बहुत घबडाया और उसके पावोंमें गिरपडा और कहनेलगा कि
हे महाराज! यह वक्त नाहीं करनेका नहींहै, क्योंकि पराये दुःखको दूर
करना तो साधुओंका धर्म्म है इस तरहसे जब साहूकारजादा बहुत
गिडगिडाया तब तो वह साधू उसके साथ होलिया और उस स्त्रीके
पास जाकर थोडी कपटकी भभूत पढकर उसको खिलाई और थोडी
सी भभूत हाथमें लेकर अपनी प्यारीके बदन पर हाथ फेरा तब थोडी
देरके बाद साहूकारजादी अपने पतिसे कहने लगी कि, अब तो कुछ
आराम मालूम होताहै तब तो साहूकारजादेने बाबाजीकी बहुत खा-
तिरकरी तब योगी कहनेलगा कि हे बच्चा! तुम बजारको जाओ और
अपने सामने बैठकर एक सोनेका जंत्र बनवा लाओ उसमें ऐसा जंत्र
रखजाऊँगा कि ये फिर कभी उम्र भर बीमार न होगी- ये सुनतेही
साहूकार तो बाजारको गया और पीछेसे उन दोनोंने अपने अपने
मनकी मुराद पूरी की थोडी देरके बाद साहूकारभी तावीज लेकर

आगया तब उस योगीने उसमें थोडी भभूत रखकर उस स्त्रीके गलेमें बांधदी और कहा कि बच्चा ! ले अब हम अपने आश्रमको जातेहैं तब साहूकारने कहा कि आपने बडी कृपा की अब आप कृपाकर नित्य यहां दोनों वक्त भोजनकर जाया करो तब वह साधू नित्य साहूकारके यहां आने लगा सो तोता बोला कि हे मैना ! एक दिनका जिक्रहै कि साहूकार किसी कामके वास्ते किसी दूसरे गाममें गयाथा और इधर साधूने और उस स्त्रीने अपना मौका पाकर खूब जर जेवर लेकर चलनेका इरादा किया सो रातके समय वहांसे दोनों जने चल दिये. हे मैना ! देख उस साहूकारजादेने कैसी मुहब्बत की परंतु उस कमबख्त स्त्रीने अपने मनमें जरा न सोची सब माल मता लेकर चली गई. पीछेसे जब वह साहूकारजादा आया और अपनी स्त्रीको और साधूको न देखा तो जानगया कि ये योगी नहीं था ये वही बदमाश उसका यार था ये बात मनमें सोचकर अछता पछताकर बैठरहा और इधर वे दोनों वहांसे चले सो कई एक दिनके बाद एक शहरमें जाकर टिके और एक मकान किरायेका लेकर वहां रहने लगे. उस मकानके पीछे एक पठानका मकान था यह पठान नौ जवान हूरका सा बच्चा बडा स्वरूपवान था दैवयोगसे एक दिन वह स्त्री अपने मकानपर न्हानेको चढी और वह पठान भी अपने मकान पर बैठाथा ज्योंही उस स्त्रीकी नजर उसपर पडी कि देखतेही मुश्ताक होगई और वह पठानभी देखकर मोहित होगया निदान इसी तरह उन दोनोंमें मुहब्बत पैदा हुई और पठान उस स्त्रीके घर आने लगा. एक दिन पठान उस स्त्रीसे कहने लगा कि हमारी मुहब्बत इसतरह से नहीं निभैगी क्योंकि किसी न किसी दिन हमारी और तेरे खाविंदकी तकरार होजायगी इससे कोई ऐसी तजबीज करनी चाहिये जिससे यह खटका मिटे और हमारी तुम्हारी आरामसे घुटे. तब स्त्री बोली कि ये मेरा असली खाविंद नहीं है ये भी मुझको उडाकर ले

आयाहै सो इसका डर तुम बिलकुल मत करो तब वह पठान बोला कि इससे तो बहतर यह है कि आप हमारे घरमें पडजाओ ये बात पठानकी मानकर वह स्त्री उस पठानके घरमें रहने लगी इस हालको देखकर जौहरी बच्चाने बहुत गुल शोर मचाया मगर परदेशीकी कौन सुनताहै लाचार होकर उसने शहरके राजाको अर्जी दी कि, गरीबपरवर मैं परदेशी आदमी आपके शहरमें चन्द रोजसे आनकर बसाहूं सो फलां पठानने मेरी औरत छीन लीहै और मेरे साथमें उसने बडी ज्यादती की है सो मैं उम्मेदवार हू कि मेरी स्त्री उस पठानसे मुझको दिलाई जाय. तब राजाने उसको बुलाया और उससे कहा कि तूने इसकी स्त्री क्यों छीन लीनी इसकी स्त्री इसको देदे तब पठान बोला कि हुजूर वह स्त्री इसकी नहीं है ये झूठ बोलताहै तब राजाने उस औरतको बुलाया और उससे कहा सब हाल पूछा तब वह बोली कि हुजूर मैं एक साहूकारकी औरतहूं सो कुछ दिनसे मेरी इसकी दोस्ती थी ये मुझको बातोंमें फुसलाकर उडा लायाहै और अब यहां आनकर मुझको हरू एक तरह की तकलीफ देने लगा इससे मैंने इसको छोड दिया और इस पठानके घरू में दो रोटीका सुख देखकर बैठगई हूं अब मेरी राजी इसके साथ नहीं है ये बात उस औरतकी सुनकर राजाने कहा कि ए मुसाफिर अब तुम्हारा झगडा करना मुनासिब नहीं है क्योंकि ये स्त्री जब अपने पतिकी साथी न हुई तो तेरी साथी कब होने की है किसी कविने कहाहैः—

बैत

कागजकी भस्म किन भसमसनमें ।
धरा खसम किन खसमन में ॥

यह कहकर उसे निकाल दिया तब वह विचारा लाचार होकर चला आया तो तोता बोला कि ए मैना ! भला स्त्रीकी बराबर दुनियां

में और कोई बेमुरब्बतहै ? तब मैना बोली इसका जवाब मैं तुझको देतीहूं तू कान लगाकर सुन सो अब जैसा कुछ जवाब मैना देगी वह मैं इसके सातवें भागमें लिखूंगा ॥

॥ इति श्रीछठवाँभाग समाप्त ॥

चौदहवाँ दास्तान मैनाका.

मैना बोली कि हे तोते ! अब मैं तेरी दास्तानका जवाब देतीहूं कान लगाकर सुन-ज्योतिषपुर नामक एकबडा शहर था जो अति मनोहर और रमणीकथा जिसके चारों तरफ लालपत्थरका परकोटा बनाहुआ था राजा और प्रजा दोनों चैनसे रहतेथे राजा भद्रसेन राजकरता था वह राजा बडा प्रतापी और धर्मात्मा था उसके एक बेटा बडा चतुर व स्वरूपवान था उसके रूपकी बराबर और कोई नजरमें नहीं आताथा मानो साक्षात् कामदेवही का अवतार था उनका नाम रणधीरकुमारथा और उसकी स्त्रीका नाम चम्पावती था वह स्त्रीभी अति स्वरूपवती और गुणवती थी और हमेशा पतिकी आज्ञामें तत्पर रहा करतीथी इन दोनों स्त्री पुरुषोंमें आपसमें ऐसा स्नेह था कि एक को बगैर दूसरेके देखे चैन नहीं पडताथा सो हे तोता ! एकदिनका जिक्र है कि रणधीरकुमार अपने मित्र चन्द्रगुप्तको साथ लेकर घोडेपर सवार होकर एक जंगलके वास्ते शिकार खेलनेको गया और वहां जाकर एक हिरणके पीछे इन दोनों यारोंनें अपने अपने घोडे फेंके वह हिरनभी दोनों राजकुमारोंको पीछे आते देखकर अपने प्राणोंके बचानेके वास्ते जंगलकी तरफ भागा जब भागते भागते हिरण बहुत दूर निकल गया तब चन्द्रगुप्त तो रहगया परंतु राजकुमार उसके पीछे घोडा फेंके चला गया यहांतक कि चलते २ वह हिरन एक मनोहर जंगलमें जाकर एक सघन वनमें छिपगया और राजकुमार भी उस हिरनको गायब देखकर लाचार हो खडा होगया उस वक्त राजकुमारको रस्तेकी हरारतसे प्यासने ऐसासताया

कि मारे प्यासके उसका जी घबडाने लगा और वह उस वनमें पानी की तलाशमें इधर उधर घूमने लगा इतनेमें आगे बढकर उसकी एक सरोवर पर नजर पडी कि जिसके चारों तरफ संगमरमरके और स्याह मूसेके मनोहर घाट बने हुए अति सुंदर मालूम देते थे और हरएक घाटके बराबर जालियोंके काम जिनमें होरहे हैं ऐसे मनोहर बुर्ज शोभा देरहेथे और घाटोंके ऊपर हर जगह बारहदरी बनी हुईथी. कि जिनमें सच्चे नगीने और सोनेके पानीसे तरह तरहके बेल बूटे कटरहेथे सरोवरमें कमलके फूल खिलरहेथे जिनसे उस निर्मल जल की शोभा और ही हो रहीथी इसप्रकार उत्तम सरोवरको देखकर राजकुमार अति प्रसन्न हो कहने लगा कि, देखो यह कैसा सुन्दर बनहै और फिर इसमें कैसा रमणीक सरोवरहै नाना प्रकारके वृक्षोंसे शोभायमान होरहाहै तरह तरह के पक्षियोंके शब्दोंसे कैसा गूँज रहाहै मानों सब वृक्ष आपसमें वार्तालाप कर रहेहैं और इन वृक्षोंका स्पर्श कर शीतल मंद पवन समस्त शरीरके तापको हरताहै ये विचारकर राजकुमार उस सरोवरमें से पानी पी हाथ मुँह धोकर ऊपर आया और ठंढी ठंढी छायामें टहलने लगा इतनेमें आगे बढकर क्या देखताहै कि एक बडा मनोहर बाग बना हुआहै और उसके चारों तरफ संगीन दीवार खिंची हुई है वह बाग अनेक प्रकारके वृक्षोंसे शोभायमानहोरहाहै राजकुमार अपने घोडेको बागके दरवाजे पर बांधकर आप भीतर गया और सैर करनेलगा. वहां क्या देखताहै चारों तरफ रोसोंके किनारे बडे बडे आम जामन अमरूद अनार आदि फलोंके वृक्ष लगे हैं और बीचकी क्यारियोंमें चम्पा चमेली रायबेल केतकीमोतिया आदिके छोटेछोटे वृक्षोंकी शोभा होरहीहै और ठौर ठौर वृक्षोंपर मोर चकोर कोयल आदि पक्षीगण मीठे २स्वरोंसे गुंजार कररहेहैं और कहीं कहीं वृक्षोंपर सारस हंस कपोत अनेक शब्दोंको कर उस बागको शोभायमान कररहेहैं और कहीं कहीं मालती आदिके पेडोंपर भौंरा आदिके

झुंडके झुंड गुंजार कररहेहैं इस आनंदको देखकर राजकुमारआगेको बढा सो क्या देखताहै कि पेडोंकी ओटमेंसे कुछ स्त्रियोंकी मधुरमधुर आवाज सुनाई देतीहै ये जानकर राजकुमार जिधरसे स्त्रियोंकी आवाज आतीथी उधर हीको चल दिया। थोडीदूर जाकर क्या देखताहै कि एक रोशपर तीन स्त्रियां फूलोंकी क्यारियोंमें हाथमें हाथ देकर टहल रही हैं उनको देखकर राजकुमार मोहित होकर गिरने लगा परंतुहिम्मतबांधकर सम्हलकर खडा रहाऔर मनमें कहनेलगा कि ये स्त्री कौनहैं इनके कैसी मनोहर चितवन हैं ऐसी स्त्री तोराजाके रनवासमेंभी नहींहैं इनकेरूपकी शोभाके सामने इस बागकी शोभा हीन मालूम देतीहै और इन तीनोंमें से बीचकी स्त्रीतो मानो साक्षात कामदेवकी स्त्री रतीही प्रगट होकर इस बागकी शोभाको शर्मिंदा करनेको आई है.क्योंकि इसके नेत्रोंके आगे कमलके पुष्प सरोवरमें गोता मारजातेहैं नासिकाको देखके बिचारे तोते उडजातेहैं और कपोलोंकी शोभाको देखकर नारंगियां पेडोंसे टूट टूट कर जमीन पर गिरकर तडफतीहैं और होठोंको देखकर कुंदरू कुम्हिलातीहैं और दाँतोंको देख कुन्दकली ठिठका जाती है और इसकी गोरी गोरी भुजाओंको देख कर चम्पाका पेड शर्मिंदा होताहै और इसके मुखकी मधुरताको देखकर चन्द्रमा लज्जित होकर श्यामता धारण कररहाहै ऐसी स्वरूपवती स्त्री तो आजतक मैंने कभी नहीं देखीथी ये स्त्रीहै या देवकन्याहै या अप्सराहै या नागकन्याहै ये कौनहै गिलमाहै या गणिकाहै इसका भेद तो जरूर जानना चाहिये क्योंकि इसके भेदके जाने बिना मुझे कल नहीं पडेगी ये बात विचारकर राजकुमार आगे बढा तब उस स्त्रीकी निगाह उसपर पडी और चार नजरें हुईं तो वहभी राजकुमारको देखकर मोहित होगई परंतु अपनी सखियोंके भयसे कुछ कह न सकी और उनका हाथ छोडकर दूसरी कियारीमें चलीगई और चम्पाके

पेडकी ओटमें छिपकर राजकुमारको देखनेलगी और अपनी सखियोंसे कहने लगी कि, हे सखियो ! तुम देखो तो सही सूर्य्यके समान तेजवाला और कामदेवके समान रूपवाला ये कौन पुरुष चला आताहै ? इतनेमें राजकुमार सखियोंके पास आगया और पूछनेलगा कि ये बाग किसकाहै और तुम कौनहो जो यह एकान्त विचरतीहो और तुम्हारी सखीका क्या नामहै. ये बात राजकुमारकी सुनकर वह सखी बोली कि हे विदेशी ! ये बाग महाराज खड्गसेनका है और यह उनकी बेटीहै और इनका नाम चम्पकलताहै और हम दोनों इसकी सहेलीहैं जिसमें मेरा नाम तो चित्ररेखाहै और दूसरीका नाम मोहिनीहै हमारी सखी आज वसन्तऋतु जानकर अपने बागकी सैर करनेको आईहैं ये बात सखियोंकी सुनकर राजकुमार कहनेलगा कि आपका कहना सचहै जैसा आपकी सखीका नामहै वैसाही रूप गुण भी है ॥

दोहा

बिन भूषणही सोहहीं, चतुर नारकर भाव ।
चहिये नाहिं अँगूरको, मिश्री मधुर मिलाव ॥

हे सखी ! अंगूरमें मिश्री आदि मधुर पदार्थके मिलानेकी चाह नहीं रहती और जिनके नेत्र कमलके खिले दलके समान कानोंको छुए लेतेहैं उनमें अंजन क्या अथवा जो मुख चन्द्रमाको लजाताहै उस पर तिलक लगाना क्या ये तो वैसेही रूपके समुद्रसे लबालब भररहीहैं इसके शरीरमें गहनेकी क्या जरूरतहै परंतु लौकिक चालहै नहीं तो फूली हुई पीत चमेलीको किसने गहने पहनायेहैं इससे आपका कहना सचहै क्योंकि जैसा आपकी सखीका नामहै वैसीही चम्पाके पुष्पके समान इसकी कोमल देहहै यहां तो राजकुमार यह बात कर रहाथा कि इतनेमें चम्पकलताने बडी मधुरताके साथ मुसकुरा कर चित्ररेखा और मोहिनीको आवाज दी कि अरी सखियो तुम

यहांआओ देखो मुझे ये पापीबडा दुःख देते हैं नईचमेलीऔरमालती को छोडकर मेरेही मुख पर बार बार गूंजताहै मैं इसको बारबार हटाती हूं परंतु यह ढीठ भौंरा नहीं मानता इससे चलो अंतेहीचलकरबैठें ऐसे कहकर चम्पकलता दूसरीक्यारीमें जाकर खड़ी होगई तब वहांभी भौंराओंके झुंडके झुंड उडने लगे.तब चम्पकलता मुसकुराकरकेअपनी सखियोंसे कहने लगी कि देखो सखी यहां भी इन बजमारेभौंराओंने मेरा पीछा न छोडा इनसे मुझे बचाओ यों कहकर मंद २ मुसक्याय कर चुप होगई इन बातोंको सुनकर राजकुमार अपने मनमें कहने लगा कि मैंने अनेक बार नगरकी स्त्रियोंको उडते भौंरोंसे कटाक्षकर के मुख मोडते देखा है परंतु सदा उनकी बनावटही पाई गई किन्तु इस चन्द्रवदनीके भोलापन करके भृकुटी मरोडने और तिरछी चितवन करनेसे तथा मंद मंद मुसक्यानेसे सीधापन और भोला-पन मालूम होताहै और सत्यही डरीसी मालूम होतीहै हे भौंराओ! बडे बडभागीहो जो इन चंचल नेत्रोंकी कोरका स्पर्श करतेहो और प्यारीके कर्णफूल आदि आभूषणों सहित कानोंके निकट जाय ऐसे गुंजारतेहो मानों मुझ विरहीका कुछ संदेशा सुनाते हो अथवा हमारी सिफारिश करतेहो जबतक ये चम्पकवदनी तुम्हारे उडानेके लिये अपने कोमल कोमल चम्पाकी डार सदृश हाथोंको हिलातीहै तब तक तुम लाल अमृत भरे होठोंसे रस लेकर खुश होकर भाग जातेहो इससे हे भँवरो! इस जगमें आपकाही जीना सफलहै क्योंकि जिन नारंगीसे कपोलोंको देखकर सैकडों बिरही मन ललचा ललचा कर रहजातेहैं और अपने दुर्भाग्यपर अफसोस करते हैं उन्हीं कपोलोंको अपनी अपनी इच्छानुसार स्पर्श करते हो ऐसे अनेक प्रकारसों अपने मनही मनमें राजकुमार भौंराओंकी प्रशंसा करने लगा और फिर अपने मनमें सोचने लगा कि अरे मूर्ख! अभी जल्दी मतकर क्योंकि किसी कविने कहाहै-.

कुंडलिया

बिना बिचारे जो करे, सो पीछे पछिताय।
काम बिगारे आपनो, जगमें होय हँसाय॥
जगमें होय हँसाय, चित्तमें चैन न आवे॥
खान पान सनमान, राग रंग मनहिं न भावे॥
कहैं गिरधर कविराय, दुःख कछु टरत न टारे॥
खटकतहै जिय माहिं, किये जो बिना बिचारे॥

इस प्रकार राजकुमार अपने दिलमें विचारकर चुप खडा रहा और उधर रानी चम्पकलता अपनी सखियोंसे फिर बोली कि हे सखियो! यहां भी भौंरा मेरा पीछा नहीं छोडते अब मैं कहां जाऊँ यों कहकर वहांसे उठकर चली और नीची निगाहसे राजकुमारको देखती हुई अपनी सखियोंसे कहनेलगी कि अरी मेरी प्यारी सखियो! इन पापी भौंराओंसे मुझे बचाओ ये बात चम्पकलताकी सुनकर सखियोंने मोरछल आदिसे बहुतेरा भौंराओंको उडाया परंतु भौंरा कब मानतेहैं किसी कविने कहाहैः—

दोहा

जहँ सुगंध भौंरा तहां, उडत रहे कर गीत।
भौंरा लोभी रूपको, करि सुगंधसों प्रीत॥
करि सुगंधसों प्रीति अति, बैठत कमलन जाय।
अस्त भये रविके भ्रमर, रहियत प्राण गमाय॥

इन भौंरोंसे दुःखित होकर चम्पकलता वहांसे उठ चलनेलगी तब राजकुमार प्यारीके ऐसे मधुर मधुर वचनोंको सुन अपनी धीरताको छोड उसके सामने आ अपने रूमालसे भौंराओंको उडानेलगा और कहने लगा कि हेप्राणप्यारी!अब तुम किसी बातकी चिन्तामतकरो मैं आपकी रक्षाकरनेकेवास्ते हाजिरहूं क्योंकि राजाका धर्म्महै कि भयभीतकी रक्षा करै ये बात राजकुमारकी सुनकर चम्पकलता लज्जाकी

मारी नीचीगर्दन करकेचम्पाके पेडकेनीचे चलीगई तब पहली सखी चित्ररेखाबोली कि हे राजकुमारी! आप अलगक्यों चलीगईहो देखो ये भी कोई राजकुमारहैं आपके बागमें आये हैं सो इनका अनादर न करना चाहिये ऐसे अनोखे पाहुनेका आदर करनाही योग्यहै ये बात चित्ररेखाकी सुनकर चम्पकलता ने इशारेसे कहा कि अच्छा इनको बुलालो तब चित्ररेखा बोली कि हे परदेशी! कुछ जलपान कर ठंडे हूजिये. तब राजकुमार बोला कि हमारा तो कलेजा आपकी मीठी मीठी बातोंके सुननेसे ही ठंढा होरहाहै तब चित्ररेखाने गलीचा बिछाया और कहने लगीं कि आओ विदेशी आप इसपर बैठिये घडी एक आरामकरो तब राजकुमार बोला कि आओ आपभी बैठो यहसुनकर सब बैठ गईं। बैठनेपर चित्ररेखा बोली कि आपकास्थान कहां है और आपका नाम क्याहै और आपकौनसेराजाके राजकुमारहो और आपका यहां किस वजहसे आना हुआ?तब राजकुमार कहने लगा कि मेरा देश ज्योतिष्पुरहै और भद्रसेन राजाका मैं बेटाहूं और रणधीरसिंह मेरा नामहै आज सबेरे ही मैं और मेरा यार दोनों कुछ फौज लेकर शिकार खेलनेको आयेथे सो हम दोनों यारोंने अपने अपने घोडे हिरनके पीछे फेंके हमारे यारका घोडा तो थककर पीछे. रहगया और हम उस हिरनके पीछे चले आये और सब फौजभी हमारी पीछे रहगई यहां आनकर हिरन इस वनमें गायब होगया तब मैं लाचार होकर लौट चला तो रास्तेमें आपका बाग नजर आया उस रास्तेकी थकावट दूर करनेके लिये मैं यहां इस बागके भीतर आया था कि आपसे मुलाकात होगई अब मैंने तो अपना सारा हाल आपके सामने कहा परंतु अब आपभी अपनी राजदुलारीका हाल कहो तब चित्ररेखा बोली कि हे राजकुमार! यह राजा जालिमसिंहकी बेटीहै राजा इनका ब्याह नहीं करताहै और इनके वास्ते एक न्यारा महल बनवा दियाहै जिसमें यह रहतीहै और यह बगीचाभी

इन्हींके लिये बनवा दियाहै इनके मकानपर भी बडे बडे बीरोंका पहराहै यह कहीं नहीं निकलने पाती हैं सिर्फ छठेमहीना एक पहरके वास्ते इस बागमें सैर करनेको आतीहैं यह सुन राजकुमार बोला कि हे चित्ररेखा ! ऐसा तुम्हारी सखीने क्या कसूर कियाहैजिससेइनका पिता इनका व्याह नहीं करते तब चित्ररेखा बोली कि हे राजकुमार ! इनके पिताके पास एक नारंगोके समान मोतीहै सो वह यह कहताहै कि जो शख्स इस मोतीका जोडा मिला देगा उसे मैं अपनी लडकी दूंगा,ये बात सुनकर बहुतसे राजकुमार यहां आये और उस मोतीकी तलाशमें गये परन्तु उनका आजतक पता न लगा कि वे कहां गायब होगये। इसीसे इनका व्याह अबतक नहीं हुआ। मैना बोली कि ऐ तोते! इधर तो चित्ररेखा और राजकुमार दोनों बतला रहेथे और उधर राजकुमारके रूपको देखकर चंपकलता मोहित होकर अपनी सखियों सेबोली कि हेसखियो !अब सायंकालका समय होआया है महल को चलिये क्योंकि पिता सुन पावेंगे तो जाने क्या करेंगे। यह कह कर रानी चम्पकलता चलनेको तैयार हुई और राजकुमारको सुनाकर और एक लम्बी आह भरकर ये पद गाने लगीः—

राग चैतीगौरी

मनभावन भई सांझ सुहाई ॥
दीपक प्रकटकमल सकुचाने, प्रफुलित कमुदिनि निस ढिग आई।
शशि प्रकाश प्रकटत तारागण, उगन लगे नभमें अकुलाई ॥
साजत सेज सजें युवती जल, पीतम हित हिये हेत बढाई।
फूले रैन फूल बागनमें, शीतल पवन चली सुखदाई ॥
क्योंकर रैन कटै बिरहिनकी, कामिन शंक उठत दुखदाई ॥ १ ॥

यह कहकरचम्पकलता चलनेको तैयार हुई तब राजकुमार उसके बिरहमें निराश होकर जमीन पर गिर पडा और लम्बी सांसलेनेलगा।

दोहा

हाय कहा बिधिना करी, मिलकर बिछुडी जान ।
ताहू पै हठ करतहैं, निकसत बैरी प्राण ॥

यह दोहा कहकर चुप होगया और लम्बी सांस भरने लगा राजकुमारकी यह दशा देखकर चम्पकलताके दिलमें भी मुहब्बतने जोश खाया परन्तु सखियोंके डरके मारे कुछ न कह सकी और अपनी दूसरी सखी मोहनीसे कहा कि हेसखी ! मैं तो अपने महलको जाती हूं और तू इस विदेशीको अतर गुलाब छिडककर होश कराये दम दिलासा देकर चली आइयो यह कहकर चम्पकलता राजकुमारके विरहमें व्याकुलहो फिर फिर कर पीछे देखती हुई अपने महलको चलीगई और यहां मोहिनीने गुलाब केवडा छिडककर राजकुमारको होश कराया तब राजकुमार घबडाकर मोहिनीसे पूछनेलगा कि हे सखी!तुम्हारी प्यारी सखी मेरे मनको चुराके किधरगईहै यह कहकर सिडीकी तरह इधर उधर दौडने लगा और ये शेर पढने लगाः—

शैर

इश्कमें प्यारीके मैं जंगल भटकता जाऊँगा ।
दौलतो हशमतसे मैं दामन झपकता जाऊँगा ॥
गरचे नहीं मालूमहै मुझको मकानें दिलरुवा ।
रास्तेमें जो मिले उससे फटकता जाऊँगा ॥
जीस्तमें गरचे न होवे दीखना महबूबका ।
द्वार पर मनसूरसा सूलीफटकतापै जाऊँगा ॥
दिलके टुकडे होगये और जान लब पर आगई ।
गममें उस गुलरूके शिर अपना पटकता जाऊँगा ॥

ये शैर पढकर फिर एक पेडके नीचे गिरपडा और बडी आह भर कर कहनेलगा कि हे प्राणप्यारी ! मुझे अकेला छोडकर कहां चलीगई हे प्यारी चम्पकलता! क्या यह बगीचा आपने इसी बिरहके वास्ते

बनाया था कि जिसमें आनकर मुझ विचारे गरीबकी यह गति भई अरे पापी प्राण तुम बडे पापीहो जो प्यारीके बिछुडने पर इस देहसे नहीं निकलते हो हाय दैव तू बडा निर्दयीहै तुझे ऐसी विपत मुझको देना लाजिम नहीं था अरे मन तू बडापापीहै तू प्राणप्यारीके जानेके समय ऐसा बेचेत होगया कि उसकी तिरछी तिरछी चितवन और मंद मंद मुसक्यान भी न देखी और हे पापी प्राण ! तुम बडे कठोरहो देखो तुम्हारे पापमें प्राणप्यारी चली गई और तुम उसके साथ नहीं गये हाय इश्क तू बडा बुरा रोगहै परमेश्वर करे ये रोग किसीको न लगे जिस जिस के ये रोग लगाहैउन्होंने अपना खानपान सब बिसरादियाहै इसीसे यह कहावत चली आतीहै:—

दोहा

इश्क करैं सो बावरे, कर छोडैं सो कूर ।
इश्क चिमनमें जायके, छानी जगकी धूर ॥
मजनूने कीया इशक, उस लैलीके सात ।
राजपाट सब तज दिया, खाक रमाई गात ॥
फँसा हीरके इश्कमें, रांझेसा महबूब ।
तख्त शहाना तज दिया, खाक उडाई खूब ॥
फँसा इश्कके फन्दमें, जो कोइ चतुर सुजान ।
आखिरको बदनामहो, खोई अपनी जान ॥

इस प्रकार कहकर और बडी आह भरकर कहने लगा कि, अरे मुहब्बत तेरा बुरा हो तैंने मुझे राजपाट करते हुए किस जुल्ममें फँसा दिया है हे प्राणप्यारी चम्पावती ! दर्शन दे नहीं तो मेरे जीमें ऐसा आता है कि अपना गला घोट डालूं हाय मैं कैसा कम्बख्त हूं कि मैं अपनी प्राणप्यारी चम्पकबदनी चम्पकलताका दर्शन नहीं पाता अरे वृक्षो ! कहीं तुमनेही चम्पकलता मेरे मनके हरनेवाली देखी होय तो कहो आज आपके भी मनमाने दाँव पूरे होयगे, जिससे आप

मेरी प्राणप्यारीको नहीं बताते और कोयल कमबख्तों तुम इस पेड पर बैठकर मीठे मीठे शब्दोंको सुना मेरा कलेजा क्यों चाक करती हो ? हाय प्राणप्यारी ! देखो आपके सामने ये बागके तोता मैना आदि पक्षीगण कैसे चुपके बैठे थे और आपके बिछुडनेसे अब मुझे बलहीन जानकर अपनी बोली गोलीके समान मारते हैं. हे प्राण-प्यारी ! जैसे मैंने आपकी भौंरोंसे रक्षाकरी थी तैसेही आप मेरी इन पक्षीगणोंसे रक्षा करो. हे चम्पकवदनी! अब तेरा वह कोमल स्वभाव कहां गया और किसके कहनेमें आनकर ऐसी कठोर होगई कि मुझ बटोहीको अपना रूपरस नहीं पिलाती मैना बोली कि हे तोता ! इस-प्रकार अनेकों तरहके विलाप राजकुमार करनेलगा मोहिनी सखी राजकुमारकी यह दशा देखकर आँखोंमें आंसू भरकर कहने लगीहे राजकुमार! धीरज धरो इतने क्यों अधीर होतेहो किसी दिन परमेश्वर कृपा करेगा तो फिर भी तुम्हारा मिलाप होजायगा परंतु सब काम धीरजसे होते हैं आप अपने मनमें धीरज बांधो यह सुनकर राजकुमार बोला कि मोहिनी मैं किसतरह धीरज बांधूं मुझे तो उसकी भोली भोली चितवन मंद मंद मुसक्यान मोतीसे दशनोंकी हँसन व मृगकीसी चितवन छेदे डालतीहै-यों कहकर राजकुमार ये कवित्त पढनेलगाः-

सवैया

नैन विशाल मनोहर सूरत मूरत याकी लगे मन भाई ।
बैनन माहिं सुधा बर्षे अँग अंगन छाय रही तरुणाई ॥
बेसर भाल बिराजत माल सुमान मरे मन लेत चुराई ।
रंगी कहै छबि आन बसी उर भूलत नाहिन क्यों हू भुलाई ॥
मंद गयन्दकी चाल चले कटि किंकनी नेबरकी धुन बाजे ।
मोतीके हारनमें हियरा हुलसात हुलास विराजत साजे ॥
सारी लसें अंगकोमलमें सुख अंगकी सारी है यों छबि छाजै ।
पूरन चन्द पियूष मनों करिकै परिवेषकी रेख बिराजै ॥

दोहा

लाल अधर अंजन दृगन, कर मेहँदी छबि देत।
श्याम बिन्द मस्तक लसे, कामीको मन लेत॥
हँसन दशनकी फँसन लखि, मुख भँवरनकी भीर।
ऐसी नार निहारके, को न तजत उर धीर॥

सवैया

हाथमें हाथ दिये तुम्हरे वह फूल रही जिम कुन्दकली।
मतिराम सुवासते आवत नारी निवारत भौंरनकी अवली॥
लखके मम लोचनसें सकुची कह्यो चाहत आपन ओट लली।
चित चोर लिये मुखमोर त्रिया मुख मारे कछू मुसिक्याय चली।३

ये सवैया राजकुमारकी सुनकर मोहिनीनें जान लिया कि मनमें ये राजकुमार अपने तन मनसे हमारी प्यारी सखीके ऊपर मोहित हुआहै और हमारी राजदुलारीके हृदयमेंभी इसकी मोहिनी सूरत गईहै और इन दोनोंकी जोडी भी परमेश्वरनें ठीकही बनाई है परन्तु उसके बापके सामने इनका मनोरथ सुफल होना मुश्किलहै ये बात विचारकर दम दिलासा दे राजकुमारसे कहने लगी कि हे राजकुमार! आप इस प्रेमके फन्दमें मत पडो अपने मनसे इस ख्यालको भुलाओ और संतोष करके अपने घरको जाओ ये बात मोहिनी सखीकी सुनकर राजकुमार ये कवित्त पढने लगाः-

वह चितवन वह सुंदर कपोल द्युति वह दशनन छबि बिज्जुकी धरतहै। वह होठ लाली वह नासिका सकोरनमें वह हावभावके सुकौतुक करतहै॥ कहें मनीराम छबि बरण सके को वह रतिके सरस मन मुनिको हरतहै। वह मुसिक्यान युग भौंहन कमान द्युति वह बतरान ना बिसारी ना बिसरति है॥

सवैया

गोरो सो रंग उमंग भरो चित अंग अनंगको मंत्र जगायो।
काजर रेख खुली दृगमें दोउ भौंहन काम कमान चढायो॥
आवन बोलनि डोलनि ताकी चढी चितमें अति चोप बढायो।
सुन्दर रूप सो नैननमें बस्यो भूलत नाहिन क्योंहू भुलायो॥

दोहा

शशि सम मुखदृगकुमुदसे, कर पद कमल समान।
चम्पा सो तन देखके, विकल भये मम प्रान॥
कहा करूं कैसीकरूं, मानत नाहीं नैन।
प्यारीके दर्शन बिना, तलफतहूँ दिनरैन॥ १॥

ये विरहके भरे बचन राजकुमारके सुनकर मोहिनीने मनमें जान लिया कि चम्पकलताके मिले बिना इसको किसी तहरसे चैन नहीं पडेगा इसलिये राजकुमारसे कहनेलगी कि हे राजकुमार! आप धीर ज धरो आपकी सारी व्यथा दूर करनेका उपाय करूंगी तुम विश्वास रक्खो तब राजकुमार उस मोहिनीके चरणोंमें गिरपडा और हाथ जोडकर कहने लगा कि, हे मोहिनी! जो तू मुझे प्यारीसे मिलावेगी तो मुझे प्राणदान देगी और मैं सारी उम्र तेरा ताबेदार रहूंगा. तब मोहिनी कहनेलगी कि, हे राजकुमार! अब मैं महलमें जाकर अपनी सखीसे तुम्हारे विरहका सब हाल कहूंगी अब तुम किसी बात की चिन्ता मत करो. यों कहकर मोहिनी चलनेको तैयार हुई तब राजकुमार बोला कि हे मोहिनी! जो तुम मुझ विरहीको अकेला छोडकर जातीहो तो एक पत्र मैं आपको लिखकर देताहूं सो तुम उस पत्रको अपनी प्यारीको देदेना तब मोहिनी बोली बहुत अच्छा तब राजकुमारने यह सवैया लिखकर दियाः—

मेरे हू नैन न नेम लियो यह तेरे निहार बिना न रहूंगो।
कोऊ कछू कहियों हंसियो किन मैं तो सनेह सदा निबहूंगो॥

तासों लग्यो मन मोहन होयके काहूंसों ये बतियां न कहूंगो ।
फेर कहूं बनिहै मिलवो तब मोद महा उर मांहि लहूंगो ॥

सवैया

क्योंहूं नहीं बिसरे निशि वासर मंद हँसी मुख चन्द उजारी ।
त्योंही दियो अति नेहसें देहकी दीप कला सम दीखत न्यारी ॥
तेरो हि रूप बस्यौ हिय भीतर आवत नारी न और अंध्यारी ।
नैनन बैनन मैं हूं तुही मोहि लाग रही अब प्राण पियारी ॥

दोहा

सपनेहू कीयो नहीं, मैं तेरो अपराध ।
कौन चूक उर धारके, गई मौनको साध ॥

ये पत्र लिखकर मोहिनीको दिया तब मोहिनी तो उस पत्रको लेकर चलीगई और जो राजकुमार उस बागमें बावलेकी तरह घूमने लगा और प्यारीके शोकमें मग्न होकर हा प्यारी! २पुकारनेलगा इसकी आवाज सुनकर बागकी मालिन आई और उसे देखकर कहने लगी कि,अरे तू सिडी साकौनहै ? जो संध्याके समय इस राजाके जनाने बागमें घुस आया है तेरी यही खैरहै कि तू इस बागसे निकल जा नहीं तो मारे कोडोंके तेरी खाल उडाऊंगी.ये बात मालिनकी सुनकर राजकुमार एक आह भरकर कहने लगा कि हे ईश्वर ! जिस बागको हम आरामका भवन समझते थे वह तो केवल आफतका समुद्र नजर आया और जो जो वृक्ष प्यारी चम्पकलताके छूनेसे अपना धन्य भाग जानकर खिले जाते थे वे अब मुझको बन डराते हैं अरे निर्दयीबाग ! क्या तुम्हें मुझ ऐसे गरीब विरहियोंके प्राण लेनेके वास्ते किसी कारीगरने बनाया था?अरे ओ बेपीर कारीगर! तेरी इस कारीगरी को धिक्कार है क्यों कि, न तो तू ऐसा बाग बनाता और न मेरे प्राणोंके हरनेवाली प्यारी चम्पकलता इस बागकी सैर

करनेको आती और न मेरे प्राण इश्कके जालमें फँसते.अरे कम्बख्त कारीगर!कहीं तैने इन क्यारियोंमें ही तो जाल नहीं बिछायाहै यों कहता हुआ बागसे बाहर आया और चम्पकलताके फिकरमें घूमने लगा इतनेमें रात ज्यादा होगई तो थककर एक पेडके नीचे बैठगया और चन्द्रमाको देखकर अपनी प्यारी चन्द्रमुखी चम्पकलताकी याद करके यह दोहा पढने लगाः—

दोहा

अहो शशी तुमसे अधिक, मम प्यारीको गात ।
ताहि देख सरमाय तुम, निशि दिन छिप छिप जात ॥
जब प्यारी महलन गई, तब तुम प्रगटे आय ।
मो बिरहीपै करतहो, दूनो जोर जताय ॥

मैना बोली ऐ तोते ! इसप्रकार बिरहमें व्याकुल तडफते तडफते राजकुमारको सारी रात बीती फिर सुबह होतेही इधर उधर घूमने लगा इतनेहीमें उसका यारभी सब सिपाहियोंको साथ लेकर ढूँढता हुआ उसी बागके पास आ निकला वह राजकुमारका यह हाल देख कर कहने लगा कि हे मित्र! तुम्हारा ये क्या हाल हुआ घोडा आपका कहां गया हम तुमको देखते देखते हैरान होगये अब बड़ी मुशकील-से आपका पता लगाहै हे मित्र!अपने दिलका हाल मुझसे कहो कि आप उदास क्यों होरहे हो ? तब राजकुमार ये शेर पढने लगाः—

न बोलो कोई मुझसे इस दम भला ।
गिरफ्तारहूं इश्कमें मुबतिला ॥
मेरी जान मुझसे बिछुट जो गई ।
लगा नैन मुझसे उछट जो गई ॥
बिना देखे मुझसे नहीं चैन है ।
गई मुझसो जबसे लडा नैन है ॥
तडफताहूं ज्यों मीन जल बिन मरे ।

न उसके बिना दिल ये धीरज धरे ॥
फँसाया मेरा दिल दिखाके अँदा ।
उसी वक्त से तो हुआ मैं फिदा ॥

इस तरह इस शैरको पढकर खामोश होगया और आहकी सांस भरनेलगा तब राजकुमारका यहहाल देखकर अपने मनमें जाना कि ये मूर्ख किसी स्त्रीपर आशक हुआहै यह बात जानकर राजकुमारसे कहने लगा कि हे मित्र! तुम राजकुमार होकर ऐसे स्त्रियोंपर अधीर होतेहो आप सारा हाल मुझसे कहिये कि वह स्त्री कौनसीहै जिसपर आप मोहित होरहेहो, देखो परमेश्वरने आपके घरमें एक चन्द्रकीर्ति रानी ऐसी दी है कि,उसके बराबर इस दुनियांमें दूसरी स्त्री नहीं है फिर आप ऐसी स्त्रीको छोडकर दूसरी औरतपर मोहित होकर बेवश हुए जातेहो यह बात अच्छी नहीं क्योंकि राजोंका धर्म्म ये नहीं है आपका धर्म्म साहस और धीरता धारणकरनेका है ये बात मित्रकी सुनकर राजकुमार ये दोहा कहने लगाः—

दोहा

धर्म्म धीर तबही तलक, जब तक लखी न नार ।
नार नैनके मिलत ही ,साहस देत बिसार ॥
जबतक तन लागे नहीं, नारी दृगनके बान ।
तबही तक वह बन रह्यो, पण्डित चतुर सुजान ॥
जबतक तन लागे नहीं, चतुर नार दृग तीर ।
तबही तक जाने नहीं, बिरही मनकी पीर ॥

हे मित्र! आपभी तभीतक चतुरहो और बीर हो जबतक उस चम्पकलताके मदभरे नैननकी कोर आपके कलेजेतक नहीं पहुँचतीहै।

दोहा

नारी नैनकी मारते, बचे न कोई बीर ।
बडे बडे जोधा गिरे, लगत नार दृग तीर ॥

सो हे मित्र ! जो आपके हृदयमें उसके नैनोंकी कोर पहुँच जाती तो आपभी मुझसे ज्यादा सिडी होकर जंगलोंमें भटकते फिरते तब वजीरजादा बोला कि हे मित्र! ऐसी क्या इन्द्रकी अप्सरा थी यादेवकन्या थी जिसको देखकर तुम ऐसे अधीर होगयेहो तब राजकुमार बोला कि यार अब मैं तुमसे उसकी देहका वर्णन करताहूं तुम सुनो।

दोहा

गोरा तन शशि सम सुघड, नवल वैस वह बाल ।
दृग खंजन अंजनभरे, कछुक गौर कछु लाल ॥
कुच कुमकुम मन लसत अति, काम केलिके पुंज ।
मृग मदके लवलेंसते, करत भँवर बहु गुंज ॥
कमलकली सम कर ललित, जंघ केलि सम देख ।
उदर नाभि गंभीर अति, परी त्रवलिका रेख ॥
ललित कपोल सुगोल युग, कछुक अरुणता धार ॥
बिरही के मन बस करन, राखो नार समार ॥
कुंदकली सम अधर युग, रही सु अति छबि छाय ।
सुघर दशन को हसन लखि, कामी काम जगाय ॥
भृकुटी धनु सुर राजको, ता बिच बेंदी श्याम ।
ताहि लखत को बीर अस, जिहि न सतावे काम ॥
सजी पीति सारी सरस, जुगल जंग कह घेर ।
सो जनु कंचन खम्भसों, मिली मालती फेर ॥
पहिर रही मणि किंकणी, छीन सुकटि तट लाय ।
सो सिंगार मंडप बिधी, बंदन माल सहाय ॥
गोरे कर कारी चुरी, चुन पहिराई ताहि ।
मानों नागन लिपट रहि, चन्दन विरवा आय ॥
कुच उतंग कंचुक कसी, करत भँवर गुंजार ।
मानों है बुरजी सरस, रची आप करतार ॥

किस्सा

सो हे मित्र ! मैं उसके अंगका कहां तक वर्णन करूं उसका रूप केवल देखनेसे मालूम होताहै तब वजीरजादेने कहा कि हे मित्र ! अब आपके कहनेसे हमने जान लिया कि वह स्त्री नहीं थी कोई देवकन्याथी सो आपको छलनेके वास्ते आई थी आप उसके रूपके जाल में फँसकर छलको नहीं पहँचान सके खैर ये भी अच्छा हुआ कि वह आपको उडाकर न लेगई नहीं तो हम सारी मुल्ककी राख छानते तौ भी आपकी शकल नहीं दीखती. ये बात वजीरजादेकी सुनकर राजकुमार बोला कि हे मित्र ! वह देवकन्या नहीं थी वह नागपुरके राजा जालिमसिंहकी बेटीहै और उस राजाके पास एक नारंगीके समान मोतीहै सो उस राजाका यह प्रण है कि जो कोई उस मोतीका जोडा मिला देगा उसीको मैं अपनी कन्या ब्याह दूंगा उस मोतीकी तलाशमें बहुतसे राजकुमार गयेहैं परंतु उनका पता अबतक नहीं लगाहै जबसे ये बात मैंने उसकी सहेलियोंसे सुनीहै तबसे मुझे बडी बेकली छाई. क्योंकि न तो वह मोती आवेगा और न ये चम्पकलता हाथ लगेगी. ये बात राजकुमारकी सुनकर वजीरजादेने कहा कि हे मित्र ! जो आपका मन इसी स्त्रीसे आसक्त है तो अब हम उसीके लानेका उपाय करेंगे आप अपने मनमें धीरज बांधो यह कहकर सब साथके सिपाहियोंको तो अपने शहरको रवाने किये और आप दोनों यार वहांसे चल कर उसी बागमें आये सो इनको देखते ही मालिन ललकारके बोली चले जाओ यहां क्यों आयेहो! तब वजीरजादेने पांच अशर्फी अपनी जेबसे निकालकर मालिनको दीं और कहा कि हमको एकमहीने इस बागमें रहने देगी तो तुझे और भी खुश करेंगे ये बात सुनकर और अशर्फियोंको लेकर मालिन बहुत खुश हुई और उनको लेजाकर अपने मकानमें टिकाया। मैना बोली कि ऐ तोते ! अब राजकुमारके हाल

की कलम बन्दकरके रानी चम्पकलताका हाल कहतीहूं किजबसे राजकुमारके वियोगमें ऐसी बावली हुईकि खाना पीनासोना बैठना उठना हँसना बोलना सब तज दिया और लम्बी लम्बी सांस लेकर आह भरने लगी और नेत्रोंसे नाले बहाने लगी इसका यह हाल देखकर चित्ररेखाबोली कि हे प्राणप्यारी! बिनाजाने पहचाने विदेशी आदमी पर कोई भी ऐसी मोहित होतीहै? न जाने वह शख्स कौनहै आपको ऐसा खेद करना न चाहिये ये बात चित्ररेखाकी सुनकर चम्पकलताने यह कवित्त पढाः-

सवैया

जादिनसे निरख्यौं बनमें मन मेरो लग्यो उनहीमें रहेहै ।
खान तजो अरु पान तजो सनमान तजो मन येही चहे है॥ १॥
नैनन बान परी जु यही बिन देखे उन्हें कल नाहिं लहे है ।
नेह कहा लगके जु छुटे सखी नेह वही जो सदा निवहेहै ॥ २ ॥

कवित्त

तोसों मैं दुराई नाहि कबहूं हियेकी बात अबहूं दुराऊँ कैसे सांची कर मानिये । नेकही चितेके मेरे चित्तको चुराय गयो रूपकी निकाई वाकी कहांलो बखानिये ॥ देखे विन प्यारेके दशा है यह मेरी ऐसी कहांलों बखानूं अब सोई पहिचानिये । लगन नईकी भई आन अकुलान आली गई कुल कान मेरे बीर पीर छाइये ॥

सो हे सखी! जबसे मैंने वह बांकी अदावाला कामदेवके समान राजकुमार अपने नैनोंसे निहाराहै तबहीसे ये नैन उसकी मोहनीको भूलते नहीं रातदिन उसीके रूपमें छके रहतेहैं किसी कविने कहाहैः-

दोहा

नैना लोभी रूपके, फँसे प्रेमके फन्द ।
लागे पै छूटें नहीं, करैं कोट छल छन्द ॥

हे सखी ! अब मुझे बिन देखे राजकुमारके चैन नहीं पडता यह कहकर चम्पकलताने ये कवित्त कहाः–

सवैया

दिन रैन नहीं मोहि चैन सखी बिन देखे पियाके मैं मारी मरूंगी ।
नैनन धार बहैं निस बासर रोके रुके नहीं कैसी करूंगी ॥
कामके बान लगे तनमें बिरहा की मैं आगमें नित्त जरूंगी ।
रंगी कहे बिध कौन सखी पियाको निज अंकमें लाय भरूंगी ॥

इतनी बात सुनके चित्ररेखा बोली कि हे प्यारी ! तुम बडी नादान हो कि बिना जान पहँचानके उस परदेशी पर मोहित होगईहो अगर इस बातको कोई स्त्री पुरुष सुनेगा तो क्या कहेगा कि ऐसे राजाकी बेटी चलते फिरते विदेशी मनुष्यों पर मोहित होतीहै यदि यह हाल आपके पिताको मालूम होगया तो हम तुम सब खराबीमें आवेंगी इससे आप मेरा कहना मानकर इस रंजको आपके मनसे दूर करदेऊं देखो आपकी आजहीमें कैसी गत होगई हैः–

कवित्त

बिरहमें कुमारके विकल बिलखात आप बौरीसी फिरत दृष्टि अतिशय मलानकी । चंडिदत्त आहके धरेहै पग इत उतकूं घूमके गिरीही ज्यों धरी देह आनकी ॥ सांस ना भरत कै सि-थलसी दिखाई देत होनी ना मिटाये मिटे बिध बलवानकी । अतर लपेटी काल फूलन गुही मेंढी आज धूरमें लपेटी चोटी गुही मुकतानकी ॥

हे प्यारी ! चम्पकलता ! देखो आपको रंग रूप सब कैसो बिगड गयोहै याते आप मेरो कह्यो मान या सोचको त्याग देओ इस बातको सुन चम्पकलता कहनेलगीः–

दोहा–रूप रंग सबही गयो, गयो खान अरु पान ।
परदेशीकी प्रीतिमें, बिकल रहैं मम प्रान ॥

इस दोहेको पढकर चुप होगई और लंबी साँस लेने लगी इतनमें मोहिनी आई सो मोहिनीको देखकर चम्पकलता कहने लगी कि हे प्राणप्यारी मोहिनी! कहो राजकुमार मेरे मनको चुराके चला गया या उसी बागमेंहै इसबातको सुनकर मोहिनी आंखोंमें आंसुभरकर कहने लगी कि हे राजकुमारी! मैं राजकुमारका हाल तुमसे क्या कहूं कहने-से मेरा कलेजा फटताहै परंतु आपकेकहनेसे मैं उसका हालकहतीहूं:-

सवैया

जबसों तुम बाग तजो तबसों वह बावरो होय पुकारतहै ।
नहीं धारत धीर तुमारे बिना लहि स्वांस उसास बिसारतहै ॥
चहुँ ओर फिरे बनमें भटक्यो बिरहा नहिं तोर सहारतहै ।
तुम नैन मिले बिन जीवे नहीं वह सीस धरानसों मारतहै ॥

कवित्त

खानकी समा रहै न पानकी सम्हार वाय फिरत दिवानो ऐसो बन बन में धायके। दौर दौर शेर करै नामलै तिहारो सखी बार बार गिरत भूमि अति ही भैरायके॥ रंगीलाल चैनहै न बाय घडी एक छिन बिरहके वियोगमें रह्यो सरसायके । जीबेकी न आस स्वास स्वासमें उसास लेत नाम तेरो लैके गिरै मूर्च्छासी खायके ॥

हे प्यारी! उसकी व्यथा मैं तुमसे कहांतक कहूं मैंने उसको बहुतेरा समझाया परंतु उसकी समझमें एक न आई जब मैं वहांसे आपके पास आने लगी तब उसने यह पत्र मुझको लिखकर दिया और ये कहा कि यह पत्र हमारी प्यारी चम्पकलताको देदेना यह कहकर उसने वह पत्र दिया जिसको पढकर चम्पकलता मूर्च्छा खाकर जमीनमें गिरपडी थोडी देरके बाद होश आया तब यह दोहा कहने लगी:-

दोहा

हाय दई अति निरदई, मिलकर बिछुरन कीन ।
पिया बिना तलफत फिरूं, जैसे जल बिन मीन ॥ १ ॥

प्यारेके देखे बिना, बिरह बिथाको जोर।
कौन सुनै कासों कहूं, डारे मदन मरोर ॥ २ ॥

इसतरह कहकर फिर मोहिनीसे कहनेलगी कि, हे सखी! अब तू यह तो बता कि वह मेरे प्राणके हरनेवाला वहीं है या कहीं चला-गया तब मोहिनीने जबाब दिया कि मैं तो उसको वहीं छोड आईथी परंतु पीछेकी मुझे नहीं मालूम तब चम्पकलता बोली कि हे मोहिनी! अब प्रातःकालका वक्त होआयाहै सो तू मेरा पत्र लेकर उसी जगह जा और उसको वहां तलाश करके देदीजो और उसको लेजाकर बागकी मालिनसे कहना कि उसे बडी खातिरदारीसे रक्खें यह कहकर उस खतमें यह गजल लिखदीः—

गजल—वाइसे वहशत हुई वे एतनाई आपकी।
तिनके चुनवाने लगी हमसे जुदाई आपकी ॥
आपकी जाने बला क्योंकर कटी फुरकतकी रात।
दिल तडफता रहगया जब याद आई आपकी ॥
आपकी बातों का रहताहै मुझे हरदम खयाल।
जो कोई बोला सदा कानोंमें आई आपकी ॥
करवटें शब भर लिया करतीहूं नींद आती नहीं।
रातभर बेताब रखतीहै जुदाई आपकी ॥

यह खत लिखकर चम्पकलताने मोहिनीको दिया तब मोहनी वहांसे रुखसतहोकर बागमें आई और अपनी प्यारीका सारा हाल राजकुमारसे कहा और वह खतभी दिया तबराजकुमारने अपनी छा-तीसे लगाकर साराहाल पढकर अपने यारको सुनाया तबवजीरजादा कहने लगा कि हे मित्र! अब घबडानेकी कोई बात नहीं है क्योंकि चम्पकलताके भी बदनमें आपकी मुहब्बतने थाना गाड दियाहै इससे अब आपकी मुराद पुरी होनेमें कुछ शक नहीं परंतु आपभी कुछ इस खतका जबाब अपनी प्यारीको लिखो तब राजकुमारने ये गजल लिखदीः—

गजल

नीम बिसमिल छोडनेसे तुझको हासिल क्या हुआ ॥
आज तेरा ए परीरू तेग कातिल क्या हुआ ॥
ए फलक इस जुल्मसे क्या बढगया तेरा उरूज ॥
खाकमें हमको मिलाया तुझको हासिल क्या हुआ ॥
तेरे गममें रोते रोते घुलगया सरता कदम ॥
रात भरमें हाल मेरा शम अ महफिल क्या हुआ ॥
गौहर मिटाई आबरू इस इश्कने ॥
छोड बैठे सबको हम दिल तुमपै मा यल क्या हुआ ॥

यह पत्र देकर मोहिनीसे राजकुमारने कहा कि तुम अपनी सखीसे कहना कि आप अपने बीमारकी दवा जल्द करें बरन् इस बीमारका जीना मुशकिलहै मैना बोली कि हे तोते ! यहां तो राजकुमार मोहिनीको समझारहा था अब मैं चम्पकलताका हाल फिर सुनातीहूं तू कान लगाकर सुन दूसरे रोज सबेरा होतेही वसन्तका रोज जानकर औरभी बराबरकीसखियां आईं और चम्पकलताको उदास सोती हुई देखकर कहनेलगीं कि हे प्यारी! आज देखो ऋतुराजमहाराज वसंतका उत्सव शहरके सब नर नार मनातेहैं और आप उदास बैठीहो आपकी अलकें बिखर रही हैं सब मुख पीला पड़रहाहै सो इसका क्या सबब है हे सखी! देखो आज वसंत महाराजकी कैसी शोभा होरहीहैः--

कवित्त

कोकिला कलापि कूंजे बागनमें ठौर ठौर बीर ऋतुराजको समाज सरस्यौ परै। भनति किशोर जोर अम्बन कदम्बनते मंजु मंजुरीनते सुगंध निकस्यौ परे ॥ काम विथा मेटनको सुखद समेटनको मेटनको प्रीतमको प्राण तरस्यौ परै। अवनीते अंबरते दुमन दिगम्बरते बाहरते बागते वसंत वरस्यौ करै ॥

हे प्राणप्यारी ! ऐसी सुखद ऋतुसे उदास होनेका क्या कारणहै

आप तो सदा आजके दिन वसंत महाराजका उत्सव बडी धूमधामसे मनातीथीं आज आपको क्या सोच छायाहै---

सवैया

पीरो भयो तनपै बरसौ सब अंग अनंग सिंगार बिगारे ।
रंगी कहे दृग आल भये बरषे तिनसों जल मानो पनारे ॥
खेद बिना मुख चन्द मलीन भयो द्युत हीन न बोल उचारे ।
कोन उठी तन पीर सखी कर नीचो मुखे नख अवनि विदारे ॥

यह वचन सखियोंका सुन चम्पकलता बोली अरी सखियो । आज मेरा मन ठिकाने नहीं है इसीसे मुझको बसंत का दिन आज अच्छा नहीं लगताहै यों कहकर ये कवित्त पढनेलगीः--

सवैया

फूलै पलास कदम्बन टेसू है अम्बर डारन छावन देरी ।
री मदमत्त मधूकनि पुंज निकुंजनि शोर मचावन देरी ॥
क्यों सहिहै सुकुमार किशोरी अरी कल कोकिल गावन देरी ।
देखतहीं करैं प्रान पयानरी वैरी वसंतहि आवन देरी ॥

यह कहकर आह भरकर राजकुमारके विरहमें मगनहो यह वसंत गानेलगीः--

आयो वसंत आई बहार ।
मेरे करत करेजेको छार छार ॥
यह ऋतु बसंत नहीं सही जात ।
मेरे बदन दई चिनगारी लाय ।
रह्यो बिरह सखी सब तनमें छाय ॥
अंसुआ जल बरसे धार धार ॥ आयो० ॥ १ ॥
फूले बन टेसू बिबिध फूल ।
लखि लखि कर उठत मेरे उरमें शूल ॥
सखी ऋतु बसंत बिरहाको मूल ।

मोहि जान बिरहना करत बार।
मोरे करेजाको करत छार छार ॥
इत बैरन कोयल करत कूक।
सुन २ के हृदय बिच उठत हूक ॥
दियो बिरह आग तनसबरी फूँक।
सब तनको जरावै बार बार।
मोरे करत करेजाको छार छार ॥
आयो पिय प्यारो मेरे पास।
है रंगीलालको मन हुलास ॥
प्रभु अब तो करौ पूरन ये आस।
कब मिले हमारो हमसे यार।
मेरे करेजाको करत छार छार ॥

दोहा—ऋतु वसंत पावक सदृश, जरत बिरहनी अंग।
ये ऋतु उन ही कों भला, जिनके प्यारे संग ॥

यह कह फिर चुप होगई इतनेमें मोहिनीभी राजकुमारका संदेशा लेकर आगई मोहिनीकी सुरत देख चम्पकलता बोली कि मेरी प्यारी सखी मोहिनी! कह क्या खबर लाई, तब मोहिनीने राजकुमारकाखत चम्पकलताको दिया और सारा हाल कहसुनाया चम्पकलता उस खतको पढकर अपने मनमें कहने लगी कि खैर अभी गया तो नहीं है ईश्वरने चाहा तो किसी न किसी दिन हमारी और उनकी मुराद पूरी हो जायगी इस बातको सोचकर चुप होगई तब सब सखियोंने जान लिया कि चम्पकलता किसीके बिरहमें गिरफ्तारहै ये जानकर सब अपने अपने घरको चली गई मैंना बोली कि ऐ तोते! इसी तरह राजकुमार और चम्पकलताको बिरहमें कई दिन बीते तब एक दिन अपनी बेटीको बीमार सुनकर चम्पकलताकी मा आई और उसकी बुरी हालत देखकर कहने लगी:—

दोहा

ऐ बेटी चन्दामुखी, क्या दुख व्यापा तोहिं ।
जो तेरे मनमें विथा, कह समझावो मोहिं ॥

ये बचन माताका सुनकर चम्पकलता बोलीः—

दोहा

हाथ जोर बिनती करूं, सुन माता चित लाय ।
बिरह विथा तनमें घुसी, मोपे सही न जाय ॥

ये बचन चम्पकलताका सुनकर माता बोलीः—

कवित्त

चल्यौ नाहिं जात अंग भीजौं खेद मांझ पुलकित जात
गात तेरौ समझी न बात है । सीत विन एरी तेरौ तन
सब हीत जाय आननको रंग कुछ और भयो जात है ॥
आंसू चल्यो जात जात तोहि गातकी संभार नाय तेरी
दशा देख मेरो हियरो हिरातहै । कौनसे बियोग आज
मन तेरे चन्द्रमुखी जासो भयो पीरो तेरो अंग दरसातहै ॥

ये बचन माताका सुनकर चम्पकलता कहनेलगीः—

सवैया

जादिनसे निरख्यो वह रूप स्वरूप भयो सुमलीन महारी ।
देखे विना कल नाय परे परि प्रेमके फन्दमें आन मलारी ॥
जोबन जोर मरोर करै करै काम बिथा सो सह्यौ नहिं जारी ।
बेग उपाय करौ जननी नहिं प्राणन घात करूं बिनवारी ॥

ये बचन चम्पकलताका सुनकर माता कहने लगी कि हे बेटी ! आज तैंने क्या गजबकी बात सुनाई इस तेरी बातको सुनकर लोग लुगाई क्या कहेंगे और कदाचित् यह हाल तेरा बाप सुन पावैगा तो मुझको और तुझको जानसे मार डालेगा राजघरोंकी बेटी होकर ऐसी कुमति बिचारती हैं इस बातको सुनकर चम्पकलता बोलीः—

सवैया

आग लगौ सब लाजमें आज कहा मोहिं साज समाज सगेते ।
मारत बान कमानसों तान महा यह कामहै अंग जगेते ॥
नाहिं दया तुमको है कछू यह बैस चलीयोंही दुःख दगेते ।
लाज रहो चाहे जाओ भट अब प्राण बचे प्रिय कंठ लगेते ॥

ऐसी कडी कडी बातें चम्पकलताकी सुनकर उसकी माताने अलग जाकर चित्ररेखा और मोहनीसे सारा हाल पूछा तब चित्ररेखा बोली कि हे महारानी! आपके हुक्मके बमूजिब हमचम्पकलताके साथ बागकी सैर करनेको गईथी सो उस दिन एक राजकुमार नौजवान अति स्वरूपवान् इसने देखा और उसकी तथा इनकी नजर मिली तबसे एक दूसरेपर ऐसे मोहित हुए हैं कि जिसका बयान मैं कर नहीं सक्ती जिस वक्तसे इनकी उनकी आखें मिली हैं तभीसे वह राजकुमार तो इनके बिरहमें बावलासा होकर चारों तरफ घूमता डोलता है और इनके ऊपर अपने प्राण न्योछावर करनेको मुस्तैदहै और इन्होंने भी उसी दिनसे खान पान तज दियाहै आठ प्रहर चौंसठ घडी रो रोकर काटती हैं हमने भी इनको बहुतेरा समझाया है परंतु इनोंने एक भी न मानी और जब हमने बहुत कही तो हमसे कहने लगीं कि या तो मेरी शादी इस राजकुमारके साथ करादो नहीं तो मैं जहर खाकर सोरहूंगी । हे माता ! आप भी जानती हो कि इनकी उम्र सोलह वर्षकी होती आई जोबनमें भरपूर भई और आप इनका ब्याह नहीं करतीहैं अब आपको इनका बिवाह कर देना चाहिये क्योंकि आप जानती होकि इस देहमें काम बडा बलवानहै और इस अवस्थाको पायकर कामदेव किसको नहीं सताताहै इससे आप मेरी अर्ज मानकर महाराजको समझादो कि इस प्रणको छोडदो और इनकी शादी करदो इस बातको सुनकर रानी अपने महलको गई और सायंकालके समय जब राजा आया तब उसने हाथ जोडकर

राजासे चम्पकलताका साराहाल कहा और कहनेलगी देखोकि, आपके प्रणको पूरा करनेको कोई समर्थ न हुआ और चम्पकलता यौवनमें पूर्ण होआई इससे आप मेरी अर्ज मानकर चम्पकलताकी शादी कर दीजिये और इससमय संयोगभी खूब बनाहै आप शादी करना विचारते तो जाने कहां कहां राजकुमार देखने पडते सो परमेश्वरने घर बैठेही चम्पकलताके मन भावता वर भेज दियाहै ऐसा संयोग फिर न पाओगे क्योंकि किसी कवीने कहाहैः-

दोहा

काल करंता आज कर, आज करंता अब्ब।
औसर बीतौ जातहै, फेर करेगौ कब्ब॥

इससे हे महाराज! जो कुछ करनाहै सो अब करलो जाने कालका दिन कैसाहै ये बात रानीकी सुन राजा जालिमसिंहने कहा बहुत अच्छा आपका कहना हमको मंजूरहै ये बात कर दोनों सोरहे और सबेरा होतेही राजाने कचहरीमें जाकर चोपदारको बुलाकर कहा कि, तुम हमारे बाग में जाओ वहां दो राजकुमार ठहर रहेहैं उनको हमारे पास लेआओ इस बातको सुनकर चोबदार बागमें गया और राजकुमारोंसे कहने लगा कि आपको महाराजने याद कियाहै इस बातको सुनकर राजकुमार तो मनमें फिकर करने लगा कि आज क्या आफत आई परमेश्वर खैर करै तब राजकुमारको घबडाया देखकर वजीरजादा बोला कि हे मित्र! मरदोंका काम घबडानेका नहीं है जब आप ओखलीमें सिर दे चुके हो तो चोटोंसे क्या डरना-चलो जो कुछ होनाहै सो होगा ये बात विचारकर दोनों यार अपने अपने घोडोंपर सवार होकर कचहरीमें दाखिल हुए और राजकुमारने झुककर सलाम किया तब राजाने बडी प्रीतिके साथ छातीसे लगाकर अपनी गोदमें बिठा लिया और राजकुमारसे सारा हाल पूछने लगा तब राजकुमारने अपना सारा हाल

और नाम गाम सब बतलाया राजा सुनकर अपने मनमें खुश भया और उन दोनोंके वास्ते एक महल बतादिया और दास दासी बहुतसे खिदमतके वास्ते भेजदिये और बडी मुहब्बतसे राजा कहने लगा कि हे बेटे! अब तुम किसी बातकी चिन्ता मत करो तुम्हारी प्रीत और साहस देखकर अपनी बेटी तुमको दी इस बातको सुनकर राजकुमार बहुत खुश भया और राजासे बिदा हो अपने महलमें आया. मैना बोली कि ऐतोते! राजकुमार तो अपनेमहलमें गया और राजाने ज्योतिषियोंको बुलाकर व्याह शुधवाया तब ज्योतिषीने शुभ दिन देख लग्न साध बिवाहका दिन बताया तब राजाने ज्योतिषियोंको द्रव्य आदि देकर बिदाकिया और आप बिवाहकी तैयारी करने लगा ये बात सारे नगरमें फैली तो सब नरनारियोंको बडा आनंद हुआ जब लग्नका दिन हुआ तो राजाने हाथी घोडा वस्त्रादि बहुतसा धन लग्नमें भेजा और शहरमें व्याहकी बडी तयारी हुई जब व्याहका दिन आया तो राजाने शहरमें डौडी पिटवादी कि सबेरे शहरके आदमी रंगीन कपडे पहने जो कोई सफेद कपडे पहने दीखेगा वह संगीन सजा पावैगा व्याहके दिन हरतरफ रंग खिलने लगे ठौर ठौर गुलाल उडने लगा केशरके छिडकावके मारे शहर काशमीरके मानिंद होगया सब नरनार रंगमें सखोरफिरतेथे ठौर ठौर रंडियों का नाच होने लगा और राजाका हुक्म था कि जिसको चाहिये सो लो हिन्दुओंको पूरी कचौरी मिठाई मुसलमानोंको पुलाव कलिया जर्दा आदि खाना ठौर ठौर था दिनरात सबको तमाशा देखनेसे कामथा इस प्रकार सारे शहरमें धूम होरहीथी इतनेमें शामका वक्त हुआ और बरात चढनेकी तैयारी भई राजकुमारके महलसे राजाके महलतक दोनों तर्फ बिल्लौरी झाड फानूसोंकी रोशनी कीगई घरघर पर नगाडखाना रक्खाथा जिस वक्त दूल्हा सवारहुआ उसवक्त एकबार ही शोर होने लगा किसीने कहा सवारी जल्दी लाओ, कोई कहै खिदम-

तगारको बुलाओ,कोई बोला फुलवारी लाओ, इतनेमें पलटने आगे बढीं घोसापर चोव पडने लगी, बाजे बजने लगे, धीरे धीरे बरातका चलना आरम्भ हुआ सबसे आगे सवारोंके रिसाले जिनके हाथोंमें भालेघोडोंकी बागोंकोसम्हाले चले जातेथेउनके बाद सांडनी सवार खासवरदार चीरापोस कडेबाज घुडचढे दूल्हेके आस पासभाले बर्छी चोबदार नकीबरौशनचौकीवालेथे और दूल्हेके पीछे घोडोंपर अमीर उमराव मंडील झुकाये घोडेसे घोडा मिलाये बडी धूम धामसे चले जातेथे-रास्तेमें चरखी चांदतारे कदमगास मोर चरखी आदि तरह तरहकी आतिशबाजी चलती थीऔर तखतों पर सैकडों रंडियोंने लैलै मजनूका स्वांग नाचते चले जातेथे और भांड भगतियें अपनी न्यारी २ ध्वजा दिखाते चले जातेथे हीजडे तालियोंको फटकार फटकार गातेथे निदान बडी धूम धामसे बरात महलके दरबाजेपर पहुँची और पण्डितोंनें नेग सब लेलिये बाद फेरा पानेके दूल्हे दुलहन दोनों चित्रसारीमें पहुँचे उस वक्त दोनों के दिलकी मुराद पुरी हुई मैंना बोली कि ए तोते ! राजाने लाखों रुपयेका माल जर जेवर व हाथी घोडे दायजेमें दिये तब तो राजकुमारके बडी खुशीके साथ मौजमें दिन कटनेलगे इसी तरह ऐश आराम करते २ राजकुमारको बहुत दिन बीते और वह ऐसा आनन्दमें मग्न होगया कि, अपनी माता पिताकी सब सुध भूलगया तब एक दिन वजीरजादेने राजकुमारसे कहा कि हे मित्र! अब परमेश्वरने आपकी मुराद पूरी करदी अब आपको अपने वतनको चलना चाहिये क्योंकि हमको और आपको घरसे आये बहुत दिन बीतगये न जाने तुम्हारे माता पिता का क्या हाल होगा क्योंकि जबसे आप आये हो तबसे कोई खबर आपकी उनके पास नहीं पहुंची ये बात मित्रकी सुनकर राजकुमारने अपने सुसरसे कहा कि हे पिता ! जो आप खुसीसे आज्ञादें तो हम

अपने वतनको जावैं यह बात सुनकर राजाने कहा कि बहुत अच्छा जैसी आपकी मरजीहो वैसा करो. तब राजकुमारने अपने वतनको चलनेकी तय्यारी करी राजाने बडी खुसीके साथ बहुतसी फौज साथको दी और लाखों रुपयेका माल राजकुमारको दिया तब राजकुमार चम्पकलताको अपने साथ लेकर राजासे बिदा होकर चल दिया. निदान कई दिनके बाद एक मुकाम पर जाकर डेरा किया और सब लोग अपने अपने डेरोंमें आराम करनेलगे जब शामका वक्त हुआ तो राजकुमार अपने घोडे पर चढकर सैर करनेको गया और वजीरजादेको लश्करकी सावधानीके वास्ते छोडगया रानी चम्पकलता आप अपनी चिकोंमें बैठीथी सो उस जगह किसीतरहसे बजीरके लडकेकी अँगूटी हाथसे निकल गईथी सो रानी चम्पकलताने राजकुमारकी अँगूठी जानकर उसे अपनी उंगलीमें पहिन ली इतनेमें चिराग जलनेके समय राजकुमार भी हवा खाकर आया और खाने पीनेसे निश्चिन्त हो शयन करने लगा उस समय रानीसे केलि आनंद करनेमें हाथसे हाथ मिला तब उसके हाथमें वजीरजादेकी अँगूठी देखकर राजकुमार मनमें जलगया और सोचने लगा कि यह अँगूठी इसके पास कहांसे आई,हो न हो इसकी और बजीरजादेकी दोस्ती है सचहै कि स्त्रीकी जात का भरोसा नहीं ऐसी स्त्रीका क्या ठिकानाहै किसी न किसी दिन ये मेरे जानकी दुश्मन होगी ये अपने मनमें सोच क्रोधके मारे ऐसी तलवार मारी कि चम्पकलताका सिर जुदा होगया और फिर वहांसे बजीरजादेके डेरामें जाकर उसका सिर काट डाला और उन दोनोंको वहीं गाडकर अपने वतनको रवाना हुआ.मैना बोली ऐ तोते !कहां तो राजकुमारकी और चम्पकलताकी ऐसी प्रीत थी कि बिना देखे पलभर नहीं रहताथा और कहां ऐसा निर्दयी होगया कि बेकसूर उन दोनोंकी जान ली ऐ तोते! तूही जरा इन्साफ तो कर कि इसमें रानी का क्या कसूर था।तब तोता बोला

कि छिनाल ! इसमें सरासर तो खोट था जो वह उस अँगूठीका हाल कहदेती तो काहेको मारीजाती तू ये नहीं जानती कि दूसरे मर्दकी चीज अपनी स्त्रीके पास होतीहै तो कैसा रंज होताहै इससे राजकुमारका कुछ दोष नहीं है देख इसका जवाब देताहूं सुन- अब जो कुछ तोता कहेगा सो इसके आठवें भागमें लिखूंगा ॥

इति श्रीतोता मैना सातवाँभाग पण्डित रंगीलाल-
शर्म्माकृत सम्पूर्ण ।

अथ तोता मैना आठवां भाग ।

दास्तान तोतेका-

तोता बोला हे मैना! देख मैं तेरेसामने मरदोंकी बहादुरी और स्त्रियोंकी बेवफाईकी एक दास्तान कहताहूं जरा कान लगाकर सुन बङ्गालमें एक मेदिनीपुर नाम शहर बडा रमणीक और शोभायमान था वहांका राजा वज्रसेन नाम करके था उसकी एक बेटी रूपमें चन्द्रमा के समान चन्द्रमुखी मृगनयनी पिकबयनी जगतमें विख्यातथी और उसके हुस्नकी चांदनीनें सारे जहांनमें धूम मचारक्खीथी इसकानाम पद्मावती था उसका यह प्रण था कि जो शक्स मेरे सवालोंका जवाब देगा और मेरे पिताको चौंसरमें जीतैगा मैं अपनी शादी उसीके साथ करूंगी और जो शक्स मेरी बातोंको पूरी न करैगा उसे कैदमें डाल दूंगी-इस बातको सुन बहुतसे राजकुमार उसकी बातोंका उत्तर दैनेको आये परंतु कोईभी न देसका और आखिरको लाचार होकर उसके कैदखानेमें दाना दलने लगे- इसी भांति बहुतसे राजकुमार उस जालिमके कैदखानेकी हवा खाने लगे सो तोता बोला कि, हे मैना ! ऐसी बेमुरव्वत औरतोंकी क्या परतीत करनी क्योंकि जिसके हुस्नकी तारीफ सुनकर मुहब्बतके मारे कितनेही राजकुमार अपना राजपाट छोडकर उसके रूपकी फांसीसे फंसे- इस बातके

सुनकर मैना बोली कि, हे तोते ! ऐसे कौनसे सवाल उस पद्मिनीने बना रक्खेथे जिनके उत्तर किसीसे नहीं आये उन सवालोंको मेरे सामने कह तब तोता बोला कि, हे मैना ! उन सवालोंको मैं आगे कहूंगा यहां पर कहनेसे दास्तान बढजायगी हे मैना ! एक राजकुमार उसके कैदखानेसे निकलकर भागगया और उसके ऊपर मोहित होकर उसे व्याहनेकी फिकरमें जंगल पाहाडोंकी खाक छानने लगा और जहां कहीं वह बैठ जाता वहीं वह यह शैर पढता:—

शैर

मिलादे खुदा उस सितमगरसे मुझको ।
नहीं जिंदगी से उठाले तू मुझको ॥
नहीं उसके देखे बिना दिन ठिकान ।
भटकता फिरूं हूं नहीं चैन मुझको ॥

हे मैना ! राजकुमार उसके बिरहमें व्याकुल फिरता था एक दिन की बात है कि वह एक चन्द्रावती नगरी में पहुंचा और एक पेडके नीचे बैठकर यही शैर पढने लगा इत्तिफाकसे उसी समय चन्द्रावती नगरीका राजा बिजयसैन अपने मुसाफिरोंके साथ सिकार खेलता हुआ वहां आनिकला और राजकुमारकी विरह भरी शैरको सुनकर उसके पास आया और उसकी हालत पूछने लगा कि भाई तुमपर ऐसी क्या मुसीबत पडीहै जिससे तुम ऐसे बेकल होरहेहो अपना सारा हाल मुझसे कहो बिजयसेनकी यह बात सुनकर राजकुमार ये शैर पढने लगा:

न पूछो मेरा हाल मुझसे भला ॥
निकलताहै दम मेरा इस दम भला ॥
बसी मेरे दिलमें वह जबसे परी ॥
हुआहूं दिवाना मैं इस दम भला ॥

यह विरह भरी शैर राजकुमारकी सुनकर राजाने मनमें जान लिया कि,यह किसी स्त्रीपर मोहित हुआहै यह सोचकर राजाके दिलमें रहम

आया तौ उस राजकुमाको धीरज बँधाकर कहने लगा कि हेमित्र! ऐसे क्यों अधीर होतेहो अपने दिलका साराहाल मुझसे कहो मैं तुह्मारे मनकी आशा पूरी होनेका उपाय करूंगा तुम किसीबातकी चिंता मत करो यह बात राजाकी सुनकर राजकुमार अपना सारा हाल कहनेल गा तब राजा उसे अपनी छातीसे लगाकर धीरज बंधाकर अपने महल में लेगया और कहने लगाकि तेरे दुःख दूर करनेका उपाय अवश्य क रूंगा तब मैना बोली कि ऐतोते वह बिजयसैन राजा कोनथा उसका सारा हाल मुझे कह तब तोता बोला कि हे मैंना! वह राजा बिजय सैन चन्द्रावती नगरीका राजाथा और गोरखनाथ जोगीका चेलाथा उसको गोरखनाथने एक हीरामननाम तोता दियाथा वह तोता बडा बुद्धिमान और पंडित था भूत भविष्यत् वर्तमान तीनोंका जानने वाला था. राजा विजयसेन बिना उस तोतेके पूछे कोई काम नहीं कर ताथा और वह राजा शूरबीर और अपने बचनका प्रतिपालक था सो राजकुमारको अपने महलमें टिकाकर आप उस हीरामन तोतेके पास गया और सब हाल राजकुमारका तोतेसे कहा यह सुन हीराम न तोतेने राजकुमारको अपने पास बुलाकर कहा हे मित्र! आप इस स्त्रियोंके फंदमें अपनी जान मत फँसाओ यह फँदा बहुत बुराहै इस फँदेमें फँसकर सिवाय तडफडाने और आफत उठाने अथवा अपनी जान गमानेके और कुछ हासिल नहीं होता और यह रंग रूप सब ऊपरीही चमकहै भीतरसे हलाहल जहरकी बुझी छुरीहै ये देखिये किसी कबिने कहाहैः—

कवित्त

विषही की भूमि माहिं विषहीके अंकुर भये नारी बिषबेल बडी नखसिखसों देखिये ॥ बिषहीकी जड मूल बिषहीके डार पात बिषहीके फल फूल लगे जो बिशेखिये ॥ बिषहीके तात उरझाय आंटी मार सब नर वृक्ष रूप पर लपटाही पेखि-

ये ॥ सुन्दर कहत कोई संत तरु बचिगये तिनके बोलतो कहूं लागी नहीं पेखिये ॥

उदरमें नरक और नरक सब द्वारनमें कुचनमें बिष और बिष भरी छातीहै ॥ कंठमें बिष गाल चिबुकनमें बिष भऱ्यो मुखहूं-में बिष जीभ बिषसों चुचातीहै ॥ आंखनमें बिष नाक कान-हूंमें बिष जाके हाथ पांव नखाशिख बिषहीके थातीहैं ॥ कहत द्विज रंगी नारि बिषयिनकों बिष समान प्यायके हलाहल पास जमके पहुंचातीहै ॥

यह कह हीरामन तोता बोला कि,हेराजकुमार ! मेरे कहनेको मा-नकर इस ख्याल को छोड अपना राजपाट कर तैंने अभी स्त्रियोंके चरित्र नहीं सुने हैं कि, स्त्री किसीकी साथी नहीं होती और बडी चालाक होती हैं अब मैं तुझसे एक स्त्रीका दास्तान कहताहूं तू ध्यान देकर सुनः—

एक स्त्रीकी कहानी—

वर्द्धमान नाम नगरमें एक पठान रहताथा उसकी स्त्री बडीरूपवती थी परंतुवह व्यभिचारिणीथी उसकीएकजाटसे दोस्तीथी और उसके एक नौ दस वर्षका लडका था जब वह पठान मजदूरी करनेको चला जाता था तब उस स्त्रीका यार जाटआताऔर बडीमौजसेऐश आराम करता जबपठानके आनेका समयहोतातो अपनेघरको चलाजाताथा परन्तु वह लडका सारा हाल अपने बापसे कह देताथा तब वह पठान औरतको खूब मारता था एक दिन पठान तो मजदूरी करनेको गया और वह जाट आया और उस स्त्रीसे कहने लगा कि आज तुम उदास क्यों बैठीहो तब उस स्त्रीने कहा मैं अपनी उदासीकाहाल आपसेक्या कहूं मैं जो आपके साथ ऐश आराम करतीहूं वह सब हाल यह हरामी लडका अपने बापसे कह देताहै सो वह मुझे बहुत मारताहै इसके मारे मुझे बडाभारी रंजरहताहै तबजाट बोलाइस हरामजादे लडकेकी नार

घोटकर मार डाल जिससे यह नित्तका कष्ट दूरहो यह बात जाटकी सुनकर उस स्त्रीनेकामदेवके वशमें पडकर अपने लडकेको मार डाला और आप अपने यारके साथ ऐश आराम करने लगी जब पठानके आनेका समय हुआ तब वह जाट तो चला गया और पठान आया उसी समय औरत बडे जोरसे चिल्लाकेकहने लगी कि कोई चलियोदौ- डियो ये मेरा खसम लडकेको मारे डालताहै औरतका चिल्लाना सुन कर मोहल्लेके बहुत लोग लुगाई भागे आये और कहने लगे कि क्या हुआ तब उस मक्कार औरतने कहा देखो आज ये लडका इस बापसे एक पैसेके वास्ते मचल रहाथा सो इस निर्दईनें गुस्सेमें आनकर लडकेकी नार घोटदी ये बातसुनकर चौकीदार उसपठानकोपकडकर राजाकेपास लेगया तब राजाके सामने बयान किया तब राजाने कहा कि उस समयका कोई गवाहभी है ? तब उस औरतने कहा हां हजूर जिस समय इसने लडकेकी नार घोटीथी उस वक्त फलां जाट खडाथा वह सब हाल जानताहै तब राजाने उस जाटको बुलाकर सब हाल पू- छा तब जाटनेभी अपनी आशनाके कहनेके मुताबिक गवाही दी तब राजाने उस पठानको फांसी लगनेका हुक्म दिया तोता बोला कि हे मैंना! इस दास्तानको कहकर हीरामन तोता बोला कि हे राजकुमार! देख उस स्त्रीने कामदेवके बशमें पडकर अपने पुत्र और पति दोनोंको मार दिया सो हे राजकुमार ! तू मेरा कहना मानकर स्त्रीके फंदेमें अपनी जान मत फँसावै. यह वचन हीरामनका सुनकर राजकुमार कहने लगा कि हे हीरामन तोते ! मेरी जान बेशक चली जाय परंतु एकबार उस चन्द्रमुखीके कंठसे लगके अपने दिलकी मुराद पूरी कर- लूं यह कहकर लंबी सांस भरने लगा इसकी यह हालत देख राजा बि- जयसेनने हीरामनसे कहा कि हीरामन ! जबतक इस राजकुमारको वह स्त्री न मिलैगी तबतक इसका जीना मुश्किलहै इससे इसकी अभिलाषा पूरी करनेका कोई उपाय करो क्योंकि मेरा भी यही प्रण

है कि पराये दुःखको दूर करना सो हे मित्र हीरामन ! जबतक इसका दुःख न मिटैगा तब तक मुझे खाना पीना हरामहै इससे हे मित्र ! इसका उपाय अवश्य करना चाहिये तब हीरामन बोला कि अच्छा उस राजकुमारसे उस रानीका नाम गाम पूछो जिससे उसका पता लगाऊं तब राजाने राजकुमारसे कहा हेमित्र ! तुम्हारे दिलके चुराने वाली उस रानीका नाम क्याहै और कौनसे शहरमें रहती है सो सब हाल हमसे कहो तब राजकुमार कहनेलगाः—

दोहा

बंगालेके बीचमें, शहर मेदनी नाम ॥
वज्रसेन वहांका नृपति, मुल्कोंमें सरनाम ॥

चौबोला

राजाजी मुल्कोंमें सरनाम किला उसकाहै भारी ॥
उसकी राजकुमारि खिली मानों चन्द्र उजारी ॥
राजाजी पद्मावति है नाम रूप रंग वैस सँभारी ॥
उसे मिला तुम देउ करूं तेरी ताबेदारी ॥

बस इस चौबोलेको सुनकर राजाने हीरामनसे कहाः—

रागनी

सूआ तू खबऱ्याँ लादे कैसी छलगारी मृगलोचनी ॥
देश बंगालेमें वह कामिन यहांसे कोस हजार ॥
बज्रसेनहै वाको राजा उसकी राजकुमारीजी ॥
तू खबरा लादे कैसी छलगारी मृगलोचनी ॥
गुणकी खानि रूप रंग भीनी नाम पदमिनी नार ॥
सांचौ भेद लायदे हमको सुन सूआ मिरदारजी ॥
तू खबऱ्यां लादे कैसी छलगारी मृगलोचनी ॥

ये बचन राजा विजयसेनका सुनकर हीरामन तोतेने कहाः-

रागनी

मैं कैसे जाऊं देश बंगालो जादूगारहै ।
मुझको देख पकडले कामिन इसमें फरक न यार॥
जादूगारो देशहै सारो देय कैदमें डारजी ।
मैं कैसे जाऊं देश बंगालो जादूगारहै ॥
मानुषको वहां बैल बनावे ऐसी जुलमन नार ।
उनके फन्द पडेमें राजा कौन बचावन हारजी ॥
मैं कैसे जाऊं देश बंगालो जादूगारहै ॥
नीचौ उडूं तौ बाज झपट्टे ऊंचो उडोन जाय ॥
पडे गजबकी धूप भूप मेरो तन जावे घबरायजी ।
मैं कैसे जाऊं देश बंगालो जादूगारहै ॥
पानी बिन प्यासो मरजाऊं जी मेरो घबराय ।
भटकभटक मरजाऊं राजा जान अजाये जाय जी॥
मैं कैसे जाऊं गौडबंगालो जादूगारहै ॥

जबाब राजाका.

रागनी

तू क्यों घबरावे काज करन मेरे यारजी ॥
जादू थारे पास न आवे गुरुहै गोरखनाथ ॥
खबर पायके जल्दी आवो चलूं तुम्हारे साथ ॥
तू क्यों घबरावे काज करन मेरे यारजी ॥
मोकों गरज नहीं कामिनकी सुनले बात हमारी ॥
परदुख भंजनहार जगतमें नाम हमारो भारीजी ॥
तू क्यों घबरावे काज करन मेरे यारजी ॥
उत्तर देय लजे गुरु अपनों यह कहा बात बिचारी ॥
मानों बात यार हीरामन करो जानकी त्यारीजी ॥
तू क्यों घबरावे काज करन मेरे यारजी ॥

ये बचन राजाका सुनकर हीरामन बोला कि, खैर आपके कहनेसे मैं बंगाले जाताहूं परंतु मेरे पंखोंमें मोती पिरोदे और तरह तरहके हीरा पन्ना लाल लगादे तब राजाने हीरामनके कहने मुआफिक मोतियोंका सिंगार कर बिदा किया तब तोता कई दिनके बाद मेदनीपुरमें पहुँचा और रानी पद्मावतीकी चित्रसारीपर जा बैठा पद्मावती उस खूबसूरत तोतेको देखकर कहने लगीः—

सवैया

कौन सु देशते आयो सूआ अरु कौनसे देश पयान कियोहै ॥
है कोइ चातुर नार सँभारके जाने तुम्हारो सिंगार कियोहै ॥
साच कहो कहा काज तुमारो है मोसों भले सब त्याग भियोहै॥
रंगी कहैं पद्मावति नार तबै पुचकार जबाब दियो है ॥

हे मैना पदमावतीका बचन सुनकर हीरामनने कहाः—

कबित

चन्द्रावतिको री राजा एक बिजैसैन ताको गुरु भाई ॥
तिन हितसों मोकों पाऱ्योहै पुत्रसे सिवाय नृपराखतहै ॥
मोहि नृप रानी ऐसो तो भूप दूजो नाहीं जग निहाऱ्यो है ॥
बास मना भूप रंग रूपमें अनूप कोई ताको बिधिनानें ॥
निज हाथसों समाऱ्योहै ॥ जैसो रंग रूप तोरो जगमें
बिख्यात सखी तैसोही एक वह राजा हमारोहै ॥

दोहा

रानीजी एक बातको, मैं पूछत हूं तोय ॥
कहा कारन क्वारी रहीं, सांच बताओ मोय ॥

ये वचन तोतेका सुनकर रानी पद्मावतीने अपने मनमें जाना-कि ये तोता नहीं हैं कोई राजकुमार मंत्रके जोरसे तोतेका रूप धरकर मेरा भेद लेनेको आयाहै इससे इसको बातोंमें फुसलाके पकडना चाहिये तब रानीने तोतेसे कहाः--

दोहा

पाप सभी या जन्मके प्रगटे या जग मांय ।
कछू सुक्ख पायौ नहीं ऐसी काया पाय ॥
बहुत देश बामन फिरे बर ढूंढनके काज ।
काहूसो जोरी नहीं मिली सुआ महाराज ॥

यह बचन रानी पद्मावतीका सुनकर हीरामन तोतेने कहा:—

जबाब तोतेका.

दोहा

तैसी कामिन तू बनी तैसो मेरो भूप ॥
बिधनाने जोडी रची रचो एक रँग रूप ॥

झूलना

अजी रचौ एक रंग रूप भूप सम और न दूजो कोई है ।
वासो तो वही भूप जगतमें नहिं मिले ढूँढलो कोई है ॥
पर दुःख निवारनहै राजा जाकी उडरही खसबोई है ।
मानों मेरी बात पदमि तुम न वृथा बचन मम होई है ॥

जबाब रानीका

दोहा

सुन सूआ तेरी बातका, मुझको हुआ यकीन ।
बिधिनाने कीनी कृपा, तब तुम दर्शन दीन ॥

झूलना

अजी तब तुम दरशन दीनं सूअना पास हमारे आओजी ॥
को है वह भूप कहां रहता सब ब्योरे वार बताओजी ॥
लेजाउ अँगूठी मेरी तुम उनसे शादी कर आओ तुम ॥
मैं जनम जनम दासी तेरी राजाके दरश दिखाओजी ॥

जबाब तोतेका.

दोहा

तेरे ढिग आऊं नहीं, तू है कपटन नार ।
बातनमें फुसलायके, देय कैदमें डार ॥

झूलना

अजी देय कैदमें डार नार जगमें तेरी उडी अवाई है ॥
है पूरो ऐब कोई तोमें जासूं नहिं किनहूं व्याही है ॥
तू व्याहन जोग भई कामिन अबतक नहिं भई सगाई है ॥
वह औगुन कौन बसे तोमें सच दीजो मोय बताई है ॥

जावाब रानीका

सांच कहूं मैं सूअना, मति तू झूठी जान ॥
मेरे तेरे बीचमें, जामिन श्रीभगवान ॥

झूलना

है जामिन श्रीभगवान बचन तुम सांचे मेरे मानोजी ॥
आओ दिल खोल पास मेरे मति दिलमें दहशत खाओजी ॥
मैं करूं आपकी महिमानी क्या दाख छुहारे खाओजी ॥
मोय दासी जान महर कीजे जीऊं जबतक गुन मानूंजी ॥

दोहा

रानीका सुनकर बचन, आया मन विश्वास
छज्जासे उड सूअना, आया रानी पास ॥ १ ॥
पदमावत करके कपट, पकडो करके मांय ॥
फेर बचन कहनेलगी, बांदीसे समझाय ॥

झूलना चलबडी

छूरीलाउ बांदी मैं इस्का सीस काटूं सूआ नहिं जुलमी कोई नरहै री ॥ जोगीसे बडे मंत्रसे देह बदली लिखी कजा इस्की

इसी बार हैरी॥पंख खोंसके मोति इसके काढ लेना करूं पंख इसके तार तार हैरी ॥ आया सूअना बनके भूप कोई इसका नहिं मुझको इतवार हैरी ॥

जबाब तोतेका

झूलना

हुई भूल मेरी आया पास तेरे जोगी नाहिं रानी ना ॥ मसान सेना दिलमें सोचा क्या काम मैं बुराकीना ॥ जेता दुःख देगी मुझे सबी सहना॥तुमको मंत्र विद्या मैं सिखावताहूं रानी मारके मोय जिवाय लैना॥रंगीलाल कहते नहि झूंठ बोलूं गोरखनाथका चेला मोय जानलेना॥

जवाब रानीका

छन्द

जल्दी मंत्रविद्या बताय सूआ मुझको नहीं पंख तेरे सबी खोंस डारूं ॥ छुरी पास में मेरे फौलादकी है नहीं झूठ बोलूं तेरा सिर उतारूं ॥ तोकूं मारके सूआ जिवाय लऊंगी नहिं झूठ बोलूं सारे बचन सारूं॥ चेली होय जाऊं गोरखनाथजीकी करूं बन्दगी गेरुवा वस्त्र धारूं ॥

जबाब तोतेका

झूलना

यहांसे बाहर करदे सभी बांदियोंको सुनले मंत्र मेरा सखिजाँय सारी ॥ कोई पास तेरे नहिं रहन पावै फाटक बन्द करले यही अर्ज म्हारी ॥ मोको प्यास लगी थोडा नीर प्यादे जीव घबडा ताहै महलकी खोल बारी ॥ तेरे कानमें मंत्र सुनाय दूंगा इसी वक्त सिद्ध होजाय सुघड नारी ॥

दोहा

नारि अकेली देखके, सूआ किया बिचार ॥
अब किस बिधि इससे बचूं, येहै जुलमिन नार ॥

झूलना

अजी ये है जुलमिन नार सुआने मनमें अकल विचारीहै ॥
कर सूओ मंत्र बतावनको कसि चौंच गालपै मारीहै ॥
हो विकल पदमिनी गिरी धरनि नहिं तनकी दशा सम्हारीहै ॥
सूआ उडजाय महल बैठो करिके चतुराई भारीहै ॥

जब थोडी देरके बाद रानीको होश आया और अपने कोमल कपोलोंसे रुधिर निकलता देखा तब बडे गुस्सेमें आनकर बोली

रागनी

तैनें मारी गालपै चौंच जुलम क्या कीयारे जीसें मारूं सूआ कियोहै बदकाम ॥ गालनको रस लैलियो रे बिगड गयो सब नाम ॥ जुल्म तैनें कियोरे मारी गालपै चौंच जुलम तैनें कियोरे ॥ रानी गुस्सा खायके बांदी लई बुलाय । बांदीसे कहने लगी लाओ बाज उठाय ॥ जुल्म याने कीयोरे । ये सूआ जुल्मी बडा निकस न ह्यां ते जाय ॥ जीवत मैं छोडूं नहीं याकूं डारूंगी मरवाय ॥ जुलम याने कीयोरे ॥

तोता बोला हे मैना ! जिस वक्त रानी पदमावतीने खिसियानी होकर अपने बाजका पींजरा मंगाया उसी वक्त हीरामन वहांसे उड चला और पीछे फिरके भी न देखा कई दिनके बाद राजा विजयसेनके पास आया तब राजाने पदमावतीका सारा हाल पूछा तब हीरामन बोला कि हेराजा ! वह स्त्री असलमें रंग रूप और यौवनमें देखनेही लायकहै परंतु न जानिये उसका स्वभाव खोटा क्योंहै बडे दम पुचकारे देकर उसने मुझे पकड लिया और मारनेको तैयार भई सो

गोरखनाथकी कृपासे बडी मुश्किलसे अपने प्राण बचाके आयाहूं तब इस बातको सुनकर राजाने अच्छा मुहूर्त दिखाय चलनेका सामान किया सिर्फ एक घोडा सवारीके और पांचों हथियार बांध तोतेको साथ ले पदमावतीके नगरको चले, चलते चलते कई दिनके बाद उसीके शहरमें पहुँचे और पदमावतीके बागमें जाकर डेरा किया इनको देख बागकी मालिनने बहुत रोका मगर राजाने एक न मानी लाचार होकर मालिनने सारा हाल राजाके आनेका पदमावतीसे जाकर कहा तब पद्मावती मालिनकी बात सुनकर बडी गुस्सामें भरकर बांदीसे कहने लगी कि, हे बांदी ! मुझे मालूम होताहै कि कोई राजकुमार कमवख्तीका मारा मेरे सवालोंका जबाब देने आयाहै सो भला ऐसेही सैकडों आये और अबतक मेरे जेलखानेमें दाना दलरहेहैं चलो उसकोभी जीतकर वही राजोंके पास पहुँचावें ये बात मनमें ठान बांदियोंको साथ ले पदमावती बागमें पहुँची और राजासे कहने लगी कि हे राजा ! तुम यहां कैसे आयेहो और यहां तुम्हारा क्या कामहै तब राजा बोला कि हेपद्मावती ! मैं आपके हुस्नकी तारीफ सुनकर शादी करनेकी चाहना करके आयाहूं सो तू अपने पितासे कह कि तेरी शादी हमारे साथ करदें. तब पदमावती बोली कि हे राजा! मेरा ब्याह करना मेरे पिताके हाथमें नहीं है मेरा ब्याह मेरे बशमें है मैंने ये प्रतिज्ञा करीहै कि, जो राजा मेरे दश सवालोंका जबाब देगा उसीके साथ मैं अपनी शादी करूंगी और जो मेरे सवालोंका उत्तर न देगा उसको कैद करूंगी अगर आपको यह बात मंजूरहो तो आपसे अपने सवाल करूं जो आप मेरे सवालोंका जबाब दोगे तो मैं अपनी शादी आपके साथ करूंगी और जो जबाब न दे सकोगे तो आपको मेरे कैदखानेमें जाना पडेगा ये बात पद्मावतीकी सुनकर राजाने जबाब दिया

कि अच्छा आपका कहना हमको मंजूरहै अब आप अपने सवालोंको मुझसे कहिये तब पद्मावती कहनेलगी:—

सवाल १

कौन तपस्वी तप करै, को नित उठकर न्हाय ॥
को उगलै सब रसनको, को सब रसको खाय ॥

यह सवाल रानीका सुनकर राजाने अपने मनमें गुरु गोरखनाथजीका ध्यानधरके उत्तर दिया ॥

उत्तर

सूरज तपसी तप करै, ब्रह्मा उठकर न्हाय ॥
सब रस उगले इन्द्र नृप, धरती सब रस खाय ॥

सवाल २

कौन सरोवर पांजवी, कौन पेड बिन डाल ॥
कौन पखेरू पंख बिन, कौन मौत बिन काल ॥

उत्तर

नैन सरोवर पांजबी, धर्म्म मूल बिन डाल ॥
जीव पखेरू पांख बिन, नींद मौत बिन काल ॥

सवाल ३

कहा न तिरिया कर सके, कहा न सिंधु समाय ॥
कहा न पावकमें जरै, कहा काल नहिं खाय ॥

उत्तर

पुत्र न तिरिया जन सकै, मन नहिं सिंधु समाय ॥
धर्म्म न पावकमें जरै, नाम काल नहिं खाय ॥

सवाल ४

बाला तन गज तीसकी, तरुण भये गज चार ॥
बुढी हुई गज साठकी, मुआ अंत न पार ॥

उत्तर।

दिन ऊगे गज तीसकी, दो पहरां गज चार ॥
सांझ भये गज साठकी, छाया लेउ विचार ॥

सवाल ५

बरषा बरषी रातिमें, भीजो सब बनराय ॥
रूखन पानी चढगयो, घोडा मल मल न्हाय ॥
घडा न डबे नीर बिन, पंछी प्यासो जाय ॥

उत्तर

ओस पडीथी रातको, भीजो सब बन राय ॥
रूखन पानी चढि गयो, घोडा मल मल न्हाय ॥
घडा भरै नहिं ओसते, यों पंछी प्यासो जाय ॥

सवाल ६

ब्रह्मा नहीं नग्रमें डोले दंत दोय मुख चार ॥
वाहन बैल नहीं शिवशंकर जलका करे अहार ॥
कै दोहाको अर्थ बता नहिं दऊं कैदमें डार ॥

उत्तर

कूआ पर भिस्ती लख्यौ भरतो नीर पखाल ॥
दोऊ लकडी दंत है चारी मुखहैं खाल ॥
बैल सवारी वो करै सांची जानों बाल ॥
दियो ज्वाब मैंने सही शादी कर ततकाल ॥

सवाल ७

नाजुक नारि पिया संग सोती अंगसे अंग मिलाय।
जब जागे तब जानके अपने पतिकूं खाय ॥
वो पतिवरता नारिहै संग सती ह्वैजाय ॥
याको कै तो अरथ कह नहीं कैद हो जाय ॥

उत्तर

बाती घाली तेलमें नाजुक खूब बढाय ॥
बाले पीछें तेलने सनै सनै खा जाय ॥
निबटै तेल दीपमें जबहीं बाती तुरत बुझाय ॥
अरथ सुनो तुम पदमिनियाको मो संग कीजे ब्याय ॥

सवाल ८

कालो आप पुत्रहै कालो काली आई नार ॥
बेटा देखे मात पिताकूं घूसा मारे चार ॥
तिरिया देख खसमने जलके काढे घरके बार ॥
कै तो याको अरथ बता नहीं देऊं कैदमें डार ॥

उत्तर

कारी दारू कारो गोला कारो सुम्बा होय ॥
भरती देखे तोपमें मैं समझाऊं तोय ॥
लगे पलीता जब प्यालेमें गोला बाहर होय ॥
कह्यो अर्थ मैं पदमिनी अब तुम ब्याहो मोय ॥

सवाल ९

लम्बी पूछ गिलैरी नाहै दोय सींग नहिं गाय ॥
निरत करै आकाशमें मीठो राग सुनाय ॥
याको अरथ सोचके राजा मोकूं देउ बताय ॥

उत्तर

गुडी उडे आकाशमें पूछ बडेरी होय ॥
हवा लगै सर सर करै राग जानिये सोय ॥
जो ते दोनों सींग सम अरथ बताऊं तोय ॥

सवाल १०

एक भुजा धारण किये बैठी गादी डाल ॥
सब जग वशमें कर लिया नहीं अंगपर खाल ॥

या दोहाको अर्थ कह नहिं बंदी खाने चाल ॥

उत्तर

आटो सब जग खातहै पीसे चाकी मांय ॥
एक भुजा याके बनी यामें झूठी नाँय ॥
ज्वाब दशों पूरे किये मो सँग कीजे ब्याह ॥

तोता बोला कि हे मैना! इस प्रकार राजाने पद्मावतीके दशों सवालोंका उत्तर दिया तबतो पद्मावती बहुत खुशभई और कहने लगी कि हे राजा अब! मैं आपका सारा हाल अपने पितासे कहूंगी और अपना वचन पूरा करूंगी यों कह राजासे बिदा होकर अपने महलमें आई और बांदीको सारा हाल सुनाकर अपने पिताके पास भेजी सो राजा वज्रसेन बांदीका वचन सुन बहुत खुश भया और दीवानको बागमें भेजकर बिजयसेनको बुलवाया और बडे आदर सत्कारसे गादी पर बैठा लिया तब विजयसेनने कहा कि,महाराज! हमने आपकीबेटीके दशों सवालोंकाजवाब दियाहै आप अपनीप्रतिज्ञाके अनुसार अपनी पुत्री हमको दीजिये तब राजा वज्रसेनने कहा कि, बहुत अच्छा अब मैं शुभ घडी दिखाकर अपनी बेटीकी शादी आपके साथ करदूंगा तब राजा विजयसेन बोला कि,हे राजा! मेरा व्याह तो इसके साथ न होगा क्योंकि ये अमानत पराई है मेरी तो पुत्रीके समान है तब वज्रसेन बोला कि, हे राजा! ये कन्या आपने पराई अमानत कैसे बताई इसका सारा भेद मुझसे कहो तब विजयसेन कहने लगे कि, हे राजा! तुमने जो राजपुत्र कैद कर रक्खे हैं उनमेंसे एक राजकुमार तुम्हारे कैदखानेमेंसे निकल गया और वह तुम्हारी बेटीकी चाहनामें अपने राजपाटसे हाथ धोकर बावलोंकी तरह रात दिन रोता हुआ जंगलोंमें भटकता फिरता था सो एक दिन वो दैवयोगसे मेरे राजमें चला आया और एक पेडके नीचे बैठा रोरहा था इत्तिफाकसे मैं भी उसी जगह जा निकला और उस राजकुमारको दुःखी देखकर उससे

सारा हाल पूछा तब उसने अव्वलसे आखिर तक अपने दिलका हाल मुझसे कहा तब मैंने उसे तुम्हारी बेटी पर सच्चा मोहित जानकर ये प्रण किया कि, मैं तुमको उस राजकुमारीको दिलादूंगा सो हे राजा ! इसीसे ये अमानत उसकी है मैं इसे उसके साथ व्याहूंगा ये बात बिजयसेनकी सुनकर वज्रसेन बहुत खुश भया और कहने लगा कि, धन्य है आपको जो पराये उपकारके वास्ते ऐसा कष्ट किया अब आप मेरी बेटीके मालिक हो जिसे चाहो तिसे दो आप उसराजकुमार को बुलवाइये तब विजयसेनने तोतेको भेजकर राजकुमारको बुलवाया और विधिपूर्वक उसकी पदमावतीके साथ शादी करादी और वे दोनों खुश होकर आनंदमें रहने लगे. तब राजा विजयसेन वज्रसेनसे बिदा होकर अपने वतनको गया तोता बोला हे मैना ! देख मर्द कैसे साहसी होते हैं कि, पदमावतीसी स्त्रीको पाकर दूसरेको देनेमें कुछ भी रंज न किया इससे मर्दोंकी बराबर बातका पक्का और सखुनका सच्चा कोई नहीं होता अब मैं मर्दोंके साहसके दास्तानको खतम करके स्त्रियोंकी बेमुरव्वती बयान करताहूं. जब राजकुमारको पदमावतीके साथ ऐश आराम करते कुछ दिन बीते तब एक दिन राजकुमारने अपने ससुरसे कहा कि, हे पिता! अब हमको अपनेमाता पिताओंको छोडे बहुत दिन हुए इससे आपकी राजीहो तो हम अपने वतनको जावें और अपने माता पिताको सुख दिखावें क्योंकि जिसदिनसे मैं उनके पाससे आयाहूं आजतक कुछ खबर नहीं पाई इससे मेरा जी बेचैन रहता है इस बातको सुनकर वज्रसेनने कहा बहुत अच्छी बात है ये कहकर सफरका सामान इकट्ठा किया तब अच्छा दिनदेखकर राजासेबिदा होकुछ थोडेसे आदमी साथलेकर चलनेका कस्त किया इसी तरह चलते चलते समुद्रके किनारेपर आये औरएक जहाजमें अपना सामान रख पदमावतीको चढाकर और आपभी चढकर समुद्रमें चला दैवयोगसे जिस वक्त जहाज बीचमें पहुँचा उस

वक्त अचानक ऐसी आंधीआई कि,जिसके जोरसे जहाजके बन्द टूट गये मल्लाहोंके छक्के छूटगये जहाजके टुकडे टुकडे होगये क्या जाने कौन डूबा कौन बचा किसीको किसीकी खबर नहीं- राजकुमार एक तख्ते पर उछलता डूबता चार दिनके बाद किनारेपर लगा और उधर मल्लाहोंने पद्मावतीको हीरा मोतियोंसे लदी देख लोभमें आनकर अपनी जान झोंककर बडी मुश्किलसे समुद्रमेंसे निकालकर उसका सब जेवर उतार लिया और उसे निकाल दिया- तब पद्मावती अकेली उस बीयावान जंगलमें भटकने लगी इसी तरह पद्मावतीको भूखे प्यासे उस जंगलमें फिरते फिरते बहुत दिन होगये तब एक दिनका जिक्र है कि उसी जंगलमें एक चित्रकेतु नाम राजकुमार शिकार खेलनेको आया सो चित्रकेतुकी नजर पद्मावती पर पडी तो चकाचौंध होगया और अपने मनमें कहने लगा कि इस भयानक जंगलमेंये चन्द्रमुखवाली चारों दिशाओंको अपने हुस्नकी चमकसे रोशन कररहीहै इसके साथ कोई आदमी भी नहीं है और न इसके पास कुछ जेवरहै और बदन इसका मलीन होरहाहै तौभी चन्द्रमुखी अपने तेजसे चन्द्रमाको मलीन करतीहै इससे इस्के पास चलकर इसका हाल जरूर पूँछना चाहिये ये बात मनमें विचारकर चित्रकेतु पद्मावतीके पास आया और पूछने लगा कि, हेसुन्दरी!तुम कौनहो ? जो इस भयानक जंगलमें अकेली फिरतीहो और तुम्हारी संगकी सहेली तुमको अकेली छोडकर किधर गई और आपका कम लसा कोमल देह कैसे मलीन होरहाहै ऐसे चित्रकेतुके बचन सुनकर पद्मावती बोली कि मैं बज्रसेन राजाकी बेटीहूं और पद्मावती मेरा नामहै सो मैं और मेरा पति कुछ थोडेसे आदमी साथ लेकर अपने वतनको जातेथे रास्तेमें समुन्दर आया और हम सब जहाजमें बैठे दैवयोगसे ऐसी आंधी आई कि जहाजके टुकडे होगये और मेरा मालिक और खिदमतगार मरे या बचे मुझे उनका हाल कुछ मालूम

नहीं मुझे तो मल्लाहोंने निकाल और मेरी जान बचानेके बदले उन्होंने मेरा सारा जेवर लेलिया-हे राजकुमार! मैं उसी दिनसे अपने पतिके वियोगमें इस जंगलमें भटकती फिरतीहूं यहां कोई अपना बिराना धीरके धरानेवाला और सुख दुःखके पूछनेवाला नजर नहीं आता सिवाय गमके कुछ खानेको नहीं खाया और प्यासलगतीहै तो जिगरका खून पीतीहूं अपने दिलमें सोचतीहूं कि उन पापीमल्लाहोंने बुरा किया जो मुझको समुद्रसे निकाला अगर मैं भी मरजाती तो ये रंज काहेको उठाना पडता न जानिये अभी इस किसमतमें क्या क्या रंज और गम उठाना लिखाहै. आजकई दिनके बाद आपकी शकलनजर आईहै अब ईश्वरसे ये दुआ मांगतीहूं कि हे ईश्वर ! यातो मेरेमालिकसे मुझे मिलादे बरनेमुझकोभी उठाले ये बात पद्मावतीकी सुनकर चित्रकेतू कहने लगा कि, हेसुन्दरी ! आप ऐसी अधीर क्यों होती हो जिस ईश्वरने दुःखका समय दिखायाहै वही फिर सुखको दिखावेगा आपके रंजको सुनकर मेरा कलेजाफटताहै परंतु क्या करें ईश्वरसे किसीका जोर नहीं चलता अब मैं आपसे एक अर्जकरताहूं मगर कहनेमें डरताहूं क्योंकि पराया मन पसेरी बराबर होताहै इससे आप मुझको अपना ताबेदार समझें तो आपको वही आराम फिर मौजूदहै और मैं भी अपनी जानमालसे ताबेदारहूं आगे आपअपने दिलके मुखत्यारहो यह बचन चित्रकेतुका सुनकरपदमावती दिलमें तो खुश हुई परंतु ऊपरसे चुप होगई निदान बहुतसी बातें हुईं और मुहब्बतने यहांतक जोर किया कि दिलोजानसे चित्रकेतुके साथ जाना कबूल किया और अपने पतिके रंजो गमसे हाथ धो बैठी निदान चित्रकेतुने पदमावतीको साथ लेजाकर शहरके पास अपने बागमें महल बनवाकर रख्दी और हमेशा उसके साथ ऐश उडाने लगा. तोता बोला कि हे मैना ! अब मैं पद्मावतीके किस्सेको यहीं खतम करके उस राजकुमारका हाल फिर बयान करताहूं. जब वह

राजकुमार किनारेपर लगा और भूख प्यासका मारा जंगलोंमें भटकता हुआ कई दिनके बाद एक बस्तीमें पहुंचा वहांके लोग इसको देखकर दंग होगये हरएक पूछने लगा कि तुम कौनहो और कहांसे आये हो सच कहो तब राजकुमारने कहाः—

शैर

न पूछौ कोई हाल मैं हूं बिकल ॥
मैं चाहताहूं दम मेरा जावै निकल ॥
कहूं क्या मैं जो कुछ मुसीबत पडी ॥
लगी चश्मसे मेरे गमकी झडी ॥

ये कहकर राजकुमार ठंडी सांस भरनेलगा कि हे लोगो! मैं अपना क्या हाल कहूं और मैं कौन हूं! दिल ठिकाने नहीं बिछडोंसे मिलनेकी आस नहीं दिल बेकल होरहाहै खाना दाना हरामहै साथी छूटगये चौडेमें लूटगये यह कहकर बडी आह भरकर ये शैर पढने लगाः—

शैर

ठिकाना पूछतेहो क्या बे ठीकानो का ॥
नहि घरबार कुछ है कोई हम बेठिकानोंका ॥
फिरूंहूं जंगलोंमें मैं भटकतारंज और गममें ॥
पडे जिस पेडके नीचे वही घर बे ठिकानोंका ॥

हिचकी लगतीहै मगर पता नहीं लगता किस्मतने दोस्त छुडादिये सारे होश उडा दिये क्या कहूं कहां जाऊं हाय! मुसीबत क्या किस्मतने ये हाल दिखाया ये बातें राजकुमारकी सुनकर सब लोग रोने लगे और सबने जान लिया कि ये कोई राजकुमार है इसपर कोई बडी मुसीबत पडीहै ये सोचकर सबने खातिर की और अपने मकानपर लेगये हाथ मुंह धुलाये खानेके वास्ते भोजन लाये तब राजकुमार रो रोकर कहने लगा कि,ईश्वर जाने मेरे बिछडोंका क्या हाल होगा दाना पानी मिला या नहीं इससे मैं भी न खाऊंगा भूखा प्यासाही मर

जाऊंगा तब मनुष्योंने कहा कि, हे मित्र! ये आपकी नादानीहै खानेसे जिंदगानीहै जीते रहोगेतो किसीनकिसी दिन अपने प्यारोंसेमिलोगे और जो अन्न न खाओगे तो भूखे प्यासे मरजाओगे कफनभी न पाओगे लाचार सबके समझानेसे राजकुमारने दो चार ग्रास पानीके सहारेसे गलेमें उतारे पानी पीतेही बदन सनसना गया गश आगया जब जरा दिल ठहरा तो राजकुमारने अपना सब हाल उनसे कहा वे लोग सुनकर रोनेलगे और कहने लगे कि हे मित्र! अब अधीर मतहो हम आपके दुःख दूर होनेका उपाय करतेहैं हमारे शहरमें एक बडा भारी जोतिषी रहताहै वह भूत भविष्यत् वर्तमान तीनों कहताहै चलो आपको उसके पास लेचलें वह आपका सारा हाल बतादेगा ये बात उनकी सुनकर राजकुमार उनके साथ होलिया और ज्योतिषीके पास जा हाथ जोडकर सारा हाल पूछा तब ज्योतिषीने अपनी विद्या केवलसे राजकुमारसे कहाकि, तुम्हारा प्रश्न जीवका है सो उसका फल यह है कि जिसकी खातिर तुम रंज उठाते हो वह बहुत राजी खुशीहै और दक्षिणकी ओर एक चम्पावती नगरीहै तिसमेंहै परन्तु इसवक्तके प्रश्नसे ये बात मालूम होतीहै कि उसके मिलनेमें तुम्हारी जानका नुकसानहै येबात हम पहिलेभी देख चुकेहैं क्योंकि एकमनुष्य पहिलेभी आयाथा सो उसकाभी यही हालथा उसको मैंने बहुत मनाकिया कि तू इस ख्यालको छोडकर अपने वतनको जा क्योंकि स्त्री किसीकी सगी नहीं होती परन्तु उसने एक भी न मानी लाचार होकर मैं चुप होगया और उसने उस स्त्रीके पीछे अपनी जान देदी ये बात सुन राजकुमारने कहा कि उसने कैसे जान गमाई उसका सारा हाल आप मुझसे कृपा करके कहो ।

कहानी एक साहूकारकी

ज्योतिषी बोला हे राजपुत्र ! एक चन्द्रावती नगरीके रहनेवाला भद्रसेन नाम साहूकार था और उसकी स्त्रीका नाम रम्भा था सो वह

स्त्री रूप यौवनमें अपनी बराबर किसीको नहीं समझतीथी और बडी पतिव्रताथी एक दिन वह साहूकार दो चार आदमी और अपनी स्त्री रम्भाको संग ले गंगास्नान करने गया था सो जब कई मंजिल होचुके तब एक दिन जंगलमें डेरा किया और वहां एक साधूभी रूप यौवनमें कामदेवकेसमान था और बडा हृष्टपुष्ट था सो रंभा उससाधुको देखकर आशक्त होगई और खोटी बुद्धि बिचार कर कुछ थोडासा सामान लेकर साधुके पास गई और हाथ जोडकर कहने लगी कि आपके वास्ते कुछ महाप्रसाद लाईहूं सो आप भोजन कीजिये ये बात रम्भाकी सुनकर और उसके रूप यौवनको देख साधुका भी मन ललचाया तब साधुने रम्भासे हँसकर कहा कि बच्चे ऐसे भोजन खाने से जीभका स्वाद बिगडेगा हमको तो वह पदार्थ खाना चाहिये जो नित्य प्राप्तहो एक दिनके खानेसे क्या होताहै ये बात साधुकी सुन कर रम्भा कहने लगी हे महाराज! जो आप मुझे अपनी दासी करलो तो मैं नित्य इससे अच्छे पदार्थ बनाकर खिलाया करूं साधु बोला कि भला तुम द्रव्यवान पुरुषको छोडकर हमारी दासी क्यों बनोगी तब रम्भा बोली कि महाराज मैं धर्म्मसे कहतीहूं कि आप मुझे अंगीकार कीजिये तब साधु बोला कि तुम्हारे साथ तो तुम्हारा पतिहैउसके पाससे तुम कैसे आओगी तब रम्भा बोली कि जिस वक्त ये आदमी सब सोजायँगे उसवक्तमें आपके पास आऊंगी ये कहकर रम्भा अपने डेरेमें चलीगई और अपने पतिकी सेवामें दाखिल हुई जब आधी रातका वक्त हुआ और सब आदमी सोगये तब रम्भा उठकर सब जरजेवर लेके बाबाजीके पास दाखिल हुई तब साधु बोला कि, तुम आतोगई परन्तु सबेरा होतेही तुम्हारा पतिजागेगा और तुमको हमारे पास देखेगा तो न जाने हमारा तुम्हारा क्या हाल करेगा इससे हमारी राजी यह है कि यहांसे चलकर अंतही वसें रातका वक्तहै कोई देखने वाला भी नहींहै ये बात सुन रम्भा बोली कि, मैं तो तन मन धन सब

आपको देचुकी जैसा मुनासिब समझो वैसा करो तब वह साधु अपनी मढैयाको छोडकर रम्भाको ले एक जंगलको चलदिया और एक पर्व्वतके ऊपर जाके रहा और रम्भाके साथ भोगविलास करने लगा तोता बोला कि, हे मैना! कहो कैसे स्त्रीकी प्रतीत कीजावै कि, कहां तो रम्भा पतिव्रता थी और कहां उस पतिको जंगलमें अकेला छोड कर साधुके संग उडगई इस वास्ते मेरा तो स्त्रीके नामसे कलेजा फटताहै अब मैं रम्भाकाहाल बंदकर साहूकारकाहाल कहताहूंकिजब सबेरा हुआ और साहूकार जागा तब रम्भाको डेरामें न देखकर उसने घबडाकर आदमियोंसे पूछा तो वो कहने लगे कि हमने तो नहीं देखी तब साहूकार बोला कि क्या गजब हुआ कोई सेर उठा लेगया या कोई जिन्द उठालेगया किधर जाऊँ किधर देखूं यों कह-कर चारों तरफ घूमने लगा और ये शैर पढने लगा ॥

शैर

लगीहै आग दिल मेरे गमें फुरकतसे जलताहूं ॥
खबर देताहै बेताबी कि जो आंसू निकलताहै ॥
खुदा ए जल्द लेकर खबर राईसियों दौरा ॥
तेरे बीमारका अब कोई दममें दम निकलताहै ॥

फिर संगके आदमियोंको बिदाकर भंगोए कपडे पहन रम्भाकी फिकरमें जंगल पहाडोंकी खाक छानने लगा मगर कहीं पता नलगा तब दैवयोगसे वह साहूकार मेरे पास आया और मुझसे सारा हाल कहा तब मैंने उसके प्रश्नोंका फल देख उसे समझाया कि वह स्त्री फलां पर्वतके ऊपरहै परन्तु उसके पास जानेमें तेरी जानका खौफहै सो हे राजकुमार! उसने मेरा कहना न माना और पता लगाता हुआ कम्ब-ख्तीका मारा वह बिचारा उसी पहाडपर पहुँचा और वहां अपनी प्यारी रम्भाको भंगोए कपडे पहने देख बहुत खुश हुआ और मनमें सोचने लगा कि देखो दिलको दिल पहचानताहै जबसे मैंने इसके

वियोगमें गेरुए कपडे पहनेहैं तभीसे इसने भी मेरे वियोगमें सब शृंगार तज जोगनका रूप धारण करलिया और मेरे रंजके मारे इसके सिरके बाल कैसे बिखर रहेहैं हाय! ईश्वर ऐसी मेरीप्यारीको ऐसा दुःख देना लाजिम नहीं था ऐसे मनमें विचार रम्भाके बिरहमें व्याकुल होकर ये गजल पढने लगाः—

गजल

बाइसे वहशत हुई बेरातनाई आपकी ॥
तितके चुनवाने लगी हमसे जुदाई आपकी ॥
आपकी जाने बला क्योंकर कटी फुरकतकी रात ॥
दिल तडफकर रहगया जब याद आई आपकी ॥
करवटे शब भर लिया करताहूं नींद आती नहीं ॥
रातभर बेताब रखतीहै जुदाई आपकी ॥

तोता बोलाकि, हे मैना! अपने पतिको आया देख रम्भा घबडाकर साधूसे कहने लगी कि, बडा गजब हुआ मेरा पती यहांभी आगया ये बात रंभाकी सुन वो साधू हाथमें डंडा लेकर साहूकारके ऊपर दौडा और दोनोंकी कुस्ती होने लगी एक दूसरेको मारने लगे और अपनी अपना घात चलाने लगे तब रंभाने देखा कि, साहूकारने साधूकोदबा लिया तो उसीदम उसने एक हींसका सोटा लेकर अपने पतिके सिरमे ऐसा मारा कि उसका काम तमाम हुआ दैवयोगसे कुछ जान बाकी रहगई तब साधूने उस ल्हासको नदीमें फेंकदी जब वह साहूकारकी ल्हास थोडी दूर बहकर गई तो जलकी तरी पहुँचनेसे साहूकारको होश आया तब वो बिचारा अपनी स्त्रीकी बदीसे अपना मन मारकुछ दिनाके बाद फिर मेरे पास आया तब उसने कहा ये महाराज! मैंने आपका कहना नहीं माना उसका फल पाया. हे राजपुत्र! वैसाही फल आपके प्रश्नका है इससे मेरा कहना मानकर उस स्त्रीकी मुहब्बतको छोडकर अपनेघरको जाओ देखो स्त्रीजातका कुछभरोसा

नहीं ये स्त्री तब तक अपनी समझी जाती है जब तक अपने पासहै और जिसवक्त अपने पाससेअलग हुई फिर इसका भरोसा नहीं रहता इस बातको सुन राजकुमार कहने लगा कि,महाराज वह मेरी स्त्री बडी पतिव्रताहै और मेरे उसके एक प्राण दो देह हैं उसके विना मुझे एक घडी कल नहीं पडती और मेरे बिना उसको चैन नहीं होगी वह प्रतिज्ञाकी बडी पूरीहै ये बात राजकुमारकी सुन जोतिषी बोला कि,हे राजकुमार! स्त्रियोंकी बातपर भरोसा करना तुम्हारी नादानी है देखो एक प्रभावतीकी कथा तुमको सुनातेहैं:—

प्रभावतीकी कथा.

जोतिषी बोलाकि,एक नन्दन नाम नगर महारमणीक और मनोहरथा उसमें चन्द्रध्वजनाम राजा राजकरताथाउसराजाके एक बेटा वज्रमुकुट तरुण अवस्था रूप यौवनमें परिपूर्ण था उसी नगरमें एक धर्मदास सेठ रहताथा उसकेबेटेकाभद्रसेननामथाउसकीस्त्रीका नाम प्रभावतीथा उसके रूपयौवनके सामने अपसरा कुछ भी चीज न थी सो प्रभावती अपने पतीकी आज्ञा प्रतिपालन करनेवाली थी और सदा अपने पतिकी सेवामें रहती और उसका पतिभी उस पर ऐसा आशक होरहा था कि बिना उसके देखे चैन नहीं पडता इसी तरह उन दोनोंमें ऐसी मुहब्बत बढी कि, बिना एकको देखे दूसरेको कल नहीं पडतीथी निदान एक दिन प्रभावती सोलह शृंगार कर नखसिखसे आभूषण पहन संध्या समय अपने महलपर खडीथी और उधरसे राजकुमार वज्रमुकुटभी शिकार खेलनेसे आताथा सो बज्रमुकुटकी निगाह ऊपरको गई और प्रभावतीसे चार नजरें हुई तो दोनोंके दिलमें मुहब्बत बढी और प्रभावतीके दिलमें राजकुमारकी तसबीर समागई और बज्रमुकुटके हृदयमें प्रभावतीकी दोनो इश्कके नशेमें चूरहुए खानापीना छोड आरामसे मुखमोड मिलनेका उपाय विचारनेलगे इसीतरहदोनोंकोसोचाबिचारकरते२

कई दिन गुजर गये तब बज्रमुकुटने एक दूतीको बुलाकरके कहा कि जो तुम मुझको प्रभावतीसे मिलादो तो तुम मांगो सो दूं ये बात सुन दूती प्रभावतीके पास गई और उस्को उदास देखकर ये बोलीः-

कवित्त

कहा भयो आली तोय बैठीहो सुस्त होय कैसे रंग रूप सब फीको लखातहै ॥ नैन अरुणाई तैं गमाई कहां आली अति है रही मलीन तातें तन सब कुमलात है ॥ कहो सखी मनमें कहा पीर है तिहारे आली मोसों ना दुराय कहो सांची जो बात है ॥ करूंगी उपाय बात मोसूं ना दुराय हेरी मैं तो हूं चेरी सौ-गंद अब खातहै ॥ १ ॥ कहा कहों मनकी सजनी जो बिथा तन सब छायरही । लखि राजकुमर बिहाल भई दिन रैन न चैन गमाय रहीं ॥ जैसे वह नीरबिना मछली अब सोई दशा मम आयभई । नहीं जोवत प्राण बिना उनके जिनके हित देह उमाय रही ॥

ये बचन प्रभावती का सुन दूती बोली हे प्रभावती ! तू किसी बात-की चिन्ता मतकर मैं तोसे बज्रमुकुटको मिलाय तेरी मनकामना पूरी करा देऊंगी परंतु तू एक काम कर कि सबेरेही मुर्छा खाय गिरपडियो सो तोकूं कोऊ कितनेहू कोई जगावे परंतु मत बोलियो तब मैं आयकर तेरी मनसा पूरी करनेका उपाय करूंगी ये बात दूतीकी सुन प्रभावती बहुत खुस भई और कहने लगी कि, हे सखी! जो तू मेरी मनसा पूरी करेगी तो मैं तेरी जन्मभर दासी रहूंगी ये बात पदमावतीकी सुनकर दूती अपने घरको गई और इधर प्रातः होतेही प्रभावती दूतीके कहे मुआफिक गश खाकर जमीनमें गिरपडी इसको बेहोश देखकर घरके सब लोग दौडे आये और उसका गैर हाल देखकर बैद्य हकीमोंको बु-लाकर दवा कराई उन्होंने दवादी मगर कुछ फायदा न हुआ भला सोचनेकी बातहैः-

शैर

जो इश्कके बीमारहै उनकी दवा क्या कीजिये।

ज्योतिषी बोला कि,हे राजकुमार! जब बैद्य हकीमोंसे कुछ फायदा न पहुँचा तब तो साहूकार बहुत घबराया और उसने सारे बजारमें ढिंढोरा पिटवा दिया कि,जो कोई हमारी बहूको अच्छा करे वो मुहमांगा इनाम पावे ये सुन सांझके वक्त वोही दूती आई और प्रभावतीका हाल देखकर साहूकारसेकहने लगी कि मैं इसको आराम करसक्तीहूं और ये आजरातके जिन्दके फेरमें आगईहै परंतु इसकोआठदिनके वास्ते मेरे घर भेजदो साहूकारने उसीवक्त प्रभावतीको उसके मकानपर भेजदी फिर दूतीने साराहाल राजकुमारसे कहा तबरातको राजकुमार आया और प्रभावतीके साथ रातभर आनंद मनाया इसी तरह आठ रोजतक दोनोंने अपने दिलकी तपत बुझाई जब नवां दिन आया तब दूती प्रभावतीकोसाथलेकरसाहूकारके मकानपरआई साहूकारने प्रभावतीको खुश देखकर दूतीको बहुत इनाम दिया ज्योतिषी कहने लगा कि,हे राजकुमार! उस प्रभावतीका कुकर्मकिसीने न जाना इससे मैं तुझे बार बार समझाताहूं कि,तू अपनी स्त्रीका ख्याल दूर कर नहीं तो मुसीबत उठावेगा राजकुमारके दिलमें एक न आई आखीरको उसीशहरको चला और कई दिनके बाद चन्द्रकेतूके नगरमें पहुँचा और वहांके लोगोंसे पूछनेलगा तब एकपनिहारीने कहा कि,हम नाम तो नहीं जानती परंतु सुना है कि राजकुमार जंगलमेंसे एक स्त्री लायाहै सो चम्पाबागमें रहतीहै तब राजकुमार उसीबागमें गया और उसके महलके नीचे आसन लगाया एक दिन शामके वक्त पद्मावती हवा खानेको महलपर खडी हुई तो राजकुमार उसे देखकर यह शैर पढनेलगाः—

शैर

फिरूं मैं तडफता सुबह रातको ॥
न आती है निद्रा मुझे रातको ॥
फिरूं जंगलमें भटकता हुआ ॥
तेरे नामकी माला जपता हुआ ॥
लगाहै पता अब तेरा मेरी जान ॥
कि देखा तुझे आई तन बीब जान ॥

शैर सुनतेही पदमावतीने फिरकर देखा कि ये वही मेरा पतिहै यह जान मुहं फेर कर नीचे उतर गई और सोचने लगी कि, ये चित्रकेतू मुझपर ऐसा आशकहोरहाहै कि घडीभर भी दिलसेन्यारी नहींकरता और सब तरहका आराम देताहै इससे ऐसे यारको छोडकरइसकेसाथ जाकर क्याकरूंगी ये विचार अपनेपतिकोमहलमेंबुलाकरकहनेलगी कि या तो इसी वक्त यहांसे चला जा बरन राजासे कहकर तेरटूकटूक उडवा दूंगी ये बचन पदमावतीका सुनतेही राजकुमारथर्रागया और सोचने लगा कि अब हमको निश्चय हुआ कि स्त्रीकी बराबर बेपीर जात कोई नहीं मैंने इसके पीछे कैसे कैसे रंज गम उठाये मगर ये तो चन्दरोजमें ही मुहब्बत तोड अलग होगई और नेकीके बदले जान लेनेकोतैयारहै इससेऐसी स्त्रियोंपरधिक्कारहै और मुझसरीखेपुरुषोंको भी धिक्कारहै जो जरासे गोरे चामको देखकर राजपाटछोड देशोंमें खराब होता फिरा ये सोच वह राजकुमार अपने वतनको चलागया तोता बोला ऐ मैना ! अब भी चुप हो जा नहीं तो स्त्रियोंकी बडी बडी बेमुरब्बातियां कहूंगा अगर सभीको लिखूं तो बडा भारी ग्रन्थ बनजावे तब मैना बोली कि, ऐ तोते ! जबाब देनेमें तुझसे में क्या कम हूं ? हजारों दास्तान मुझेभी यादहैं इस तरह तोता और मैनामें झगडा होरहा था इतनेमें एक हंस चला आया और उसी पेडके ऊपर

आनकर बैठ गया और इनका झगडा देखकर बोला कि तुम क्यों झगडते हो तब तोता और मैना दोनोंने हंससे कहा कि आपही हमारा इन्साफ करदो हमको आपका कहना मंजूरहै तब हंस बोलाकि जो हम कहें वही तुम मानो तो हम तुम्हारा झगडा मिटादें तब उन दोनोंने बचन दिया कि जो आप कहोगे सो हम करैंगे तब हंस बोला कि सवाल जबाबमें तुम दोनों बराबरहो तुमको मुनासिब है कि, तुम दोनों हमारे कहनेसे शादी करलो क्योंकि इस संसारमें सब स्त्रीपुरुष एकसे नहीं हैं ये बात हंसकी सुनकर तोता मैना दोनों खुश भये और अच्छा दिन देखकर शादी की अब थोडासा हाल इनकी शादीका लिखताहूं जिस वक्त उस जंगलके जानवरोंने सुना कि, फला दिनको तोता मैनाकी शादीहै तो मारे खुशीके सब इकट्ठे भये और कबूतर नगाडे बजाने लगे कोयल नफीरी का सुर भरने लगी गर्गैयोंने मजीरेका काम दिया पिंडकियोंने तबलापर थाप दी चकोरोंने रोशनीका सामान किया मोर नाचने लगे फिद्दी फुदकने लगी पटबीजने हर जगह बहार दिखाने लगे इस तरह ठौर ठौर पेड पेड पर बहार होने लगी जब शादीका दिन आया तो सब जानवरोंने तोता और मैनाकी शादी कराई बाद इसके मेवा पकवान फूल फल अनेक तरहके सामान दावतके वास्ते तैयार किये और समय पर सबकी खातिरदारी की और हर जगह रंगतका सामान नजर आया और तोता मैनाकी शादीकी बडी धूम मची इस तरह दोनों तोता और मैना रहसके सतसंग करनेसे अपनी अपनी मुरादको पहुंचे इसलिये में भी परमेश्वरसे प्रार्थना करता हूं कि, जैसे तो[illegible] मैनाकी मुराद पूरी हुई इसी तरह इस किस्साके पढनेवालोंकी मुराद पूरी हो ॥

इति [illegible] समाप्त.

ई प्रकाशनीता

कपडे तारीख २५

गिरजाजी धोती छवका २ धोती मलमल २

कुरती २ जाकट काली १ बहाकट

मेरी धोती मलमल २ कुरती सडी २

धोती २ कुरती १ चादर १

बिलायत २

धोती २ पेट जामा धारी २

कुरती

ओडनी २

आहर बीरत्त राम कल पायेन्टोम

श्री जवाल न मैंचिना ना ३७ पा

सदुरजी

यो किताब मि मेज़! चौंनराज रानी बाल
व की है

१२

यो कीताब मि मोज़ चौंनराज
रानी कौल की है गी

१ एल वरस्सें

वकल गिरजापती
कौल

मार्च
१३ ता: १३
१३

ना॰ ६०

गिरजादेवी जी

धोती ४

कुरती ६

तौलीया १ बंटीकोट १

भतीजा धोती २

कुरती २

जाकट १

मेरी धोती ४५

कुरति १

बीलाउज २

तौलीय १

बहुजी धोती

कुरती २

तैलब १

चांद पैजामा

कुरती

रुमाल